नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित

Navbodh
मध्यप्रदेश संस्करण

नवबोध

बी.एड. सरल अध्ययन

पाठ्यक्रम में भाषा

(भाग-1)

प्रथम सेमेस्टर



पाठ्यक्रम

CC-3 : पाठ्यक्रम में भाषा (म. प्र.)

बी. एड. प्रथम सेमेस्टर

अंक : 35

इकाई 1. वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक लेखन से जुड़ना

- कहानी, काल्पनिक कहानियों के अध्याय, नाटकीय घटनाएँ, उपन्यास, सजीव वर्णन का कारण बताना, हास्यास्पद आवरण रहित कहानियों का निर्माण सहित अध्याय एवं मूल पाठों का चयन।

सुझावात्मक गतिविधि–

- पढ़ने के लिए बोधगम्यता एवं मानसिक चित्रण के लिए उपयोगी गतिविधियाँ (वैयक्तिक तथा समूह वाचन एवं वाद–विवाद/व्याख्या)।
- पुनः कथन–एक बार अपने शब्दों में बताना और विभिन्न दृष्टिकोणों से चर्चा (छोटे समूह में पुनः आवृत्ति)।
- किसी एक के जीवन के अनुभवों का वर्णन करना/सुनाना (छोटे समूह के सम्मुख)।
- पात्र के चरित्र एवं परिस्थितियों पर चर्चा–अपना दृष्टिकोण तथा व्याख्यात्मक भाग छोटे समूह के सामने रखना।
- लेखन आधारित मूल पाठ, दृश्य का सारांश, कहानी का स्पष्टीकरण, परिस्थितियों को संवाद में परिवर्तित करना।

इकाई 2. प्रसिद्ध विषय आधारित व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ना

- छात्रों की योग्यताओं का विकास करने के सन्दर्भ में उनमें विषय–आधारित लेखन क्षमता का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए मूल पाठों में कुछ विशेष लेखन कार्यों को शामिल किया जाएगा। जैसे– आर्टिकल, आत्मकथात्मक लेखन, सारांश एवं विभिन्न विषयों के क्षेत्रों से ली गयी विषय–वस्तु आदि।

सुझावात्मक गतिविधि–

- सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना, जानकारी, विषय ज्ञान।
- मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं उनको योजनाबद्ध रूप से नोट करना–प्रवाह चार्ट, वृक्ष, चित्र, मस्तिष्क, नक्शे आदि का प्रयोग।
- मूल पाठ/विषय के सारांश को समझाना (बड़े विषय समूह के सम्मुख)।
- लेखन में शैली का उपस्थित होना, विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप या सन्दर्भ फ्रेम और प्रत्येक मूल पाठ के सन्दर्भ में व्याख्यात्मक कौशलों की आवश्यकता।
- मूल पाठ का पुनर्विचार एवं सारांश लिखना।

इकाई 3. पत्रकारिता लेखन से जुड़ना

- छात्रों को समाचार पत्र या पत्रिकाओं में लेख लिखने को प्रोत्साहित करना। लेख लिखने के लिए छात्रों की रुचियों के अनुसार छात्रों और शिक्षकों को समूह में विभाजित करना।

सुझावात्मक गतिविधि–

- प्रारम्भिक अवस्था में लेखों को उचित प्रकार से पढ़ना।
- लेख की संरचना का विश्लेषण करना, उपशीर्षक को पहचानना, कुंजी शब्द, विचारों की क्रमबद्धता, मूर्त विस्तार का उपयोग, उदाहरण/सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व।
- लेखों तथा मुख्य बिन्दुओं को फ्रेमिंग करने के लिए आलोचनात्मक पठन।
- स्थानीय रुचियों के प्रकरणों पर लेख का अन्वेषण एवं लेखन।

प्रश्न-सूची

CC-3 : पाठ्यक्रम में भाषा (म. प्र.)

बी. एड. प्रथम सेमेस्टर

प्र.क्र.	विवरण	पृष्ठ सं.
	इकाई 1. वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक लेखन से जुड़ना	
	लघु उत्तरीय प्रश्न	
1.	भाषा का अर्थ बताइए।	13
2.	भाषा की परिभाषाएँ लिखिए।	13
3.	भाषा की प्रकृति को समझाइए।	13
4.	भाषा का महत्व बताइए।	13
5.	पाठ्यक्रम का अर्थ बताइए।	14
6.	पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ बताइए।	14
7.	पाठ्यक्रम की आवश्यकता को बताइए।	14
8.	पाठ्यक्रम के महत्व को समझाइए।	14
9.	पाठ्यक्रम में भाषा के महत्व को समझाइए।	14
10.	साहित्य से आप क्या समझते हैं ?	14
11.	साहित्य की परिभाषाएँ लिखिए।	15
12.	विधा क्या होती है ? साहित्य की विधाओं के नाम बताइए।	15
13.	गद्य क्या होता है ?	15
14.	कौशल का अर्थ बताइए।	15
15.	पठन कौशल से आप क्या समझते हैं ?	15
16.	पठन कौशल के उद्देश्य क्या हैं ?	16
17.	पढ़ने के कौशल के विकास में सृजनात्मक साहित्य के महत्व को समझाइए।	16
18.	पठन–कौशल का महत्व बताइए।	16
19.	वर्णन प्रविधि से आप क्या समझते हैं ?	16
20.	वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ बताइए।	16
21.	वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय शिक्षक को किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?	17
22.	वर्णन प्रविधि की सीमाएँ बताइए।	17
23.	भाषा कौशल से आप क्या समझते हैं ?	17
24.	विवरण प्रविधि की विशेषताओं को समझाइए।	17
25.	विद्यार्थियों में उच्चारण दोष के कारण लिखिए।	17
26.	विवरण प्रविधि की सीमाएँ लिखिए।	17
27.	भाषा में मौखिक आत्म–प्रकाशन के लाभ बताइए।	17
28.	कहानी से आप क्या समझते हैं ?	18
29.	कहानी की परिभाषा लिखिए।	18
30.	कहानी की विशेषताएँ बताइए।	18

31.	कहानी शिक्षण के उद्देश्यों को लिखिए।	19
32.	उपन्यास का अर्थ बताइए।	19
33.	उपन्यास की परिभाषाएँ लिखिए।	19
34.	उपन्यास के प्रकारों को बताइए।	19
35.	उपन्यास शिक्षण के उद्देश्य लिखिए।	19
36.	काल्पनिक कथा से आप क्या समझते हैं ?	20
37.	नाटकीय घटनाओं से आप क्या समझते हैं ?	20
38.	संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए– (अ) सजीव वर्णन का कारण बताना, (ब) हास्यास्पद आवरण रहित कहानियों का निर्माण।	20
39.	कविता के अर्थ को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए।	20
40.	कविता की परिभाषाएँ बताइए।	21
41.	पात्र एवं चरित्र–चित्रण के सह–सम्बन्ध को समझाइए।	21
42.	चरित्र–चित्रण से आप क्या समझते हैं ?	21
43.	कहानी एवं उपन्यास के पात्रों के महत्व को बताइए।	21
44.	संवाद का अर्थ बताइए।	21
45.	संवाद लेखन से आप क्या समझते हैं ?	21
46.	संवाद लेखन की विशेषताएँ बताइए।	21
47.	किसी एक उदाहरण के माध्यम से संवाद लेखन को समझाइए।	22
48.	संवाद लेखन करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?	22
49.	अच्छे संवाद लेखन की विशेषताएँ लिखिए।	22
50.	संवाद को अन्य किन नामों से जाना जाता है ?	22
51.	व्याख्या से आप क्या समझते हो ?	22
52.	व्याख्या कौशल से आप क्या समझते हैं ?	22
53.	व्याख्या कौशल के उद्देश्य को लिखिए।	23
54.	व्याख्या कौशल की विशेषताएँ बताइए।	23
55.	व्याख्या कौशल के महत्व को बताइए।	23
56.	दृश्य लेखन से आप क्या समझते हैं ?	23
57.	दृश्य लेखन की विशेषताओं को लिखिए।	23
58.	दृश्य लेखन के तत्वों को बताइए।	23
59.	दृश्य लेखन और संवाद लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।	23
60.	दृश्यों के प्रकारों को बताइए।	24
61.	निबंध से आप क्या समझते हैं ?	24
62.	भाषा पारिस्थितिकी या भाषाई पारिस्थितिकी से आप क्या समझते हैं ?	24
63.	भाषा या हिन्दी भाषा या हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को बताइए।	24
64.	साहित्य के प्रकारों को समझाइए।	24
65.	"भाषा प्रयोग एक कौशल है।" इस कथन को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।	25
66.	एक आदर्श वार्तालाप की विशेषताएँ बताइए।	25
67.	भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य बताइए।	25
68.	भाषा और संस्कृति के बीच सह–संबंध को बताइए।	26
69.	सुनने की योग्यता का विकास कैसे करेंगे ?	26
70.	लेखन शैली से आप क्या समझते हैं ?	26

71.	मौखिक लेखन शैली से आप क्या समझते हैं ?	26
72.	बहुभाषावाद क्या है ?	26
73.	क्रिया गतिविधि आधारित शिक्षण विधि क्या है ?	27
74.	कथेत्तर लेखन से आप क्या समझते हैं ?	27
75.	बहुभाषा से आप क्या समझते हैं ?	27
76.	एन.सी.एफ. ने 2005 में पाठ्यक्रम से परे भाषा पर क्या कहा है ?	27
77.	वर्णन और विवरण प्रविधि में अंतर बताइए।	28
78.	शुद्ध उच्चारण का महत्व बताइए।	28
79.	कक्षा में संवाद की प्रकृति पर एक लेख लिखिए।	28
80.	वार्तालाप किसे कहते हैं ?	29
81.	भाषा क्या है ? इसके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करते हुए व्यापक एवं संकुचित रूपों पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।	29
82.	किन शिक्षार्थियों के अधिगम में सांकेतिक भाषा का उपयोग होता है ? सोदाहरण समझाइए।	29
83.	एक चित्र/कहानी पर शिक्षार्थी अलग–अलग दृष्टिकोण क्यों रखते हैं ?	30
84.	वाचन किसे कहते हैं ?	30
85.	काल्पनिक उपन्यास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।	31
86.	शिक्षक के रूप में समाज के प्रति आपके क्या कर्त्तव्य हैं ? समझाइए।	31
87.	नाटक और एकांकी में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए।	32
88.	वर्णनात्मक लेखन क्या है ? यह बालक के रचनात्मक लेखन में कैसे सहायक है ?	32
89.	किसी एक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।	33
90.	अभिभावक–शिक्षक बैठक को संवाद लेखन के रूप में लिखिए।	33
	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	
1.	भाषा के विभिन्न रूपों को समझाइए।	34
2.	विवरण प्रविधि का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।	35
3.	भाषा कौशल की विशेषताएँ बताइए।	35
4.	पाठ्यक्रम के परे भाषा विषय का अर्थ व स्वरूप बताइए। विद्यार्थियों के लिए इस विषय का ज्ञान क्यों उपयोगी है ?	35
5.	बी.एड. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के लिए पाठ्यक्रम से परे भाषा विषय की उपयोगिता को समझाइए।	36
6.	शिक्षा में भाषा के महत्व को बताइए।	36
7.	पाठ्यचर्या के प्रकारों को समझाइए।	36
8.	पाठ्यचर्या विकास में अध्यापकों की भूमिका को समझाइए।	37
9.	नई शिक्षा नीति, 2020 में भाषा के स्थान एवं महत्व की चर्चा कीजिए।	37
10.	साहित्य के प्रकारों को समझाइए।	37
11.	साहित्य के प्रकारों को कितने भागों में विभक्त किया गया है।	38
12.	भाषा एवं साहित्य के सह–सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।	38
13.	भाषायी कौशल से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रकारों को समझाइए।	39
14.	श्रवण कौशल के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए।	40
15.	श्रवण कौशल की विधियों का वर्णन कीजिए।	41
16.	श्रवण कौशल के विकास में होने वाली बाधाओं को बताइए।	42
17.	श्रवण कौशल विकास हेतु उपाय को समझाइए।	42
18.	वाचन कौशल के उद्देश्य लिखिए।	42
19.	वाचन कौशल के महत्व को बताइए।	43

20.	वाचन कौशल की विधियों को लिखिए।	43
21.	लेखन कौशल के उद्देश्य लिखिए।	44
22.	लेखन कौशल के महत्व को बताइए।	44
23.	सुलेख के महत्व को बताइए।	44
24.	लेखन शिक्षण की विधियों को समझाइए।	45
25.	विद्यार्थियों को लेखन प्रशिक्षण देते समय किन–किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए ?	46
26.	लेखन कौशल में होने वाले दोष व सुझावों को समझाइए।	46
27.	पठन कौशल के उद्देश्यों को समझाइए।	47
28.	पठन कौशल की शिक्षण विधियों को समझाइए।	47
29.	पठन कौशल के प्रकारों को समझाइए।	48
30.	सस्वर वाचन के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए।	50
31.	उत्तम सस्वर वाचन में कौन–कौन से गुण होते हैं ?	50
32.	विद्यार्थियों के लिए मौन वाचन की उपयोगिता एवं महत्व को समझाइए।	50
33.	सस्वर (मुखर) वाचन व मौन वाचन में क्या अंतर है ?	51
34.	कहानी के तत्वों को समझाइए।	51
35.	विद्यार्थियों के लिए कहानी शिक्षण की उपयोगिता को समझाइए।	53
36.	कहानी शिक्षण विधि के सोपानों को समझाइए।	54
37.	नाटक शिक्षण की विधियों को समझाइए।	55
38.	कहानी और उपन्यास में अंतर लिखिए।	55
39.	शिक्षक को कविता शिक्षण की किन–किन विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए ?	56
40.	पुनर्कथन से क्या आशय है ? इसकी सावधानियाँ लिखिए।	56
41.	प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य लिखिए।	57
42.	भाषा शिक्षण के ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, रसात्मक, सृजनात्मक एवं अभिवृत्यात्मक उद्देश्यों को समझाइए।	58
43.	मौखिक अभिव्यक्ति या आत्म प्रकाशन से क्या आशय है ? इसके क्या उद्देश्य हैं ? मौखिक आत्म प्रकाशन हेतु विकास के आधारों को समझाइए।	59
44.	विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय हमें किन–किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए ?	60
45.	रेखाचित्र किसे कहते हैं ? रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए।	61
46.	व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए।	61
47.	नाटकीय घटनाओं की विशेषताओं को बताइए।	62
48.	भाषा और बोली के अंतर को समझाइए।	63
49.	पठन कौशल विकास के स्तरों को समझाइए।	63
50.	सुनने की योग्यताओं का वर्णन कीजिए।	64
51.	नई शिक्षा नीति, 2020 में भाषा के लिए क्या कहा है ?	64
52.	भाषा के लक्षणों को बताइए।	65
53.	भाषा शिक्षण में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत का वर्णन कीजिए।	66
54.	भाषा विकास में पुस्तकालय के महत्व को स्पष्ट कीजिए।	67
55.	कहानी सुनाते समय शिक्षक को किन–किन बातों को ध्यान रखना चाहिए ?	67
56.	कक्षा में आप विद्यार्थियों/शिक्षार्थियों की मौखिक भाषा का विकास कैसे करेंगे ?	68
57.	मानक भाषा से आप क्या समझते हैं ? मानक भाषा की विशेषताओं को समझाइए।	69

58.	भाषा शिक्षक के गुण या विशेषताओं को समझाइए।	69
59.	मातृभाषा के महत्व को समझाइए। घर में मातृभाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए।	71
60.	गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं को बताते हुए किन्हीं दो विधाओं को उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।	72
61.	दृश्य का सारांश लेखन से क्या अभिप्राय हैं ? सर्वोत्तम दृश्य सारांश लेखन की दो विशेषताएँ बताइए।	73
62.	सुनिर्मित हास्यात्मक चित्र कलाओं की चार गुण लिखिए।	74
63.	अच्छे वाचन की विशेषताएँ बताइए।	74
64.	काल्पनिक कथाओं से आप क्या समझते हैं ? एक अच्छी काल्पनिक कथा की विशेषताएँ बताइए।	75
65.	भाषा शिक्षण के सिद्धांतों को समझाइए।	75
66.	पठन के स्तरों को समझाइए।	76
67.	अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना को कहानी के रूप में व्याख्या कीजिए।	77
68.	विवरण और वर्णन प्रविधि में अंतर बताइए।	77
69.	शिक्षार्थी की भाषायी क्षमताओं की अवधारणा समझाइए।	78
70.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ''पाठ्यक्रम में भाषा'' पर क्या कहा गया है ?	80
71.	शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा का क्या महत्व है ?	81
72.	पठन हेतु व्यूह नीतियाँ क्या है ? स्कीमिंग और स्कैनिंग से आप क्या समझते है ? उदाहरण सहित लिखिए।	82
73.	नाटक के तत्वों को संक्षिप्त में समझाइए।	83
74.	वाचन शिक्षण की कौन–कौन सी विधियाँ हैं ? किन्हीं चार पर प्रकाश डालिए।	85
75.	एक बालक भाषाई कौशल कैसे सीखता है ?	86
76.	समस्या समाधान का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बालकों के लिए इसके महत्व का मूल्यांकन कीजिए।	87
77.	परिचर्चा प्रविधि की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। कक्षा में आज परिचर्चा किस प्रकार आयोजित करेंगे ?	87
78.	भाषा का अर्थ, प्रकृति और महत्व को समझाते हुए समाज के बीच संबंधों की विस्तृत चर्चा कीजिए।	88
79.	पढ़ने की विभिन्न रणनीतियाँ कौन–कौन सी है ? सीखने में इन रणनीतियों के महत्व को समझाइए।	90
	इकाई 2. प्रसिद्ध विषय आधारित व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ना	
	लघु उत्तरीय प्रश्न	
1.	आलोचनात्मक चिंतन का अभिप्राय क्या है ?	92
2.	आलोचनात्मक चिंतन की विशेषताएँ एवं दैनिक जीवन में इसके महत्व को समझाइए	92
3.	चयन की गई विषय–वस्तु का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?	92
4.	चयनित विषय–वस्तु में साहित्यिक लेख तथा जीवन चरित्र लेखन का होना क्यों आवश्यक है ?	92
5.	चयन की गई विषय–वस्तु के अंतर्गत अकाल्पनिक लेखन के मुख्य तत्वों के समावेश से क्या आशय है ?	93
6.	प्रस्तावित गतिविधियों से क्या आशय है ?	93
7.	विषय आधारित शब्दकोश से क्या आशय है ?	93
8.	फ्लो चित्र (चार्ट) से आप क्या समझते हैं ?	93
9.	शब्दकोश के माध्यम से हम विद्यार्थियों में किस प्रकार समझ विकसित कर सकते हैं ?	94

10.	शैली से क्या आशय है ?	94
11.	सृजनात्मक लेखन से आप क्या समझते हैं ?	94
12.	विद्यार्थियों को शब्दकोश का उपयोग करना क्यों सिखाना चाहिए ?	94
13.	पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं ?	94
14.	जीवनी के अर्थ एवं परिभाषा को समझाइए।	95
15.	नोट्स लेने के लाभ बताइए।	95
16.	जीवन चरित्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।	95
17.	जीवंत वर्णन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।	96
18.	निरंतरता के सिद्धांत को समझाइए।	96
19.	अभिव्यक्ति शक्ति का शिक्षण अधिगम क्रिया में महत्व को समझाइए।	96
20.	आप शिक्षार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि को कैसे जानेंगे ? समझाइए।	96
21.	आख्यान से आप क्या समझते हैं ? आख्यान के उद्देश्य को बताइए।	97
22.	विद्यार्थियों को पृष्ठभूमि की समझ क्यों आवश्यक हैं ?	97
23.	विषय विशेष शब्दकोश का महत्व बताइए।	97
24.	बच्चों की अधिगम प्रतिच्छाया क्या है ? कक्षा में इसका क्या महत्व है ?	97
25.	समझ से आप क्या समझते हैं ?	98
26.	जीवन–चरित्र व आत्मकथा में अंतर बताइए।	98
27.	ट्री–डायग्राम को सोदाहरण समझाइए।	99
28.	"समूह चर्चा" किसे कहते हैं ? यह बच्चों के व्यक्तित्व विकास में कैसे सहायक है ?	99
29.	श्यामपट्ट कौशल के घटकों का वर्णन कीजिए।	100
30.	समालोचनात्मक चिंतन को परिभाषित कीजिए।	100
31.	"विचार विनिमय सीखने का एक साधन है।" स्पष्ट कीजिए।	101
32.	आपके द्वारा पढ़ी किसी किताब की संक्षिप्त समीक्षा लिखिए।	101
33.	नोट मेकिंग क्या है ? इसकी विशेषताओं का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।	102
	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	
1.	रचना शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? रचना शिक्षण के उद्देश्य एवं इसकी प्रणालियों को समझाइए।	102
2.	चार्ट क्या होते हैं ? इसके प्रकारों को समझाइए।	103
3.	व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपानों का वर्णन कीजिए।	104
4.	पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ लिखिए।	105
5.	पुस्तक समीक्षा के प्रकारों का वर्णन कीजिए।	106
6.	आत्मकथा की विशेषताएँ बताइए।	107
7.	मूल पाठ पर पुनर्विचार किस प्रकार किया जा सकता है ? विस्तृत रूप से समझाइए एवं पुनर्विचार के अर्थ एवं विशेषताओं को भी समझाइए।	107
8.	मानचित्र के प्रकारों को समझाते हुए मानचित्र का प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए ? समझाइए।	108
9.	मानचित्र का प्रयोग कैसे करें ?	108
10.	जीवनी के तत्व एवं विशेषताओं को समझाइए।	109
11.	आत्मकथा के प्रकारों को समझाइए।	109
12.	रचना, निबंध, पत्र, एकांकी के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किस प्रकार किया जा सकता है ?	110
13.	कहानी कथन विधि से आप क्या समझते हैं ? इसके गुण और दोषों की चर्चा कीजिए।	112
14.	पत्र लेखन से आप क्या समझते हैं ? पत्रों के प्रकार एवं महत्व को समझाइए।	112

15.	शिक्षण कौशल के अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं को समझाइए।	113
16.	प्रमुख शिक्षण कौशल के प्रकारों को समझाइए।	114
17.	वाद–विवाद के बारे में आप क्या जानते हैं ? वाद–विवाद के रूपों का वर्णन कीजिए।	115
18.	एक आदर्श शिक्षक के गुणों को लिखिए।	116
19.	विद्यार्थियों में हम सृजनात्मक क्षमता का विकास किस तरह से कर सकते हैं ?	116
20.	सर्वोत्तम लेखन शैली की सावधानियों को बताइए।	117
21.	चयनित विषय–वस्तु में समाहित सर्वोत्तम वर्णनात्मक वृतांतों में कौन–कौन सी प्रमुख विशेषताएँ होनी चाहिए ? समझाइए।	118
22.	नोट्स बनाने के स्टेप्स (चरणों) को बताइए।	119
23.	आत्मकथात्मक आख्यान से आप क्या समझते हैं ?	119
24.	अपने पढ़े हुए किसी उपन्यास के मुख्य चरित्र की चर्चा कीजिए।	120
25.	पाठ योजना का अर्थ, विशेषताएँ एवं महत्व को बताइए।	121
26.	दिए गए मूल पाठ का सारांश लिखने के सोपान सोदाहरण समझाइए।	122
27.	'अभिक्रमित अध्ययन' से क्या तात्पर्य है ?	123
28.	फ्लोचार्ट व ट्री–चार्ट का महत्व समझाइए।	124
	इकाई 3. पत्रकारिता लेखन से जुड़ना	
	लघु उत्तरीय प्रश्न	
1.	समाचार के अर्थ को परिभाषित कीजिए।	126
2.	समाचार की परिभाषाएँ लिखिए।	126
3.	समाचार पत्र का विद्यार्थियों के लिए क्या महत्व है ?	126
4.	आलेख से आप क्या समझते हैं ?	126
5.	पत्रकारीय लेखन क्या है ? इसके कितने रूप होते हैं ?	126
6.	समाचार लेखन और छः ककार का सम्बन्ध बताइए।	127
7.	संपादकीय लेखन पर टिप्पणी लिखिए।	127
8.	संपादक के कार्य बताइए।	127
9.	समाचार लेखन की शैलियों को समझाइए।	127
10.	समाचार पत्र संपूर्ण कब बनता है ?	127
11.	साहित्य और पत्रकारीय लेखन में अंतर को समझाइए।	127
12.	स्तंभ लेखन क्या है ?	128
13.	एक अच्छे आलेख लेखन में कौन–कौन से गुण होते हैं ?	128
14.	पत्रिकाओं के प्रकार बताइए।	128
15.	विद्यालयीन पत्रिका से विद्यार्थियों को होने वाले लाभ का वर्णन कीजिए।	128
16.	पाठ्य सहगामी क्रिया क्या होती है ? इसकी विशेषताओं को समझाइए।	128
17.	पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के जीवन में क्या महत्व है ? समझाइए।	129
18.	ई–समाचार पत्र से आप क्या समझते हैं ?	129
19.	स्टोरी क्या है ?	129
20.	अनुच्छेद लेखन से आप क्या समझते हैं ?	129
21.	की–वर्ड क्या होते हैं ? व्याख्या कीजिए।	129
22.	मध्यप्रदेश की किसी एक ज्वलंत समस्या का चयन कीजिए तथा उसके कारण एवं निवारण पर एक विस्तृत चर्चा कीजिए।	130
23.	अपने विद्यालय में आयोजित विज्ञान अथवा भाषा प्रदर्शनी पर एक रिपोर्ट लिखिए।	130
24.	स्कूल पत्रिका का बच्चों के संप्रेषण में क्या महत्व है ?	130

	दीर्घ उत्तरीय प्रश्न	
1.	पत्रकारिता के सिद्धान्तों को समझाइए।	131
2.	पत्रकारिता के उद्देश्य समझाइए।	132
3.	पत्रकारिता के प्रकार को समझाइए।	133
4.	एक अच्छे पत्रकार के गुणों को समझाइए।	134
5.	समाचार के स्त्रोत कौन–कौन से हैं ?	135
6.	समाचार संपादन के तत्वों का वर्णन कीजिए।	136
7.	लेखकला से क्या आशय है ? लेख कला की विशेषताएँ बताइए।	136
8.	स्कूल मैगजीन से आप क्या समझते हैं ? एक लेख लिखिए।	137
9.	ई–पत्रिकाओं का शिक्षा के क्षेत्र में क्या योगदान है ?	137
10.	एक अच्छी पत्रिका के लिए अनुच्छेद किस प्रकार लिखना चाहिये ?	137
11.	विद्यालयीन समाचार पत्र के प्रकाशन पर एक लेख लिखिए।	138
12.	लेख और आलेख में क्या अंतर है ?	139
13.	विद्यालय पत्रिका पर लेख लिखिए।	139
14.	रिपोर्ट लेखन से आप क्या समझते हैं ? रिर्पोट लेखन की विशेषताएँ बताइए।	140
15.	संपादकीय लेखन के अर्थ एवं विशेषताओं को समझाइए।	141
16.	लेखकला के विभिन्न सोपानों का वर्णन कीजिए।	141
17.	एक अच्छे सम्पादक में कौन–कौन से गुण होने चाहिए ?	143
18.	समाचार लेखन एक कला है। समाचार–पत्र को अत्यधिक प्रभावी एवं रुचिकर बनाने के लिए किन–किन तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।	143
19.	चिंतन की क्षमता से आप क्या समझते हैं ? इसका विकास किस प्रकार किया जा सकता है ?	144
20.	अनुच्छेद लेखन से आप क्या समझते हैं ? अनुच्छेद लेखन की विशेषताएँ एवं अनुच्छेद लिखते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?	145
21.	आमुख किसे कहते हैं ? आमुख के प्रकारों को समझाइए।	146
22.	अशुद्ध उच्चारण के कारणों को बताइए।	147
23.	अपनी रुचि के अनुसार किसी समकालीन विषय पर लेख लिखिए।	147
24.	कॉमिक स्ट्रिप क्या होती है ?	148
25.	किसी भी पढ़ी हुई कहानी की समीक्षा लिखिए।	148
26.	विद्यालयीन वार्षिक पत्रिका के महत्व को प्रतिपादित कीजिए।	151
27.	पाठ का सार क्या है ? इसका उपयोग शिक्षण में कैसे किया जाता है ?	152
28.	किसी एक प्रकार के पत्र का उदाहरण दीजिए।	152
29.	समाचार लेखन के मुख्य आयाम कौन–कौन से हैं ? किन्हीं चार पर प्रकाश डालिए।	153
30.	एक शिक्षक के गुण, उनकी कठिनाइयाँ एवं उन्हें दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए।	154
31.	पत्रकारिता लेखन के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व को विस्तार से वर्णन कीजिए।	156
32.	सम्पादकीय की सम्पूर्ण रचना प्रक्रिया को समझाइए।	158
33.	बच्चों की शिक्षा पर एक सम्पादकीय लिखिए।	159
34.	स्थानीय समाचार पत्र में अपनी रुचि के विकास पर एक लेख लिखिए।	160

●●●

इकाई 1

वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक लेखन से जुड़ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भाषा का अर्थ बताइए। **(ग्वालियर 2019)**

उत्तर—भाषा मनुष्य के लिए ईश्वर का अनोखा वरदान है। भाषा के बिना मनुष्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। भाषा के लिए कहा जाता है कि भाषा यदि प्रकृति की देन है तो निःसन्देह यह प्रकृति की अंतिम और सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसे प्रकृति ने केवल मनुष्य के लिए ही सुरक्षित कर रखा था। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु से बना है। जिसका अर्थ है, 'भाष् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् भाषा का अर्थ बोलना है। अंग्रेजी भाषा में 'भाषा' के लिए "लैंग्वेज" (Language) शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका सम्बन्ध लैटिन भाषा के शब्द 'लिंग्वा' (Lingua) चिन्ह से एवं फ्रांसीसी भाषा के शब्द 'लांग' (Langue-Language) से है। इस प्रकार लैंग्वेज शब्द बोली का वाचक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं, भाषा मनुष्य के विचार–विनिमय और भावों की अभिव्यक्ति का वह माध्यम है जिसमें व्यक्ति अपने को अभिव्यक्त करता है।

प्रश्न 2. भाषा की परिभाषाएँ लिखिए। **(ग्वालियर 2019)**

उत्तर—भाषा की परिभाषाएँ— भाषा की विभिन्न परिभाषाएँ पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों द्वारा इस प्रकार दी गई हैं—

(1) महर्षि पतंजलि (अष्टाध्यायी) के अनुसार— "जो वाणी में व्यक्त होती है, वही भाषा है।"

(2) क्षीर स्वामी के अनुसार— "जो भाषित की जाती है, उसे भाषा कहते हैं।"

(3) डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार— "जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार–विनिमय करता है, उनको समष्टि रूप से भाषा कहते हैं।"

(4) कामता प्रसाद के अनुसार— "भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली–भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टतया समझ सकते हैं।"

(5) स्वीट के अनुसार— "भाषा बोली हुई ध्वनियों के द्वारा मानवीय विचारों की मौलिक अभिव्यक्ति है।"

प्रश्न 3. भाषा की प्रकृति को समझाइए। **(ग्वालियर 2019)**

उत्तर—भाषा से अभिप्राय ध्वनि संकेतों की उस भाषा से है जो लिपिबद्ध होकर लिखित रूप धारण करती है। भाषा की प्रकृति इस प्रकार से हैं—

(1) भाषा सामाजिक सम्पत्ति है। (2) भाषा अर्जित सम्पत्ति है। (3) भाषा व्यवहार अनुकरण द्वारा अर्जित होती है। (4) भाषा का प्रवाह कठिन से सरल की ओर होता है। (5) भाषा परिवर्तनशील है। (6) भाषा का आरम्भ वाक्य से होता है। (7) भाषा और विचारों का अटूट सम्बन्ध है।

प्रश्न 4. भाषा का महत्व बताइए। **(ग्वालियर 2018)**

उत्तर—भाषा मानव समाज के विकास की आधारशिला है। यदि भाषा न होती तो आज दिख रही मनुष्य की चतुर्दिक अबाध प्रगति का कहीं नामोनिशान नहीं होता। भाषा के प्रयोग द्वारा प्रतीकों की ऐसी सुदृढ़ व्यवस्था अर्जित कर लेते हैं, जो ज्ञान को अक्षुण्ण रखने में सहायक होती है।

भाषा का महत्व—भाषा का प्रमुख महत्व निम्नलिखित हैं—

(1) भाषा भावाभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। (2) भाषा ज्ञान प्राप्ति का साधन है। (3) भाषा मानव संस्कृति व सभ्यता के विकास का साधन है। (4) भाषा मौलिक विचारों को संरक्षित करने का साधन है। (5) भाषा मानव विकास का मूल आधार है। (6) भाषा वैज्ञानिक विकास का आधार है। (7) भाषा आर्थिक विकास का आधार है। (8) भाषा राष्ट्रीय एकता का आधार है।

प्रश्न 5. पाठ्यक्रम का अर्थ बताइए।

उत्तर–पाठ्यक्रम शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Curriculum' शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। 'करीक्यूलम' शब्द लैटिन भाषा से अंग्रेजी भाषा में लिया गया है तथा यह लैटिन शब्द 'कुर्रेर' से बना है। 'कुर्रेर' का अर्थ है, "दौड़ का मैदान"। दूसरे शब्दों में, 'करीक्यूलम' वह क्रम है जिसे किसी व्यक्ति को अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचने के लिए पार करना होता है।

अतः पाठ्यक्रम वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षा व जीवन के लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। यह अध्ययन का निश्चित एवं तर्कपूर्ण क्रम है, जिसके माध्यम से शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का विकास होता है तथा वह नवीन ज्ञान व अनुभव को ग्रहण करता है।

प्रश्न 6. पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ बताइए।

उत्तर– पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ विभिन्न विद्वानों द्वारा निम्न प्रकार से दिए गये हैं–

(1) बबिट महोदय के अनुसार–"उच्चतर जीवन के लिए प्रतिदिन और चौबीस घण्टे की जा रही समस्त क्रियायें पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आ जाती हैं।"

(2) कनिंघम के अनुसार–"पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है, जिससे वह अपनी सामग्री (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपनी चित्रशाला (विद्यालय) में ढाल सके।"

(3) वेण्ट और क्रोनोबर्ग के अनुसार–"पाठ्यक्रम पाठ्यवस्तु का सुव्यवस्थित रूप है जो बालकों को आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तैयार किया जाता है।"

(4) फ्रोबेल के अनुसार–"पाठ्यक्रम सम्पूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।"

(5) डीवी के अनुसार–"सीखने का विषय या पाठ्यक्रम, पदार्थों, विचारों और सिद्धान्तों का चित्रण है जो निरंतर उद्देश्यपूर्ण क्रियान्वेषण से साधन या बाधा के रूप में आ जाते हैं।"

प्रश्न 7. पाठ्यक्रम की आवश्यकता को बताइए।

उत्तर–पाठ्यक्रम की आवश्यकता–पाठ्यक्रम की आवश्यकता इस प्रकार हैं–

(1) पाठ्यक्रम के द्वारा ही स्पष्ट किया जाता है कि विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर किस–किस विषय का ज्ञान छात्रों को दिया जायेगा। इस प्रकार पाठ्यक्रम से पाठ्य–सामग्री का निर्धारण होता है। (2) पाठ्यक्रम की सहायता से अध्यापक कक्षा शिक्षण के दौरान अपने शिक्षण लक्ष्यों से नहीं भटकता है। (3) पाठ्यक्रम की सहायता से छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन एक निश्चित समय के पश्चात् किया जा सकता है। (4) पाठ्यक्रम के निश्चित होने से अध्यापक को यह पता लगता है कि पूरे शिक्षण–सत्र के दौरान उसे किस कक्षा विशेष को क्या व कितना पढ़ाना है। (5) पाठ्यक्रम माता–पिता का मार्गदर्शन करता है।

प्रश्न 8. पाठ्यक्रम के महत्व को समझाइए।

उत्तर–शिक्षा की प्रक्रिया में पाठ्यक्रम का विशेष महत्व है। पाठ्यक्रम के अभाव में शिक्षण कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो पाता और न ही उनके उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए पाठ्यक्रम का महत्व शैक्षिक प्रक्रिया में केन्द्र बिन्दु के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके महत्व निम्नलिखित हैं–(1) शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक। (2) शिक्षण सामग्री के निर्धारण में सहायक। (3) चरित्र निर्माण में सहायक। (4) व्यक्तित्व के विकास में सहायक। (5) शिक्षण विधियों के निर्धारण में सहायक। (6) विशेष सामग्री के विभाजन में सहायक। (7) अनुसंधान एवं आविष्कार में सहायक। (8) तत्कालीन घटनाओं के ज्ञान में सहायक। (9) दर्शन और शिक्षा की प्रवृत्तियों को दर्शाने में सहायक। (10) नैतिक विकास में सहायक।

प्रश्न 9. पाठ्यक्रम में भाषा के महत्व को समझाइए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर–भाषा की शिक्षा सिर्फ भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होती। कोई भी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षा स्वतः ही भाषा की कक्षा भी होती है। किसी विषय को सीखने का अर्थ है,

उसकी शब्दावली सीखना, अवधारणाओं को समझना और उनके बारे में विवेचनात्मक चर्चा करना या लिखना। साथ–ही–साथ भाषा की शिक्षा कुछ अनोखे अवसर प्रदान करती है। कहानियाँ, कविताएँ, गीत और नाटक बच्चों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हैं और उन्हें अपने खुद के अनुभवों को समझने तथा दूसरों के प्रति संवेदनशील बनने में मदद करते हैं। इस प्रकार हर तरह के पाठ्यक्रम में भाषा का बहुत महत्व है।

प्रश्न 10. साहित्य से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–भाषा के माध्यम से अपने अंतरंग की अनुभूति, अभिव्यक्ति कराने वाली ललित कला 'काव्य' अथवा 'साहित्य' कहलाती है। साहित्य शब्द का विग्रह दो तरह से किया जाता है। सहित = स + हित = सहभाव अर्थात् हित का साथ होना ही साहित्य है। साहित्य शब्द अंग्रेजी के Literature का पर्यायी है जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द Letter से हुई है।

प्रश्न 11. साहित्य की परिभाषाएँ लिखिए।

उत्तर–विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई साहित्य की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

(1) अरस्तु के अनुसार–"साहित्य जीवन और जगत् का कलात्मक और भावनात्मक पुनः सृजन है।"

(2) हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– "साहित्य मनुष्य के अंतर का उच्छलित आनंद है जो उसके अंतर में अटाए नहीं अट सकता है। साहित्य का मूल कहीं आनंद का अतिरेक है। उच्छलित आनंद के अतिरिक्त से उद्भुत सृष्टि ही सच्चा साहित्य है।"

(3) महावीर प्रसाद द्विवेदी के अनुसार– "ज्ञान राशि के संचित कोष का नाम साहित्य है।"

(4) बालकृष्ण भट्ट के अनुसार– "साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है।"

(5) प्रेमचंद के अनुसार– "साहित्य जीवन की आलोचना है।"

प्रश्न 12. विधा क्या होती है ? साहित्य की विधाओं के नाम बताइए।

उत्तर–विधा का अर्थ है किस्म, वर्ग या श्रेणी अर्थात् विविध प्रकार की रचनाओं को उनके गुण, धर्मों के आधार पर अलग करना। साहित्य में विधा शब्द का प्रयोग एक वर्गकारक के रूप में किया जाता है। विधाएँ कई तरह की होती हैं। **उदाहरण**–साहित्य की विधाएँ एवं कविता की विधाएँ। गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं को निम्नलिखित दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है–

(1) गद्य की प्रमुख विधाएँ एवं (2) गद्य की लघु विधाएँ।

(1) गद्य की प्रमुख विधाएँ–निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी एवं उपन्यास।

(2) गद्य की लघु विधाएँ–रिपोर्ताज, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, आलोचना, रेखाचित्र, यात्रा वृतांत (यात्रा साहित्य), भेंटवार्ता, डायरी एवं पत्र–लेखन।

प्रश्न 13. गद्य क्या होता है ?

उत्तर–गद्य वह वाक्यबद्ध विचारात्मक रचना है, जिसमें हमारी चेष्टाएँ, हमारी कल्पनाएँ, हमारे मनोभाव और हमारी चिन्तनशील मनःस्थितियाँ सरलतापूर्वक अभिव्यक्त की जा सकती हैं।

प्रश्न 14. कौशल का अर्थ बताइए।

उत्तर–क्रियाओं के विशिष्ट समूह को कौशल कहते हैं। जिससे कार्य की सक्षमता में वृद्धि होती है। कार्य सम्पादन में विशिष्ट क्रियाएँ करनी होती हैं, उनकी प्रवीणता में कौशल की भूमिका अहम् होती है। किसी व्यवसाय की प्रवीणता का प्रदर्शन कौशल से किया जाता है। क्रियाओं से कौशल की पुनीति होती है।

प्रश्न 15. पठन कौशल से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–पढ़ने (पठन) का अर्थ है लिखित सामग्री से धारणाओं को गढ़ना, विचारों को आपस में जोड़ पाना और उन्हें स्मृति में रखना। पढ़ना एक समेकित प्रक्रिया है, इसमें अक्षरों की आकृतियाँ,

उनसे जुड़ी ध्वनियाँ, वाक्य–विन्यास, शब्दों और वाक्यों के अर्थ तथा अनुमान लगाने का कौशल शामिल है। पढ़ना एक सृजनात्मक कार्य है क्योंकि पढ़ने वाला सामने किसी बातों का हू–ब–हू उच्चारण नहीं करता है, बल्कि अपने अनुभवों से उनका अर्थ भी गढ़ता जाता है।

दूसरे शब्दों में, पढ़ना लिखित सामग्री से अर्थ निर्माण की प्रक्रिया है। यह एक अत्यन्त जटिल कौशल है। जिसमें अनेक प्रकार की क्षमताओं का निरंतर संवाद होता रहता है। पढ़ने की तुलना आर्केस्ट्रा की एक मधुर सिंफनि के साथ की जा सकती है, जिसमें कई वाद्य यंत्र एक साथ बजते हैं।

प्रश्न 16. पठन कौशल के उद्देश्य क्या हैं ?

उत्तर–पठन कौशल के प्रमुख उद्देश्य–निम्नलिखित हैं–(1) शब्द ध्वनियों का ज्ञान करवानां जिससे वाचन में शब्दों का उच्चारण शुद्ध रूप से कर सकें। (2) पठन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाना चाहिए। (3) पठन के माध्यम से विराम आदि चिन्हों का ज्ञान करवाना। (4) स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना। (5) आरोह तथा अवरोह का ऐसा अभ्यास करवाना जिससे भावों के अनुकूल स्वर में पढ़ पाए। (6) पढ़कर पठित वस्तु का भाव समझे तथा दूसरों को भी समझाने में सक्षम हो। (7) विद्यार्थियों के शब्द भंडार में वृद्धि करवाना। (8) आत्मविश्वास जाग्रत करना। (9) विद्यार्थियों में एकाग्रता, तत्परता एवं रुचि जाग्रत करना। (10) विद्यार्थियों को तीव्र गति से पठन का अभ्यास कराना।

प्रश्न 17. पढ़ने के कौशल के विकास में सृजनात्मक साहित्य के महत्व को समझाइए।

उत्तर–भाषा एवं पढ़ने के कौशल के विकास में साहित्य एक महत्वपूर्ण साधन है। पढ़ने के कौशल के विकास में सृजनात्मक साहित्य एक माध्यम व साधन का कार्य करता है। बच्चों में विस्तृत पठन के विकास में कहानी की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। कहानी पढ़ने में बच्चा न केवल आनंद का अनुभव करता है बल्कि स्वाभाविक रूप से भाषा का सम्प्रेषणात्मक रूप भी सीख लेता है। इसके अतिरिक्त शब्द भंडार में भी वृद्धि होती हैं। कहानी के माध्यम से छात्र उपयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग करना भी सीख जाता है। पढ़ने का कौशल, लिखने के कौशल में एक आधार का भी कार्य करता है। सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से बालक भाषा के व्याकरणीय रूप से भलीभाँति परिचित हो जाता है। उसका शब्दकोष विस्तृत एवं सक्रिय हो जाता है। सृजनात्मक अभिव्यक्ति सामान्य रूप की अभिव्यक्ति न होकर विशिष्ट अभिव्यक्ति है। जिससे पाठक की सौन्दर्य प्रियता की भावना को दृष्टि मिलती है।

प्रश्न 18. पठन–कौशल का महत्व बताइए। **(छिंदवाड़ा 2022)**

उत्तर– पठन–कौशल का महत्व–निम्नलिखित हैं–(1) पठन शिक्षा प्राप्ति में सहायक होता है। (2) पठन–कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है। (3) पठन–कौशल मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन है। (4) पठन–कौशल स्वाध्याय को बढ़ावा देता है। (5) आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए पठन का होना बहुत जरूरी है। (6) पठन–कौशल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

प्रश्न 19. वर्णन प्रविधि से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–वर्णन में छात्र किसी घटना, दृश्य, किसी स्थान आदि का विस्तार से वर्णन करता है। यह वह प्रविधि है, जिसके माध्यम से किसी विषय–वस्तु एवं घटना का छात्रों के सामने पूर्व शाब्दिक चित्र पेश किया जाता है, इसके माध्यम से किसी घटना, दृश्य तथा नियम एवं सिद्धांतों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जाता है। इस तरह वर्णन में रोचकता का समावेश हो जाता है एवं छात्र भाषा पर पर्याप्त अधिकार पा लेते हैं। वर्णन एक कला है तथा सजीव रोचक वर्णन करना एक दक्षता अथवा कौशल है।

प्रश्न 20. वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–वर्णन प्रविधि की विशेषताएँ–निम्नलिखित हैं–(1) इस प्रविधि में एक ही समय में ज्यादातर व्यक्तियों के सम्बन्ध में आँकड़े प्राप्त किये जाते हैं। (2) इस प्रविधि का सम्बन्ध किसी व्यक्ति

विशेष से नहीं होता बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से होता है। (3) इसमें किसी वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं किया जाता है, बल्कि समस्या समाधान के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान की जाती है। (4) इसमें सदैव स्पष्ट एवं परिभाषित समस्या पर ही कार्य किया जाता है। (5) इस प्रविधि की प्रकृति क्रॉस सेक्सनल की तरह होती है, इसलिए यह क्या है, को स्पष्ट करती है। (6) इस प्रविधि की एक महत्वपूर्ण विशेषता होती है कि इसे शाब्दिक एवं गणितीय सूत्रों में भी व्यक्त किया जा सकता है।

प्रश्न 21. वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय शिक्षक को किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? **(उज्जैन 2019)**

उत्तर–वर्णन प्रविधि का प्रयोग करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–(1) वर्णन करने से पहले शिक्षक को वर्णन की पूरी रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए एवं एक निश्चित क्रम में वर्णन करना चाहिए और वर्णन को एक तार्किक क्रम से पेश करना चाहिए। (2) वर्णन रोचक, मनोरंजक एवं आकर्षक शैली में किया जाना चाहिए। भाषा में सरलता, सहजता एवं शुद्धता का ध्यान रखना चाहिए। (3) वर्णन हमेशा प्रसंग के अनुसार करना चाहिए। (4) वर्णन में पूर्णता तथा व्यापकता होनी चाहिए। (5) वर्णन ऐसा करना चाहिए कि उसमें सजीवता–सी लगे एवं उसमें प्रत्यक्षता नजर आए। (6) आवश्यक उदाहरणों एवं दृश्य–श्रव्य सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रश्न 22. वर्णन प्रविधि की सीमाएँ बताइए।

उत्तर–वर्णन प्रविधि की सीमाएँ–निम्न हैं–(1) शिक्षक छात्रों की अपेक्षा अधिक सक्रिय होता है। (2) वर्णन न अधिक लम्बा और न अधिक बड़ा होना चाहिए। (3) इसका अधिक प्रयोग पाठ को नीरस बनाता है। (4) वर्णन की पर्याप्तता, यथेष्ठता तथा व्यापकता का निर्णय करने के लिए शिक्षक में सूझबूझ होना आवश्यक है।

प्रश्न 23. भाषा कौशल से आप क्या समझते हैं ? **(उज्जैन 2019, 22)**

उत्तर–भाषा एक अभिव्यक्ति का साधन है। अभिव्यक्ति का माध्यम कौशल होते हैं। भाषा विज्ञान तथा व्याकरण अभिव्यक्ति का सैद्धांतिक पक्ष होता है और भाषा कौशल अभिव्यक्ति का व्यावहारिक पक्ष होता है। व्यक्ति की संप्रेषण की सक्षमता भाषा कौशलों की दक्षता पर ही निर्भर होती है। भाषा की प्रभावशीलता का मानदण्ड बोधगम्यता होती है। जिन भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं, उन्हें कितनी सक्षमता से बोधगम्य कराते हैं यह भाषा कौशलों के उपयोग पर निर्भर होता है।

प्रश्न 24. विवरण प्रविधि की विशेषताओं को समझाइए।

उत्तर– विवरण प्रविधि की विशेषताएँ–निम्नांकित हैं–(1) विवरण प्रविधि के प्रयोग से छात्रों को इतना ज्ञान मिल जाता है कि उन्हें अलग से पुस्तकें पढ़ने की जरूरत नहीं होती है। (2) विवरण प्रविधि में शिक्षक छात्रों के सामने विवरण पेश करता है। प्रविधि के माध्यम से दिया गया विवरण छात्रों के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डालता है। (3) इस प्रविधि में विषय–वस्तु के प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डालकर उसकी पूर्णरूपेण समीक्षा की जाती है। (4) विवरण प्रविधि से छात्रों को पुस्तकों की बजाय कम समय में जरूरी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। (5) विवरण प्रविधि से छात्र बहुत रोचक एवं मितव्ययी ढंग से ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। (6) विवरण विधि छात्रों में जिज्ञासा पैदा करने में प्रभावशील भूमिका निभाती है। (7) विवरण विधि छात्रों की तार्किक शक्ति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। (8) प्रभावशाली ढंग से पेश किया गया विवरण छात्रों में ध्यानपूर्वक विषय–वस्तु को समझने की क्षमता विकसित करने में मददगार होता है।

प्रश्न 25. विद्यार्थियों में उच्चारण दोष के कारण लिखिए।

उत्तर–विद्यार्थियों में उच्चारण दोष के प्रमुख कारण निम्नांकित हैं–(1) लय और गति से उच्चारण न कर पाना। (2) स्वराघात व बलाघात के अनुसार उच्चारण न करना। (3) सभी वर्णों का

पूरा–पूरा उच्चारण न कर पाना। (4) क्षेत्रीयता, ग्रामीणत्व, बोली के प्रभाव में होने के कारण सही उच्चारण न कर पाना। (5) शारीरिक दोषों के कारण सही उच्चारण न करने के कारण। (6) वर्ण के शुद्ध उच्चारण के ज्ञान के अभाव के कारण।

प्रश्न 26. विवरण प्रविधि की सीमाएँ लिखिए।

उत्तर–विवरण प्रविधि की सीमाएँ–निम्नलिखित हैं–

(1) विवरण की भाषा यदि रोचक, बोधगम्य, शुद्ध और उपयुक्त नहीं है तो विवरण प्रविधि का महत्व धीरे–धीरे घटने लगता है। (2) विवरण प्रविधि का प्रयोग शिक्षक को अधिक सक्रिय बनाता है और छात्रों को केवल श्रोता। (3) विवरण की प्रासंगिकता एवं पर्याप्तता के बारे में निर्णय लेना शिक्षकों के लिए कभी-कभी काफी कठिन हो जाता है। (4) विवरण को प्रभावशाली बनाने के लिए यह आवश्यक है कि विवरण की रोचकता, ग्रहणशीलता तथा इसे प्रस्तुत करने की शैली पर पूरा ध्यान दिया जाए। (5) विवरण प्रविधि का अत्यधिक प्रयोग नहीं करना चाहिए अन्यथा पाठ नीरस लगने लगता है।

प्रश्न 27. भाषा में मौखिक आत्म–प्रकाशन के लाभ बताइए।

उत्तर–भाषा में मौखिक आत्म–प्रकाशन के लाभ निम्न हैं–(1) बच्चों की झिझक दूर हो जाती है। (2) विद्यार्थियों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। (3) व्यावहारिक कुशलता प्राप्त होती है। (4) भाव स्पष्टीकरण एवं क्षमता उत्पन्न होती है। (5) भाषा विषयक उच्चारण शुद्ध होता है।

प्रश्न 28. कहानी से आप क्या समझते हैं ? **(जबलपुर 2022)**

उत्तर–कहानी हिंदी साहित्य में गद्य लेखन की एक विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य साहित्य में एक नयी विधा का विकास हुआ, जिसे 'कहानी' के नाम से जाना जाता है। बंगला में इसे 'गल्प' कहा जाता है। मनुष्य के जन्म के साथ–साथ कहानी का भी जन्म हुआ और कहानी कहना तथा सुनना मानव का आदिम स्वभाव बन गया। हमारे देश में कहानियों की बड़ी लम्बी और सम्पन्न परम्परा रही है। वेदों, उपनिषदों में वर्णित 'यम–यमी', पुरुरवा–उर्वशी, संतकुमार–नारद, गंगावतरण जैसे आख्यान कहानी के ही प्राचीन रूप हैं।

दूसरे शब्दों में, कहानी साहित्य की वह गद्य रचना है। जिसमें जीवन के किसी एक पक्ष का कल्पना प्रधान, हृदयस्पर्शी एवं सुरुचिपूर्ण कथात्मक वर्णन होता है। यह मानव जीवन का वह खण्ड चित्र है, जिसकी कोई सीमा रेखा नहीं है और न ही किसी एक पक्ष की अनिवार्यता।

प्रश्न 29. कहानी की परिभाषा लिखिए। **(जबलपुर 2022)**

उत्तर–विभिन्न विद्वानों द्वारा कहानी की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

(1) मुंशी प्रेमचंद के अनुसार– "कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है, जितना रातभर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।"

(2) रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार–"नदी जैसे जल–स्त्रोत की धार है, वैसे ही कहानी प्रवाह है।"

(3) पंडित रामचंद्र शुक्ल के अनुसार–"कहानी साहित्य का वह रूप है, जिसमें कथा प्रवाह एवं कथोपकथन में अर्थ अपने प्राकृत रूप में अधिक विद्यमान रहता है।

(4) अज्ञेय के अनुसार– "कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है, जो उम्र भर मिलती है और समाप्त नहीं होती।"

प्रश्न 30. कहानी की विशेषताएँ बताइए। **(जबलपुर 2022)**

उत्तर–कहानी के निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–(1) उत्सुकतापूर्ण रहस्यात्मक शीर्षक। (2) सत्यम् शिवम् सुंदरम् से परिपूर्ण। (3) कहानी के संवाद छोटे, सरल एवं भावपूर्ण होने चाहिए। (4) कहानी में लोककल्याण के उपदेश सम्मिलित होने चाहिए। (5) कहानी में नैतिकता होनी चाहिए। (6) कहानी पाठकों के मानचित्र स्तरों के अनुकूल होनी चाहिए। (7) कहानी में उत्सुकता बनी रहनी चाहिए।

प्रश्न 31. कहानी शिक्षण के उद्देश्यों को लिखिए।

उत्तर—कहानी पढ़ाने अथवा सुनाने के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, नैतिक व अतिरिक्त विकास करना तथा उनका मनोरंजन करना। (2) विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति एवं स्मरण शक्ति का विकास करना। (3) विद्यार्थियों में सामाजिकता की भावना का विकास करना। (4) विद्यार्थियों में भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना। (5) विद्यार्थियों को यथार्थ और आदर्श जीवन व्यतीत करने की शिक्षा देना।

प्रश्न 32. उपन्यास का अर्थ बताइए।

उत्तर—उपन्यास शब्द 'उप' उपसर्ग और 'न्यास' पद के योग से बना है। जिसका अर्थ है, उप = समीप एवं न्यास = रखना, स्थापित रहना (निकट रखी हुई वस्तु) अर्थात् वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर पाठक को ऐसा लगे कि यह उसी की है, उसी के जीवन की कथा, उसी की भाषा में कही गई हैं। उपन्यास मानव जीवन की काल्पनिक कथा है।

प्रश्न 33. उपन्यास की परिभाषाएँ लिखिए।

उत्तर—विभिन्न विद्वानों द्वारा उपन्यास की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं—

(1) सम्राट मुंशी प्रेमचंद के अनुसार— "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना तथा उसके चरित्रों को स्पष्ट करना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"

(2) डॉ. भागीरथ मिश्र के शब्दों में—"युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की पूर्ण झाँकी को प्रस्तुत करने वाला गद्य ही उपन्यास कहलाता है।"

(3) बाबू गुलाबराय के शब्दों में—"उपन्यास कार्यकारण शृंखला में बंधा हुआ वह गद्य कथानक है, जिसमें वास्तविक व काल्पनिक घटनाओं द्वारा जीवन के सत्यों का उद्घाटन किया गया है।"

प्रश्न 34. उपन्यास के प्रकारों को बताइए।

उत्तर—उपन्यास के प्रकार—निम्न हैं—

1. सामाजिक उपन्यास—समाज की परम्परानुयायिनी घटनाओं को लक्ष्य में रखकर लिखे गए उपन्यास को सामाजिक, चरित्र–प्रधान अथवा व्यवहार–विषयक उपन्यास कहते हैं।

2. घटना प्रधान उपन्यास—उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा हैं। कथा काल्पनिक हो या वास्तविक उसमें घटनाएँ अवश्य होती है। जिस कथा में ये जिज्ञासा बनी रहती है— फिर क्या हुआ ? आगे क्या हुआ ? और अंत में क्या होगा ? ऐसे उपन्यास को घटना प्रधान उपन्यास कहते हैं जैसे चन्द्रकान्ता संसति आदि।

3. अंतरंग जीवन के उपन्यास—प्रादेशिक सीमाओं को संकुचित कर काल या समय की गति को ही प्रधानता देते हुए पात्रों के सुख–दुःख के अतिरंजित एक स्मृति मात्र बना देने वाले उपन्यास इस कोटि में आते हैं।

प्रश्न 35. उपन्यास शिक्षण के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—छात्राध्यापकों को उपन्यास शिक्षण सिखाने के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(1) छात्रों में स्वाध्याय की आदत डालना। (2) छात्रों को कथोपकथन की विभिन्न रीतियों से परिचित कराना। (3) छात्रों को द्रुतगति से मौन वाचन का अभ्यास कराना। (4) छात्रों को उपन्यास की कथावस्तु से परिचित कराना। (5) छात्रों को स्वस्थ मनोरंजन की ओर उन्मुख कराना। (6) छात्रों को कुशल अध्ययन की तकनीकियों को समझाकर उन पर अधिकार प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करना। (7) छात्रों को उपन्यास के पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का ज्ञान देना और उत्तम गुणों को स्वयं अपनाने की प्रेरणा प्रदान करना। (8) छात्रों को घटनाओं पर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के प्रभाव से परिचित कराना। (9) छात्रों को आत्मनिर्भर बनाना। (10) छात्रों को भाषा शैली के प्रचलित रूपों से परिचित कराना।

प्रश्न 36. काल्पनिक कथा से आप क्या समझते हैं ? **(छतरपुर 2018, 21)**

उत्तर–काल्पनिक कथा को अंग्रेजी भाषा में 'Fairy Tale' कहा जाता है। इसे कपोलकल्पना भी कहा जाता है। इसमें कथाओं में दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति, घटनाएँ और संदर्भ कुछ मात्रा में या पूरी तरह लेखक की कल्पना पर आधारित और वास्तविकता से हट के होते हैं। काल्पनिक कथा या काल्पनिक साहित्य को ख्याल या ख्याली साहित्य या कथा भी कहा जाता है।

प्रश्न 37. नाटकीय घटनाओं से आप क्या समझते हैं ? **(जबलपुर 2018)**

उत्तर–बच्चों को भाषा का ज्ञान प्रदान करने के लिए कुछ नाटकीय घटनाओं को भी मूल पाठों तथा अध्यायों में जोड़ना चाहिए। नाटकीय घटनाएँ जहाँ बच्चों में उत्सुकता उत्पन्न करती है वहीं वातावरण का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत करती है। नाटकीय घटनाएँ बहुत ही गम्भीर विषय को भी हल्के–फुल्के रूप में छात्रों को समझा देती हैं। सामाजिक समस्याएँ हों या राजनीतिक स्थितियाँ हों अथवा घरेलू समस्याएँ नाटकीय घटनाओं के माध्यम से छात्रों के मन मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ देती हैं। ऐसी घटनाएँ जिनके विषय छात्र के स्तर के अनुसार हों, उनका मूल अध्यायों में समावेश जहाँ बच्चों को साहित्य से परिचित कराता है, वहीं सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों, भेद–भाव के विषय में भी एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है।

प्रश्न 38. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए– **(जबलपुर 2016)**

(अ) सजीव वर्णन का कारण बताना, (ब) हास्यास्पद आवरण रहित कहानियों का निर्माण।

***अथवा*, सुनिर्मित हास्यात्मक चित्र कथाओं की कोई चार गुण लिखिए।**

उत्तर– (अ) सजीव वर्णन का कारण बताना–छात्रों को विषय–वस्तु से सम्बन्धित भावों में उतार–चढ़ाव, मुद्रा विन्यास, स्वर की आरोह–अवरोहकता बतानी चाहिए। वर्णन विधि में सभी बातें स्पष्ट नहीं हो पाती हैं अतः शिक्षक को ऐसा सजीव वर्णन छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए जिससे उनके मानस पटल पर सम्पूर्ण चित्र बन सके। इससे विषय–वस्तु का सांगोपांग विवेचन तथा प्रस्तुतीकरण समावेशित होता है। वर्णन के द्वारा विषय–वस्तु का सम्पूर्ण शाब्दिक चित्र छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। अच्छी तथा सजीव वर्णन शैली के लिए भाषा की सरलता तथा सुबोधता और स्पष्टता का होना अत्यन्त आवश्यक है। वर्णन किए गए विषय से तारतम्य स्थापित करने के लिए छात्रों की मानसिकता पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। वर्णन करने से पूर्व उसकी एक रूपरेखा बना लेना चाहिए और तार्किक क्रम में उसे प्रस्तुत करना चाहिए।

(ब) हास्यास्पद आवरण रहित कहानियों का निर्माण (छतरपुर 2021)–मूल पाठों में कुछ ऐसी कहानियों का निर्माण करके रखना चाहिए जो आवरण रहित अर्थात् सत्य को उजागर करने वाली हों। सत्य को उजागर करने वाली कहानियाँ अत्यन्त बोझिल तथा नीरस हो जाती हैं परंतु हास्य का पुट होने के कारण वे रोचक बनी रहती हैं तथा सत्य को उजागर कर देती हैं जिससे उनसे प्राप्त संदेश छात्रों तक पहुँच जाता हैं। हास्यास्पद नाटक और कहानियाँ शिक्षा प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम बनते जा रहे हैं, जिससे हँसी–हँसी में गम्भीर संदेश दिए जाते हैं और भाषण की बोझिलता से भी बचा जा सकता है। हास्यास्पद कहानियों को बच्चे बहुत रुचि से पढ़ते हैं तथा कार्टून आदि भी देखना पसंद करते हैं। ऐसी कहानियों के माध्यम से नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है।

प्रश्न 39. कविता के अर्थ को अपने शब्दों में परिभाषित कीजिए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर–कविता को हिन्दी साहित्य का ही एक अंग माना जाता है। कविता मानव की भावनाओं को प्रस्तुत करने का सर्वोत्तम माध्यम है जो बात व्यक्ति गद्य से नहीं कह पाता, वह कविता के माध्यम से कह सकता है। पद्य के माध्यम से कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति सहज में करता है। पद्य के अन्तर्गत भावना, कल्पना तथा बुद्धि तीनों पक्षों का समावेश होता है। पद्य में भाव तत्व प्रधान होता है। कल्पना तत्व के सम्बन्ध में कहा जाता है कि, "जहाँ न पहुँच सके रवि, वहाँ पहुँचे कवि" मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है, वही कविता है।

प्रश्न 40. कविता की परिभाषाएँ बताइए।

उत्तर– विभिन्न विद्वानों के द्वारा कविता की परिभाषा निम्न हैं–

(1) आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार– "जब मनुष्य प्रकृति के विविध रूपों और व्यापारों से ऊँचा उठकर अपने योग–क्षेम, हानि–लाभ, सुख–दुख आदि को भूलकर अपनी पृथक् सत्ता से छूटकर केवल अनुभूति मात्र रह जाता है, तब हम उसे मुक्त हृदय की इस मुक्ति साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।"

(2) श्री शम्भूनाथ के अनुसार– "मैं कविता को हृदय की बात हृदय तक पहुँचाने का माध्यम तथा साधन समझता हूँ।"

(3) महादेवी वर्मा के अनुसार– "कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण ही कविता है।"

प्रश्न 41. पात्र एवं चरित्र–चित्रण के सह–सम्बन्ध को समझाइए।

उत्तर–कहानी और उपन्यास में पात्र और उनके चरित्र–चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। एक अच्छा कहानीकार व उपन्यासकार अपनी कथावस्तु में घटनाओं और दृश्यों के अनुकूल ही पात्रों की रचना करता है तथा उनके चरित्र का विकास करता है।

बाबू गुलाबराय ने कहानी और उपन्यास में चरित्र–चित्रण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "आजकल कथानक को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जितना कि चरित्र–चित्रण और अभिव्यक्ति को।

प्रश्न 42. चरित्र–चित्रण से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–किसी नाटक, कथा आदि में आये पात्रों के रुचि, कार्यपद्धति आदि के बारे में सूचना देना उस पात्र का चरित्र–चित्रण कहलाता है। पात्रों का वर्णन करने के लिए अनेक कार्यों, वक्तव्य एवं विचारों आदि का सहारा लिया जाता है।

प्रश्न 43. कहानी एवं उपन्यास के पात्रों के महत्व को बताइए।

उत्तर–पात्र कहानी एवं उपन्यास के सजीव संचालक होते हैं। पात्रों के माध्यम से एक ओर कथानक का आरम्भ, विकास और अंत होता है, तो दूसरी ओर हम कहानी या उपन्यास में इनसे आत्मीयता प्राप्त करते हैं। जहाँ तक पात्रों के चयन का सम्बन्ध है। वे सर्वथा सजीव और स्वाभाविक होने चाहिए तथा पात्रों की अवधारणा कल्पना के धरातल से न होकर कहानीकार की आत्मानुभूति के धरातल से होनी चाहिए। उपन्यास या कहानी में पात्रों की भूमिका के आधार पर उन्हें तीन भागों में विभाजित किया जाता है। मुख्य, सहायक एवं सरल इस तरह के वर्गीकरण से कहानी के नायक तथा उसके सहयोगी या विरोधी पात्रों का चरित्रांकन किया जाता है। पात्रों के बिना उपन्यास और कहानी अधूरी मानी जाती है। किसी भी उपन्यास और कहानी का प्राण उसके पात्र ही होते हैं। पात्र ही कहानी या उपन्यास को जीवन्त बनाते हैं। पात्रों के बिना कहानी या उपन्यास अधूरी होती है।

प्रश्न 44. संवाद का अर्थ बताइए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर–संवाद 'वाद' मूल शब्द में 'सम्' उपसर्ग लगाने से 'संवाद' शब्द बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'बातचीत' है। इसे 'वार्तालाप' भी कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, दो लोगों के बीच होने वाली बातचीत को संवाद कहा जाता है। दो व्यक्तियों के बातचीत को 'वार्तालाप' अथवा 'संभाषण' अथवा 'संवाद' कहते हैं।

प्रश्न 45. संवाद लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–संवाद लेखन एक कला है। जब दो लोगों में हुई बातचीत को कलात्मक तरीके से लिखा जाता है, तो उसे संवाद लेखन कहा जाता है।

प्रश्न 46. संवाद लेखन की विशेषताएँ बताइए।

***अथवा*, संवाद से आप क्या समझते हैं ? संवाद की कोई पाँच विशेषताएँ लिखिये।**

(जबलपुर 2021)

उत्तर–**संवाद**–लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 44 एवं 45 का उत्तर देखिए।

संवाद लेखन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–(1) पात्रानुकूल भाषा होनी चाहिए। (2) शैली (बोलने का तरीका) प्रभावशाली होना चाहिए। (3) भाषा में जटिलता नहीं होना चाहिए। (4) एक शिक्षित और उसके साथ संवाद कर रहे अनपढ़ की भाषा में अंतर नजर आना चाहिए। (5) संवाद की भाषा में शालीनता अवश्य होनी चाहिए।

प्रश्न 47. किसी एक उदाहरण के माध्यम से संवाद लेखन को समझाइए। (ग्वालियर 2019)

उत्तर–दो दोस्तों के बीच जीवन लक्ष्य को लेकर संवाद लेखन का उदाहरण–

अनिल : "तुम दसवीं कक्षा के बाद कौन–सा विषय लेने की सोच रहे हो ?"

आदित्य : "मैं तो विज्ञान विषय पढ़ूँगा।"

आदित्य : "क्योंकि मैं बड़ा होकर एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ। तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है ?"

अनिल : "मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ।"

आदित्य : "एक डॉक्टर सब की सेवा करता है, लोगों के दुःख दर्द दूर करता है। मैं भी बड़े होकर बीमार लोगों की सहायता करना चाहता हूँ।"

अनिल : मैं विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करके उनके जीवन को उज्जवल बनाना चाहता हूँ। मेरे विचार में यह सबसे अच्छी मानव सेवा है।

प्रश्न 48. संवाद लेखन करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ग्वालियर 2015; जबलपुर 18)

***अथवा*, संवाद लेखन के समय ध्यान देने योग्य बातों का उल्लेख कीजिए। (छतरपुर 21, 22)**

उत्तर–संवाद लेखन करते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(1) पात्रों की बातचीत में संक्षिप्तता हो। (2) विचारों में प्रवाह, स्वाभाविकता हो तथा परस्पर संबद्धता हो। (3) विरामचिन्ह की तथा अन्य व्याकरण अशुद्धियाँ न हों। (4) वार्तालाप के अंत में निश्चित परिणाम अवश्य निकलें। (5) प्रचलित मुहावरों का यथात्मक प्रयोग हो। (6) संवाद की भाषा सरल और बोलचाल की हो।

प्रश्न 49. अच्छे संवाद लेखन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर–अच्छे संवाद लेखन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(1) संवाद में प्रवाह, क्रम और तर्कसम्मत विचार होना चाहिए। (2) संवाद देश, काल, व्यक्ति और विषय के अनुसार लिखा होना चाहिए। (3) संवाद सरल भाषा में लिखा जाना चाहिए। (4) संवाद में जीवन की जितनी अधिक स्वाभाविकता होगी, वह उतना ही अधिक सजीव, रोचक और मनोरंजक होगा। (5) संवाद का आरम्भ और अंत रोचक होना चाहिए।

प्रश्न 50. संवाद को अन्य किन नामों से जाना जाता है ?

उत्तर–संवाद को वार्तालाप, आलाप, संलाप, कथोपकथन, गुफ्तगु, सम्भाषण आदि नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 51. व्याख्या से आप क्या समझते हो ?

उत्तर–'व्याख्या' किसी भाव या विचार के विस्तार और विवेचन को कहते हैं। व्याख्या वह माध्यम है, जिसमें विषय–वस्तु के कठिन अंशों का सरल भाषा में, छात्रों के मानसिक रुचि/स्तर के अनुकूल, गहराई के साथ विश्लेषण करके इस प्रकार समझाया जाता है, जिससे विषय–वस्तु उन्हें अधिक स्पष्ट, सुगम तथा बोधगम्य होने लगे।

प्रश्न 52. व्याख्या कौशल से आप क्या समझते हैं ?

***अथवा*, व्याख्या से आप क्या समझते हैं ? समझाइये। (भोपाल 2022)**

उत्तर–कौशल मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं की क्रमबद्ध और समन्वित प्रणाली होता है। शिक्षण अधिगम प्रतिक्रिया में बहुत से तथ्य संप्रत्यय नियम अथवा सिद्धान्त ऐसे होते हैं जिन्हें अच्छी तरह करना और बोधगम्य बनाने हेतु उनकी व्याख्या करना आवश्यक हो जाता है। इस दृष्टि से

व्याख्या कौशल का अर्जन एक अध्यापक के लिए काफी जरूरी है। दूसरे शब्दों में, किसी घटना, संप्रत्यय, सिद्धान्त या तथ्य को, किसी व्यक्ति को समझाने की दृष्टि से कई परस्पर सम्बन्धित कथनों का प्रयोग करना पड़ता है, यही व्याख्या है।

प्रश्न 53. व्याख्या कौशल के उद्देश्य को लिखिए।

उत्तर—व्याख्या कौशल के उद्देश्य—निम्न हैं—(1) कक्षा में छात्रों की तर्कशक्ति का विकास करना। (2) छात्रों को कम समय में अधिक विषय—वस्तु बतलाना। (3) छात्रों में रुचि उत्पन्न करना। (4) छात्रों में चिन्तन एवं कल्पनाशक्ति का विकास करना। (5) पाठ्य—वस्तु को सरल, सहज भाषा में बोधगम्य बनाना।

प्रश्न 54. व्याख्या कौशल की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर—व्याख्या कौशल की विशेषताएँ निम्न हैं—(1) व्याख्या छात्रों के पूर्व ज्ञान, रुचि तथा कक्षा स्तर के अनुकूल होना चाहिए। (2) भाषा सरल एवं स्पष्ट होना चाहिए। (3) भाषा विषय—वस्तु पर आधारित होना चाहिए। (4) इस विधि में उच्चारण, मधुर तथा स्पष्ट होनी चाहिए। (5) व्याख्या बहुत ज्यादा लम्बी तथा उबाने वाली नहीं होनी चाहिए। (6) यह निरंतर छात्रों की उत्सुकता में वृद्धि करने वाली होनी चाहिए। (7) व्याख्या क्रमबद्ध रूप में की जानी चाहिए।

प्रश्न 55. व्याख्या कौशल के महत्व को बताइए।

उत्तर— व्याख्या कौशल—व्याख्या कौशल के प्रमुख महत्व इस प्रकार हैं—

(1) यह उच्च कक्षा के लिए उपयोगी होती है। (2) यह शिक्षक के लिए सरल, संक्षिप्त तथा आकर्षक होती है। (3) इस कौशल के प्रयोग से छात्रों में तर्क, चिंतन तथा कल्पनाशक्ति का विकास होता है। (4) कम समय में अधिक—से—अधिक सूचनाओं को छात्रों तक पहुँचाया जा सकता है। (5) अधिक—से—अधिक संख्या में छात्र इसे सुनकर नोट कर सकते हैं। (6) इसके प्रयोग से छात्रों में ध्यान केन्द्रित करने की आदत पड़ती है। (7) इसके द्वारा किसी प्रकरण के प्रस्तुतीकरण को अधिक प्रभावशील बनाया जा सकता है। (8) इसमें शिक्षक को सदैव क्रियाशील रहना पड़ता है। (9) इसमें शिक्षक सदैव अध्ययनशील रहता है। (10) शिक्षक व्याख्या देते समय बहुत—सी नई बातें छात्रों को बता देते हैं, जो बालकों के भावी जीवन में उपयोगी सिद्ध होती हैं।

प्रश्न 56. दृश्य लेखन से आप क्या समझते हैं ? **(छतरपुर 2017)**

उत्तर—दृश्य लेखन अर्थात् किसी धारावाहिक, नाटक आदि के लिए एक सीन लिखना। दूसरे शब्दों में, किसी दृश्य में दिलाए जाने वाले दृश्यों, पात्रों के संवादों या अन्य होने वाली क्रियाओं का लिखित रूप तैयार किया जाता है तो उसे दृश्य लेखन कहते हैं। दृश्य किसी भी फ़िल्म, धारावाहिक या वृत्तचित्र की इकाई हैं। अत: किसी भी दृश्य की संक्षिप्त व रोचक शैली में भाषा कौशल, कल्पना शक्ति, शब्दों पर अधिकार आदि के आधार पर लिखित प्रस्तुति ही दृश्य लेखन है।

प्रश्न 57. दृश्य लेखन की विशेषताओं को लिखिए। **(छतरपुर 2017)**

उत्तर—दृश्य लेखन की विशेषताएँ निम्न हैं—

(1) दृश्य लेखन अत्यंत संक्षिप्त होना चाहिए। (2) दृश्य लेखन की शब्दावली को वर्तमान काल में घटित होते हुए प्रस्तुत करना चाहिए। (3) 'कट' अथवा 'कट टू' का सम्बोधन दृश्य की समाप्ति पर दिया जाना चाहिए। (4) दृश्य लेखन की शब्दावली को वर्तमान काल में घटित होते हुए प्रस्तुत करना चाहिए।

प्रश्न 58. दृश्य लेखन के तत्वों को बताइए।

उत्तर—किसी भी दृश्य को लिखते समय चार चीजों (तत्वों) को ध्यान में रखा जाता है। दृश्य संख्या, समय, स्थान और पात्र। इनके आधार पर ही दृश्यों की संरचना होती है।

प्रश्न 59. दृश्य लेखन और संवाद लेखन में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—संवाद लेखन में केवल पात्रों के बीच आपसी बातचीत होती है। जबकि दृश्य लेखन में

घटनास्थल के विस्तृत वर्णन के साथ पात्रों के बीच संवाद स्थापित किए जाते हैं। संवाद लेखन, दृश्य लेखन का ही एक भाग है।

प्रश्न 60. दृश्यों के प्रकारों को बताइए। (छतरपुर 2018)

उत्तर—दृश्य दो प्रकार के होते हैं—

पहला दृश्य—जिसमें विजुअल प्रधान होता है। इसमें पात्रों के संवाद नहीं होते केवल घटना घटती हुई दिखाई जाती है।

दूसरा दृश्य—दूसरे प्रकार के दृश्य वे होते हैं जिनमें संवादों की प्रधानता होती है। इसमें एक या अधिक पात्र बोलते हुए दिखाई देते हैं। संवाद के एक दृश्य की अवधि तीन से चार मिनट तक की होती हैं।

प्रश्न 61. निबंध से आप क्या समझते हैं ? (छतरपुर 2017)

उत्तर—निबंध शब्द 'नि + बंध' से बना है, जिसका अर्थ अच्छी तरह से बंधा हुआ है। इसे अंग्रेजी में 'Essay' कहा जाता है। ऐसे शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी के फ्रांसीसी शब्द के एसाई (Esai) के अनुकरण पर हुई है। जिसका अर्थ 'प्रयास, प्रयत्न या परीक्षण' है। निबंध एक ऐसी रचना है, जिसमें विषय विशेष पर व्यक्ति अपने विचार सुनियोजित विधि से लिखित रूप में अभिव्यक्त करता है। दूसरे शब्दों में, निबंध उस गद्य–रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।

प्रश्न 62. भाषा पारिस्थितिकी या भाषाई पारिस्थितिकी से आप क्या समझते हैं ?

***अथवा,* बहुभाष्यता का अर्थ बताते हुए भाषा पारिस्थितिकी को समझाइए।** (ग्वालियर 2021)

उत्तर—बहुभाष्यता का अर्थ—लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 72 का उत्तर देखें।

भाषाई पारिस्थितिकी एक–दूसरे के संबंध में और विभिन्न सामाजिक कारकों के संबंध में भाषाओं का अध्ययन है। यह भाषा पारिस्थितिकी या पारिस्थितिक विज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। भाषा विज्ञान की इस शाखा का नेतृत्व प्रोफेसर **एइनर हौगेन** (Einar Haugen) ने अपनी पुस्तक "द इकोलॉजी ऑफ लैंग्वेज" (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1972) में किया था। हौगेन ने भाषा पारिस्थितिकी को किसी भी भाषा और उसके पर्यावरण के बीच बातचीत के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है। 'भाषा पारिस्थितिकी', 'भाषा परिवार' की तरह, जीवित प्राणियों के अध्ययन से प्राप्त एक रूपक है। यह विचार है कि कोई भी भाषाओं का अध्ययन कर सकता है, क्योंकि एक व्यक्ति अपने वातावरण के साथ और उसके भीतर जीवों के अंतर्संबंधों का अध्ययन करता है।

दूसरे शब्दों में, भाषाई पारिस्थितिकी या भाषा पारिस्थितिकी इस बात का अध्ययन है कि भाषाएँ एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत करती है और वे किस स्थान पर बोली जाती है।

प्रश्न 63. भाषा या हिन्दी भाषा या हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों को बताइए। (ग्वालियर 2021)

उत्तर—भाषा/हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य निम्न हैं—(1) बालकों के शब्दों, वाक्यांशों तथा लोकोक्तियों आदि के कोष में वृद्धि करना। (2) विद्यार्थियों को शुद्धता एवं गति का निरंतर विकास करते हुए वचन का अभ्यास कराना। (3) विभिन्न शैलियों का परिचय कराकर अपने उपयुक्त शैली के विकास में सहायता करना। (4) बालकों को पुस्तकों में निहित ज्ञान भण्डार का अवलोकन, मनोरंजन के लिए पढ़ना, गद्य, पद्य में निहित भावों को समझना। (5) बालकों की मातृभाषा साहित्य का रसास्वादन करने योग्य बनाना। (6) बालकों की स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करना। (7) शुद्ध बोलना, लिखना एवं सीखाना। (8) बालकों के शब्दों, वाक्यांशों तथा लोकोक्तियों के कोष में वृद्धि करना।

प्रश्न 64. साहित्य के प्रकारों को समझाइए।

उत्तर—साहित्य के प्रकार—इनके निम्न तीन प्रकार हैं—

(1) सूचनात्मक साहित्य, (2) विवेचनात्मक साहित्य एवं (3) रचनात्मक साहित्य।

(1) सूचनात्मक साहित्य–इसके अंतर्गत वे पुस्तकें आती है जिनसे हमें बहुत–सी नवीन सूचनाएँ प्राप्त होती है।

(2) विवेचनात्मक साहित्य–जानकारी बढ़ाने के अलावा हमारी बोधन शक्ति को भी निरंतर जागरूक व सचेष्ट बनाए रखने वाली पुस्तकों को विवेचनात्मक साहित्य कहा जाता है। इसके अंतर्गत विज्ञान, समाजिक विज्ञान, गणित, दर्शन, तर्कशास्त्र, इतिहास आदि तमाम ज्ञान विधाएँ इसी श्रेणी में आती है।

(3) रचनात्मक साहित्य–यह साहित्य शब्द का विशिष्ट अर्थ है, जिसे सृजनात्मक/रागात्मक/रसात्मक साहित्य भी कहते हैं। इसके अंतर्गत कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास आदि आते हैं।

प्रश्न 65. "भाषा प्रयोग एक कौशल है।" इस कथन को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
(उज्जैन 2021)

उत्तर–भाषा प्रयोग एक कौशल है। यह एक कला है। किसी भी कला का सीखना आसान कार्य नहीं हैं। किसी कला को सीखने के लिए निरंतर अभ्यास व लगन की आवश्यकता होती है। वैसे भाषा अनुकरण से काफी हद तक सीखी जा सकती है। परंतु अनुकरण द्वारा सीखने में बालक में उतनी क्षमता, योग्यता तथा भाषा प्रयोग में प्रवीणता नहीं आती। भाषा एक कला है। हर व्यक्ति भाषा का प्रयोग कुशलतापूर्वक नहीं कर सकता। इस कला को सीखने के लिए निरंतर अभ्यास व लगन की आवश्यकता होती है। इस कला को सीखने के लिए भी अन्य कलाओं के समान प्रयास करना पड़ता है। भाषा को अभ्यास से अधिकांशतः सीखा जाता है। भाषा कौशल का एक महत्वपूर्ण बिंदु है– प्रभावशाली वाक्यों की रचना करना। भाषा कौशल में शब्द भण्डार इतना विशाल होना चाहिए कि बोलते समय उपयुक्त शब्द अपने आप वाक्य रचना का गठन करते चले तथा शुद्ध व प्रभावशाली वाक्य रचना हो और अशुद्ध वाक्य रचना से बचने का प्रयास किया जाये। इसके साथ ही शुद्ध उच्चारण द्वारा भी भाषा सीखी जाती है। बोलने व पढ़ने में कोई गलती न हों। लिखना भी प्रयत्न से आता है। बालक शुद्ध व स्पष्ट, सुंदर लेख लिखना सीख जाये। लिखना भी एक कला है। अतः यह कहा जा सकता है कि भाषा प्रयोग एक कौशल है व एक कला है। वास्तव में दक्षता प्राप्त करना ही भाषा–कौशल है।

प्रश्न 66. एक आदर्श वार्तालाप की विशेषताएँ बताइए। **(उज्जैन 2021)**

उत्तर–वार्तालाप की विशेषताएँ–एक स्वस्थ वार्तालाप की निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए–

(1) वार्तालाप में वाद–विवाद और बहस की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। (2) वार्तालाप में माधुर्य व शालीनता होनी चाहिए। (3) परस्पर धैर्यपूर्वक सामने वाले की बात को सुनने का अभ्यास होना चाहिए। (4) वार्तालाप की भाषा में गतिशीलता और प्रवाह होना चाहिए। (5) वार्तालाप में हाव–भाव के अनुसार विचारों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। (6) वार्तालाप के दौरान शिष्टाचार का प्रयोग होना चाहिए। (7) वार्तालाप के दौरान भाव और अर्थ पूर्णतः स्पष्ट होना चाहिए, द्विअर्थी भाषा का प्रयोग नहीं होना चाहिए। (8) वार्तालाप की भाषा व्याकरण द्वारा शुद्ध होनी चाहिए।

प्रश्न 67. भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य बताइए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–भाषा शिक्षण के सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं–

(1) शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली भाषा में छात्र अपने भावों, विचारों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति कर सकें। (2) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे उचित भाव व भंगिमाओं के साथ वचन करके काव्य, कला एवं अभिनय कला का आनंद प्राप्त कर सके। (3) बालकों के शब्दों, वाक्यांशों तथा लोकोक्तियों आदि के कोष में वृद्धि करना। (4) विद्यार्थियों को शुद्धता एवं गति का निरंतर विकास करते हुए वचन का अभ्यास कराना। (5) विभिन्न शैलियों का परिचय कराकर अपने उपयुक्त शैली के विकास में सहायता करना।

प्रश्न 68. भाषा और संस्कृति के बीच सह–संबंध को बताइए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–भाषा समाज में मानव जीवन के हर पहलू के साथ अंतः क्रिया करती है और इसे तभी समझा जा सकता है, जब इसे समाज के संबंध में माना जाए। संस्कृति हमारे मूल्यों, परम्पराओं और अंतः क्रिया के तरीके को प्रभावित करती है, जबकि भाषा उन अंतः क्रियाओं को सुगम बनाती है। भाषा कोई भी हो, वह संस्कृति का हिस्सा होती है। भाषा और संस्कृति के बीच एक गहरा–सा संबंध है। वास्तव में भाषा एक संस्कृति है, उसके भीतर भावनाएँ, विचार और सदियों की जीवन पद्धति समाहित होती है। मातृभाषा ही परम्पराओं और संस्कृति को जोड़े रखने की एक मात्र कड़ी है। भाषा के द्वारा ही समाज और संस्कृति का मूल्यांकन होता है। संस्कृति और भाषा से ही मनुष्य के सामाजिक स्तर का पता चलता है। बिना समाज के संस्कृति की सत्ता असंभव है और भाषा संस्कृति की सत्ता के लिए अनिवार्यता है। भाषा संस्कृति के अनुरूप ही बनती–संवरती है। समाज और संस्कृति का महत्व भाषा के संदर्भ में ही स्थापित होता है। भाषा का प्रयोग हमें समाज और संस्कृति की संरचना का परिचय देता है।

प्रश्न 69. सुनने की योग्यता का विकास कैसे करेंगे ? **(जबलपुर 2021)**

उत्तर–भाषा की शिक्षा के अंतर्गत सुनने का अर्थ है–बोधपूर्वक श्रवण करना। केवल ध्वनि संकेतों के श्रवण ही सुनने की योग्यता के अंतर्गत मात्र नहीं है वरन् ध्वनि संकेतों के श्रवण के साथ–साथ उनका अर्थग्रहण भी सुनने की योग्यता का अविभाज्य अंग माना जाता है। उच्च तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सुनने की योग्यता के समुचित विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। सुनने की योग्यता का विकास संवाद, कहानी, कथन, कविता, पाठ आदि विधियों के माध्यम से करा सकते हैं।

प्रश्न 70. लेखन शैली से आप क्या समझते हैं ? **(जबलपुर 2021)**

उत्तर–लेखन शैली से तात्पर्य एक ऐसी रचना से है जिसमें वह (रचना) किसी अन्य के लिखे का अनुवाद न हो या नकल न हो। मौखिक लेखन शैली किसी को सिखायी नहीं जा सकती और न ही इसका अनुकरण किया जा सकता है। हर लेखक जो भी लिखता है, वह उसकी अपनी ही एक शैली होती है। किसी की भी शैली उत्तम शैली के रूप में मान्य नहीं हो सकती है, क्योंकि हर लेखक हमेशा अपनी लेखन शैली में सुधार करता ही रहता है।

दूसरे शब्दों में, वाक्य रचना का वह विशिष्ट प्रकार है जो लेखक की भाषा संबंधी निजी विशेषताओं का सूचक होता है। **उदाहरण**–हर एक लेखक की अपनी अलग लेखन शैली होती है।

प्रश्न 71. मौखिक लेखन शैली से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर–मौखिक लेखन से तात्पर्य–लेखक की अपनी उद्ववाना से निकले शब्द, जो लेखक की मनोदशाओं और उसकी स्व–अनुभूति से रचित हो। वह रचना किसी अन्य के लिखे का अनुवाद न हो या नकल न हो। मौलिक लेखन शैली किसी को सिखायी नहीं जा सकती और न ही इसका अनुकरण किया जा सकता है। हर लेखक जो भी लिखता है, वह उसकी अपनी ही एक शैली होती है।

प्रश्न 72. बहुभाषावाद क्या है ? **(भोपाल 2022)**

उत्तर–बहुभाषावाद या बहुभाषिता से तात्पर्य एक से अधिक भाषाओं के प्रयोग से हैं। किसी व्यक्ति अथवा समुदाय द्वारा दो या दो–से–अधिक भाषाओं का प्रयोग बहुभाषिता कहलाता है।

दूसरे शब्दों में, बहुभाषी का अर्थ ऐसे व्यक्ति से है जो दो या दो–से–अधिक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करता है।

हौगेन के अनुसार–"दो भाषाओं के ज्ञान की स्थिति द्विभाषिक है, वैसे तो बहुत–सी भाषाओं को जानने वाले को बहुभाषिक कहते हैं।"

ब्लूम फील्ड के अनुसार–"बहुभाषिकता की स्थिति तब पैदा होती है, जब व्यक्ति किसी ऐसे समाज में रहता है। जो उसकी मातृभाषा से अलग भाषा बोलता है और उस समाज में रहते हुए वह उस अन्य भाषा में इतना पारंगत हो जाता है कि उस भाषा का प्रयोग मातृभाषा की तरह कर सकता है।"

प्रश्न 73. क्रिया गतिविधि आधारित शिक्षण विधि क्या है ? **(भोपाल 2022)**

***अथवा*, क्रिया आधारित पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।**

उत्तर–क्रिया गतिविधि का अर्थ–छात्र का अपनी स्वयं की क्रिया के द्वारा ज्ञान प्राप्त करना। छात्र की क्रिया से तात्पर्य है कि, जिस क्रिया को छात्र किसी उद्देश्य से पूर्ण करता है। उसको पूर्ण करने में इसका शरीर और मस्तिष्क दोनों ही क्रियाशील रहते हैं। उन सभी क्रियाओं के द्वारा जिसमें बच्चे रुचिपूर्वक जिज्ञासा को लगन तथा मनोयोग से सक्रिय रहकर कार्य करते हुए सीखते हैं, **गतिविधि** कहलाती है। गतिविधि से तात्पर्य उन सभी विषयों से हैं, जिनकी सहायता से शिक्षक के द्वारा विषय–वस्तु को कक्षा में रोचक एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाये ताकि बच्चें उसमें रुचि लें।

प्रश्न 74. कथेत्तर लेखन से आप क्या समझते हैं ? **(भोपाल 2022)**

उत्तर–साहित्य के दो भेद हैं–गद्य तथा पद्य। अध्ययन की सुविधा हेतु समीक्षकों ने गद्य साहित्य का विभाजन दो मुख्य भागों में किया है। जैसे–कथनपरक साहित्य और कथेत्तर साहित्य। जिन साहित्य विधाओं के अंतर्गत कथाएँ आती हैं उन साहित्य विधाओं को कथनपरक साहित्य की श्रेणी में रखा जाता है और जो साहित्य विधाएँ कथा–वस्तु या कथा के अलावा होती है, उन्हें कथेत्तर साहित्य के वर्ग में रखा जाता है। आधुनिक युग में गद्य साहित्य में कथेत्तर साहित्य की अपनी अलग पहचान और अलग नियम है। इस साहित्य का उद्भव, विकास और प्रचार–प्रसार आधुनिक काल में ही हुआ है। कथेत्तर गद्य साहित्य में निबंध, संस्मरण, डायरी, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा वर्णन और रिपोर्ताज आदि को रखा जाता है। आधुनिक युग में नवजागरण काल में कथेत्तर साहित्य का विकास अपनी चरम सीमा पर पहुँचा है।

दूसरे शब्दों में, कथेत्तर लेखन या साहित्य, साहित्य की वह शाखा है जिसमें दर्शाए गए स्थान, व्यक्ति, घटनाएँ और संदर्भ पूर्णतः वास्तविकता पर ही आधारित होते हैं। कपोलकल्पना का इसमें कोई स्थान नहीं होता हैं। अंग्रेजी में कथेत्तर साहित्य को 'नॉन–फिक्शन' (Non-fiction) कहते हैं।

प्रश्न 75. बहुभाषा से आप क्या समझते हैं ? **(भोपाल 2022)**

उत्तर–बहुभाषा, बहुभाषावाद या बहुभाषिता से तात्पर्य एक से अधिक भाषाओं के प्रयोग से हैं। किसी व्यक्ति अथवा समुदाय द्वारा दो या दो–से–अधिक भाषाओं का प्रयोग **बहुभाषिता** कहलाता है। यह बहुभाषिता विभिन्न स्तर पर हो सकती है। कुछ लोग लिखने, बोलने या पढ़ने में दो या दो–से–अधिक भाषाओं का प्रयोग कर लेते हैं, भले ही भाषाओं के दक्षता में बहुत अंतर हो। इसी प्रकार कुछ लोग अंग्रेजी या कोई अन्य भाषा बोले जाने पर उसका अर्थ भी समझ लेते हैं, परंतु वे स्वंय नहीं बोल पाते। यह सभी बहुभाषिता के अंतर्गत आता है। ऐसे सभी लोग बहुभाषिक है जो एक से अधिक भाषाओं को सुनकर समझने, बोलने, पढ़ने या लिखने में से किसी भी स्तर पर अपनी दक्षता रखते हैं।

प्रश्न 76. एन.सी.एफ. ने 2005 में पाठ्यक्रम से परे भाषा पर क्या कहा है ? (भोपाल 2022)

उत्तर–एन.सी.एफ. ने 2005 में भाषा के लिए कहा है–भाषा शिक्षण का उद्देश्य अब केवल सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। वह भाषा दक्षता के मामलें में ज्यादा समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने की बात करता है। उसके अनुसार शिक्षार्थी को, जो कुछ कहा गया है उसे समझने के लिए उसमें वक्ता की ओर से आने वाले विभिन्न गैर–शाब्दिक संकेतों को ग्रहण करने की क्षमता होनी चाहिए। समझ के साथ पढ़ने तथा विवेचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होना चाहिए। शिक्षार्थी में अपने विचार सहज एवं व्यवस्थित ढंग से प्रकट करने का आत्मविश्वास पैदा होना चाहिए। विद्यालय के विषयों के अतिरिक्त विद्यार्थी को विभिन्न प्रयोजनों में प्रयोग की जाने वाली

विभिन्न भाषाओं को समझने और उनके प्रयोग में भी दक्ष होना चाहिए। भाषा की कक्षा में एक विद्यार्थी को अपनी कल्पना और सृजनात्मकता विकसित करने के लिए पर्याप्त स्थान मिलना चाहिए। बच्चों में अपने देश, समाज, संस्कृति तथा लोगों के प्रति संवेदनशीलता का भाव पैदा होना चाहिए। एन.सी.एफ.–2005 में भाषा का आधार पत्र पहले ही पृष्ठ में कहता है–"पर्याप्त अवसर मिले तो बच्चा नयी भाषाओं को आसानी से सीखेगा, शिक्षण का फोकस व्याकरण पर न होकर विषय–वस्तु पर होना चाहिए।"

प्रश्न 77. वर्णन और विवरण प्रविधि में अंतर बताइए।

(जबलपुर 2021, 22; उज्जैन 22; छतरपुर 22)

उत्तर–वर्णन प्रविधि–(1) वर्णन प्रविधि में एक ही समय में ज्यादातर व्यक्तियों के संबंध में आँकड़े प्राप्त किये जाते हैं। (2) इस प्रविधि का संबंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता, बल्कि संपूर्ण जनसंख्या से होता है। (3) वर्णन प्रविधि में वैज्ञानिक नियम का निर्धारण नहीं किया जाता हैं, बल्कि समस्या समाधान के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्रदान की जाती है। (4) वर्णन प्रविधि में सदैव स्पष्ट एवं परिभाषित समस्या पर ही कार्य किया जाता है। (5) वर्णन प्रविधि में शाब्दिक एवं गणितीय सूत्रों में भी व्यक्त किया जा सकता है।

विवरण प्रविधि–(1) वर्णन प्रविधि के साथ–साथ ही विवरण प्रविधि भी चलती है। विवरण प्रविधि में विषय–वस्तु के प्रत्येक पक्ष पर प्रकाश डालकर उसकी पूर्णरूपेण से समीक्षा की जाती है। (2) इस प्रविधि का संबंध व्यक्ति विशेष से होता है। (3) विवरण प्रविधि में वैज्ञानिक नियम होते हैं। इसमें शिक्षक छात्रों के सामने ऐसा विवरण प्रस्तुत करते हैं, जो छात्रों के मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव डालते हैं। (4) विवरण प्रविधि छात्रों में जिज्ञासा पैदा करने का कार्य करती है। साथ ही इसमें कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। (5) विवरण प्रविधि क्यों है, को स्पष्ट करती है, यह छात्रों में जिज्ञासा पैदा करने में अहम् भूमिका निभाती है। (6) विवरण प्रविधि ब्यौरा देने पर बल देती है, इस तरह से इसमें किसी चीज का ब्यौरा दिया जाता है कि पुस्तकों की जरूरत नहीं पड़ती है।

प्रश्न 78. शुद्ध उच्चारण का महत्व बताइए। **(छतरपुर 2021, 22)**

उत्तर–भाषा के सर्वमान्य रूप की रक्षा के लिए सबसे पहली आवश्यकता होती हैं उसका 'शुद्ध उच्चारण'। इसके अभाव में किसी भी भाषा का कोई निश्चित रूप नहीं हो सकता हैं। उसका कोई सर्वमान्य रूप नहीं हो सकता तथा वह अपने प्रयोजन में खरी नहीं उतर सकती। कभी–कभी शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करने से उनका अर्थ ही बदल जाता है। शुद्ध उच्चारण मौखिक भाषा के 'बोलने' कौशल का आवश्यक तत्व हैं। शुद्ध उच्चारण शिक्षित व्यक्ति की पहली पहचान होती हैं। भाषा के लिखित रूप के लिए शुद्ध उच्चारण अति आवश्यक हैं। शुद्ध उच्चारण लिखित भाषा के पठन कौशल और लेखन कौशल दोनों का आवश्यक तत्व होता हैं। शुद्ध उच्चारण के अभाव में मौखिक पठन प्रभावहीन होता है, उसका न तो पाठक आनंद ले पाता है और न ही श्रोता। लिखित भाषा मौखिक भाषा का प्रतिरूप होती हैं, हम मौखिक रूप में जैसा सोचते हैं व बोलते हैं, वैसा ही लिखते हैं। हिन्दी भाषा में तो जैसा उच्चारण किया जाता हैं, ठीक वैसा ही लिखा जाता है। अगर हम किसी शब्द का अशुद्ध उच्चारण करेंगे तो फिर उसे लिखेंगे भी अशुद्ध रूप में ही। भाषा के सर्वमान्य मौखिक एवं लिखित रूप की रक्षा के लिए शुद्ध उच्चारण का सर्वाधिक महत्व है और शुद्ध उच्चारण ही किसी भी भाषा की प्राणशक्ति होती है। शुद्ध उच्चारण से भाषा का परिनिष्ठित रूप उभरकर सामने आता है। हम सही तरह से शब्दों के अर्थों को समझकर बोलते हैं। सही उच्चारण विद्यार्थियों के भाषायी कौशल और भाषायी दक्षता के लिए बहुत जरूरी हैं।

प्रश्न 79. कक्षा में संवाद की प्रकृति पर एक लेख लिखिए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–संवाद दो शब्दों से मिलकर बना हैं 'सम और वाद'। इस प्रकार संवाद का शाब्दिक अर्थ "समान रूप से विचारों का आदान–प्रदान" होता है। दूसरे शब्दों में, जब दो या दो से अधिक

व्यक्ति किसी विशेष मुद्दे पर आपस में बातचीत करते हैं, तो उसे **संवाद** कहते हैं। विद्यार्थियों को उनके शौक के टॉपिक देने से, वार्तालाप संबंधी गतिविधियों और प्रतिबद्धताओं के बारे में बात करने के अवसर देने से उन्हें कक्षा में दूसरे विद्यार्थियों से बातचीत करने का अवसर मिलेगा। विद्यार्थियों में श्रवण एवं वाचन कौशल का विकास होगा। जब हम इस तरह की विधि से पढ़ाऐंगे या विद्यार्थियों को संवाद लेखन लिखने या बोलने वाली गतिविधियाँ कराऐंगे तो उसमें संवाद कला का विकास होगा व आत्मविश्वास की भावना आएगी, क्योंकि संवाद विधि भी शिक्षण विधियों की विधियों में सर्व प्रमुख है। संवादों के माध्यम से विद्यार्थियों के शब्द भण्डार में वृद्धि होगी, विद्यार्थी शब्दों में जादूगर बन जाऐंगे और नए–नए टॉपिक पर प्रतिदिन संवाद करने या कराने से विद्यार्थियों के ज्ञान के भण्डार में वृद्धि होगी। विद्यार्थियों को नई–नई सूचना मिलेगी। कक्षा का वातावरण खुशनुमा रहेगा। सारे विद्यार्थी इस तरह की गतिविधियों में हिस्सा लेंगे। इसके माध्यम से उनके अभिव्यक्ति कौशल का व्यक्तित्व में विकास होगा। विद्यार्थी संवाद लेखन कला में अच्छा होंगे, उनकी भाषा–शैली समृद्ध होगी।

प्रश्न 80. वार्तालाप किसे कहते हैं ? **(उज्जैन 2021)**

उत्तर–वार्तालाप–बातचीत दो या दो से अधिक लोगों के बीच अन्तःक्रिया सहज संचार का रूप है। आमतौर पर यह मौखिक संप्रेषण में घटित होता है। जो संवादों, बातचीत, अन्तःक्रिया वार्तालाप या बातचीत मनुष्य द्वारा समाज में परस्पर संपर्क कायम करने का एक बहुपक्षीय और स्वाभाविक माध्यम हैं इससे मनुष्य अपने विचारों का आदान–प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, "वार्तालाप लोगों के बीच विचारों, अवलोकनों, विचारों या भावनाओं का आदान–प्रदान हैं।"

प्रश्न 81. भाषा क्या है ? इसके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करते हुए व्यापक एवं संकुचित रूपों पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–भाषा शब्द संस्कृत के भाष धातु से बना है, जिसका अर्थ हैं– 'बोलना या कहना' अर्थात् भाषा वह है 'जिसे बोला जाय'। दूसरे शब्दों में, भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम सोचते हैं और अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। मनुष्य अपने विचारों, भावनाओं एवं अनुभूतियों को भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है। भाषा एक सामाजिक प्रक्रिया है। वह बोलने और सुनने दोनों के विचार–विनिमय का साधन है।

वास्तविक रूप में–सार्थक शब्दों का व्यवस्थित क्रमबद्ध संयोजन भाषा ही हैं। भाषा के कारण ही दुनिया की सभी ज्ञान की शाखाओं का विकास हुआ है। भाषा ध्वनि, संकेत एवं यादृच्छिकता का समन्वय है।

भाषा का व्यापक एवं संकुचित रूप–भाषा के संकुचित रूप की बात करे तो वह है बोली और यह बोली विस्तृत क्षेत्रों में फैल जाती है। अधिक–से–अधिक लोग इसका उपयोग करने लगते हैं तो यह भाषा बन जाती है और भाषा का यही रूप उसकी व्यापकता को दर्शाता है। कोई भी भाषा व्यापक रूप में तब फैलती है, जब बहुतायत लोग उसका उपयोग करने लगते हैं। भाषा की व्यापकता ही उसे दुनिया के हर कोने में पहुँचाती है।

प्रश्न 82. किन शिक्षार्थियों के अधिगम में सांकेतिक भाषा का उपयोग होता है ? सोदाहरण समझाइए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर–सांकेतिक भाषा संप्रेषण का एक माध्यम है, जहाँ हाथ के इशारों और शरीर तथा चेहरे के हाव–भावों का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार सांकेतिक भाषाएँ बोली जाने वाली भाषाओं से संरचनात्मक रूप से अलग होती है और इनका प्रयोग अधिकांशतः श्रवण बाधित लोगों द्वारा किया जाता है। सांकेतिक भाषा एक ऐसी भाषा है, जिसमें वक्ता के विचारों को धाराप्रवाह रूप से व्यक्त करने के लिए हाथ के आकार, विन्यास और संचालन, बाँहों या शरीर तथा चेहरें के हाव–भावों का एक साथ उपयोग किया जाता है।

जहाँ भी बधिर लोगों का समुदाय मौजूद हो, वहाँ सांकेतिक भाषा का विकास होता है। उनके पेचीदा स्थानिक व्याकरण, उच्चरित भाषाओं के व्याकरण से स्पष्ट रूप से अलग है। दुनिया भर में सैकड़ों संकेत भाषाएँ प्रचलन में है और स्थानीय बधिर समूहों द्वारा इनका उपयोग किया जा रहा है। कुछ संकेत भाषाओं ने एक प्रकार की कानूनी मान्यता हासिल की है, जबकि अन्य का कोई महत्व नहीं है।

इस भाषा का प्रयोग अधिकतर वे लोग करते हैं जो मुकबधिर होते हैं। मुकबधिर बच्चों को अलग प्रकार से प्रशिक्षित किया जाता है जिनसे वह भाषा का प्रयोग करके अपने बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकें। सांकेतिक भाषाओं में एक ही इशारों के कई मतलब होते हैं। जिनसे उन्हें समझ पाना बहुत ही कठिन हो जाता है। इसी समस्या को हल करने के लिए बहुत सारे विशेषज्ञों ने सांकेतिक भाषाओं के ऊपर कुछ महत्वपूर्ण किताबें लिखी हैं।

सांकेतिक भाषा के उदाहरण–(1) ट्रैफिक लाइट की बत्तियों से। (2) सर को हिलाकर हाँ या ना बताना। (3) ऊँगलियों का प्रयोग करके किसी वस्तु की मात्रा या गिनती को समझाना।

प्रश्न 83. एक चित्र/कहानी पर शिक्षार्थी अलग–अलग दृष्टिकोण क्यों रखते हैं ?

(भोपाल 2022)

उत्तर–दृष्टिकोण के बारे में बात करते समय, व्यक्ति को धारणा और परिप्रेक्ष्य के बीच अंतर पता होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति का दुनिया को देखने का एक तरीका होता है। जीवन के अनुभव, पालन–पोषण, शिक्षा, एक्सपोजर सभी जीवन और आस–पास के वातावरण के प्रति इस दृष्टिकोण को आकार देने में सहायता करते हैं। ऐसी दृष्टिकोणों के बारे में बात करते समय, दो शब्द हैं जो किसी के दिमाग में आते हैं। वे धारणा और परिप्रेक्ष्य हैं। हालाँकि लोग इन शब्दों का परस्पर उपयोग करते हैं, फिर भी ये दोनों शब्द एक–दूसरे से भिन्न हैं। सीधे शब्दों में कहे तो, परिप्रेक्ष्य एक दृष्टिकोण है, लेकिन धारणा चीजों की एक व्यक्ति की व्याख्या है।

जीवन में हम अक्सर महसूस करते हैं कि हमारा दृष्टिकोण सही है, और जो हमसे भिन्न है उनके पास पूरी तस्वीर नहीं है और इसलिए वे गलत है। इसी आधार पर कहा जा सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति की सोच या दृष्टिकोण दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है और शिक्षार्थी भी किसी कहानी या चित्र पर अपना अलग–अलग दृष्टिकोण रखते हैं।

प्रश्न 84. वाचन किसे कहते हैं ? **(उज्जैन 2022)**

उत्तर–वाचन शब्द का अर्थ–भाषा को उसके लिखित रूप के आधार पर ग्रहण करना। बोलते समय व्यक्ति अपने मन के भावों–विचारों को विभिन्न प्रसंगों, परिस्थितियों में आवश्यक प्रवाह, प्रभाव तथा अनुतान के साथ व्यक्त करता है, जबकि वाचन के समय वह दूसरे व्यक्ति के भावों या विचारों को विशेष निर्मित परिस्थिति, प्रसंग के अनुरूप आवश्यक प्रवाह, प्रभाव और अनुतान के साथ या तो स्वयं ग्रहण करता है अथवा दूसरों को उन्हें ग्रहण करने के लिए सुगम बनाने की चेष्टा करता है।

लिपि संकेतों या वर्णों का उनसे संबद्ध ध्वनियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया को वाचन कहा जाता है, किंतु वाचन के मूल में अर्थ–ग्रहण की आवश्यकता भी छिपी रहती है। केवल वर्णों या शब्दों अथवा पदबन्धों का बिना अर्थ समझते हुए पृथक–पृथक वाचन करना अथवा उनका पृथक–पृथक अर्थ–ग्रहण करते हुए वाचन करना अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से 'वाचन' नहीं कहा जाता। वाचन को एक सामान्य कौशल समझना इसके विस्तृत क्षेत्र की जानकारी से अपरिचित होना है। वास्तव में यह विविध प्रकार की कुशलताओं का एक समन्वित कौशल है। भाषाध्यापन की दृष्टि से वाचन का क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है। वस्तुतः वाचन कई जटिल प्रक्रियाओं का सम्मिश्रण है, जैसे–दृश्य चिन्ह–ध्वनि का संबंध, शब्दार्थ/वाक्यार्थ, पहचान–पुनः स्मरण–धारण–निर्णय–सामग्री उपयोग, शारीरिक तत्व–आँख की माँसपेशियों का नियंत्रण वागिन्द्रिय की माँसपेशियों का नियंत्रण, स्वयं उच्चरित ध्वनि

सुनकर शुद्ध–अशुद्ध की पहचान, शुद्ध करने का निर्णय लेना तथा उच्चारण वाचन का सुधार करना। लिखित वर्णों को पहचानते हुए उनका ध्वनियों से सहसंबंध स्थापित करते हुए शब्दों के अर्थों को वाक्य के संदर्भ में तथा वाक्यों के अर्थों को अनुच्छेद के संदर्भ और अनुच्छेदों के अर्थों को विषय के संदर्भ में पूर्वा पर संबंध स्थापित करते हुए ग्रहण कर सकने की क्षमता का विकास करना, वाचन कौशल–शिक्षण का उद्देश्य है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वाचन के क्षेत्र या वाचन–प्रक्रिया में दो बातें मुख्यतया समाहित हैं–(1) वर्णों और शब्दों को पहचानते हुए उनका ध्वनियों के साथ सहसंबंध स्थापित करना, (2) लिखित भाषा का भाव या अर्थ ग्रहण करना।

इन दोनों क्रियाओं को वाचन–प्रक्रिया के अंग भी कहा जा सकता है। अर्थ–ग्रहण से पूर्व लिपि चिन्हों की पहचान आवश्यक है। लिपि चिन्हों की पहचान के आधार पर शब्दों की पहचान संभव है और वर्णों, शब्दों की परिवेशयुक्त पहचान ही अर्थग्रहण करने की आधार कही जा सकती है। सामान्य अध्येता लिपि संकेतों को आँखों से देखकर वाचन करते हैं, जबकि दृष्टिहीन अध्येता (ब्रेल) लिपि संकेतों को स्पर्श करते हुए वाचन करते हैं।

अतः 'वाचन' भाषा अध्ययन का वह अंग या कौशल है जिसमें अध्येता या वाचक/पाठक के लिए किसी भाषा विशेष की–(1) लिपि, (2) संरचना और (3) शब्द–भंडार की जानकारी अति आवश्यक है। वाचक को भाषा की संरचना की जितनी विस्तृत और गहरी जानकारी होगी और जितनी अधिक मात्रा में उसका शब्दावली के अर्थ पर अधिकार होगा, उतनी ही कठिनतर लिखित सामग्री के वाचन और उसके अर्थ–ग्रहण में उसे सरलता होगी। वाचन के लिए अध्येय भाषा की संरचना की जानकारी का होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि वाचन के समय लिखित शब्दों के पारस्परिक संबंध की जानकारी के आधार पर ही अर्थ–ग्रहण संभव है। वाचन में दृश्य–ग्रहण की मूल आवश्यकता है अर्थात् अध्येय भाषा की लिपि वर्णों का एकाकी तथा सामूहिक परिवेश में ध्वन्यात्मक मूल्य का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है, तभी वाचन में गति आना संभव है।

प्रश्न 85. काल्पनिक उपन्यास पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **(छतरपुर 2022)**

उत्तर–काल्पनिक साहित्य एक काल्पनिक ब्रह्मांड में स्थापित साहित्य है जो अक्सर होता है, लेकिन हमेशा वास्तविक दुनिया के किसी भी स्थान घटनाओं या लोगो के बिना नहीं। जादू, अलौकिक और जादूई जीव इन काल्पनिक दुनिया में से कई में आम है। काल्पनिक साहित्य बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए निर्देशित किया जा सकता है। कई काल्पनिक उपन्यास मूल रूप से बच्चों के लिए लिखे गए हैं, जैसे–ऐलिस एडवेंचर्स इन वंडरलैंड, हैरी पॉटर, श्रृंखला और द हॉबिट भी वयस्क दर्शकों को आकर्षित करते हैं।

परिभाषा–कल्पना के एक आधुनिक उपजात के रूप में, फंतासी अलौकिक, कहानी और जादूई तत्वों को अग्रभूमि में रखती है। वह अक्सर पुराने मिथकों, लोक–कथाओं के रूपांकनो का उपयोग करता है। बौने या जादूगर जैसे पौराणिक आँकड़े दिखाई देते हैं, लेकिन विशेष रूप से आविष्कार किए गए प्राणी या मानव (मानव–जैसे) जानवर भी है। अक्सर कथानक एक काल्पनिक दुनिया में चला जाता है जो सांसारिक वास्तविकता से काफी भिन्न होता है। काल्पनिक पृष्ठभूमि के भीतर काल्पनिक को वास्तविक माना जाता है।

एक काल्पनिक दुनिया आमतौर पर काल्पनिक कथा के लिए पृष्ठभूमि के रूप में कार्य करती है, लेकिन इसकी सामाजिक संरचना–ज्यादातर ऐतिहासिक युगों पर आधारित होती है।

जैसे–**जे.के. रॉलिंग** के हैरी पॉटर युवा वयस्क शहरी फंतासी उपन्यासों ने यथार्थवाद के साथ फंतासी को जोड़कर व्यापार लोकप्रियता हासिल की और विभिन्न प्रकार के समकालीन विषयों की खोज की, जिसमें उम्र का आना, पूर्वाग्रह, मासूमियत का नुकसान, आसन्न युद्ध शामिल है।

प्रश्न 86. शिक्षक के रूप में समाज के प्रति आपके क्या कर्त्तव्य हैं ? समझाइए।
(ग्वालियर 2022)

उत्तर–शिक्षक को एक रोल मॉडल की भाँति विद्यार्थियों के मन में ईमानदारी, अनुशासन, राष्ट्रभक्ति, सच्चरित्रता, स्वावलम्बन आदि के प्रति उत्साह भी भरना पड़ता है तो कभी एक समाज निर्माता के रूप में न केवल अपने विद्यार्थियों से बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों व समुदायों के नागरिकों में परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता के प्रति उनके अधिकार, कर्त्तव्य एवं दायित्वों से संबंधित चेतना जगाकर उनका मार्गदर्शन भी करना पड़ता है। शिक्षक का दायित्व विविधतापूर्ण, अनंत एवं असीमित है। वस्तुतः एक सुयोग्य, कर्मठ एवं जिम्मेदार शिक्षक मात्र पठन–पाठन क्रिया को सम्पन्न करने भर के दायित्व तक ही अपने आपको सीमित नहीं रख सकता है, क्योंकि उसका प्रमुख दायित्व होता है विद्यार्थियों को सर्वगुण सम्पन्न बनाना।

एक आदर्श शिक्षक बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ उनके अंदर नैतिक गुणों के विकास का भी पूरा ख्याल रखता है। एक सुंदर समाज के निर्माण के लिए विद्यार्थियों में सभी अच्छे गुणों का समावेश करना आवश्यक है। साथ ही शिक्षक का यह भी दायित्व है कि वह सभी विद्यार्थियों के लिए एक पोषण और स्वागत योग्य शिक्षण परिवेश प्रदान करे और गंभीरता से उस स्थिति को प्रभावित करे जिसमें वह है। एक शिक्षक उसके विद्यार्थी क्या सोचते हैं, कैसे सोचते हैं और वे क्या बनेंगे को प्रभावित कर सकता है। इसलिए शिक्षकों का सामाजिक दायित्व जोर देता है कि कैसे–(1) विद्यार्थियों के लिए नेतृत्व विकास के अवसर पैदा हो और सामाजिक और नागरिक दायित्व के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा मिले। (2) भावी रोजगार के लक्ष्यों का पता लगाने के लिए अवसर प्रदान करके रोजगार क्षमता को बढ़ाना। (3) विद्यार्थियों और समुदाय के सदस्यों दोनों के लिए अधिगम को बढ़ावा देना। (4) जटिल सामाजिक समस्याओं पर काम करने के लिए समुदाय में क्षमता बनाने में भूमिका निभाना। (5) अपने शब्दों और कार्यों में एक सकारात्मक भूमिका मॉडल बनाना।

इस आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि एक शिक्षक विद्यालय में पाठ्येत्तर कार्यक्रमों का आयोजन करके विद्यार्थियों के बीच सामाजिक दायित्व विकसित कर सकता हैं।

प्रश्न 87. नाटक और एकांकी में उदाहरण सहित अंतर स्पष्ट कीजिए। (ग्वालियर 2022)

उत्तर–नाटक और एकांकी में अंतर–नाटक और एकांकी में निम्नलिखित अंतर हैं–

क्र.	नाटक	एकांकी
1.	नाटक में अनेक अंक होते हैं।	एकांकी में केवल एक अंक पाया जाता है।
2.	नाटक में अधिकारिक के साथ उसके सहायक और गौण कथाएँ भी होती हैं।	एकांकी में एक ही कथा का वर्णन होता है।
3.	नाटक की विकास प्रक्रिया धीमी होती है।	एकांकी की विकास प्रक्रिया बहुत तीव्र होती है।
4.	नाटक में किसी भी पात्र या चरित्र का क्रमशः विकास दिखाया जाता है।	एकांकी में चरित्र पूर्णतः विकसित रूप से दिखाया जाता है।
5.	नाटक में कथानक में फैलाव और विस्तार होता है।	एकांकी में घनत्व होता है।
6.	नाटक में पात्र और कहानी को बढ़ाया जा सकता है।	एकांकी में ऐसा नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न 88. वर्णनात्मक लेखन क्या है ? यह बालक के रचनात्मक लेखन में कैसे सहायक है ? (छिंदवाड़ा 2022)

उत्तर–वर्णनात्मक लेखन बालकों को किसी विषय पर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक उच्च गुणवत्ता वाला माध्यम प्रदान करता है। जैसा कि नाम से पता चलता है, निबंध किसी इकाई, व्यक्ति, स्थान या अनुभव का वर्णन करता है। लेख में चयनित विषय पर केन्द्रित एक परिचय,

मुख्य भाग और निष्कर्ष शामिल है। जब आप वर्णनात्मक वाक्य निर्माण कौशल सीखते हैं, तो लेखन शैली संचारी होती है और इसमें रूपक, राय, तुलना और व्यक्तिगत और संवेदी धारणाएँ शामिल हो सकती हैं। वर्णनात्मक लेखन का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के एकमात्र गुणों के बारे में गहनता और व्यापकता से बात करना है।

वर्णनात्मक लेखन का उद्देश्य है कि बच्चों के लिए निबंध के वर्णनात्मक वाक्यों में बच्चा किसी व्यक्ति या स्थान का वर्णन करने तक ही सीमित नहीं है। वाक्य बनाने से बच्चों को बहुत अधिक कल्पनाशील स्वतंत्रता मिलती है। उनके पास एक अच्छा माहौल, एक दृश्यमान माहौल, मापने योग्य वातावरण, चरित्र और भावनाएँ बनाने के लिए वर्णनात्मक और आलंकारिक भाषा के विकल्प हो सकते हैं। इसका उद्देश्य वाक्य निर्माण कौशल को बढ़ाने के लिए बच्चे के दिमाग में एक जीवंत और मार्मिक छवि बनाना है।

कई माता–पिता बच्चे के जीवन में रचनात्मक लेखन के महत्व को समझने में असफल होते हैं। यह आवश्यक कौशल बच्चे के जीवन के सभी पहलुओं, स्कूल से लेकर कॉलेज और उनके कामकाजी जीवन तक को प्रभावित करता है। यह उनके भाषा कौशल में सुधार करता है और उन्हें रचनात्मक विचारक बनाता है, जिससे वे अपने व्यक्तित्व के बारे में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं।

बालक के रचनात्मक लेखन में सहायक–जो बच्चे वर्णनात्मक लेखन प्रशिक्षण का अभ्यास करते हैं, उनके विज्ञान, गणित और भाषाओं में बेहतर होने की संभावना है। जब बच्चे सरलता से सोचने और लिखने का साहस करते हैं तो वे समस्या समाधान में अच्छे हो जाते हैं और जीवन के सभी क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए अनुशासित हो जाते हैं। वर्णनात्मक लेखन के निम्नलिखित लाभ हैं–

(1) कल्पनाशक्ति को बढ़ाता है। (2) बच्चों की विचार प्रक्रिया को विस्तृत करता है। (3) समस्या समाधान और विश्लेषण कौशल को बढ़ाता है। (4) खुद पर जोर देने और अपनी राय व्यक्त करने के लिए आत्म–आश्वासन विकसित करता है। (5) दृष्टिकोण और संचार कौशल में सुधार होता है।

प्रश्न 89. किसी एक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। (छिंदवाड़ा 2022)

उत्तर–कविता के सारांश हेतु ''बालस्वरूप राही'' द्वारा रचित ''कौन'' कविता पाठ का सारांश प्रस्तुत किया जा रहा है–कवि श्री बालस्वरूप राही अपनी कविता में अगर प्रकृति में सूरज, चाँद, पर्वत, पेड़, झरने आदि न होने से क्या होता है ? मानव जीवन इनके बिना कैसा होता है ? आदि के बारे में बताया है।

कवि कहते हैं कि अगर चाँद न होता तो हमें रात के समय रास्ता कौन दिखाता ? अगर सूरज न होता तो दिन में सुनहरे किरणों को कौन प्रसारित करता ? अगर निर्मल अर्थात् स्वच्छ जल की नदियाँ न होता तो जग में सभी प्राणियों की प्यास कौन बुझाता ? अगर पर्वत न होते तो झरने मीठे पानी लेकर कहाँ बहते ? अर्थात् मीठे पानी के झरने दिखाई नहीं पड़ते।

अगर पेड़ न होते तो हरियाली नहीं होती अर्थात् हरियाली को फैलाने वाले पेड़ नहीं होते, अगर फूल न होते तो खिल–खिलकर मुस्काने वाले कौन होते ? इंद्रधनुष बहुत सुंदर होता है। वर्षा की बूंदों पर सूरज की किरणें पड़ने से इंद्रधनुष आकाश में प्रत्यक्ष होता। अगर बादल न होता तो इन्द्रधनुष को कौन रचाता ? अंत में कवि कहते हैं कि अगर हम न होते तो ये प्रश्न पूछने वाले भी नहीं होते।

प्रश्न 90. अभिभावक–शिक्षक बैठक को संवाद लेखन के रूप में लिखिए। (छिन्दवाड़ा 2022)

उत्तर–अभिभावक–शिक्षक बैठक संवाद लेखन–

अभिभावक–नमस्कार सर।

शिक्षक– आइये बैठिये। मैंने आपको इसलिए बुलवाया था क्योंकि संकेत आजकल विद्यालय

के किसी भी कार्य में बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहा है। मैंने एक–दो बार उससे पूछने की भी कोशिश की लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। घर में कोई समस्या तो नहीं ?

अभिभावक–जी नहीं सर। ऐसी तो कोई बात नहीं। हमने भी घर में ऐसा ही महसूस किया है कि संकेत आजकल किसी भी काम में अपना ध्यान नहीं लगा रहा है। हमने भी उससे पूछने की कोशिश की लेकिन हमें भी उसने कोई कारण नहीं बताया।

शिक्षक–देखिए वह अभी किशोरावस्था में है। ऐसे में शरीर में कई तरह के शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते हैं और सभी बच्चे इन परिवर्तनों को एक समान नहीं लेते।

अभिभावक–जी हो सकता है यह उसी का परिणाम हो, क्योंकि जहाँ तक संकेत के स्वभाव का सवाल है, उसका किसी से लड़ाई–झगड़ा तो हुआ ही नहीं होगा और ऐसा कभी सुनने और देखने में भी नहीं आया।

शिक्षक–हमारे विद्यालय में प्रत्येक शुक्रवार मनोचिकित्सक बैठते हैं। आप चाहें तो संकेत की बात चिकित्सक से करा सकते हैं और स्वयं भी उनसे मिल सकते हैं। मुझे आशा है कि इससे अवश्य ही लाभ होगा।

अभिभावक–जी सर, इसी शुक्रवार को संकेत और हम मनोचिकित्सक से अवश्य मिलेंगे बहुत–बहुत धन्यवाद !

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. भाषा के विभिन्न रूपों को समझाइए।

उत्तर–भाषा के विभिन्न रूपों को निम्नलिखित द्वारा समझाए जा सकते हैं–

(1) बोली–बोली भाषा का सर्वप्रथम अंग मानी जाती है। बोली उस स्थानीय या घरेलू भाषा को कहते हैं, जो व्याकरणबद्ध व साहित्यिक नहीं होती है। यह दैनिक बोलचाल के उपयोग में आने वाली भाषा है। विशिष्टता प्राप्त करने पर वह भाषा बन जाती है। बोली सिर्फ बोली जाती है। उसका लिखित स्वरूप नहीं होता है।

(2) उपभाषा/विभाषा–किसी अधिक विस्तृत क्षेत्र की बोलचाल तथा सामान्य साहित्यिक भाषा को उपभाषा या विभाषा कहते हैं। जब बोली विकसित होकर भाषा बनने को प्रस्तुत होती है। अर्थात् जब एक बोली, बोली से ज्यादा विकसित होती है, परन्तु पूर्णतया भाषा नहीं बनी होती है।

(3) भाषा–स्थानीय भाषा को बोली, प्रान्तीय भाषा को उपभाषा या विभाषा तथा इससे विस्तृत क्षेत्र में बोली जाने वाली टकसाली भाषा को भाषा की संज्ञा दी जाती है।

(4) राष्ट्रभाषा–राष्ट्रभाषा वह है जो किसी राष्ट्र अथवा देश–विदेश के सम्पूर्ण क्षेत्र में प्रयुक्त होकर समझी जाये। जिसे राष्ट्र द्वारा संवैधानिक रूप से मान्यता प्राप्त हो। यह सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधती है। इसी भाषा के द्वारा उस राष्ट्र में प्रयोग में आने वाली विभिन्न भाषाओं के बीच पारस्परिक सहयोग तथा सम्बन्ध स्थापित होता है।

(5) राजभाषा–राजभाषा अर्थात् राज्य की भाषा, यहाँ राज्य से तात्पर्य सम्पूर्ण राज्य से है, इसे आधिकारिक दर्जा प्राप्त होता है। वास्तव में यह राजकाज चलाने की भाषा होती है। पहले इसे राजा की भाषा कहा जाता था, यह राजा की मातृभाषा होती थी। जैसे हिन्दी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

(6) अंतर्राष्ट्रीय भाषा–अंतर्राष्ट्रीय भाषा का अर्थ है, वह भाषा जो एक से अधिक राष्ट्रों में बोली जाये। जब कोई भाषा किसी राष्ट्र विशेष की सीमाओं को पार कर जाती है, तब उसे अंतर्राष्ट्रीय भाषा कहा जाता है।

(7) विदेशी भाषा–अपने देश के अलावा दूसरे देश की भाषा को विदेशी भाषा कहा जाता है। विदेशी भाषा के सीखने से हम विदेशी साहित्य को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

(8) मातृभाषा—मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ होता है, अपनी माँ से सीखी गयी भाषा। अर्थात् मातृभाषा वह बोली है जो एक बालक अपनी माँ, घर–परिवार व आसपास से सीखता है। परंतु हम बोली को मातृभाषा नहीं कह सकते हैं।

(9) साहित्यिक भाषा—जो समाज के विपुल व शिष्ट वर्ग बोलते हों उसे साहित्यिक भाषा कहते हैं। सरकारी और कामकाज की भाषा को प्रयोजनमूलक भी कहा जाता है।

(10) विशिष्ट भाषा—जनभाषा और साहित्यिक भाषा के अतिरिक्त विशिष्ट जनसमुदाय की अपनी एक विशिष्ट भाषा होती है। जैसे—डॉक्टरी भाषा, स्टॉक एक्सचेंज की भाषा, कानूनी भाषा आदि।

प्रश्न 2. विवरण प्रविधि का अर्थ एवं परिभाषा लिखिए।

उत्तर—छात्रों के मस्तिष्क में मानचित्र बनाने हेतु विवरण प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। विवरण को कथन, शिक्षक–स्वकथन प्रविधि भी कहा जाता है। इस विधि के द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में वस्तुओं तथा घटनाओं के मानसिक चित्र इतने सजीव ढंग से पेश किए जाते हैं कि पाठ्यवस्तु को सरलता से समझा जा सके। इस विधि द्वारा छात्र का उचित मार्गदर्शन किया जाता है तथा विषय की पूर्णरूप से समीक्षा की जा सकती है। विवरण में चूँकि शिक्षक किसी भी विषयवस्तु का विवरण दे रहा होता है जिससे सुनना विद्यार्थियों के लिए रुचिकर होता है। इस प्रकार इस विधि में किसी प्रसंग, वस्तु अथवा घटना को छात्रों के सामने मौखिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

परिभाषा—प्रो. सक्सेना के अनुसार— "विवरण देना एक कला है। इस कला में निपुण होने के लिए शिक्षक अपनी कल्पनाशक्ति का सहारा लेते हुए किसी वस्तु अथवा घटना का विवरण इतने उत्साह तथा प्रवाहशीलता के साथ प्रस्तुत करता है कि कक्षा के सभी छात्रों को उसका ज्ञान सरलतापूर्वक हो जाता है।"

विवरण द्वारा छात्रों के मस्तिष्क में वस्तुओं तथा घटनाओं के मानसिक चित्र इतने सजीव ढंग से पेश किये जाते हैं कि छात्र पाठ्यवस्तु को सरलता से समझ जाते हैं।

प्रश्न 3. भाषा कौशल की विशेषताएँ बताइए। **(उज्जैन 2019)**

उत्तर—भाषा कौशल की विशेषताएँ—ये निम्न हैं—

(1) भाषा कौशल भाषा का व्यावहारिक पक्ष है। (2) भाषा कौशल में मानसिक, शारीरिक अंगों, ज्ञान इंद्रियाँ तथा कर्म इंद्रियाँ क्रियाशील होती हैं। (3) भाषा कौशल सम्प्रेषण का साधन तथा मुख्य माध्यम है। (4) भाषा कौशल अर्जित किये जाते हैं, इसके लिए प्रशिक्षण तथा अभ्यास किया जाता है। (5) भाषा कौशल में प्रत्यक्षीकरण तथा मानसिक व्यवस्था की आवश्यकता होती है। (6) भाषा कौशल का उद्देश्य बोधगम्यता है। (7) भाषा कौशल से सम्प्रेषण की क्षमता का विकास होता है। (8) भाषा कौशल से शाब्दिक अंतः प्रक्रिया होती है। (9) भाषा कौशलों का भाषा विज्ञान तथा व्याकरण ही मुख्य आधार होता है। (10) भाषा कौशल में लिखना, पढ़ना, बोलना तथा सुनना है।

प्रश्न 4. पाठ्यक्रम के परे भाषा विषय का अर्थ व स्वरूप बताइए। विद्यार्थियों के लिए इस विषय का ज्ञान क्यों उपयोगी है ?

उत्तर—जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, पाठ्यक्रम से परे भाषा–याने ऐसी भाषा जो कि पाठ्यक्रम से बिल्कुल हट के हो। जो सभी पाठ्यक्रम से बिल्कुल अलग हो। पाठ्यक्रम से परे भाषा विषय का सम्बन्ध ऐसे ज्ञान से है, जो सभी विषयों के शिक्षकों के लिए आवश्यक है। यह विषय विज्ञान, कला, वाणिज्य, इतिहास, भूगोल विषय से बिल्कुल अलग है। इसमें अध्ययन–अध्यापन की ऐसी भाषा है, जिसका ज्ञान सभी विषयों के शिक्षकों को होना चाहिए। इस विषय में ऐसी भाषा का समावेश है, जो विद्यालय की सभी गतिविधियों में किसी–न–किसी रूप में व्याप्त है। यह शिक्षक के शिक्षण तथा विद्यार्थी के अधिगम से सम्बन्धित भाषा होने के साथ–साथ पाठ्यक्रम, पाठ्य–सहगामी व पाठ्यक्रमेत्तर भाषा है। यह वह भाषा है जो अध्ययन, लेखन, शिक्षण और प्रस्तुतीकरण में सहायक है। विद्यार्थियों

के लिए इस विषय का महत्व इसलिए है क्योंकि कोई भी शिक्षण कार्य भाषा के बिना अधूरा है। इसके माध्यम से हम विद्यार्थियों में साहित्यिक गतिविधियों, भाषायी कौशल, भाषायी सृजन की निर्माण करके उन्हें लेखन और पठन–कौशल की विभिन्न क्रियाओं में दक्ष कर सकते हैं। विद्यार्थियों को नवीन तरीकों से अध्ययन और अध्यापन क्रिया में दक्ष कर सकते हैं।

प्रश्न 5. बी.एड. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के लिए पाठ्यक्रम से परे भाषा विषय की उपयोगिता को समझाइए।

उत्तर–बी.एड. शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के लिए पाठ्यक्रम से परे भाषा विषय की उपयोगिता निम्न हैं–(1) छात्राध्यापकों में भाषा ज्ञान द्वारा विचारशीलता उत्पन्न करना। (2) विभिन्न स्तरों के भाषा की योग्यताओं को समझकर उसका समूह चर्चा आदि में प्रयोग करना। (3) लोकप्रिय विषय आधारित व्याकरणात्मक लेखन से जुड़ने के लिए। (4) तर्क, समीक्षा एवं विचार विनिमय हेतु। (5) स्व–अधिगमकर्ता बनना, शैक्षिक विषयों की पत्र–पत्रिकाएँ लेख पढ़ने हेतु। (6) संदर्भ पुस्तकों से विषयगत जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग शिक्षण एवं लेखन में करने हेतु। (7) विभिन्न प्रकार के पाठ्यों को पढ़ने व समझने हेतु। (8) विभिन्न प्रकार के लेखन–कार्य द्वारा विचारों का सम्प्रेषण करना। (9) भाषायी कौशल के विकास हेतु। (10) विचारों के परावर्तन, अभिव्यक्ति व संप्रेषण कुशलता को उत्पन्न करने हेतु।

प्रश्न 6. शिक्षा में भाषा के महत्व को बताइए।

***अथवा*, भाषा एवं शिक्षा के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए।** **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–शिक्षा हमारे अंतःकरण एवं चरित्र को शुद्ध करती है। हमारी प्रतिभाओं को विकसित करती है। शिक्षा हमें इस प्रकार संवारती है, जिससे न केवल हमारा ही अपितु समाज का भी कल्याण होता है। अर्थात् व्यक्ति और समाज के बीच समन्वय स्थापन का कार्य शिक्षा ही करती है। विद्यालय की कक्षाओं में भारत देश के भविष्य का निर्माण होता है। अतः विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी अनुशासन, शालीनता, निष्पक्षता, ईमानदारी जैसे गुणों को सीख सके। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, उन्हें विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों से जोड़ने में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक उन्हें विभिन्न पाठ्य–सहगामी क्रियाओं से जोड़ता है। जिसमें भाषा का अहम् स्थान है। भाषा के माध्यम से हम विद्यार्थियों को घर, समाज एवं राष्ट्र से जोड़ सकते हैं। भाषा विचारों का ही नहीं अपितु शिक्षा का भी वाहक हैं।

प्रश्न 7. पाठ्यचर्या के प्रकारों को समझाइए।

उत्तर–पाठ्यचर्या के प्रकार–पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रकार है, जो निम्न हैं–

(1) विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या, (2) बालकेन्द्रित पाठ्यचर्या, (3) अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या, (4) एकीकृत पाठ्यचर्या एवं (5) समन्वित सम्बन्धित पाठ्यचर्या।

(1) विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या–विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या की सर्वप्रथम शुरुआत यूनानी तथा रोम के विद्यालयों में लागू की गई थी। इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत पुस्तकों को अधिक बल दिया जाता है। अतः हम इसे पुस्तक आधारित या पुस्तक केन्द्रित पाठ्यचर्या भी कहते हैं। इस पाठ्यचर्या में विषय–वस्तु पूर्व निर्धारित होती है तथा प्रत्येक विषय हेतु समय सीमा भी निर्धारित रहती हैं।

(2) बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या–यह पाठ्यचर्या सम्पूर्ण रूप से आनुभविक दर्शन पर आधारित हैं। बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास में पूर्ण रूप में सहायक हैं। ऐसी पाठ्यचर्या का निर्माण, बालक की विभिन्न अवस्थाओं की रुचियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा योग्यताओं के अनुसार किया जाता है। मांटेसरी, किंडरगार्डन, योजना पद्धतियाँ एवं बालकेन्द्रित पाठ्यचर्या के उदाहरण हैं।

(3) अनुभव केन्द्रित अथवा क्रिया आधारित पाठ्यचर्या–इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत बालक के विकास हेतु अनुभवों को विशेष महत्व दिया गया है। इसमें ऐसी परिस्थितियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं, जिससे बालक को अनुभव हो तथा जीवन जीने योग्य बन सके। अनुभव केन्द्रित पाठ्यचर्या व्यक्ति के जीवन में घटित होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों के विश्लेषण पर आधारित हैं।

(4) एकीकृत पाठ्यचर्या—यह पाठ्यचर्या विभिन्न विषयों का अलग–अलग नहीं बल्कि समग्र रूप से एकीकृत करने की बात कहती है। मनुष्य का मस्तिष्क ज्ञान को छोटे–छोटे इकाइयों के रूप में ग्रहण नहीं करता बल्कि इसे सम्पूर्ण इकाई के रूप में ग्रहण करता है, यही मूल आधार है, इस पाठ्यचर्या का।

(5) समन्वित सम्बन्धित पाठ्यचर्या—विद्यार्थी अधिक–से–अधिक विविध ज्ञान रखने वाले बन सके, यह इस पाठ्यचर्या का मूल उद्देश्य है। इस पाठ्यचर्या में जीवन सम्बन्धी बहुत से तथ्य जैसे– गृह एवं पारिवारिक समस्या, उचित पोषण, घरेलू समस्या, साथ–ही–साथ विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में हुए विकास को इस पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है।

प्रश्न 8. पाठ्यचर्या विकास में अध्यापकों की भूमिका को समझाइए।

उत्तर—पाठ्यचर्या विकास में अध्यापकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। पाठ्यचर्या नियोजन तथा विकास में शिक्षक की प्रत्यक्ष भागीदारी आवश्यक होती है। क्योंकि शिक्षक ही पाठ्यचर्या को लागू करता है और अनुदेशात्मक योजना को कार्यान्वित करता है। शिक्षक को अपनी क्रियाओं को छात्रों के अधिगम स्वरूपों से सम्बन्धित करना होता है तथा छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन हो सकते हैं तथा उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

शिक्षण क्रियाओं का संपादन छात्र तथा अध्यापकों के संबंध पर आधारित होता है। छात्र तथा अध्यापक के बीच होने वाली अंतःप्रक्रिया तथा सम्बन्ध शिक्षण विधियों द्वारा निर्धारित होती हैं। शिक्षक को सहायक शैक्षिक वातावरण स्थापित करने में सहायता करनी चाहिए। शिक्षक को पाठ्यचर्या योजना तथा विकास के प्रत्येक चरण जैसे– उद्देश्यों के निर्माण, मूल्यांकन तथा पाठ्यचर्या निष्पादन में सहायता करनी चाहिए।

प्रश्न 9. नई शिक्षा नीति, 2020 में भाषा के स्थान एवं महत्व की चर्चा कीजिए।

उत्तर—भारतीय शिक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित व क्रमबद्ध रूप से आगे बढ़ाने और आज की जरूरत को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने **नई शिक्षा नीति, 2020** लागू की। इस नीति के अन्तर्गत राजभाषा आयोग 1955 की सिफारिशों में से एक भारतीय भाषाओं के ज्ञान और सीखने की सिफारिशों को शामिल किया गया है। इस नीति के माध्यम से मातृभाषाओं को पुनः जीवित करने का प्रयास किया गया है। नई शिक्षा नीति में भाषा की समृद्धता के साथ–साथ मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा व हिन्दी के माध्यम से ज्ञान के नये–नये रास्तों को खोलने की बात कही गई है। भाषा की बाधाओं को दूर करने के उद्देश्य से बहुभाषावाद को बढ़ावा दिये जाने की बात कही गई है। नई शिक्षा नीति में मातृभाषा, क्षेत्रीय भाषा, स्थानीय भाषा को पढ़ाने और उनके सम्वर्द्धन के विषय के बात को बल दिया गया है। इस नीति के अन्तर्गत कविता, उपन्यास, पत्र–पत्रिकाओं एवं लेखन गतिविधियों पर जोर दिया गया है।

प्रश्न 10. साहित्य के प्रकारों को समझाइए।

उत्तर—साहित्य को तीन भागों में बाँटे गए हैं–

(1) गद्य साहित्य, (2) पद्य साहित्य एवं (3) चम्पू साहित्य।

(1) गद्य साहित्य—गद्य दो शब्दों गद् + यत से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है— बोलना या कहना। गद्य वह वाक्यबद्ध विचारात्मक रचना है, जिसमें हमारी चेष्टाएँ, हमारी कल्पनाएँ, हमारे मनोभाव और हमारी चिन्तनशील मनःस्थितियाँ सरलतापूर्वक अभिव्यक्त की जा सकती है। वास्तव में आधुनिक युग गद्य साहित्य के विकास का युग है। अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के कारण गद्य साहित्य अपनी विभिन्न विधाओं के माध्यम से वर्तमान युग में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है। हिंदी भाषा में गद्य की उत्पत्ति से ही साहित्य का विकास हुआ है।

गद्य साहित्य की विधाएँ—कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा आदि आते हैं।

(2) पद्य साहित्य–पद्य लेखन की उस कला को कहा जाता है, जिसमें शब्दों को संगठित तरीके से तथा कविताओं के रूप में लिखा जाता है, क्योंकि पद्य शैली में कोई बात या जानकारी अलग–अलग पदों में दी जाती हैं इसलिए पद से ही पद्य शब्द बना है। प्राचीन समय के अधिकतर ग्रंथ वेद व रचनाएँ विशेषकर पद्य शैली में लिखी गई है। दूसरे शब्दों में क्रमबद्ध तरीके से मात्राओं, लय, व शब्दों की संख्याओं का ध्यान रखते हुए लिखी गई कोई भी रचना पद्य कहलाती है। पद्य को अंग्रेजी में 'वर्स' (Verse) कहा जाता है। पद्य हृदय की संवेदना से उत्पन्न विधा है।

पद्य साहित्य के प्रकार–कविता, दोहे, गीत, गजल, भजन आदि आते हैं।

(3) चम्पू साहित्य–चम्पू श्रव्य काव्य का एक भेद है अर्थात् गद्य–पद्य से मिश्रित काव्य को 'चम्पू' कहते हैं। चम्पू काव्य परम्परा का प्रारम्भ हमें अथर्ववेद से प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य के पश्चात् महाभारत, विष्णु पुराण और भागवत पुराण में भी चम्पू काव्य का प्रयोग मिलता है। निरंजन माधव ने चम्पू काव्य की रचना की है।

प्रश्न 11. साहित्य के प्रकारों को कितने भागों में विभक्त किया गया है ?

उत्तर–साहित्य के प्रकारों को तीन भागों में विभक्त किये गए हैं–

(1) सूचनात्मक साहित्य, (2) विवेचनात्मक साहित्य एवं (3) रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य।

(1) सूचनात्मक साहित्य–इसके अंतर्गत ऐसी रचनाएँ आती हैं जिनके द्वारा हमें अनेक नयी बातों की जानकारी प्राप्त होती है। ऐसी रचनाओं को पढ़कर हम उनसे प्राप्त जानकारी से ही संतुष्ट हो जाते हैं। **उदाहरण**–विश्वकोश, संदर्भ आदि।

(2) विवेचनात्मक साहित्य–इसके अन्तर्गत ऐसी रचनाएँ आती हैं, जिनके द्वारा हमारा ज्ञान तो बढ़ता ही है, हमारी बोधन शक्ति भी जागरूक बनी रहती है। अर्थात् हमारे अंदर और अधिक जानने की इच्छा पैदा होती है। विभिन्न ज्ञानानुशासनों; **जैसे**– दर्शन विज्ञान और गणित की पुस्तकें इसके अंतर्गत आते हैं।

(3) रचनात्मक या सृजनात्मक साहित्य–इस प्रकार की रचनाओं में ऐसी पुस्तकें शामिल हैं जिनमें लेखक हमारी जानी हुई बात को कुछ इस ढंग से कहता है कि हमारे अंदर उसे पढ़ने की ललक बढ़ती है। इस प्रकार की रचनाओं को पढ़कर हमें ऐसा लगता है मानों उसमें कही गई बातें हमारी अपनी ही हों। **उदाहरण**– प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' की कथावस्तु पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत होता है कि ये कथा हर एक गरीब किसान की कथा है। **हजारी प्रसाद द्विवेदी** ने रचनात्मक साहित्य के बारे में कहा है,–"इस प्रकार की रचनाएँ हमें सुख–दुःख की व्यक्तिगत संकीर्णता और दुनियावी झगड़ों से ऊपर ले जाती है और सम्पूर्ण मनुष्य जाति के और भी आगे बढ़कर प्राणी मात्र से सुख-दुख, राग–विराग, आह्लाद–आमोद को समझने की सहानुभूतिमय दृष्टि देती है।"

प्रश्न 12. भाषा एवं साहित्य के सह–सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

उत्तर–भाषा और साहित्य दोनों ही महत्वपूर्ण उपादान हैं। एक के बिना दूसरा अधूरा है। भाषा साहित्य की कला सामग्री है। भाषा के अनेक सामाजिक उपयोग हैं। इसका एक ललित उपयोग साहित्य रचना भी है। साहित्य में इसका उपयोग रचना या निर्माण की सामग्री के रूप में होता है। साहित्य के रूप में पुनर्गठित भाषा आस्वाद की प्रक्रिया को जन्म देती है। आस्वाद भाषाएँ मानसिक है और भाषा व्यवहार ब्रह्म इन दोनों का संयोजन साहित्य करता है। शैली भाषा और साहित्य के बीच की कड़ी है, भाषा की प्रकृति में सृजनात्मक शक्ति निहित है। भाषा साहित्य को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पोषित करती है। विभिन्न भाषाओं के भीतर एक ही सांस्कृतिक धारा प्रवाहमान होती है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" यह साहित्य की मूलभूत चेष्टा रही है, और यही हमारी संस्कृति का मूल भाव है। साहित्य और भाषा के सम्बन्ध को हम इस बात से और अच्छे से समझ सकते हैं। यदि साहित्य को चित्र कहा जाए तो भाषा उस चित्र निर्माण का केनवास और रंगभूमिका है।

प्रश्न 13. भाषायी कौशल से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रकारों को समझाइए।
(छतरपुर 2018, 21, 22; जबलपुर 21)

***अथवा*, भाषा के विभिन्न कौशलों को बताते हुए किसी एक कौशल की विस्तार से व्याख्या कीजिए।** **(जबलपुर 2021; उज्जैन 22)**

उत्तर–भाषायी कौशल–मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में अन्य व्यक्तियों से सम्प्रेषण स्थापित करने के लिए वह बोलकर या लिखकर अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करता है तथा सुनकर या पढ़कर उनके विचारों को ग्रहण करता है। भाषा से सम्बन्धित इन चारों क्रियाओं के प्रयोग करने की क्षमता को 'भाषा कौशल' कहा जाता है। इनका विकास एवं इनमें दक्षता प्राप्त करना ही भाषा शिक्षण का उद्देश्य है। भाषा शिक्षण के लिए आवश्यक चारों कौशल परस्पर एक–दूसरे से अंतः सम्बन्धित होते हैं अर्थात् प्रत्येक कौशल का विकास किसी–न–किसी रूप में एक–दूसरे पर निर्भर करता है।

भाषायी कौशल चार प्रकार के होते हैं–

(1) श्रवण (सुनना), (2) भाषण (बोलना), (3) पठन (पढ़ना) एवं (4) लेखन (लिखना)।

(Listening skill + Speech skill + Reading skill + Writing skill = L+S + R+W)

(1) श्रवण कौशल–'श्रवण' शब्द संस्कृत भाषा की 'श्रू' धातु से बना है। जिसका अर्थ 'सुनने' और 'अधिगम' करने से है। 'श्रवण' अंग्रेजी के शब्द 'Listening' शब्द का पर्याय है। 'श्रवण' केवल ध्वनियों को सुनना भर नहीं है बल्कि उन ध्वनियों को सुनकर उसका अर्थ निकालने, सुनी हुई बात पर चिंतन, मनन करने और अर्थ की प्रतिक्रिया देने से हैं। श्रवण कौशल के लिए मस्तिष्क की एकाग्रता एवं इंद्रियों का संयम होना अत्यन्त आवश्यक है।

परिभाषाएँ – "श्रवण व्यक्त अथवा अव्यक्त व्यवहार प्रतिमानों के दमनशील मौखिक अथवा लिखित संकेतों को प्राप्त करने के सम्बन्ध में उच्च व्यक्तियों के वार्तालाप का गहन अध्ययन देने की कला है।"

डिसेंट के अनुसार– "श्रवण कौशल तब घटित होता है, जब बालक यह व्यवस्थित करते हैं और याद करते हैं कि क्या सुना गया है।"

डॉक्टर किशोरीलाल शर्मा के अनुसार– "श्रवण कौशल में केवल ध्वनि श्रवण का ही समावेश नहीं होता है, अपितु जो कुछ हम सुनते हैं, उसे पहचानते हैं, समझते हैं और अर्थ ग्रहण करके उसे स्मरण रखते हैं। इसी प्रकार किसी भाषण को ग्रहण करने की प्रक्रिया को निष्क्रिय नहीं कहा जा सकता। यह एक कड़ी है तथा सोदेश्य है।"

(2) वाचन कौशल/बोलना/भाषण कौशल– भाषा को उसके लिखित रूप के आधार पर ग्रहण करना 'वाचन' कहलाता है। दूसरे शब्दो में, अपने भावों और विचारों को मौखिक भाषा के द्वारा बोलकर अभिव्यक्त करना ही वाचन कौशल कहलाता है।

भाषण का अर्थ है 'मौखिक अभिव्यक्ति' अंग्रेजी में इसे 'Speaking' या 'Speech' कहते हैं। जब छात्र अपने विचारों एवं भावों को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का प्रयास करता है, तो उसे भाषण कौशल का सहारा लेना पड़ता है। भाषा कौशल के आधार पर ही उनकी अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाता है। जब एक छात्र सस्वर एवं धारा प्रवाह रूप में बोलते हुए अपने विचारों को प्रस्तुत करता है, तो यह माना जाता है कि उसमें वाचन कौशल की योग्यता है।

परिभाषाएँ–कैथरीन ओकानर के अनुसार–"वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, श्रव्यों संकेतों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।"

डॉ. पाण्डेय के अनुसार–"वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि व अर्थ साथ–साथ चलते हैं।"

बी.एम. सक्सेना के अनुसार–"शिक्षा के क्षेत्र में वाचन से तात्पर्य सार्थक प्रतीक लिपि चिन्हों को पहचान मात्र से न होकर उनके अर्थग्रहण करने से है।"

(3) पठन कौशल—पठन कौशल को अंग्रेजी भाषा में रीडिंग स्किल (Reading skill) कहा जाता है। पठन का अर्थ है 'जोर से तथा मौन होकर पढ़ना' जिससे पठित सामग्री समझ में आ जाए। दूसरे शब्दों में, दूसरों के विचारों को पढ़कर समझना या अर्थग्रहण करने में दक्षता हासिल करना पठन कौशल कहलाता है।

अथवा, "वर्णों का उच्चारण, शब्दों या वाक्यों का अर्थ, बोध सहित अर्थ ग्रहण करना ही पठन कौशल कहलाता है।"

डिसेंट के अनुसार "पठन लेखक द्वारा उदिष्ट, सुलिखित, सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको सम्बन्धित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि भाषा शिक्षण में भाषा के कौशलों का विशेष महत्व है। भाषा शिक्षण का अर्थ भाषा के विषय में शिक्षण नहीं वरन् भाषायी कौशलों का शिक्षण है। ये कौशल ही भाषा व्यवहार के आधार हैं। इन चारों कौशलों के माध्यम से ही सम्प्रेषण स्थापित किया जाता है। इसलिए भाषा शिक्षण में इन कौशलों का विशेष महत्व है।

(4) लेखन कौशल—भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति जब लिखित रूप में होती है तो इसे 'लेखन कौशल' कहते हैं। रचना भावों एवं विचारों की कलात्मक अभिव्यक्ति है—'लेखन' भाषायी कौशल में लेखन–कौशलों को सबसे जटिलतम कौशल माना गया। इसके बिना भाषायी कौशल का विकास अधूरा है।

परिभाषा—रॉबर्ट लैडो के अनुसार—"अन्य भाषा में लेखन कौशल सीखने से आशय लेखन व्यवस्था के परम्परागत प्रतीकों को लिपिबद्ध करना है जिन्हें लिखते समय लेखक ने मौन अथवा उच्चरित रूप से प्रयुक्त किया हो अथवा दोहराया हों।"

प्रश्न 14. श्रवण कौशल के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए। **(ग्वालियर 2019)**

उत्तर—श्रवण कौशल के उद्देश्य—किसी के वाचन (बोलने) को सुनने और सुनकर अर्थ एवं भाव को समझने की क्रिया श्रवण कौशल कहलाती है।

इस प्रकार श्रवण कौशल के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

(1) छात्रों में श्रवण के प्रति रुचि उत्पन्न करना जिससे वे दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुन सकें। (2) छात्रों में सुनकर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना। (3) दूसरों के द्वारा उच्चारित शब्दों को सुनकर शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता विकसित करना। (4) श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण अंशों को पहचानने की योग्यता विकसित करना। (5) श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण, आकर्षक, मर्मस्पर्शी, विचारों तथा भावों का चयन करने की योग्यता विकसित करना। (6) वक्ता के मनोभावों को समझने योग्य बनाना। (7) श्रुत सामग्री का सारांश ग्रहण करने की योग्यता विकसित करना। (8) भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना। (9) विद्यार्थियों को साहित्यिक गतिविधियों में भाग लेने व सुनने के लिए प्रेरित करना। (10) स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार–चढ़ाव के अनुसार अर्थग्रहण करने की योग्यता का विकास करना। (11) श्रुत सामग्री के विषय में महत्वपूर्ण एवं मर्मस्पर्शी विचारों भावों एवं तथ्यों का चयन करने की क्षमता विकसित करना। (12) विद्यार्थियों को भावों, विचारों व तथ्यों का मूल्यांकन करने योग्य बनाना। (13) ग्रहणशीलता की मनःस्थिति बनाए रखने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना। (14) विद्यार्थियों में ध्वनियों, शब्दों का शुद्ध उच्चारण तथा स्वर, गति, लय और प्रवाह के साथ पढ़ने की योग्यता विकसित करना। (15) विद्यार्थियों की मौलिकता में वृद्धि करने हेतु।

श्रवण कौशल का महत्व—श्रवण कौशल के महत्व इस प्रकार हैं—

(1) बालक के व्यक्तित्व के विकास में श्रवण कौशल का अधिक महत्व होता है। बालक जिन ध्वनियों को बड़ों से सुनता है वह उसके मन मस्तिष्क में अंकित हो जाती है। ये अंकित ध्वनियाँ ही बच्चे के भाषा ज्ञान का आधार बनती है। श्रवण कौशल अन्य भाषायी कौशलों को विकसित करने की प्रमुख आधारशिला है। (2) बालक श्रवण के प्रति जागरूक बनता है तथा श्रवण कौशल द्वारा बालक

की श्रवणेन्द्रियों का उपयोग होता है। (3) श्रवण कौशल से विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास होता है। (4) श्रवण कौशल से ही विद्यार्थियों में ध्वनियों के सूक्ष्म अंतर को पहचानने की क्षमता का विकास होता है। (5) श्रवण कौशल से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है। (6) श्रवण कौशल से ही वाचन एवं लेखन कौशल का विकास होता है।

प्रश्न 15. श्रवण कौशल की विधियों का वर्णन कीजिए। **(जबलपुर 2018)**

उत्तर—श्रवण कौशल भाषा, शिक्षण का महत्वपूर्ण सोपान है। विद्यार्थियों में श्रवण कौशल के विकास हेतु शिक्षक को चाहिए कि वह बालकों को सुनने, बोलने की प्रक्रिया में सक्रिय रखें। क्योंकि श्रवण कौशल ही शुद्ध उच्चारण और बोलने की पृष्ठभूमि तैयार करता है। श्रवण कौशल हेतु निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है—

(1) वार्तालाप विधि—विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति हेतु शिक्षक को चाहिए कि वह कक्षा में ऐसी व्यवस्था करें जिससे छात्र आपस में बातचीत के माध्यम से विचार–विमर्श करें। इस हेतु वे परस्पर एक–दूसरे का परिचय, घटना का वर्णन, विद्यालय के बारे में बातचीत करें, जिससे उनकी झिझक तो मिटेगी ही साथ ही वे अपने विचारों को छोटे–छोटे वाक्यों में व्यक्त करना सीखेंगे।

(2) प्रश्नोत्तर विधि—प्रत्येक बालक में जिज्ञासा होती है जिसे वह प्रश्नों के माध्यम से बार–बार पूछता है। उसकी जिज्ञासा को शान्त करने तथा ज्ञान देने की यह विधि प्रश्नोत्तर विधि है। छोटे–छोटे प्रश्नों के माध्यम से बालक को अनेक जानकारियाँ मिल जाती हैं साथ ही उसे सोचने का अवसर मिलता है। उसमें अपनी जिज्ञासा को भी क्रमबद्ध रूप में व्यक्त करने का आत्मविश्वास जाग्रत होता है।

(3) कहानी कथन—कहानी बच्चे की पहली पसंद है, यह ऐसा माध्यम है जो न केवल छात्रों का ध्यान केन्द्रित करती है, बल्कि पाठ्य–सामग्री को भी सहज बनाती हैं। बच्चे जब अपनी दादी, नानी, मम्मी या गुरुजी से कहानी सुनते हैं फिर उसी कहानी को अपने मित्रों को प्रसन्नतापूर्वक सुनाते हैं। इससे बच्चे कहने का तरीका सीखते हैं कि बात कैसे कही जाये। इसी तरह उन्हें कोई अधूरी कहानी सुनाकर उसे पूरा करने को कहा जा सकता है। जिसमें बच्चे अपनी बोध क्षमता, तर्क शक्ति, शब्द संयोजन, कल्पना के आधार पर कहानी पूरी करते हैं। इसके अतिरिक्त छात्रों से उनके जीवन संबंधी कोई घटना, स्वप्न को भी कथन के माध्यम से सुनाने के लिए कहा जा सकता है।

(4) घटना वर्णन—जीवन से संबंधित कोई घटना अथवा आँखों देखी कोई घटना का वर्णन सुनाकर जीवन में घटना के प्रभाव को दर्शाने के साथ–साथ शब्दों में उस घटना की अभिव्यक्ति भी छात्र सीखता है। क्योंकि जो घटना अतीत में घट चुकी हैं और कहने वाला आज उस घटना के बारे में बता रहा है, जिसमें कुछ स्मृति, कुछ काल्पनिकता के साथ–साथ घटनानुसार भावों में भी परिवर्तन होता है। अपना घटना अनुभव सुनाने के बाद शिक्षक छात्रों से भी उनके जीवन के किसी घटना को सुनाने को कहे। ऐसे में बालक अपने जीवन से सम्बन्धित किसी भी घटना को खुलकर बोल पाता है, यह उसकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति है।

(5) काव्य पाठ—बच्चे लयबद्ध ध्वनियों को सुनने में बड़ी रुचि रखते हैं और कविता या गीत एक लयबद्ध रचना होती है और इसे कण्ठस्थ करना भी आसान होता है। अतः दैनिक जीवन से जुड़ी वस्तुओं पर कविता कहना, सुनना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। शिक्षक को चाहिए कि कक्षा में ऐसी कविताओं का आदर्श वाचन कर छात्रों से एकल एवं सामूहिक वाचन कराएँ।

(6) सस्वर वाचन—शिक्षक द्वारा किये गये आदर्श वाचन से छात्र शुद्ध उच्चारण, गति, विराम चिन्हों आदि का ज्ञान करते हैं। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों से अनुकरण वाचन कराए। इससे यह पता चल सकेगा कि छात्र ध्यान से पाठ्य–वस्तु को सुन रहे हैं या नहीं। अतः छात्रों द्वारा सस्वर वाचन कराने से उनमें श्रवण कौशल का विकास किया जा सकता है।

(7) भाषण—भाषण द्वारा बालक में मौखिक भाषा के साथ–साथ श्रवण कौशल का भी विकास किया जा सकता है। भाषण द्वारा बालक की श्रवणेन्द्रियों का विकास किया जा सकता है।

(8) श्रुत लेख—श्रुत लेखन में शिक्षक किसी गद्यांश आदि को बोलता जाता है और छात्र सुनकर लिखते जाते हैं। श्रुत लेख के माध्यम से भी विद्यार्थियों में श्रवण कौशल का विकास किया जा सकता है।

(9) वाद विवाद—श्रवण कौशल का प्रशिक्षण देने के लिए वाद–विवाद भी एक महत्वपूर्ण क्रिया है। इसके माध्यम से भी हम विद्यार्थियों के श्रवण कौशल का विकास करते हैं।

(10) दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग—श्रवण कौशल को विकसित करने तथा उच्चारण संबंधी दोषों को दूर करने के लिए ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर, रेडियो, चलचित्र, दूरदर्शन तथा वीडियो आदि की सहायता ली जा सकती है।

प्रश्न 16. श्रवण कौशल के विकास में होने वाली बाधाओं को बताइए। (जबलपुर 2018

उत्तर—श्रवण कौशल के विकास में होने वाली बाधाएँ निम्नलिखित हैं—

(1) शैक्षिक वातावरण का अभाव—प्रायः देखा जाता है कि शिक्षक द्वारा कक्षा में शैक्षिक वातावरण तैयार किए बिना ही शिक्षण प्रारम्भ कर दिया जाता है। इस स्थिति में छात्र पूर्ण मनोयोग के साथ श्रवण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि वह मानसिक रूप से श्रवण करने के लिए तैयार नहीं होते हैं।

(2) कठिन भाषा का प्रयोग—जब शिक्षक द्वारा अपने कथन में या प्रस्तुतीकरण में कठिन भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो इस स्थिति में छात्र विषय–वस्तु के भाव को समझ नहीं पाता है और ध्यानपूर्वक श्रवण नहीं कर पाता।

(3) अशुद्ध उच्चारण—सामान्य रूप से अनेक शिक्षकों में ही उच्चारण संबंधी दोष पाए जाते हैं जिसके आधार पर छात्र उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को ध्यानपूर्वक नहीं सुनते हैं। प्रत्येक छात्र यह जान जाते हैं कि प्रस्तुत कि गई सामग्री ज्ञानवर्धक एवं स्पष्ट नहीं है तो उसके प्रतिभा ध्यान नहीं देते हैं।

(4) शिक्षण अधिगम सामग्री के प्रयोग का अभाव—श्रवण कौशल के विकास पर उस समय बाधा उत्पन्न होती है जब शिक्षक द्वारा विषय–वस्तु के प्रस्तुतीकरण में शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाता है। शिक्षण अधिगम सामग्री के अभाव में छात्र एक श्रोता की भाँति कार्य करते हैं, तथा उनकी सामग्री में कोई रुचि नहीं होती है। परिणामस्वरूप छात्रों में श्रवण कौशल का विकास नहीं हो पाता है।

प्रश्न 17. श्रवण कौशल विकास हेतु उपाय को समझाइए। (जबलपुर 2018

उत्तर—भाषा शिक्षक का यह प्रमुख दायित्व होता है कि वह भाषा संबंधी कौशलों के विकास में अपना पूर्ण योगदान प्राप्त करें। श्रवण कौशल भाषा का प्रथम एवं महत्वपूर्ण सोपान है। इसलिए कक्षा एवं विद्यालय स्तर पर श्रवण कौशल के विकास हेतु तथा इसके विकास मार्ग में आने वाली विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए—(1) छात्रों की योग्यता के अनुसार शिक्षण प्रदान करना चाहिए अर्थात् प्रस्तुत सामग्री का स्वरूप छात्रों की योग्यता के अनुरूप होना चाहिए जिससे छात्र उसको पूर्ण रूप से सुन सकें। (2) श्रवण कौशल के विकास हेतु छात्र की मनोदशा का ज्ञान करना भी एक शिक्षक के लिए आवश्यक है, क्योंकि छात्र मानसिक रूप से जब तक श्रवण के लिए तैयार नहीं होगा तब तक श्रवण कौशल का विकास संभव नहीं होगा। (3) शिक्षक को हर सम्भव प्रयास करना चाहिए कि वह विद्यार्थी की श्रवण सम्बन्धी हर परेशानी का समाधान कर सके।

प्रश्न 18. वाचन कौशल के उद्देश्य लिखिए।

उत्तर—वाचन कौशल के उद्देश्य—ये प्रमुख निम्न हैं—(1) विद्यार्थियों को भावों, विचारों अनुभवों को सरलतापूर्वक स्पष्ट ढंग से व्यक्त करने के योग्य बनाना। (2) शुद्ध उच्चारण, उचित स्वर, उचित गति व हाव–भाव के साथ बोलना सिखाना। (3) विचारों को प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत करना सिखाना। (4) परस्पर वार्तालाप करने के योग्य बनाना। (5) धाराप्रवाह बोलने के योग्य बनाना।

(6) विद्यार्थियों में स्वाभाविक रूप से बोलने के भाव जाग्रत करना। (7) वाचन मुद्रा के उचित प्रयोग कराने हेतु। (8) वाक्य शिक्षण प्रणाली के प्रयोग हेतु। (9) छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा के प्रयोग करने सिखाने हेतु। (10) अनुकूल भाषा का प्रयोग सिखाने हेतु। (11) छात्रों को सही व्याकरण वाली भाषा का प्रयोग करने हेतु।

प्रश्न 19. वाचन कौशल के महत्व को बताइए। **(जबलपुर 2018)**

अथवा, वाचन का महत्व लिखिए। **(जबलपुर 2021)**

उत्तर–वाचन की जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती हैं। वाचन कौशल का महत्व निम्नलिखित हैं–(1) वाचन शिक्षा प्राप्ति में सहायक है। (2) वाचन मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन है। घर, उपवन, यात्रा में व्यक्ति कहीं भी अपनी बोरियत को दूर करने के लिए व्यक्ति किताब पढ़ सकता है। (3) विचारों के आदान–प्रदान के लिए वाचन कौशल की ही आवश्यकता होती है। (4) सामाजिक जीवन में सामंजस्य तथा सामाजिक सम्बन्धों के मुद्रण बनाने में वाचन कौशल प्रमुख भूमिका में होती है। (5) सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विकास के लिए आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होना आवश्यक है। आलोचनात्मक दृष्टिकोण के विकास के लिए अध्ययन अति आवश्यक है और 'अध्ययन' वाचन का ही एक रूप है। (6) वाचन कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है। क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न ग्रंथों को पढ़कर अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करता है।

प्रश्न 20. वाचन कौशल की विधियों को लिखिए। **(छतरपुर 2018)**

उत्तर–हिन्दी शिक्षण में वाचन कौशल का विशेष महत्व है। वाचन कौशल की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यकता होती है। वाचन कौशल एक कला है। इस कला को विभिन्न प्रकार की नवीन विधियों से और भी निखारा जा सकता है। वाचन कौशल की निम्नलिखित विधियाँ हैं–

(1) वर्णबोध विधि–इस विधि के अनुसार, सबसे पहले बालकों को वर्णमाला के वर्णों का ज्ञान कराया जाता है। पहले स्वरों का बाद में व्यंजनों का ज्ञान कराया जाता है। जब बालक वर्णों का भली–भाँति ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं तो उन्हें शब्द बनाने सिखाये जाते हैं। इस विधि में वर्णों का क्रमबद्ध ज्ञान होता है। मात्राओं का पूर्ण ज्ञान, शुद्ध उच्चारण तथा वर्णों को मिलाकर शब्द पढ़ने का अभ्यास होता है।

(2) ध्वनि साम्य विधि–इस विधि में समान ध्वनि से उच्चरित शब्दों को एक साथ मिलाया जाता है।

(3) देखो और कहो विधि–यह शब्द विधि भी कहलाती है। इस विधि में शब्द से सम्बन्धित वस्तु या चित्र दिखाकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। जैसे–आम का चित्र दिखाकर बालक से पूछा जाता है कि यह क्या है ? बालक चित्र को देखकर तथा उससे साहचर्य स्थापित कर शब्द को बोलने का अभ्यास कर लेते हैं। इस प्रकार बालक वाचन कला में निपुण हो जाते हैं।

(4) वाक्य विधि–यह एक मनोवैज्ञानिक विधि है। इस विधि में पहले बच्चे के सम्मुख वाक्य प्रस्तुत किया जाता है। बालकों को पहले वाक्य का अभ्यास कराया जाता है, फिर शब्द तथा बाद में वर्ण का। इस विधि में बालक स्वाभाविक क्रम में पढ़ना सीखता है। अतः इस विधि में पढ़ने सीखाने के लिए वाक्य शिक्षण विधि को ही आधार बनाना चाहिए।

(5) कहानी विधि–वाचन शिक्षण की कहानी विधि एक महत्वपूर्ण विधि है। बालक कहानी में बहुत रुचि लेते हैं। इस विधि में वाक्यों को इस प्रकार सजाते हैं कि एक कहानी बन जाये। छोटी–छोटी कहानी चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के सामने प्रस्तुत की जाती है। शिक्षक कहानी के वाक्यों को श्यामपट्ट पर लिखता है। शिक्षक उन्हें पढ़ता है। फिर छात्र इसका वाचन करते हैं। इस प्रकार वाक्य के विश्लेषण द्वारा शब्दों व वर्णों का ज्ञान होता जाता है। इस प्रकार बालक वाचन कला में निपुण हो जाते हैं।

(6) साहचर्य/सम्पर्क विधि–इस विधि का प्रतिपादन **मेरिया मान्टेसरी** ने किया था। बालकों के परिचित चित्र तथा बोलने वाली वस्तुओं के चित्र एक कमरें में टांग दिये जाते हैं। सभी कार्डों को एक साथ मिला देते हैं।

प्रश्न 21. लेखन कौशल के उद्देश्य लिखिए। (उज्जैन 2018)

उत्तर–लेखन कौशल के प्रमुख उद्देश्य–निम्न हैं–(1) विद्यार्थियों को लेखन कला का पूर्ण परिचय देना ताकि वे अपने विचारों, भावों एवं अनुभवों को मूर्त रूप दे सकें एवं दूसरों के भावों को लिपिबद्ध कर सकें। (2) विद्यार्थियों को सुंदर, सुडौल तथा स्पष्ट लेख की शिक्षा देना। (3) विद्यार्थियों के शब्दकोश को बढ़ाना। (4) विद्यार्थियों को लिखने का इतना अभ्यास कराना कि वे यंत्रवत गति के साथ धारा प्रवाह रूप से लिख सके। (5) विभिन्न विराम चिन्हों का उचित प्रयोग सिखाना। (6) विद्यार्थियों को अपने विचारों तथा अनुभवों को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने का अभ्यास कराना। (7) मातृभाषा या हिंदी अक्षरों का वास्तविक स्वरूप चित्रित कर सकने की क्षमता का विकास करना। (8) विद्यार्थियों को सृजनात्मक शक्ति और मौलिक रचना करने में निपुण बनाना। (9) वाक्य, रचना, शुद्ध वर्तनी, विरामचिन्हों का प्रयोग करना सिखाना। (10) शुद्ध, अक्षर विन्यास का ज्ञान कराना। (11) विद्यार्थियों को सुपाठ्य लेख लिखना–सीखाना। (12) अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतलेख का अभ्यास कराना। (13) विद्यार्थियों में भाषा और साहित्य के प्रति आदर का भाव जाग्रत करना। (14) विद्यार्थियों में बोध तथा तर्कशक्ति का विकास करना। (15) विद्यार्थियों में स्वतः लेखन की क्रिया में रुचि उत्पन्न करना। (16) विद्यार्थियों में विषयानुसार भाषा, शैली और विचारों की तार्किक क्रम में अभिव्यक्ति का ज्ञान कराना। (17) विद्यार्थियों के हाथ, मस्तिष्क, हृदय तथा नेत्र में समन्वय उत्पन्न करके इंद्रिय शिक्षण करना। (18) विद्यार्थियों को लिपि, शब्द, मुहावरों आदि का ज्ञान कराना।

प्रश्न 22. लेखन कौशल के महत्व को बताइए। (उज्जैन 2021, 22)

उत्तर–बोलने तथा पढ़ने की क्रिया से लेखन क्रिया अधिक कठिन है। लेकिन **मैडम माण्टेसरी** इसे सरल मानती हैं तथा लिखना–सिखाना भाषा शिक्षण का प्रारम्भिक कार्य मानती हैं। उनका मानना है कि लिखने के साथ पढ़ना भी आ जाता है। लेखन कौशल का महत्व निम्नलिखित हैं–

(1) लिपि के ज्ञान के बिना बालक न तो शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कर सकता है। (2) जब तक बालक को लिखना नहीं आ जाता तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता। (3) लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से हम अपने विचारों को सुरक्षित रख सकते हैं तथा उन्हें दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। (4) लिखित अभिव्यक्ति से ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है। (5) हमारी संस्कृति रीति–रिवाज भाषा के लिखित रूप के कारण ही आगे आने वाली पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। (6) बौद्धिक विकास के लिए लिखना–सीखना परम आवश्यक है। (7) विचार करने तथा मनन करने के लिए लेखन ज्ञान विशेष सहायक होता है। (8) लिखित भाषा साहित्य भंडार में वृद्धि करती है। (9) संसार में हो रहे नये ज्ञान, विज्ञान से परिचित कराने के लिए मुख्य साधन लिखित भाषा ही है। (10) स्वतंत्र लेखन से मानव जाति की सेवा तथा जीविकोपार्जन में भी सहायता मिलती है।

प्रश्न 23. सुलेख के महत्व को बताइए।

उत्तर–सुलेख के महत्व–लिखना सिखाने का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि बच्चे अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों को लिखने लगे, अपितु यह भी आवश्यक होता है कि वे सुंदर और सुडौल अक्षरों की रचना करें और उचित गति से लिखें। सुलेख के महत्व को स्पष्ट करते हुए **राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी** ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं और उन्होंने इसके महत्व को भी स्वयं स्वीकार किया है–"मैं नहीं जानता कि कब मुझमें यह विचार आया कि सुलेख शिक्षा का कोई आवश्यक अंग नहीं है। लेकिन यह विचार विलायत जाने तक मुझमें विद्यमान था। जब दक्षिण अफ्रीका में मैंने दक्षिण अफ्रीका में ही जन्मे और शिक्षित वकीलों और नवयुवकों की सुंदर लिखावट को देखा तो मुझे अपने आप पर लज्जा आयी और अपनी भूल पर भी मैं बहुत पछताया। मैंने देखा और बुरी लिखावट को

सुधारना चाहा लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। मैं युवावस्था की अपनी भूल को कभी भी ठीक नहीं कर पाया। मेरे उदाहरण से सभी नवयुवकों और नवयुवतियों को चेतावनी मिल जानी चाहिए और उन्हें यह भी समझ लेना चाहिए कि सुलेख व्यक्ति की शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है।"

अध्यापक का उद्देश्य अपने छात्रों को शुद्ध, सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा लिखना सिखाना है। अतः सुलेख के समुचित अभ्यास के बिना अध्ययन का एक पक्ष अधूरा छूट जाता है।

पी.डी. पटनायक के शब्दों में—"निःसन्देह ही लेखन में सुलेख का उतना महत्व है जितना भाषण में सुउच्चारण का"। सुलेख यदि शुद्ध नहीं होता तो भाषा ज्ञान की स्थिति फिर भी अधूरी कही जायेगी। लिखित कार्य में शुद्ध लेखन का इसीलिए महत्व है।

लेखन के लिए अनुलेख और श्रुतलेख दोनों का महत्व है, यदि इसका अभ्यास कर लिया तो हम सुलेख लिखना सीख जाते हैं।

अनुलेख—किसी लिखावट के पीछे या बाद में लिखना, जब अध्यापक बोल-बोलकर श्यामपट्ट पर लिखता जाता हैं और बालक गति से उसे सुनते हुए लिखते जाते हैं, तब उसके द्वारा लिखित सामग्री लेख और शुद्ध लेखन की दृष्टि से उसके समुचित अभ्यास का परिचय देती है। गति के साथ-साथ लिखना ही अनुलेखन हैं। अनुलेख का पर्याप्त अभ्यास कराना चाहिए। अनुलेख का कुछ अभ्यास हो जाने पर प्रतिलेख की ओर छात्रों को मोड़ना चाहिए। प्रतिलेख में छात्र स्वतन्त्र रूप से किसी पुस्तक या पत्रिका किसी का अनुकरण करके अपनी कॉपी पर लिखता है। अतः प्रतिलेख का लक्ष्य भी सुलेख ही हैं, इसमें भाषा की शुद्धता का भी ज्ञान होता रहता है।

श्रुतलेख—यह साधन प्राथमिक कक्षाओं में प्रयुक्त होता है। प्रतिलिपि के पश्चात् अनुलिपि और अनुलिपि के पश्चात् श्रुतलेख का क्रम आता है। प्राथमिक कक्षाओं में श्रुतलेख को ही शुद्ध लेख कहा जाता है। श्रुतलेख अर्थात् सुना हुआ लेख, इसमें अध्यापक बोलता है और छात्र सुनकर बोली हुई सामग्री को लिखता है। श्रुतलेख में सुंदर लिखावट का तो महत्व होता ही है, किन्तु इसके साथ ही भाषा की शुद्धता का भी महत्व होता है। श्रुतलेख का उद्देश्य छात्रों की लिखावट में सुडौलता के साथ-साथ स्पष्टता का अभ्यास, लिखायी में गति लाना एवं श्रुतलेख का प्रमुख लक्ष्य है। इस विधि के द्वारा बालक के हाथ, कान और मस्तिष्क की क्रियाओं में संतुलन स्थापित किया जाता है और उसकी स्मरण शक्ति का विकास भी किया जाता है। इसके साथ ही सुनकर भाव-ग्रहण करने का भी अभ्यास कराया जाता है। वर्तनी की शिक्षा भी इसका एक उद्देश्य है।

इस प्रकार सुलेख हमारे आंतरिक विचारों के प्रतिबिन्ब होते हैं। यदि हम अंदर से सशक्त होंगे, तो हमारे विचारों में उसका सौन्दर्य झलकेगा। वहीं, सौन्दर्य कलम से कागज पर सुलेख के रूप में उतरेगा, जिससे हमारे व्यक्तित्व की पहचान होगी। सुलेख लिखने से हस्त लेखन में सुधार होता है। इससे मात्राओं और लेखन में सुधार होता है। सुलेख लिखते समय परस्पर वर्णों में तथा वर्णों का मात्राओं के साथ आकार की दृष्टि से अनुपात होना चाहिए। देवनागरी लिपि के वर्गों में (π) का चिन्ह लेख को सुन्दर बनाने में बहुत महत्व होता है। यदि पाई सीधी होगी तो वर्ण सुंदर बनेगा। (π) का कोण 90 अंश पर होना चाहिए। गाँधीजी ने भी सुलेख के महत्व को व्यक्त करते हुए कहा है,—"सुंदर लेख के बिना शिक्षा अपूर्ण है।" स्पष्टता, पठनीयता एवं आकर्षक लिखावट सुलेख की आधारशिला है।

प्रश्न 24. लेखन शिक्षण की विधियों को समझाइए। **(छतरपुर 2017, 22)**

उत्तर—लेखन शिक्षण की महत्वपूर्ण विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(1) रूपरेखा अनुकरण विधि—इस विधि में शिक्षक स्लेट, कॉपी या श्यामपट्ट पर चॉक या पेन्सिल से वर्ण लिख देता है। छात्र उन लिखे वर्णों या निशानों पर पेन्सिल या चॉक फेरता है। जिससे शब्द या वाक्य उभर कर आ जाते हैं। इस प्रकार बालक वर्णों को लिखना सीख जाता है।

प्रश्न 21. लेखन कौशल के उद्देश्य लिखिए। (उज्जैन 2018)

उत्तर–लेखन कौशल के प्रमुख उद्देश्य–निम्न हैं–(1) विद्यार्थियों को लेखन कला का पूर्ण परिचय देना ताकि वे अपने विचारों, भावों एवं अनुभवों को मूर्त रूप दे सकें एवं दूसरों के भावों को लिपिबद्ध कर सकें। (2) विद्यार्थियों को सुंदर, सुडौल तथा स्पष्ट लेख की शिक्षा देना। (3) विद्यार्थियों के शब्दकोश को बढ़ाना। (4) विद्यार्थियों को लिखने का इतना अभ्यास कराना कि वे यंत्रवत गति के साथ धारा प्रवाह रूप से लिख सके। (5) विभिन्न विराम चिन्हों का उचित प्रयोग सिखाना। (6) विद्यार्थियों को अपने विचारों तथा अनुभवों को अनुच्छेदों में बाँटकर लिखने का अभ्यास कराना। (7) मातृभाषा या हिंदी अक्षरों का वास्तविक स्वरूप चित्रित कर सकने की क्षमता का विकास करना। (8) विद्यार्थियों को सृजनात्मक शक्ति और मौलिक रचना करने में निपुण बनाना। (9) वाक्य, रचना, शुद्ध वर्तनी, विरामचिन्हों का प्रयोग करना सिखाना। (10) शुद्ध, अक्षर विन्यास का ज्ञान कराना। (11) विद्यार्थियों को सुपाठ्य लेख लिखना–सीखाना। (12) अनुलेख, अतिलेख तथा श्रुतलेख का अभ्यास कराना। (13) विद्यार्थियों में भाषा और साहित्य के प्रति आदर का भाव जाग्रत करना। (14) विद्यार्थियों में बोध तथा तर्कशक्ति का विकास करना। (15) विद्यार्थियों में स्वतः लेखन की क्रिया में रुचि उत्पन्न करना। (16) विद्यार्थियों में विषयानुसार भाषा, शैली और विचारों की तार्किक क्रम में अभिव्यक्ति का ज्ञान कराना। (17) विद्यार्थियों के हाथ, मस्तिष्क, हृदय तथा नेत्र में समन्वय उत्पन्न करके इंद्रिय शिक्षण करना। (18) विद्यार्थियों को लिपि, शब्द, मुहावरों आदि का ज्ञान कराना।

प्रश्न 22. लेखन कौशल के महत्व को बताइए। (उज्जैन 2021, 22)

उत्तर–बोलने तथा पढ़ने की क्रिया से लेखन क्रिया अधिक कठिन है। लेकिन **मैडम माण्टेसरी** इसे सरल मानती हैं तथा लिखना–सिखाना भाषा शिक्षण का प्रारम्भिक कार्य मानती हैं। उनका मानना है कि लिखने के साथ पढ़ना भी आ जाता है। लेखन कौशल का महत्व निम्नलिखित हैं–

(1) लिपि के ज्ञान के बिना बालक न तो शुद्ध वर्तनी का प्रयोग कर सकता है। (2) जब तक बालक को लिखना नहीं आ जाता तब तक उसका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं हो सकता। (3) लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से हम अपने विचारों को सुरक्षित रख सकते हैं तथा उन्हें दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। (4) लिखित अभिव्यक्ति से ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है। (5) हमारी संस्कृति रीति–रिवाज भाषा के लिखित रूप के कारण ही आगे आने वाली पीढ़ी तक हस्तांतरित होती है। (6) बौद्धिक विकास के लिए लिखना–सीखना परम आवश्यक है। (7) विचार करने तथा मनन करने के लिए लेखन ज्ञान विशेष सहायक होता है। (8) लिखित भाषा साहित्य भंडार में वृद्धि करती है। (9) संसार में हो रहे नये ज्ञान, विज्ञान से परिचित कराने के लिए मुख्य साधन लिखित भाषा ही है। (10) स्वतंत्र लेखन से मानव जाति की सेवा तथा जीविकोपार्जन में भी सहायता मिलती है।

प्रश्न 23. सुलेख के महत्व को बताइए।

उत्तर–सुलेख के महत्व–लिखना सिखाने का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि बच्चे अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों को लिखने लगे, अपितु यह भी आवश्यक होता है कि वे सुंदर और सुडौल अक्षरों की रचना करें और उचित गति से लिखें। सुलेख के महत्व को स्पष्ट करते हुए **राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी** ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं और उन्होंने इसके महत्व को भी स्वयं स्वीकार किया है–"मैं नहीं जानता कि कब मुझमें यह विचार आया कि सुलेख शिक्षा का कोई आवश्यक अंग नहीं है। लेकिन यह विचार विलायत जाने तक मुझमें विद्यमान था। जब दक्षिण अफ्रीका में मैंने दक्षिण अफ्रीका में ही जन्मे और शिक्षित वकीलों और नवयुवकों की सुंदर लिखावट को देखा तो मुझे अपने आप पर लज्जा आयी और अपनी भूल पर भी मैं बहुत पछताया। मैंने देखा और बुरी लिखावट को

(2) अनुकरण विधि–शिक्षक श्यामपट्ट या कॉपी पर कुछ शब्द या वर्ण लिख देता है। अलग लिखे गये वर्णों या शब्दों को अनुकरण करके लिखता है।

(3) माण्टेसरी विधि–इस विधि में सबसे पहले गत्ते या लकड़ी के बने अक्षरों पर हाथ फेरने को कहा जाता है। जब उनकी ऊँगलियाँ सध जाती हैं तब स्वतन्त्र रूप से वर्ण लिखने को कहा जाता है। तब उन्हें कटे अक्षरों के बीच पेन्सिल चलाकर अक्षर लिखना सिखाया जाता है। नीचे कागज खाली कटे हुए स्थानों पर पेन्सिल चलाने से नीचे के कागज पर वर्ण बन जायेंगे और वर्ण लिखने के लिए हाथ का अभ्यास भी बालक को हो जायेगा।

(4) जेकटॉट प्रणाली–इस प्रणाली में बालकों के समक्ष पूरा वाक्य रखा जाता है। बालक अनुकरण के आधार पर एक–एक शब्द को लिखते हैं और मूल वाक्य से मिलाकर उसकी अशुद्धि का पता लगाकर उसे दूर करते हैं। अंत में अध्यापक बालकों को स्मृति के आधार पर सम्पूर्ण वाक्य लिखने के लिए कहता है। छोटे बालकों के लिए यह विधि जटिल तथा कठिन होती है।

(5) चित्र विधि–इस प्रणाली में चित्रों की सहायता से शब्द और अक्षर सिखाए जाते हैं। वास्तव में लिपि का विकास चित्रों की सहायता से ही हुआ है। इस विधि की सहायता से खेल–खेल में बच्चों को वर्ण रचना सीखा दी जाती है।

(6) मनोवैज्ञानिक विधि–लिखना सिखाने के लिए मनोवैज्ञानिक प्रणाली का विशेष महत्व है। मनोवैज्ञानिक प्रणाली में वर्णमाला के अक्षर तथा शब्द आदि सिखाने की अपेक्षा पूर्णवाक्य बोलना तथा लिखना सिखाया जाये। बालक जब पूर्ण वाक्य बोलने लगे तथा उनकी कर्मेन्द्रियाँ तथा ज्ञानेन्द्रियाँ मजबूत हो जाये तो उन्हें पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करना चाहिए।

प्रश्न 25. विद्यार्थियों को लेखन प्रशिक्षण देते समय किन–किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए ?

उत्तर–विद्यार्थियों को लेखन प्रशिक्षण देते समय निम्नलिखित सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए–(1) लिखना सिखाने के लिए बालकों को मानसिक रूप से तैयार करना चाहिए। साथ ही यह भी देखना आवश्यक है कि उनकी ऊँगलियाँ तथा हाथ की माँसपेशियाँ कलम पकड़ने के योग्य है या नहीं। (2) लिखने के लिए समय तथा उपयुक्त वातावरण का भी ध्यान रखना चाहिए। कक्षा का वातावरण सुरुचिपूर्ण हो। (3) लिखना सीखने को तैयार होने पर उसे वर्णमाला के सभी अक्षरों को लिखना सिखाना चाहिए। (4) इसके पश्चात् शब्दों तथा वाक्यों को लिखना सिखाना चाहिए। जब बालक वर्णों की रचना सीख जाये, तब वर्ण मिलाकर शब्द बनाना और उसके पश्चात् वाक्य लिखना सिखाना चाहिए। बालकों को सुंदर, स्वच्छ तथा स्पष्ट रूप से लिखने का अभ्यास कराना चाहिए। (5) जब बच्चों को देखकर, सुनकर, सुन्दर लेख द्वारा शब्द व वाक्य लिखने का अभ्यास हो जाये तो उन्हें अपने भावों व विचारों को तार्किक क्रम तथा व्याकरण सम्मत भाषा में व्यक्त कराने का अभ्यास कराना चाहिए। (6) लिखने की कॉपी आँखों से एक फुट की दूरी पर हो। (7) यदि तख्ती पर लिखना हो तो वह चौरस व चिकनी हो। काली तख्ती पर खड़िया का प्रयोग होना चाहिए। (8) हिंदी में लिखने का क्रम बाएँ से दाएँ ओर होना चाहिए। (9) बालकों को सर्वप्रथम उनका नाम लिखना सिखाया जाये, ऐसा करने से बालक प्रसन्नता का अनुभव करता है। (10) बालकों के सामने सुलेख के नमूने प्रस्तुत करना चाहिए जिससे वे अपना लेख सुधार सकें। (11) कलम पकड़ने का ढंग ठीक होना चाहिए। कलम अंगूठे व मध्य ऊँगली के बीच में हो तथा पहली ऊँगली कलम के ऊपर रहे। कलम को निब या पाइंट से एक इंच ऊपर से पकड़ना चाहिए।

प्रश्न 26. लेखन कौशल में होने वाले दोष व सुझावों को समझाइए। **(छतरपुर 2019)**

उत्तर–शिक्षक को लेखन के दोषों का बोध होना आवश्यक है, तभी वह इन दोषों को सुधार कर सकता है। लेखन कौशल में निम्नलिखित प्रकार के दोष हो सकते हैं–

(1) बालक लिखने में पंक्ति का ध्यान नहीं रखता है और अक्षर समान आकार के नहीं होते हैं। कोई एक ओर झुके रहते हैं तथा सीधे नहीं लिख पाते हैं। (2) सभी अक्षरों की ऊँचाई समान नहीं होती है। (3) अक्षरों को पूर्ण रूप से न लिखना। शिरारेखा का स्थान पर टूटा होना। एक शब्द के ऊपर एक ही रेखा न होना। (4) अक्षरों का शुद्ध ज्ञान न होने पर कुछ भी लिख देता है। (5) लेखन में एक ही लेखनी का प्रयोग न करने से कुछ पतले और कुछ मोटे अक्षर होते हैं। (6) शब्द को पूरा न लिखना तथा शब्द के अक्षर बिखरे होना। (7) प्रत्येक शब्द तथा अक्षर की स्याही समान न होना। अक्षरों की स्याही का फीका होना।

लेखन हेतु सुझाव– लेखन शिक्षा के लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–(1) छात्रों के बैठने का आसन समुचित होना चाहिए। झुककर लिखने की आदत न पड़े। (2) हिंदी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के सुधार हेतु अभ्यास कराया जाए। (3) लिखने तथा पढ़ने की क्रियाएँ एक साथ होनी चाहिए। (4) अक्षरों तथा शब्दों के सुंदर लिखने के लिए आदर्श प्रस्तुत किया जाए जिसका छात्र अनुकरण कर सके। (5) लेखन एक कला है जिसका विकास अभ्यास तथा अनुकरण से किया जा सकता है। (6) लेखन क्रिया छात्रों की रुचि के शब्दों से आरम्भ की जानी चाहिए। (7) शब्दों और अक्षरों को धीरे–धीरे स्पष्ट तथा सुंदर लिखने से आरम्भ करके लिखने की गति का भी विकास किया जाए। (8) शब्दों एवं अक्षरों की एकरूपता गति से लिखने में मुख्य विशेषताओं का ध्यान रखा जाये।

प्रश्न 27. पठन कौशल के उद्देश्यों को समझाइए। **(छतरपुर 2017)**

उत्तर–पठन कौशल–पठन भाषा शिक्षण का एक प्रमुख अंग है। पठन का भाषा शिक्षण में अत्यधिक महत्व है। प्रारंभिक कक्षाओं में पठन पर विशेष बल दिया जाता है। इसमें बालक लिखित या मुद्रित वर्णों, शब्दों, वाक्यों और अनुच्छेदों को जोर से बोलकर या मन में पढ़कर उनका भाव ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में, लिखित भाषा को पढ़ने की क्रिया को पठन कौशल कहा जाता है।

पठन कौशल के उद्देश्य–ये निम्नलिखित हैं–

(1) पठन, शिक्षा प्राप्ति में सहायक होता है। (2) पठन कौशल ज्ञानोपार्जन का साधन है। (3) पठन के माध्यम से शब्दों पर उचित बल दिया जाना चाहिए। (4) पठन के माध्यम से विरामादि चिन्हों का ज्ञान करवाया जाता है। (5) पठित वस्तु का भाव ग्रहण करने की क्षमता विकसित करना। (6) बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि करवाना। (7) स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास करना। (8) पठन के प्रति रुचि उत्पन्न करना तथा पठन में होने वाली त्रुटियों से अवगत कराकर उनके निवारण की जानकारी देना। (9) पठन में मौलिकता तथा मधुरता का समावेश होना चाहिए। पठन सम्बन्धी उचित शिष्टाचार के नियमों के प्रयोग का पालन करना चाहिए, जैसे उचित मुद्रा में खड़ा होना चाहिए। (10) पठन में कृत्रिमता नहीं होनी चाहिए, लिखित सामग्री को उचित भावों तथा विचारों की सार्थकता के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

प्रश्न 28. पठन कौशल की शिक्षण विधियों को समझाइए। **(छतरपुर 2017)**

उत्तर–पठन कौशल की शिक्षण विधियों को दो भागों में बाँटा गया है–

1. शब्द तत्व पर आधारित विधियाँ एवं 2. अर्थग्रहण पर आधारित विधियाँ।

1. शब्द तत्व पर आधारित विधियाँ–शब्द तत्व पर आधारित निम्नलिखित तीन विधियाँ हैं–

(1) वर्णबोध विधि, (2) स्वरोच्चारण विधि एवं (3) शब्द विधि।

(1) वर्णबोध विधि– इस विधि में पहले छात्रों को वर्णों का ज्ञान कराया जाता है। वर्णों में भी स्वर पहले और व्यंजन बाद में सिखाए जाते हैं। फिर मात्राओं का ज्ञान कराया जाता है। मात्राओं के उपरांत संयुक्ताक्षरों की जानकारी दी जाए। इसका आधार यह है कि जब तक बालक को अक्षर का ज्ञान नहीं होगा, तब तक वह उच्चारण या वाचन नहीं सीख सकता है।

(2) स्वरोच्चारण विधि–इस विधि में अक्षरों एवं शब्दों को उनकी स्वर ध्वनि के अनुसार पढ़ाया

जाता है। इसमें बारहखड़ी को आधार माना जाता है, जैसे– क, का, कि, की, कु, कू, के,कै, को, कौ, कं, कः। इसमें स्वर के बिना व्यंजन नहीं सिखा सकते।

(3) शब्द विधि–इस विधि में प्रारंभ से ही बच्चों को शब्दों का परिचय कराया जाता है। इसके बाद उस शब्द में विद्यमान वर्णों का ज्ञान कराया जाता है। शब्दों का ज्ञान कराने के लिए चित्रों की सहायता ली जाती है। अध्यापक चित्र दिखाकर चित्र के नीचे लिखे उनके नाम का उच्चारण कराता है तथा छात्र उसका अनुकरण करते हैं। इस विधि में पूर्ण से अंश की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर तथा सरल से कठिन की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का पालन किया जाता है।

2. अर्थग्रहण पर आधारित विधियाँ–अर्थग्रहण पर आधारित छः विधियाँ हैं– (1) देखो और कहो विधि, (2) वाक्य विधि, (3) कहानी विधि, (4) कविता विधि, (5) अनुकरण विधि एवं (6) सम्पर्क विधि।

(1) देखो और कहो विधि–इस विधि में शब्दों से सम्बन्धित वस्तु या चित्र दिखाकर पहले शब्द का ज्ञान कराया जाता है। चित्र के नीचे वस्तु का नाम लिखा होता है। चित्र परिचित होने के कारण बच्चे आसानी से शब्द से साहचर्य स्थापित कर लेते हैं। अध्यापक का अनुकरण करते हुए बच्चे शब्द का उच्चारण करते हैं। कई बार देखने, सुनने और बोलने से वर्णों के चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाते हैं।

(2) वाक्य विधि–इस मत के प्रतिपादकों का मत है कि बालक वाक्य या वाक्यांशों में बोलता है। इसकी इकाई वाक्य है, शब्द नहीं। इसलिए प्रारंभ से ही बालकों को वाक्यों से ही पढ़ाना शुरू करना चाहिए। पहले वाक्य, फिर शब्द, फिर वर्ण, इस क्रम से बच्चों को पढ़ाने का अभ्यास कराना चाहिए।

(3) कहानी विधि–इस विधि में छोटे–छोटे वाक्यों से निर्मित कहानी, चार्ट व चित्रों के माध्यम से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है। शिक्षक इस कहानी को कक्षा में कहता है। इसके बाद शिक्षक कहानी को श्यामपट्ट पर लिखता है व वाचन कराता है। विद्यार्थी शिक्षक का अनुकरण करते हैं वाक्य के विश्लेषण के माध्यम से छात्र शब्द व वर्णों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(4) कविता विधि–बच्चों की संगीत में स्वाभाविक रुचि होती है। इसी को ध्यान में रखकर कविता विधि का विकास किया गया। इस विधि में कहानी की अपेक्षा सरल वाक्यों वाली कविता होती है। बच्चों से कविता का गायन करवाया जाता है। बच्चे धीरे–धीरे शब्दों और वर्णों को पहचानने लगते हैं। इसके बाद वर्णों का क्रम से ज्ञान कराया जाता है।

(5) अनुकरण विधि–यह विधि देखो और कहो विधि का दूसरा स्वरूप है। इसमें अध्यापक एक–एक शब्द बालकों के समक्ष कहता है और छात्र उसे दोहराते हुए अनुकरण करते हैं। इस प्रकार छात्र शब्द ध्वनि का उच्चारण एवं वाचन सीखते हैं।

(6) सम्पर्क विधि–इस विधि का प्रचार **मॉन्टेसरी** ने किया था। इससे पहले बालकों को चित्र, खिलौने, वस्तुओं आदि से परिचित कराते हैं। उनके आगे वस्तुओं और कार्डों को रखा जाता है। फिर कार्डों को आपस में मिला देते हैं और बच्चों को कहा जाता है, जो कार्ड जिस वस्तु से सम्पर्क रखते हैं, उसके आगे पुनः रख दे। इस सम्पर्क प्रणाली के अभ्यास से धीरे–धीरे शब्द व वर्ण से परिचित हो जाते हैं।

प्रश्न 29. पठन कौशल के प्रकारों को समझाइए। **(उज्जैन 2021)**

***अथवा*, पठन के प्रकारों का वर्णन कीजिये।**

उत्तर–पठन कौशल को अंग्रेजी भाषा में रीडिंग स्किल (Reading skill) कहा जाता है। पठन का अर्थ है 'जोर से तथा मौन होकर पढ़ना।' जिससे पठित सामग्री समझ में आ जाए। पठन के अंतर्गत सस्वर तथा मौनवाचन आ जाता है।

पठन कौशल के प्रकार– पठन के मुख्यतः दो प्रकार होते हैं–

1. सस्वर पठन एवं 2. मौन पठन।

1. सस्वर पठन–सस्वर पठन से तात्पर्य है, लिखित भाषा में व्यक्त भाव तथा विचारों को समझाने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण करके पढ़ना। इसे मौखिक पठन भी कहा जाता है। सस्वर पठन का उद्देश्य बालकों को ध्वनियों के उचित आरोह–अवरोह एवं विराम चिन्ह आदि को दृष्टि में रखकर उचित स्वर, यति, गति, लय के साथ पाठ्य–वस्तु का अर्थ एवं भाव ग्रहण करते हुए कुछ उच्च स्तर करते हुए पढ़ने की योग्यता प्रदान करना है। सस्वर पठन करने से छात्रों का शब्दोच्चारण एवं अक्षर विन्यास शुद्ध होता है।

सस्वर पठन के दो भेद हैं–

(1) व्यक्तिगत पठन एवं (2) सामूहिक पठन।

(1) व्यक्तिगत पठन–व्यक्तिगत पठन या व्यक्तिगत स्वर पठन वह पठन होता है जो कक्षा में शिक्षक द्वारा किए गए आदर्श पाठ का अनुकरण छात्र द्वारा किया जाता है या बालक व्यक्तिगत रूप से स्वयं उच्चारण के साथ पठन करता है।

(2) सामूहिक पठन–सामूहिक पठन वह पठन होता है जिसमें बालक एक समूह में या एक कक्षा के सभी बालक मिलकर किसी भी पाठ को उच्चारण के साथ मिलकर पढ़ते हैं, उसे सामूहिक पठन कहते हैं। व्यक्तिगत और सामूहिक पठन के आधार पर पठन के अन्य दो भेद इस प्रकार हैं–

(i) आदर्श वाचन एवं (ii) अनुकरण वाचन।

(i) आदर्श वाचन–छात्रों के समक्ष पाठ्य–सामग्री को जब शिक्षक स्वयं वाचन करके प्रस्तुत करता है, तो उसे आदर्श वांचन कहा जाता है।

(ii) अनुकरण वाचन–आदर्श वाचन के बाद छात्रों द्वारा अनुकरण वाचन किया जाता है। जब छात्र शिक्षक द्वारा किए गए वाचन के ढंग पर वचन करने का प्रयत्न करते हैं तो उसे अनुकरण वाचन कहा जाता है। या शिक्षक के द्वारा उच्चारित शब्द को बालक पीछे–पीछे उच्चारित करता है, तो उसे अनुकरण वाचन कहते हैं।

2. मौन पठन–लिखित सामग्री को मन–ही–मन आवाज निकाले बिना पढ़ना मौन पठन कहलाता है। जब छात्र मौन वाचन में कुशलता अर्जित कर लेता है तब सस्वर वाचन का अधिक प्रयोग करना छोड़ देता है। मौन वाचन में निपुणता का आना व्यक्ति के विचारों की प्रौढ़ता का द्योतक होता है एवं भाषायी दक्षता, अधिकार का सूचक है। मौन पठन की प्रकृति के अनुसार मौन वाचन के दो भेद हैं–

(1) गंभीर वाचन एवं (2) द्रुत वाचन।

(1) गंभीर वाचन–गंभीर वाचन उस समय किया जाता है, जब हम किसी सामग्री की तह तक पहुँचना चाहते हैं। गंभीर वाचन में पाठ्यक्रम के प्रत्येक शब्द को पढ़ना तथा समझना आवश्यक होता है। इसमें विचारों के चिंतन व मनन की आवश्यकता पड़ती है। नवीन सूचना एकत्र करने के लिए या केन्द्रीय भाव की खोज करने के लिए हम गम्भीर वाचन या गहन वाचन करते हैं।

(2) द्रुत वाचन–द्रुतवाचन में हम तेजी से अध्ययन करते हैं। इस वाचन का सम्बन्ध विस्तृत अध्ययन से है। विस्तृत वाचन तब किया जाता है जब हम अधिक सामग्री को कम समय में पढ़ना चाहते हैं। द्रुतवाचन का प्रयोग हम तब करते हैं जब हम सीखी हुई भाषा का अभ्यास करते हैं या अवसर का सदुपयोग करना या सूचना एकत्रित करना या आनंद प्राप्त करना आदि में करते हैं।

प्रश्न 30. सस्वर वाचन के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए। (उज्जैन 2018; ग्वालियर 17)

उत्तर–जब लिखित भाषा में व्यक्त भावों एवं विचारों को समझने के लिए ध्वन्यात्मक उच्चारण करके पढ़ते हैं तो वह सस्वर वाचन कहलाता है। इसे मौखिक पठन भी कहते हैं। दूसरे शब्दों में, "मौखिक पठन उच्च स्वर में पठन की क्रिया है।"

सस्वर वाचन के उद्देश्य–निम्नलिखित हैं–(1) बालकों को शुद्धोच्चारण करने योग्य बनाना। (2) बालकों को ध्वनियों के उचित आरोह–अवरोह तथा विराम आदि चिन्हों को ध्यान में रखकर पठन में निपुण बनाना। (3) बालकों को उचित स्वर, यति, गति और लय से पठन की योग्यता प्रदान करना। (4) विषय–वस्तु को पढ़कर अर्थ एवं भाव ग्रहण करने की योग्यता प्रदान करना। (5) बालकों में मौखिक पठन द्वारा आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता विकसित करना। (6) बालक को वाचन करते या पढ़ते समय बार–बार बीच में न रोकें। इससे वाचक में प्रवाह नहीं आ पाता तथा उसमें आत्मविश्वास नहीं पनप पाता।

सस्वर वाचन का महत्व–ये निम्न हैं–(1) सस्वर वाचन से बालक की झिझक, संकोच व हिचकिचाहट आदि का निराकरण होता है। (2) बालकों का शब्दोच्चारण शुद्ध होता है। (3) बालकों का अक्षर विन्यास भी शुद्ध होता है। (4) बालकों के शब्द भंडार में वृद्धि होती है। (5) बालकों की दृश्येन्द्रियाँ, ध्वनि यंत्र एवं मस्तिष्क तीनों प्रशिक्षित होते हैं। (6) सस्वर वाचन के अभ्यास से बालक वाद–विवाद एवं भाषण कला में निपुण होते हैं। (7) बालकों के प्रारम्भिक स्तर पर सस्वर वाचन का विशेष महत्व फड़ता है। (8) इससे बालक नवीन शब्दों, सूक्तियों, लोकोक्तियों व मुहावरों से परिचय प्राप्त करते हैं। (9) इससे बालकों को स्वराघात व बलाघात का भी समुचित ज्ञान हो जाता है।

प्रश्न 31. उत्तम सस्वर वाचन में कौन–कौन से गुण होते हैं ?

उत्तर–उत्तम सस्वर वाचन में निम्नलिखित गुण होते हैं–

(1) ध्वनियों का ज्ञान–अ, आ, इ, ई, क, ख, ग इत्यादि ध्वनियों का बालक को ज्ञान होना चाहिए।

(2) उच्चारण की शुद्धता–बालकों में शब्दों के उच्चारण की शुद्धता होनी चाहिए। **जैसे**–क्षत्रिय–छत्रिय, स्त्री–इस्त्री, स्कूल–सकूल, विद्यालय–विधालय।

(3) विराम चिन्ह–विराम चिन्ह को ध्यान में रखकर ही वाचन करना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

(4) स्पष्टता–बालकों का वाचन इस प्रकार हो कि सभी श्रोता स्पष्ट रूप से समझ सकें। श्रोताओं के समूह में उतनी ही आवाज हो कि सभी श्रोता स्पष्ट रूप से समझ सकें।

(5) प्रवाह–बालकों को न द्रुतगति से पढ़ना चाहिए न ही रुक–रुक कर पढ़े अर्थात् प्रवाह के साथ पढ़े।

(6) उपयुक्त बलाघात–अच्छा वाचक बलाघात पर पूर्ण ध्यान रखता है, किस अक्षर पर कितना बल लगाना है और किस पर कम बल।

(7) स्वर में रसात्मकता–दुख पूर्ण (करुण) इस सामग्री में वीर रस या क्रोध नहीं दिखाना चाहिए। शृंगार रस की विषय–सामग्री वीभत्स रस की भाँति नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न 32. विद्यार्थियों के लिए मौन वाचन की उपयोगिता एवं महत्व को समझाइए।

(ग्वालियर 2017; उज्जैन 22)

उत्तर–मौन वाचन की उपयोगिता–मौन वाचन का प्रमुख उद्देश्य है, वाचन गति का विकास एवं गठित सामग्री का अर्थग्रहण। माध्यमिक स्तर तक आते–आते बालक के विषयों में परिपक्वता आ जाती है। अतः इस स्तर पर मौन वाचन द्वारा निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति की योग्यता विकसित होनी चाहिए–(1) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए प्रमुख भावों अथवा केन्द्रीय भावों का अर्थ ग्रहण करते हुए वाचन करना। (2) पठित सामग्री से तथ्यों, भावों एवं विचारों को ग्रहण करते हुए सारांश बताने की क्षमता का विकास करना। (3) पढ़ी हुई सामग्री प्रश्नों का सही उत्तर दे सकना। (4) उपयुक्त शीर्षक चयन करने की क्षमता का विकास कर सकना। (5) भाषा एवं भाव सम्बन्धी

कठिनाइयों का चयन कर प्रसंग के अनुकूल नवीन शब्दों, उक्तियों एवं मुहावरों तथा लोकोक्तियों का अर्थ निकाल लेना। (6) संधि, विच्छेद, उपसर्ग, प्रत्यय व शब्द धातुओं से शब्द का अर्थ निकालना। (7) शब्दकोश को देखने एवं प्रसंगानुसार अर्थ निकालने की क्षमता का विकास करना। (8) शब्द का लक्षणार्थ जान लेना। (9) विभिन्न साहित्यिक विधाओं जैसे–नाटक, निबंध, कहानी, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि के प्रमुख तत्वों की पहचान कर लेना। (10) लेखक के व्यक्तित्व की विशेषता उसकी शैली है जो इसकी पहचान भी है।

मौन वाचन का महत्व–मौन वाचन में निपुणता वैचारिक प्रौढ़ता एवं भाषायी दक्षता का सूचक है। मौनवाचन का जीवन में बड़ा ही महत्व है–(1) मौन वाचन में थकान कम होती है, वाग्यंत्रों पर जोर नहीं पड़ता। (2) मौन वाचन दूसरों को व्यवधान नहीं पहुँचाता है। (3) मौन वाचन में समय की बचत होती है। (4) मौन वाचन का दैनिक जीवन में बहुत महत्व है; जैसे–अखबार पढ़ने, साहित्य पढ़ने, यात्रा समय में पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ने में इसी वाचन का उपयोग किया जाता है। (5) मौन वाचन में बालक का ध्यान केन्द्रित रहता हैं। (6) मौन वाचन के समय चिंतन प्रक्रिया चलती रहती है। अतः पाठ को बालक समझते हुए पढ़ता चलता है। (7) सामूहिक वाचन के लिए मौन वाचन जरूरी है। (8) मौन वाचन से स्वाध्याय की आदत पड़ जाती है, पढ़ने का आनंद प्राप्त करने के लिए मौनवाचन रूप में पढ़ना नितांत आवश्यक है। (9) उच्च कक्षाओं में मौन वाचन करना अधिक हितकर व श्रेयस्कर है।

प्रश्न 33. सस्वर (मुखर) वाचन व मौन वाचन में क्या अंतर है ?

उत्तर–सस्वर वाचन व मौन वाचन में अंतर–

क्र.	सस्वर वाचन	मौन वाचन
1.	सस्वर वाचन बोलकर किया जाता है।	मौन वाचन चुपचाप किया जाता है।
2.	इसमें कक्षा का वातावरण स्वरमय हो जाता है।	मौन वाचन में कक्षा का वातावरण शांतिमय होता है।
3.	सस्वर वाचन उच्चारण शुद्धि के लिए किया जाता है।	मौन वाचन विषय–वस्तु ग्रहण करने के लिए किया जाता है।
4.	सस्वर वाचन छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी है।	मौन वाचन बड़ी कक्षाओं के लिए किया जाता है।
5.	सस्वर वाचन में ध्यानपूर्वक सुना जाता है।	मौन वाचन में गहन विचारों को समझा जाता है।
6.	सस्वर वाचन में उच्चारण से अर्थग्रहण होता है।	इसमें बिना उच्चारण अर्थग्रहण करता है।
7.	सस्वर वाचन में पढ़ने व समझने की गति न्यूनतम होती है।	इसमें समझने की गति तीव्र होती है।
8.	सस्वर वाचन में बालक कम सीख पाता है।	मौन वाचन में बालक अधिक सीखता है।
9.	सस्वर वाचन में स्थूल व सूक्ष्म अध्ययन संभव है।	मौन वाचन में सूक्ष्म एवं व्यापक अध्ययन संभव है।

प्रश्न 34. कहानी के तत्वों को समझाइए। (ग्वालियर 2015, 22; छिंदवाड़ा 22; उज्जैन 21, 22)

उत्तर–कहानी साहित्य की सभी विधाओं में सबसे पुरानी विधा है, आधुनिक काल में भी कहानी ही अधिक लोकप्रिय विधा है। पहले के समय में कहानी का उद्देश्य उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता था। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है। कहानी के मूलतः छः तत्व हैं। ये हैं–(1) विषय–वस्तु अथवा कथानक, (2) चरित्र, (3) संवाद, (4) भाषा–शैली, (5) वातावरण और (6) उद्देश्य।

(1) कथानक (विषय–वस्तु)–प्रत्येक कहानी में कोई–न–कोई घटनाक्रम अवश्य होता है। कहानी में वर्णित घटनाओं के समूह को कथानक कहते हैं। कथानक किसी भी कहानी की आत्मा है।

इसलिए कथानक की योजना इस प्रकार होनी चाहिए कि सभी घटनाएँ और प्रसंग परस्पर सम्बद्ध हों। उनमें बिखराव या परस्पर विरोध नहीं हो। कथानक को घटनाओं का आलेख भी कहा जाता है, क्योंकि कहानी की सफलता उसमें निहित घटनाओं की कलात्मकता पर आधारित होती हैं। मौलिकता, रोचकता, सुसंगठन, जिज्ञासा, कौतूहल की सृष्टि अच्छे कथानक के गुण हैं। साधारण–से–साधारण कथानक को भी कहानीकार कल्पना एवं मर्मस्पर्शी अनुभूतियों से सजाकर एक वैचित्र्य और आकर्षण प्रदान कर सकता है।

(2) चरित्र–चित्रण–कथावस्तु के बाद चरित्र–चित्रण कहानी का अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण तत्व हैं। वस्तुतः पात्र कहानी के सजीव संचालक होते हैं। पात्रों के माध्यम से एक ओर कथानक का आरंभ, विकास और अंत होता है, तो दूसरी ओर हम कहानी में इनसे आत्मीयता प्राप्त करते हैं। जहाँ तक पात्रों के चयन का सम्बन्ध है, वे सर्वथा सजीव और स्वाभाविक होने चाहिए तथा पात्रों की अवतारणा कल्पना के धरातल से न होकर कहानीकार की आत्मानुभूति के धरातल से होनी चाहिए। कहानी में पात्रों की भूमिका के आधार पर उन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–मुख्य, सहायक एवं खेल। इस तरह के वर्गीकरण से कहानी के नायक तथा उसके सहयोगी या विरोधी पात्रों का चरित्रांकन किया जाता है।

बाबू गुलाबराय ने कहानी में चरित्र–चित्रण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है– "आजकल कथानक को उतना महत्व नहीं दिया जाता है जितना कि चरित्र–चित्रण और अभिव्यक्ति को।" चरित्र–चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से होता है। चरित्र–चित्रण मुख्यतः चार प्रकारों से होता है– वर्णन, संकेत, वार्तालाप और घटनाओं द्वारा, जैसे वर्णन से रमेश दानी व्यक्ति है। संकेत से–वो देखो रमेश वह बड़ा दानी है। वार्तालाप से–जी आपका नाम, रमेश। आपने ही बस्ती में रहने वाले गरीब लोगों की मदद की थी। घटना से–एक गरीब बालक होटल के बाहर खड़ा था तभी रमेश ने उसे देखा और उसे पेट भर खाना खिलाया। पात्रों के सटीक चरित्र–चित्रण से ही कहानी ज्यादा मोहक, प्रभावशाली एवं शिक्षाप्रद हो जाती है। कहानी के पात्र समाज के लिए प्रेरणा स्रोत एवं बच्चों के आदर्श बन जाते हैं तथा जीवन में वैसा ही बनने का प्रयास करते हैं।

(3) कथोपकथन/संवाद–कहानी में कथा विकास और चरित्र विकास के लिए कथोपकथन सहायक होते हैं। पात्रों के आपसी संवाद या वार्तालाप को कथोपकथन कहा जाता है। कहानी में कथोपकथन से एक ओर घटनाक्रम को पढ़ाया जाता है तो दूसरी ओर पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को दिखाया जाता है। **बाबू गुलाबराय** ने कथोपकथन की महत्ता को दर्शाते हुए कहा है, "कथोपकथन या वार्तालाप द्वारा ही हम पात्रों के हृदयगत भावों को जान सकते हैं। यदि वार्तालाप पात्रों के चरित्र के अनुकूल न हो, तो हम उनके चरित्र का मूल्यांकन करने में भूलकर पायेंगे। कहानी में कथोपकथन का कार्य कथा को गति प्रदान करना, पात्रों को चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करना, भाषा–शैली का निर्माण करना तथा कथा को रस की स्थिति तक पहुँचाना है। संवाद या कथोपकथन का सबसे बड़ा गुण है–जिज्ञासा और कौतूहल उत्पन्न करना। इन सब कार्यों का संपादन तभी हो सकता है जब कहानी के संवाद पात्र, परिस्थिति एवं घटना के अनुकूल हों, संक्षिप्त एवं अर्थपूर्ण हों, चरित्रों को उभारने वाले, सरल एवं स्पष्ट हों। किसी भी कहानी में कथोपकथन उसकी अभिव्यक्ति एवं आम पाठक के बीच पैठ बनाने में सहायक होता है।

उदाहरण–'तरपन' नामक कहानी में पात्रों के संवाद मन को छू लेते हैं। एक जगह मधुली तर्पण करने हेतु आये पंडित से कहती है, "बामणज्यू गरुण पुराण की सामर्थ्य मेरी कहाँ, मेरे पास तो जौं, तिल बहाने के पैसे भी नहीं हैं, गौ गारस के लिए आटा नहीं है और बच्चे तीन दिन से भूखे हैं।" ये कथन मानव मन को उद्वेलित कर देते हैं।

(4) देश, काल या वातावरण–कहानी को सहज और स्वाभाविक रूप प्रदान करने के लिए उसके वातावरण का विशेष महत्व होता है। वातावरण से तात्पर्य है कहानी में प्रयोग किए गए विषय-वस्तु के आसपास का परिवेश अर्थात् देश और काल का वर्णन करना। इसमें कहानीकार सामाजिक

कहानियों में अपने युग का और ऐतिहासिक पौराणिक कहानियों में पुरातन युग के इतिहास, भूगोल, समाज आदि का चित्रण करते हैं। कहानी में घटना, स्थान, पात्र, पात्रों की भाषा, वेशभूषा इत्यादि देश और काल के अनुसार ही की जाती है। कहानी जब दृश्य एवं श्रव्य माध्यम से समाज के सामने आती हैं तो उस देश, काल, परिस्थिति, भाषा–शैली, पहनावा तथा रहन–सहन से सभी परिचित हो जाते हैं। कहानी में देश, काल और वातावरण का चित्रण सरल, संक्षिप्त और पात्रों की मानसिक परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। वातावरण का अत्यधिक विस्तार कहानी में शिथिलता उत्पन्न कर देता है। सामान्यतः वातावरण तीन प्रकार का होता है–(1) पाठक की इन्द्रियों को प्रभावित करने वाला, (2) सौन्दर्यवृत्ति को तृप्त करने वाला एवं (3) पाठक में सच्ची सहानुभूति जाग्रत करने वाला।

एक श्रेष्ठ कहानी में तीनों प्रकार के वातावरण का समन्वय होना आवश्यक होता है। इस प्रकार कहानी में देशकाल और वातावरण वह तत्व होता है, जो कहानी के सौन्दर्य में ही वृद्धि नहीं करता वरन् पाठक को निरंतर आकर्षित और प्रेरित करता है। देशकाल का सर्वाधिक उपयोग आंचलिक कहानियों में कहानीकार करता है। ऐतिहासिक कहानियों में भी देशकाल या वातावरण की महत्ती भूमिका होती है। एक सफल कहानीकार वही है जो देशकाल का सूक्ष्म, सटीक एवं उपयुक्त चित्रण कर पाठक को उस वातावरण का मानसिक प्रत्यक्षीकरण करा देता है।

(5) भाषा–शैली–भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन होती है। कहानी जनसामान्य की विधा है, इसलिए कहानी की भाषा ऐसी होनी चाहिए, जो सरल, सजीव और प्रवाहपूर्ण हो। सफल भाषा वही होता है जो कहानी की कथावस्तु, पात्र–योजना, शैली और वातावरण के अनुकूल हो। शैली का अर्थ है– कथन एवं पद्धति। सामान्य अर्थ में कहें तो कहने का एक अंदाज यानि ढंग, तरीका जो उसे दूसरों से भिन्न दिखाये शैली है। भाषा–शैली का सम्बन्ध कहानी के सभी तत्वों के साथ रहता है। कहानी की भाषा–शैली सरल, सुबोध, सरस और धाराप्रवाह होनी चाहिए। भाषा–शैली में शब्द चयन, सुसंगठित वाक्य विन्यास, लक्षणा व्यंजना आदि का प्रयोग उसकी महत्ता को बढ़ा देता है। कहानी की रचना में भाषा–शैली का अत्यन्त महत्व होता है। कहानी की भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुग्राही होनी चाहिए। कहानी का लेखक अपनी कहानी को अपने प्रकार से कहना चाहता है। वह उसे वर्णात्मक, संवादात्मक, आत्मकथात्मक, विवरणात्मक किसी भी रूप में लिख सकता है। उसकी शैली ऐसी हो कि पाठकों को अपनी ओर आकृष्ट करें।

(6) उद्देश्य–चरम उत्कर्ष या क्लाइमेक्स कहानी का अंतिम तत्व होता है। इसमें कहानी के उद्देश्य की अभिव्यक्ति होती है। कहानी का उद्देश्य मनोरंजन के साथ–साथ जीवन सम्बन्धी अनुभूतियों से मानव मन का निकट परिचय कराना है। वस्तुतः कहानी का उद्देश्य यथार्थ के सुरुचि पूर्ण वर्णन द्वारा उच्च आदर्शों का संदेश देना है। चूँकि कहानी में जीवन की जटिलताओं, दैनन्दिन (प्रतिदिन) कार्यकलापों एवं व्यस्तताओं को उद्घाटित किया जाता है। अतः कहानी अपनी संक्षिप्तता और संप्रेषणता के द्वारा मनुष्य को जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद करती है। कहानी द्वारा जीवन सत्य की व्याख्या एवं मानवीय आदर्शों की स्थापना की जाती है। आकार में लघु होने के उपरांत भी कहानी महान् विचारों का वहन करती हैं। उदाहरण के लिए, भारतेंदु युग की कहानियों का मुख्य स्वर सामाजिक सुधारवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण से प्रेरित था। प्रेमचंद की कहानियाँ मध्यमवर्ग के सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण है। जैनेन्द्र की कहानियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुख है तो नई कहानियों में सामाजिक जीवन की विसंगतियों एवं जीवन के अभावों, निराशाओं, कुंठाओं का सटीक चित्रण हुआ है। कहानी का उद्देश्य कहानीकार के दृष्टिकोण एवं विषयवस्तु के अनुकूल ही होता है।

प्रश्न 35. विद्यार्थियों के लिए कहानी शिक्षण की उपयोगिता को समझाइए। (उज्जैन 2016)

उत्तर–कहानी शिक्षण की उपयोगिता–निम्न हैं–

(1) कहानी शिक्षण से सामान्य ज्ञान की वृद्धि होती है। छोटी–छोटी कहानियों से बालक संसार के अनेक जीव–जन्तुओं के नाम, गुण व अवगुण से परिचित हो जाते हैं।

(2) कहानी द्वारा तर्क, वितर्क, संकल्प एवं कल्पनाशक्ति की अभिवृद्धि होती है। बालक केवल चित्रों और संकेतों के आधार पर घटना–सूत्रों को समझने तथा नई कहानी रचने लगते हैं।

(3) कहानी से बालक को क्रमिक रूप से बोले जाने तथा तार्किक रूप से विचार करने की शिक्षा मिलती है। झिझक तथा संकोच की भावना दूर होती है, बोलने में स्वाभाविकता आती है।

(4) उपयुक्त शब्दों और मुहावरों का ज्ञान हो जाता है। वक्ता और श्रोता के बीच घनिष्ठता स्थापित करने का सर्वोत्तम माध्यम कहानी ही है। कहानी द्वारा बालक उससे घुल–मिल जाता है। कक्षा का वातावरण घर जैसा बन जाता है।

(5) स्मरण शक्ति का विकास होता है। बालक जटिल से जटिल प्रसंग को भी सुगमता से ग्रहण कर लेता है।

(6) कहानी मनोरंजन का साधन है। अपने सहज, सारत्व को लिए हुए वह अज्ञात रूप से विद्यार्थियों के मनोरंजन में पूर्ण सहयोग देती है।

(7) कहानी साहित्य की अभिवृद्धि की अत्युत्तम साधन है, इसके माध्यम से हम विद्यार्थियों को साहित्य की अन्य विधाओं से भी जोड़ सकते हैं।

प्रश्न 36. कहानी शिक्षण विधि के सोपानों को समझाइए।

उत्तर–कहानी शिक्षण विधि के सोपान–इस विधि के निम्नलिखित प्रमुख सोपान हैं–

(1) कहानी निबंध के रूप में बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करनी चाहिए। उसमें जिज्ञासावर्द्धक प्रश्न पूछे जाने चाहिए, इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कहानी का क्रम न छूटे।

(2) प्रारंभिक कक्षाओं में कहानी सम्बन्धी चित्र उपस्थित करके छात्रों से ऐसे प्रेरणात्मक प्रश्न किए जाएँ, जिससे उन्हें निरीक्षण करने तथा तत्व संबंधी भावों एवं तथ्यों को प्रकट करने का अवसर मिले।

(3) कहानी को आवश्यकतानुसार कुछ सोपानों में बाँट लेना चाहिए। एक सोपान का वर्णन कर लेने पर प्रश्नों द्वारा छात्रों से उसकी संक्षिप्त आवृत्ति करवा लेने के पश्चात् कथा सूत्र को आगे बढ़ाना चाहिए।

(4) क्रम से सभी सोपान समाप्त कर लेने पर प्रश्नों द्वारा छात्रों के सहयोग की पूरी कहानी की पुनरावृत्ति करवाना चाहिए।

(5) छात्रों को कहानी सुनाने के ढंग के सम्बन्ध में यथासमय आवश्यक निर्देश भी दिए जाने चाहिए। कक्षा के समक्ष कहाँ खड़ा होना है, किस मुद्रा में और भाव–भंगिमा का आलम्ब लेना है, यह भी बताया जाए। इससे बालकों का संकोच दूर होगा तथा मौखिक भाव–प्रकाशन का आभास बढ़ेगा।

(6) अभिनय योग्य कहानी का नाटक की भाँति अभिनय करवाना चाहिए। इससे छात्रों को शब्दों की मार्मिकता और अर्थ की स्पष्टता का ज्ञान हो जाता है। उन्हें क्रियात्मक ढंग से भाषा सीखने का अवसर मिलता है। कथन की प्रभावपूर्णता का मर्म वे समझने लगते हैं। इससे सम्भाषण पटुता आ जाती है।

(7) हमेशा कहानी प्रथम पुरुष में कहना चाहिए, इससे कहानी द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक स्थायी हो सकेगा। प्रत्येक विद्यार्थी से कहानी का एक–एक वाक्य जुड़वाने से एक नवीन कहानी का निर्माण हो जायेगा।

(8) एक ही लेखक या भिन्न–भिन्न लेखकों की दो कहानियों को आपस में तुलना कराई जा सकती है। इस प्रकार विद्यार्थियों को उत्साह मिलेगा और वह कहानियों की विशेषताओं को हृदयगम कर सकेंगे।

(9) कक्षा को दो भागों में विभाजित कर प्रश्नों द्वारा भी कहानी की पुनरावृत्ति करवायी जा सकती है। इससे कक्षा अधिक गतिशील बनेगी तथा छात्र भी रुचिपूर्वक कहानी पर मनन करेंगे।

(10) विद्यार्थियों को कहानी को चित्रित करने का अवसर देना चाहिए। कहानी चित्रण की यह प्रणाली उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए सफल हो सकेगी, अन्यथा प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के लिए यह बोझ बनकर ही रह जाएगी। उच्च कक्षाओं के छात्रों द्वारा किसी अधूरी कहानी को भी पूरा करवाया जा सकता है।

प्रश्न 37. नाटक शिक्षण की विधियों को समझाइए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर–नाटक शिक्षण की विभिन्न विधियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) व्याख्या प्रणाली–इस विधि के द्वारा नाटक के सम्पूर्ण कथानक की योजना पर, नाटक की भिन्न–भिन्न घटनाओं पर, नाटक के भिन्न–भिन्न पात्रों तथा उनके चरित्र पर, नाटक की भाषा आदि पर नाटक की पृष्ठभूमि पर, नाटक के विचार–सौन्दर्य पर तथा नाटक से सम्बन्धित अन्य विषयों पर प्रश्नोत्तर किए जाते हैं, और इस प्रश्नोत्तर के आधार पर नाटक की विशेषताएँ सामने लाई जाती हैं। इस प्रणाली द्वारा विद्यार्थी नाटक के गुणदोष समझने में समर्थ हो सकते हैं।

(2) आदर्श नाट्य शैली–इस प्रणाली की विशेषता यह है कि अध्यापक, स्वयं की कक्षा के सामने नाटक के सभी पात्रों को कायिक तथा वाचिक अभिनय कराता है, वह नाटक के संवादों को इस ढंग से पढ़ता है कि प्रत्येक चरित्र का आभास विद्यार्थियों को हो जाता है। पात्रों के अनुसार प्रेम, हास्य, करुणा, क्रोध आदि के भाव उनके चेहरे पर प्रकट हो जाते हैं।

(3) प्रयोग प्रणाली–इस प्रणाली को दो भागों में बाँटा गया है–(1) रंगमंच अभिनय प्रणाली एवं (2) कक्षाभिनय प्रणाली।

(1) रंगमंच अभिनय प्रणाली–इस विधि के अनुसार यथासम्भव विद्यार्थी पूरे नाटक को वास्तविक रंगमंच पर उपस्थित करता है।

(2) कक्षाभिनय प्रणाली–इस प्रणाली के अन्तर्गत अध्यापक द्वारा नाटक के विभिन्न पात्रों के कार्य कक्षा के विभिन्न बालकों में बाँट दिए जाते हैं। कोई बालक किसी पात्र का अभिनय करता है तथा कोई बालक किसी का। विद्यार्थी को जिस पात्र का अभिनय करना होता है उससे सम्बन्धित संवादों को ध्यानपूर्वक पढ़ता है तथा उसके अनुसार ही कायिक तथा वाचिक अभिनय करता है। इस तरह बालक धीरे–धीरे अभिनय कार्य में दक्ष हो जाते हैं।

(4) अर्थकथन विधि–इस विधि में शिक्षक नाटक का मौखिक पठन करता है और इसके साथ ही वह उसका अर्थ बताता जाता है। इस विधि में यह भी ध्यान रखा जाता है कि भाव के अनुसार ही पठन का कार्य किया जावे, इससे छात्रों को आनंद भी आता है।

(5) प्रयोग विधि–इस विधि में विद्यार्थी शिक्षकों के मार्गदर्शन में रंगमंच तैयार करके नाटक के मंचन का पूर्वाभ्यास करते हैं। इसके बाद एक निश्चित तिथि पर विद्यार्थियों द्वारा रंगमंच पर मंचीय गतिविधियों के रूप में नाटक प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 38. कहानी और उपन्यास में अंतर लिखिए।

उत्तर–कहानी और उपन्यास में अंतर इस प्रकार है–

(1) कहानी आकार में छोटी होती है। लेकिन उपन्यास का आकार बड़ा होता है।

(2) कहानी में कथानक हो भी सकता है और नहीं भी। लेकिन उपन्यास में कथानक अनिवार्य रूप से रहता है।

(3) कहानीकार को कहानी रचते समय अपनी दृष्टि किसी एक घटना या वस्तु पर केन्द्रित करनी पड़ती है। लेकिन उपन्यास में स्थानीय वातावरण का सृजन पात्रों के चरित्र–चित्रण और उनका चारित्रिक विकास और साथ ही उनका संघर्ष सभी कुछ उपस्थित रहता है।

(4) कहानी में एक से अधिक कथाएँ नहीं होती और न ही कई प्रसंग होते हैं। यदि किसी कहानी में एक से अधिक प्रसंग होते भी हैं तो वे मुख्य प्रसंग के अभिन्न अंग के रूप में ही आते हैं। लेकिन वहीं दूसरी ओर उपन्यास में देखें तो वहाँ कथा का विकास होता है। उसमें एक से अधिक कथाएँ और अनेक प्रसंग होते हैं।

(5) कहानी की गति अत्यंत तीव्र होती है। जबकि उपन्यास की गति अत्यन्त धीमी।

(6) कहानी में जीवन की सम्पूर्णता सम्भव नहीं है। उसमें जीवन जगत के किसी एक अंश का केवल उद्धरण मात्र होता है। पर उपन्यास में मानव–जीवन की सम्पूर्णता को समेटने की क्षमता विद्यमान होती है।

(7) कहानी के सीमित पात्र होते हैं। कहानी में चरित्र का उद्घाटन तो किया जाता है, लेकिन उपन्यास के समान चरित्र का विकास सम्भव नहीं होता।

(8) कहानी में इतिवृत्तात्मकता और अतिशय कल्पना के लिए स्थान नहीं होता है, पर वहीं उपन्यास में इतिवृत्तात्मकता से किया गया विवरण पर्याप्त मात्रा में होता है, साथ ही कल्पना का व्यापक प्रसार भी सम्भव है।

(9) संवादों की दृष्टि से भी दोनों में अंतर होता है। कहानी में छोटे और पूर्ण संवाद होते हैं, जबकि उपन्यास में संवादों के साथ–साथ लम्बे और दार्शनिक व्याख्यान भी हो सकते हैं।

(10) उपन्यास घटना प्रधान होते हैं और कहानी व्यंजना प्रधान होती हैं।

प्रश्न 39. शिक्षक को कविता शिक्षण की किन–किन विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए ?

उत्तर–शिक्षक को कविता शिक्षण की निम्नलिखित विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) अनुभूति प्रधानता–पद्य अनुभूति में हृदय से उमड़कर कवि की लेखनी से कविता लिखी जाती है। कवि के रचनाबद्ध भाव को ही पद्य कहते हैं। पद्य रागात्मक (प्रेममय) संबंध की रक्षा तथा निर्वाह है। हमारा हृदय काव्य के समय इस भौतिक संसार से ऊपर उठकर कार्य के अलौकिक आलोक में विचरण करता है। इसमें कल्पना तथा अनुभूति की प्रधानता होती है।

(2) "सत्यम शिवम सुन्दरम" की भावना–"सत्यम शिवम सुन्दरम" कविता के मुख्य उद्देश्य हैं किंतु कवि के सत्य विधान के सत्य के समान सत्य नहीं होता। अपितु उसमें कल्पना का मिश्रण होता है, जो कविता में मुग्धकारी तथा सुंदर बनता है।

(3) संगीतात्मक–संगीत काव्य की हृदय–गति होती है। लय, ताल तथा स्वरों के आरोह-अवरोह के कारण ही कविता के भाव उभरकर आते हैं।

(4) रसानुभूति–रस तथा काव्य परस्पर आधारित हैं। एक के बिना दूसरा पक्ष कमजोर हो जाता है। इसी कारण इसको काव्य की आत्मा कहा गया है।

(5) स्थायित्व–कविता में अमूल्य तत्व होता है। उत्कृष्ट काव्य–कृति सदैव स्थायी होता है। शिक्षक को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कविता के तत्वों को विद्यार्थियों को अच्छी तरह से समझा सके।

प्रश्न 40. पुनर्कथन से क्या आशय है ? इसकी सावधानियाँ लिखिए।

(जबलपुर 2019; उज्जैन 22; छतरपुर 22)

उत्तर–पुनर्कथन का आशय–वृतान्तों को अपने शब्दों में पुनः कहना पुनर्कथन कहलाता है। जैसे–छात्रों को किसी कथा या वृतांत को पढ़ने के लिए दिया जाता है। छात्रों द्वारा उस वृतांत या कथा को पढ़ने के बाद पुनः अपने शब्दों में सुनाया जाना पुनर्कथन कहलाता है।

पुनर्कथन की सावधानियाँ–पुनर्कथन एक विशेष कला है जिसका विकास एक योग्य शिक्षक के सानिध्य में होता है। पुनर्कथन को सर्वोत्तम बनाने के लिए अनेक सावधानियों, तकनीकियों एवं उपायों को अपनाया जाता है। ये निम्न हैं–

(1) स्पष्ट उच्चारण के साथ पुनर्कथन–कक्षा–कक्ष में छात्रों द्वारा जब किसी वृतान्त को सुनने या पढ़ने के बाद अपने शब्दों में उसका पुनर्कथन किया जाए तो उसमें शब्दों का उच्चारण स्पष्ट से होना चाहिए जिससे जो कुछ भी छात्र कहना चाह रहा है उसका ज्ञान सभी को हो सके।

(2) पुनर्कथन में संक्षिप्तता–सामान्य रूप से पुनर्कथन की स्थिति में संक्षेपीकरण का ध्यान रखना चाहिए। अधिक लम्बे पुनर्कथन में छात्र इधर–से–उधर भटकते हुए सही अर्थ को प्रस्तुत नहीं कर पाते। इसलिए प्रत्येक छात्र को उपयोगी एवं अर्थपूर्ण तथ्यों को समाहित करते हुए वृतान्तों का पुनर्कथन संक्षिप्त रूप में करना चाहिए क्योंकि अधिक लम्बा पुनर्कथन इन छात्रों के लिए कक्षा–कक्ष में रुचि का कारण बन सकता है।

(3) सारगर्भित तथ्यों के साथ पुनर्कथन–छात्रों को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह जब भी वृतान्त का पुनर्कथन करे उसको सारगर्भित तथ्यों का समावेश अपने पुनर्कथन में करना चाहिए।

इससे उसके पुनर्कथन में प्रभावशीलता उत्पन्न होती है तथा उसमें मौखिक प्रस्तुतीकरण की योग्यता का विकास होता है।

(4) अर्थानुकूल पुनर्कथन–जब पुनर्कथन किया जाए तो यह तथ्य ध्यान में रखा जाए कि पुनर्कथन में जो वृतान्त या कथा का मूल भाव या अर्थ है उसका अनर्थ न हो जाए अर्थात् अपने प्रभावशाली शब्दों का उपयोग छात्र को अर्थानुकूल परिस्थितियों में ही करना है।

(5) आत्मविश्वास के साथ पुनर्कथन–पुनर्कथन को सर्वोत्तम बनाने के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि छात्र द्वारा जो भी वृतान्त या कथा प्रस्तुत की जाती है उसको प्रस्तुत करने में आत्मविश्वास का समावेश हो। आत्मविश्वास के आधार पर छात्र पुनर्कथन की क्रिया को प्रभावी रूप में व्यक्त कर सकेगा।

(6) अर्थानुकूल उतार–चढ़ाव–पुनर्कथन की प्रभावशीलता के लिए उसमें प्रसंगानुसार उतार–चढ़ाव आना चाहिये, जैसे– एक छात्र किसी वीरतापूर्ण वृतान्त का पुनर्कथन कर रहा है तो उसकी वाणी में ओज एवं गंभीरता का प्रवाह होना चाहिए।

(7) कक्षा–कक्ष का वातावरण–जब कक्षा–कक्ष में छात्र द्वारा किसी वृतान्त या कथा का प्रस्तुतीकरण किया जाता है, तब कक्षा का वातावरण शांत, अनुशासित एवं सहयोगी रूप में होना चाहिए।

(8) शिक्षक का अन्वेषणात्मक स्वभाव–जब शिक्षक छात्रों के पुनर्कथन का श्रवण एवं निरीक्षण करता है तो वह उसमें अनेक त्रुटियाँ देखता है। एक योग्य शिक्षक इन विविध त्रुटियों के कारण एवं उनके समाधान के लिए विविध उपायों एवं तकनीकियों की खोज करता है।

(9) ध्यानपूर्वक पठन एवं श्रवण–पुनर्कथन की प्रभावशीलता के लिए यह आवश्यक है कि छात्र को प्रत्येक वृतान्त या कथा को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए, क्योंकि जितना अधिक ध्यानपूर्वक एवं रुचिपूर्ण श्रवण एवं कथन होगा उतना ही प्रभावशाली पुनर्कथन होगा।

(10) सरल एवं बोधगम्य भाषा–पुनर्कथन की भाषा सरल एवं बोधगम्य होना चाहिये जिससे छात्रों द्वारा एक–दूसरे के भावों एवं विचारों को समझा जा सके। पुनर्कथन में उन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो वृतान्त या कथा के मूल भाव को स्पष्ट करते हों।

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि पुनर्कथन की सर्वोत्तम स्थिति एवं योग्यता का विकास करने के लिए विविध तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है पुनर्कथन की प्रभावी प्रक्रिया ही छात्रों की कक्षा–कक्ष में संलग्नता एवं रुचि स्तर में वृद्धि कर सकेगी। इससे छात्रों के अधिगम स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी।

प्रश्न 41. प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च कक्षाओं के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य लिखिए। (उज्जैन 2015)

उत्तर– (अ) प्राथमिक कक्षा के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य– प्राथमिक कक्षा के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य निम्न हैं–

(1) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर बोली गयी उच्चरित भाषा को भली–भाँति समझ सके। (2) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को ठीक–ठीक बोल सके। (3) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर वे उचित प्रवाह के साथ सस्वर वाचन कर सकें। (4) बालकों में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना कि वे उचित गति से उपर्युक्त पाठ्य सामग्री का मौन वाचन करते हुए उसे ठीक–ठीक समझ सकें तथा उनसे इस सम्बन्ध में जो–जो प्रश्न पूछे जाएँ, उन प्रश्नों का जैसा चाहिए, वैसा उत्तर दे सकें। (5) बालकों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर छोटे–छोटे वाक्य तथा अनुच्छेद बनाने में समर्थ हो सकें।

(ब) माध्यमिक कक्षा के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य– छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निश्चित की गई शब्दावली के भीतर, समान गति से बोली गई उच्चरित भाषा को स्पष्ट रूप से समझ सकें।

(1) छात्रों में इतनी क्षमता उत्पन्न करना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को ठीक–ठीक बोल सकें। जिस वातावरण में रहते हैं, उसको सामने रखते हुए जहाँ तक बन पाए तथा उनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। (2) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर, अच्छी गति से सस्वर तथा मौन वाचन कर सकें। (3) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम से बाहर किसी अपठित अवतरण को शब्दकोश की सहायता से पढ़ सके तथा उन्हें समझ सके। (4) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे शुद्ध हिन्दी में कोई साधारण पत्र लिख सकें।

(स) उच्च कक्षाओं के लिए भाषा शिक्षण के उद्देश्य–(1) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे उचित विराम चिन्हों का प्रयोग करते हुए शुद्ध भाषा में वार्तालाप कर सकें। उनकी बोलचाल की भाषा में किसी भी प्रकार का उच्चारण सम्बन्धी दोष न रह जाए। (2) छात्रों में यह क्षमता उत्पन्न करना कि वे उच्च स्तर पर सस्वर वाचन तथा मौनवाचन कर सकें। (3) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे वर्णनात्मक तथा सूचनात्मक सामग्री का संक्षेपीकरण कर सके। (4) छात्रों में इतनी योग्यता विकसित करना कि वे पत्र लिख सकें।

प्रश्न 42. भाषा शिक्षण के ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, रसात्मक, सृजनात्मक एवं अभिवृत्यात्मक उद्देश्यों को समझाइए।

उत्तर–भाषा शिक्षण के ज्ञानात्मक, कौशलात्मक, रसात्मक, सृजनात्मक एवं अभिवृत्यात्मक उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. ज्ञानात्मक उद्देश्य–ज्ञानात्मक उद्देश्यों का तात्पर्य है छात्रों को भाषा एवं साहित्य की बातों का ज्ञान देना है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित उद्देश्य आते हैं–

(1) ध्वनि, शब्द एवं वाक्य रचना का ज्ञान देना। (2) उच्च माध्यमिक स्तर पर निबंध, कहानी, उपन्यास, तात्काव्य गीत, गद्य गीत आदि साहित्य विधाओं का ज्ञान देना। (3) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों को भाषा साहित्य के इतिहास की रूपरेखा से भी परिचित कराना। (4) रचना–कार्य के मौखिक एवं लिखित रूपों का ज्ञान देना जिसमें वार्तालाप, सस्वर वाचन, अन्तायक्षरी, वाद–विवाद आदि शामिल हैं।

भाषा में ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन निम्नलिखित होंगे–(1) छात्र इन्हें पहचान सकेगा। (2) वह इनका प्रत्याभिज्ञान कर सकेगा। (3) वह इनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियाँ पकड़ सकेगा। (4) वह इनके उदाहरण दे सकेगा। (5) वह इनकी तुलना, परस्पर अंतर एवं परस्पर सम्बन्धों को बता पाएगा। (6) वह इनका वर्गीकरण, विश्लेषण एवं संश्लेषण कर पाएगा।

2. कौशलात्मक उद्देश्य–इन उद्देश्यों का सम्बन्ध भाषायी कौशलों से होता है, जिसमें पढ़ना, लिखना, बोलना, अर्थग्रहण करना आदि सम्मिलित हैं। कौशलात्मक उद्देश्य के अंतर्गत प्रायः निम्नलिखित बातें आती हैं– सुनकर ग्रहण करना, शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन करना, गद्य–पद्य पढ़कर अर्थग्रहण करना, बोलकर भावाभिव्यक्ति करना एवं लिखकर भावाभिव्यक्ति करना।

सुनकर अर्थ ग्रहण करने से छात्रों में निम्नलिखित योग्यताओं का निर्माण हो जाता है–

(1) धैर्यपूर्वक सुनना। (2) सुनने के शिष्टाचार का पालन करना। (3) मनोयोगपूर्वक सुनना। (4) ग्रहणशीलता मन स्थिति बनाए रखना। (5) शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगाकूल अर्थ व भाव समझ सकना। (6) स्वराघात, बलाघात तथा स्वर के उतार–चढ़ाव के अनुसार अर्थग्रहण कर सकना। (7) श्रुत सामग्री के विषय को जान सकेगा। (8) महत्वपूर्ण विचारों, भावों एवं तथ्यों का चयन कर सकना। (9) सारांश ग्रहण कर सकना। (10) भावों, विचारों तथा तथ्यों का मूल्यांकन कर सकना।

वार्तालाप, वाद–विवाद, प्रवचन, भाषण, आदेश, निर्देश, कविता जैसी सामग्रियों को सुनकर उपयुक्त योग्यताओं का विकास किया जा सकता है।

3. रसात्मक एवं समीक्षात्मक उद्देश्य—इसके अन्तर्गत निम्न दो उद्देश्य आते हैं—
(1) साहित्य का रसास्वादन एवं (2) साहित्य की सामान्य समालोचना।

4. सृजनात्मक उद्देश्य—सृजनात्मक उद्देश्य से तात्पर्य है, "छात्रों को साहित्य सृजन की प्रेरणा देना और उन्हें रचना में मौलिकता लाने की योग्यता का विकास करने के लिए प्रेरित करना।" इस कार्य के लिए निबंध, कहानी, संवाद, पत्र, उपन्यास एवं कविता को माध्यम बनाया जा सकता है। इसके शिक्षण के समय छात्रों को मौलिकता लाने की प्रेरणा दी जा सकती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्र से जिन योग्यताओं की अपेक्षा की जाती है, ये निम्नलिखित हैं—(1) वह विषय तथा उसके अंतर्गत भावों एवं विचारों के लिए उपयुक्त साहित्य की भाषा का चयन कर सकेगा। (2) वह स्वानुभूत भावों तथा विचारों को अभिव्यक्त कर सकेगा। (3) वह गृहीत व स्वानुभूत विचारों को प्रभावपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त कर सकेगा। (4) वह विषय तथा प्रसंग के अनुकूल भाषा एवं शैली का उपयोग कर सकेगा।

5. अभिवृत्यात्मक उद्देश्य—इस उद्देश्य का तात्पर्य यह है कि छात्रों में उपयुक्त दृष्टिकोण एवं अभिवृत्तियों का विकास किया जाए। भाषा शिक्षण के माध्यम से इस सम्बन्ध में दो उद्देश्यों की प्राप्ति होनी चाहिए—(1) भाषा और साहित्य में रुचि तथा (2) सद्वृत्तियों का विकास।

भाषा और साहित्य में रुचि लेने के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्र में निम्नलिखित योग्यताओं का विकास आवश्यक है—

(1) पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तकें पढ़ना। (2) अच्छी–अच्छी कविताएँ कण्ठस्थ करना।
(3) कक्षा और विद्यालय की पत्रिका में योगदान देना। (4) विद्यालय के बाहर होने वाले साहित्य कार्यक्रमों में भाग लेना। (5) साहित्यकारों के चित्र एकत्रित करना। (6) साहित्यिक महत्व की पत्रिकाएँ एकत्रित करना।

प्रश्न 43. मौखिक अभिव्यक्ति या आत्म प्रकाशन से क्या आशय है ? इसके क्या उद्देश्य हैं ? मौखिक आत्म प्रकाशन हेतु विकास के आधारों को समझाइए। (ग्वालियर 2017; उज्जैन 19, 22)

उत्तर—मौखिक अभिव्यक्ति या आत्म प्रकाशन से आशय—भाव, अभिव्यक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है। व्यक्ति अपने हृदय स्थित भावों को, संकेतों, ध्वनियों, भाव–भंगिमाओं, क्रियाओं तथा बोली द्वारा व्यक्त करता है। भाषा के माध्यम से किया गया भाव–प्रकाशन अथवा आत्म–प्रकाशन दो रूपों में होता है— 1. लिखित तथा 2. मौखिक।

लिखित भाव–प्रकाशन में वह लिखित भाषा के प्रतीकों, भाव–चित्रों का प्रयोग करता है। मौखिक आत्म प्रकाशन में उच्चरित भाषा। मौखिक भाषा का प्रयोग वह पग–पग पर करता है, इसलिए इसको भाव–प्रकाशन का मुख्य माध्यम माना गया है।

मौखिक भाव–प्रकाशन के उद्देश्य—ये निम्न हैं—(1) भावों के आदान–प्रदान द्वारा उत्तेजित भावनाओं को शांत कर समाज में शांति और संतुलन बनाये रखना। (2) आत्म–प्रकाशन द्वारा व्यक्ति आत्म विज्ञापन करता है। आत्म संतोष, आत्म विज्ञापन का परिणाम होता है। (3) आत्म–प्रकाशन का तीसरा उद्देश्य है, अपने विचारों को निर्भीक होकर प्रकट करना।

मौखिक आत्म–प्रकाशन के शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य— इसके प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—(1) बालकों में क्रमिक रूप से निरंतर बोलते जाने की क्षमता पैदा करना। (2) छात्रों में मधुर एवं रोचक भाषण देने की शक्ति विकसित करना। (3) बालकों में संकोच, झिझक और आत्महीनता की भावनाओं को दूर करना। (4) बालकों को स्वाभाविक रूप से शुद्ध, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावोत्पादक ढंग से वार्तालाप करने की योग्यता विकसित करना ताकि वे अपने मनोभावों को सरलता से दूसरों के सामने प्रकट कर सकें।

मौखिक आत्म प्रकाशन के विकास के आधार या साधन—मौखिक आत्म–प्रकाशन के विकास के मुख्य आधार निम्नलिखित हैं—(1) भाषण, (2) अन्ताक्षरी प्रतियोगिता, (3) वाद–विवाद प्रतियोगिता, (4) कथोपथन, (5) विचार–गोष्ठी एवं कवि सम्मेलन, (6) कहानी कथन एवं (7) चित्रमाला।

(1) भाषण–भाषण की शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–(1) छात्रों को स्वाभाविक रूप से शुद्ध तथा स्पष्ट उच्चारण का अभ्यास कराना। (2) शुद्ध भाषा में भाव–प्रकाशन सिखाना। (3) उचित भाषा में भाव–प्रकाशन सिखाना। (4) व्यवहार–कुशल बनाना।

(2) अन्ताक्षरी प्रतियोगिता–इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों को वर्गों में विभाजित कर दिया जाता है। प्रत्येक पक्ष का कोई भी प्रतियोगी उस अक्षर से प्रारम्भ होने वाले पद्य या पद्यांश को बोलता है। जिस अक्षर पर उसके विपक्षी दल के बालक ने अपना पद समाप्त किया था। इसमें बालक अधिक से अधिक कविताएँ कण्ठाग्र कर लेते हैं।

(3) वाद–विवाद प्रतियोगिता–वाद–विवाद प्रतियोगिता बालक के मानस द्वार खोलने की कुंजी है। वाद–विवाद प्रतियोगिता द्वारा उसमें अध्ययन तथा चिंतन का अभ्यास होता है। तर्क की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। अपने विचारों को सुसंगठित एवं सुव्यवस्थित रूप में रखने का बालक प्रयत्न करने लगता है।

(4) कथोपकथन–अभिनय करते समय बालकों को विभिन्न पात्रों के संवाद,परिसंवाद बाँट दिये जाते हैं। वे उचित तैयारी के साथ इन संवादों को जनसमुदाय के समक्ष बोलना सीखते हैं। ऐसा करने से उनके उच्चारण भी शुद्ध होते हैं तथा संकोच और झिझक दूर हो जाती है। अभिनय छोटी कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं तक सफल रूप से कराये जा सकते हैं। नाटकों का खेला जाना भी मौखिक अभिव्यक्ति का एक उत्तम साधन है।

(5) विचार–गोष्ठी एवं कवि सम्मेलन–विचार–गोष्ठी में बालक किसी समस्या या विषय पर, अपने–अपने विचारों को व्यक्त करते हैं। इसमें कोई भी बालक भाग ले सकता है। इस प्रकार का विचार विमर्श यदि प्रत्येक कक्षा में समस्यात्मक विषयों को लेकर किया जाए, तो बालकों को बोलने का अवसर अधिक मिलता है तथा समस्या का समाधान भी यथोचित रूप से हो जाता है।

(6) कहानी–कथन–कहानी सुनना तथा सुनाना बालकों की अपनी प्रिय वस्तु है। इससे उनमें जिज्ञासा, अवधान और रुचि का विकास होता है। अतः इसके भाषण से स्वाभाविकता और प्रवाह उत्पन्न किया जा सकता है। इस प्रकार मनोरंजन के साथ उसकी कल्पना शक्ति को सजग किया जा सकता है।

(7) चित्रमाला–चित्रों को दिखाकर उसके विषय में बालकों के भावों को जाग्रत कर भावाभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। इस प्रकार के कक्षाओं के द्वारा छात्रों को सफल व्याख्यानदाता बनाया जा सकता हैं तथा उनको प्रभावशाली सफल साहित्यकार, कलाकार, कवि आदि बनाया जा सकता है।

प्रश्न 44. विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय हमें किन–किन सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए ?

उत्तर–विवरण प्रविधि का प्रयोग करते समय हमें निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए–

(1) विवरण द्वारा शिक्षक को छात्रों की कल्पनाशक्ति जाग्रत करने का प्रयास करना चाहिए। (2) विवरण प्रस्तुत करते समय ध्यान रखना चाहिए कि विवरण प्रसंग के अनुकूल हो और उचित गति से छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाये। (3) तथ्य एवं भाषा की दृष्टि से विवरण में किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं होनी चाहिए। (4) शिक्षक को विवरण आवश्यकतानुसार उतना ही देना चाहिए, जितनी आवश्यकता हो। यह न तो अधिक लम्बा हो और न ही अधिक छोटा। (5) विवरण को रोचक तथा प्रभावशाली बनाने हेतु शिक्षक को आवश्यकतानुसार ही कल्पना का सहारा लेना चाहिए। (6) विवरण देते समय शिक्षकों को अपने स्वर, उच्चारण, आरोह–अवरोह पर भी ध्यान देना चाहिए तथा उचित भाव–भंगिमा एवं हावभाव दिखाकर सूक्ष्म एवं तात्विक अभिनय के साथ विवरण को सजीव बनाने का प्रयास करना चाहिए। (7) विवरण देते समय शिक्षक को धैर्य एवं आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए। (8) विवरण धीरे–धीरे प्रारम्भ करके धीरे–धीरे चरम उत्कर्ष की ओर अग्रसर होना चाहिए और छात्रों में आगे की बातें जानने की जिज्ञासा तथा उत्सुकता बनी रहनी चाहिए।

प्रश्न 45. रेखाचित्र किसे कहते हैं ? रेखाचित्र की विशेषताएँ बताइए। (ग्वालियर 2017, 22)

उत्तर–रेखाचित्र– 'रेखाचित्र' शब्द अंग्रेजी के 'स्केच' (Sketch) शब्द का अनुवाद है। यह दो शब्दों रेखा और चित्र के योग से बना है। इस विधा में किसी व्यक्ति की आकृति उसकी चाल ढाल या स्वभाव का शब्दों द्वारा सजीव चित्रण किया जाता है। इसे चित्रकला भी कहा जाता है, जिसका अर्थ ऐसा खाका जिसमें क्रमबद्ध ब्योरे ना दिए गए हों। उसी के अनुकरण पर लिखना रेखाचित्र कहलाता है। इसी प्रकार, थोड़े से शब्द में किसी व्यक्ति घटनाएँ, स्थान या वस्तु को चित्रित कर देना कुशल रेखाचित्रकार का ही काम है। रेखाचित्र में लेखक कम से कम शब्दों में सजीवता भर देने का प्रयास करता है और उसके छोटे–छोटे पैने वाक्य एवं मर्मस्पर्शी होते हैं। दूसरे शब्दों में, रेखाचित्र गद्य साहित्य की आधुनिक विधा है। इस विधा में लेखक रेखाचित्र के माध्यम से शब्दों का ढाँचा तैयार करता है। लेखक किसी सत्य घटना की वस्तु का या व्यक्ति का चित्रात्मक भाषा में वर्णन करता है। इसमें शब्द चित्रों का प्रभाव आवश्यक है। रेखाचित्रकार अपने मन पर छाई हुई स्मृति रेखाओं और विगत अनुभवों को कला की तूलिका से स्वानुभूति के रंग में रंगकर सजीव शब्द चित्र का रूप देता है।

प्रकाशचंद गुप्त ने कहा है,–"मैं शब्दों की रेखाओं से अपने अनुभव चित्र उतारने का प्रयास कर रहा था और निरंतर सोचता था कि मैं इन रेखाओं को तूलिका या पेंसिल से खींच सकता तो कितना अच्छा होता है।"

हिंदी साहित्य कोष के अनुसार,–"रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में मर्मस्पर्शी भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है।"

रेखाचित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–(1) रेखाचित्र वास्तविक एवं काल्पनिक अधिक होते हैं। (2) रेखाचित्र में शब्दों की रेखाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। (3) रेखाचित्र का आधार वस्तु या व्यक्ति होता है। (4) रेखाचित्र को शब्दों के माध्यम से दृश्य–श्रव्य स्पर्श अनुभूति का बिम्बीकरण भी कहा जाता है। (5)रेखाचित्र भावात्मक, चित्रात्मक, सांकेतिकता और प्रभावोत्पादकता होती हैं। (6) रेखाचित्र में शब्दों के अतिरिक्त भी रेखाचित्रकार को संकेत सामर्थ्य से काम लेना चाहिए। (7) रेखाचित्र में वैचारिकता की तुलना में भावुकता और केन्द्रियात्मकता की अधिक अनिवार्यता होती है। (8) रेखाचित्र में करूणा को बहुत अधिक महत्व दिया जाता है। (9) रेखाचित्र में लेखक ऐसे चरित्र को लेकर चित्र बनाता है कि पढ़ने पर उस चरित्र का चित्र साकार हो उठता है। उसमें दृश्यात्मकता आ जाती है। (10) रेखाचित्र जिस चरित्र को आधार बनाकर तैयार किया जाता है। सामान्यतः यह चरित्र साधारण होता है। यहाँ किसी तरह का कोई प्रभामंडल नहीं होता और न ही चमत्कार, आडंम्बर होता है।

प्रश्न 46. व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य एवं महत्व को समझाइए।

(उज्जैन 2016; छतरपुर 21, 22)

अथवा, हिन्दी भाषा में व्याकरण शिक्षण का महत्व बतलाते हुए व्याकरण शिक्षण की प्रणालियों पर संक्षेप में चर्चा कीजिये। **(छतरपुर 2021)**

उत्तर–व्याकरण एक ऐसी विधा (कला) है, जिसके माध्यम से हम किसी भाषा का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जब हम किसी भाषा को लिखते हैं तब उस भाषा को लिखने के क्या नियम होना चाहिए ? या जब हम कोई भाषा बोलते हैं तब उस भाषा को बोलने के सही नियम क्या होने चाहिए ? और यदि हम कोई भाषा को पढ़ते हैं तो उस भाषा को पढ़ने के सही नियम क्या होने चाहिए ? तो मतलब पढ़ने, लिखने, बोलने या समझने के लिए हम जिन नियमों का प्रयोग करते हैं, उन सभी नियम के रूप को ही हम व्याकरण कहते हैं।

पतंजलि के अनुसार– "व्याकरण शब्दानुशासन है। इससे भाषा का रूप व्यवस्थित होता है।"

डॉ. स्वीट के अनुसार– "व्याकरण भाषा का व्यावहारिक विश्लेषण या उसका शरीर विज्ञान है।"

व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य– व्याकरण शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

(1) विद्यार्थियों को विविध ध्वनियों का ज्ञान देना। (2) विद्यार्थियों को शुद्ध भाषा का प्रयोग सिखाना। (3) व्याकरण के द्वारा विद्यार्थियों में रचना एवं सृजनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना।

(4) विद्यार्थियों में ऐसी क्षमता पैदा करना जिससे कि वे कम से कम शब्दों में शुद्धतापूर्वक अपने भावों को व्यक्त कर सके। साथ ही उसमें ऐसी योग्यता पैदा करना जिससे वे भाषा की अशुद्धता को भी समझ सकें। (5) विद्यार्थियों को शुद्ध बोलने, लिखने व पढ़ने की प्रेरणा देना। (6) विद्यार्थियों में ऐसी योग्यता पैदा करना जिससे कि वे भाषा की अशुद्धता को समझ सकें और उनमें भाषा को परखने की शक्ति विकसित हो सके। (7) विद्यार्थियों को भाषा से सम्बन्धित नियमों का ज्ञान प्रदान करना। (8) विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण की शिक्षा प्रदान करना। (9) विद्यार्थियों को भाषा के वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने में प्रवीण बनाना। (10) व्याकरण के नियमों का ज्ञान, छात्रों में मौलिक वाक्य बनाने की योग्यता पैदा करना है। (I1) विद्यार्थियों की साहित्य की विभिन्न विधाओं और उनकी विभिन्न लेखन शैलियों का ज्ञान कराना। (12) विद्यार्थियों में भाषा एवं साहित्य की समीक्षा करने की अभिवृत्ति का विकास करना। (13) विद्यार्थियों को भाषा के नियमों का विधिवत् ज्ञान कराना। (14) विद्यार्थियों को छंद, रस और अलंकारों का ज्ञान कराना। (15) व्याकरण के द्वारा विद्यार्थियों में रचना तथा सर्जनात्मक प्रवृत्ति का विकास करना, जैसे– पढ़ना, लिखना, बोलना तथा सुनना।

व्याकरण शिक्षण का महत्व–(1) व्याकरण भाषा–शिक्षण का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। व्याकरण भाषा का दिशा निर्देशन करता है और उसे सरलता से अपेक्षित लक्ष्य तक पहुँचाता है। (2) व्याकरण के नियमों का ज्ञान, छात्रों में मौलिक वाक्य संरचना की योग्यता का विकास करता है। (3) व्याकरण से नवीन भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता मिलती है। (4) भाषा की पूर्णता के लिए पढ़ना, लिखना, बोलना तथा सुनना चारों कौशलों की शुद्धता व्याकरण से होती है। (5) व्याकरण से नवीन भाषा को सीखने में सरलता एवं सुगमता होती है। (6) वाक्य की संरचना शुद्धता उस भाषा के व्याकरण से आती है। (7) भाषा संबंधी अशुद्धियों को समझने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।

प्रश्न 47. नाटकीय घटनाओं की विशेषताओं को बताइए। (जबलपुर 2018; छतरपुर 21, 22)
***अथवा*, नाटकीय घटनाएँ पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।** (छतरपुर 21)

उत्तर– नाटकीय घटनाओं की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

(1) उद्देश्यों का समावेश–जब हम किसी विषयवस्तु में नाटकीय दृश्यों एवं घटनाओं का समावेश करते हैं तो उसके मूल उद्देश्यों का समावेश अनिवार्य रूप से होना चाहिए **जैसे**–छात्रों को सत्य एवं अहिंसा की शिक्षा प्रदान करनी है तो महात्मा गाँधी से सम्बन्धित घटनाओं को नाटकीय रूप में छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

(2) सरल एवं बोधगम्य भाषा– नाटकीय दृश्यों एवं घटनाओं के प्रस्तुतीकरण में सरल एवं बोधगम्य भाषा का उपयोग होना चाहिये। उसमें स्थानीय भाषा के शब्दों का उपयोग भी होना चाहिए। इसके साथ–साथ भाषा प्रयोग का स्तर, आयु वर्ग एवं कक्षा स्तर के अनुरूप होना चाहिये।

(3) सभ्यता एवं संस्कृति से सम्बन्ध–नाटकीय घटनाओं का संबंध संस्कृति से होता है। **जैसे**- भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का सम्बन्ध नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों से होता है। इसमें त्याग, प्रेम, सहयोग एवं परोपकार का प्रधान रहता है तो भारतीय विद्यालयों में नाटकीय घटनाओं का प्रस्तुतीकरण भी इन मूल्यों से सम्बन्धित होना चाहिए। इससे छात्रों में सहभागिता, प्रेम एवं परोपकार के मूल्य विकसित होंगे तथा कक्षा–कक्ष में संलग्नता का स्तर भी बना रहेगा।

(4) जीवन मूल्यों का समावेश–जिस प्रकार का जीवन बालक व्यतीत करता है, उसके अनुरूप ही मूल्यों का विकास एवं नाटक उसको अच्छे लगते हैं। **जैसे**– एक भारतीय छात्र के जीवन मूल्य प्रेम, सहयोग एवं समानता से सम्बन्धित होते हैं। इन मूल्यों को आधार बनाकर प्रस्तुत किये जाने वाले नाटकों में छात्रों की विशेष रुचि देखी जाती है। इस प्रकार प्रत्येक नाटक का सम्बन्ध जब जीवन मूल्यों से होता है, तो छात्रों की संलग्नता एवं अधिगम स्तर में स्वाभाविक रूप से वृद्धि होती है।

(5) मानसिक स्तर के अनुरूप–नाटकीय घटनाओं एवं दृश्यों का समावेश करते समय छात्रों के मानसिक स्तर का अवश्य ध्यान रखना चाहिए। दूसरे शब्दों में, जिस प्रकार के नाटकों के दृश्यों

में छात्रों की रुचि हो, उन नाटकों के दृश्यों को ही विषयवस्तु में ध्यान दिया जाए। **जैसे**– वीर बालक के नाटक में बालक की वीरता का वर्णन किया गया है। इसी प्रकार के अन्य नाटकों का समावेश छात्रों की योग्यता एवं स्तर के अनुरूप होना चाहिए।

(6) सकारात्मकता का समावेश–नाटकीय घटनाओं में सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण का समावेश होना चाहिए क्योंकि नकारात्मक नाटकीय घटनाएँ बालकों के मन में विपरीत प्रभाव डालती है। युद्ध एवं झगड़ों से सम्बन्धित नाटकीय अंगों को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

प्रश्न 48. भाषा और बोली के अंतर को समझाइए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–(1) भाषा विकास–प्रक्रिया का चरम (उच्चतम्) रूप होता है। एक क्षेत्र की अनेक बोलियों में से ही कोई एक बोली सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक कारणों से विकसित होकर क्रमशः उपभाषा–विभाषा और अंत में परिनिष्ठित (मानक) भाषा बन जाती है। इसके विपरीत बोली, किसी भी भाषा की प्रारंभिक बोलचाल की अवस्था होती है। उसे सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक दर्जा प्राप्त नहीं होता।

(2) 'भाषा' का भौगोलिक क्षेत्र विस्तृत होता है, जबकि 'बोली' का बहुत सीमित होता है।

(3) 'भाषा' व्याकरण सम्मत और प्रायः शुद्ध होती है। 'बोली' का कोई व्याकरण या उसकी कोई नियम संहिता नहीं होती है।

(4) भाषा अपने क्षेत्रों के भीतर और बाहर सर्वत्र एक रूप में होती है। उसकी शब्दावली, वाक्य–विकास एवं अन्य अभिव्यंजना कोटिया प्रायः सर्वत्र समान होती है, जबकि 'बोली' अपने ही क्षेत्र के प्रयोक्ताओं में भिन्न–भिन्न रूप लिए रहती है। उसमें एकरूपता का अभाव ही उसे 'बोली' के स्तर से ऊँचा नहीं उठने देता है।

(5) भाषा मौखिक और लिखित दोनों ही रूपों में समान रूप से प्रयुक्त होती है, जबकि बोली मौखिक रूप में ही प्रयुक्त होती है।

(6) 'भाषा' अधिकतर औपचारिक रूप लिए रहती है और 'बोली' अनौपचारिक।

(7) 'भाषा' शिक्षा, साहित्य, पत्राचार, सरकारी काम–काज, कला, संस्कृति, वाणिज्य–व्यवसाय, धर्म, राजनीतिक, समाज आदि में अभिव्यक्ति और संप्रेषण का सक्षम माध्यम बन जाती है, जबकि 'बोली' में वह क्षमता नहीं होती है।

कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि व्यक्ति समाज और विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में, विचारों के आदान–प्रदान का कार्य जितना सफलता से भाषा द्वारा सपन्न हो सकता है, उतना 'बोली' द्वारा नहीं।

प्रश्न 49. पठन कौशल विकास के स्तरों को समझाइए।

उत्तर–पठन कौशल विकास के स्तर इस प्रकार हैं–

(1) पठन पूर्व स्तर–पढ़ना सीखने की प्रक्रियाओं का यह प्रारंभिक स्तर है। इस स्तर पर बच्चे शब्दों तथा वर्णों से परिचित होते हैं और शब्दों की विभिन्न ध्वनियों के बारे में सीखते हैं। लिखी हुई सामग्री के प्रति सहज होते हैं तथा वे ये समझने लगते हैं कि बोले गए शब्दों का इस रूप में लिखा जाता है कि उसे स्वयं के द्वारा एवं दूसरों के द्वारा भी पढ़ा जा सके। पढ़ने–लिखने में आत्मनिर्भरता का विकास इन्हीं चीजों की समझ पर आधारित होता हैं।

(2) पढ़ना सीखने का स्तर–यह पढ़ना सीखने का स्तर है, जिसमें बच्चे विभिन्न प्रकार की पाठ्य–सामग्री अथवा छोटी–छोटी कहानी, कविताओं के माध्यम से पढ़ना सीखते हैं। इस स्तर पर बच्चे यह समझने लगते हैं कि शब्दों में आने वाली ध्वनियों को वर्णों के माध्यम से लिखा जाता है। वे यह समझने लगते हैं कि वर्णों एवं मात्राओं से शब्द बनते हैं और शब्दों के माध्यम से वाक्य एवं अनुच्छेद की कहानी लिखी जाती है।

(3) पढ़ने में कुशलता का स्तर–पढ़ने में आत्मनिर्भरता के लिए जरूरी है कि बच्चों को पढ़ते समय वर्ण/मात्राओं पर बल देवें। ध्यान देने की आवश्यकता न पड़े। बल्कि यह प्रक्रिया स्वतः ही होने लगे। जब तक बच्चे स्वतः पढ़ने की ओर नहीं बढ़ेंगे वे स्वतंत्र पाठक नहीं बन सकते। यह तभी हो

सकता है जब बच्चों में किसी भी पाठ्य–सामग्री को शुद्धता एवं उचित गति के साथ धाराप्रवाह पढ़ने की योग्यता विकसित हो। धाराप्रवाह पढ़ने से बच्चों का पूरा ध्यान अर्थ पर केन्द्रित होता है और बिना किसी प्रयत्न के वे स्वतः ही पढ़ते हैं। यह स्तर बच्चों में इस प्रकार की कुशलता लाने का स्तर है।

प्रश्न 50. सुनने की योग्यताओं का वर्णन कीजिए। (जबलपुर 2021)

उत्तर–श्रवण कौशल की शिक्षा के अंतर्गत सुनने या श्रवण का अर्थ है–बोधपूर्वक श्रवण। केवल ध्वनि–संकेतों का श्रवण ही, सुनने की योग्यताओं के अंतर्गत नहीं आता है, वरन् ध्वनि–संकेतों के श्रवण के साथ–साथ उनका अर्थग्रहण भी सुनने की योग्यता का महत्वपूर्ण अंग है। श्रवण कौशल में दक्षता हेतु बालकों को निम्नलिखित विषयों पर ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए–

(1) सामाजीकरण, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक तथा अन्य समस्याओं से संबंधित विषयों पर, (2) राष्ट्रीय चेतना से संबंधित विषयों पर, (3) धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रवचन, (4) महापुरुषों के जीवन से संबंधित विषयों पर, (5) साहित्यिक विषयों पर, (6) वैज्ञानिक विषयों पर।

सुनने की योग्यताएँ/अपेक्षित योग्यताएँ–श्रवण कौशल के विकास हेतु बालकों में निम्नलिखित अपेक्षित दशाओं के विकास की अपेक्षा की जाती है–

(1) बालक सुनने में शिष्टाचार का पालन कर सके–(i) मतभेद होते हुए भी धैर्यपूर्वक कर सके। (ii) वक्ता के साथ सहानुभूति रख सके। (iii) बीच में अपने साथियों से बातचीत न करें।

(2) वह मनोयोगपूर्वक सुन सके।

(3) बालक सुनते–सुनते समान ध्वनियों का पारस्परिक अंतर समझ सके। यथा–ह्रस्व, दीर्घस्तर, ए, ऐ, ओ, औ, न, पा, व, श, क्ष आदि।

(4) वह बलवान, स्वराधान, सुर के आरोह–अवरोह तथा वत्स की आंगिक चेष्टाओं के अनुसार भाव या अर्थ ग्रहण कर सके।

(5) वह शब्दों, मुहावरों एवं उक्तियों का प्रसंगा–अनुकूल–वाच्यार्थ, लक्ष्णार्थ, व्यंगार्थ जैसी भी स्थिति ही ग्रहण कर सके।

(6) वह श्रुत सामग्री के महत्वपूर्ण विचारों, भावों, नामों तथा तथ्यों का चयन कर सके।

(7) वह भाषा के चित्रमय प्रयोगों के अनुसार भाव ग्रहण कर सके।

(8) वह आलंकारिक सौंदर्य के अनुसार भाव ग्रहण कर सके।

(9) वाचक द्वारा अशुद्धतः उच्चारित ध्वनियों की त्रुटियाँ पकड़ सके, उनका शुद्ध रूप निर्धारित करते हुए उनके प्रभाव से बच सके।

(10) वह विवेकपूर्वक सुन सके अर्थात्–(i) असम्बद्ध बातों को छोड़ सके। (ii) मुख्य और सम्बद्ध बातों का चयन कर सके। (iii) वह अक्रम और असम्बद्ध रूप से सामग्री को सुसम्बद्ध एवं क्रमबद्ध करते हुए अर्थ ग्रहण कर सके।

(11) वाद–विवाद में पक्ष एवं विपक्ष के विचारों को तटस्थ रूप में सुनकर उनकी तुलना कर सके तथा वह अपना मत बना सके।

(12) भाषण या चर्चा के अंतर्गत मन में उठने वाली शंकाओं के संबंध में प्रश्न पूछने के लिए उन्हें ध्यान में रख सके।

(13) कथात्मक सामग्री (नाटक, कहानी आदि) में घटनात्मक मोड़ों पर कक्ष–वस्तु की भावी दिशा के संबंध में उद्भावनापूर्ण अनुमान कर सके।

(14) पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को समझ सके।

(15) वक्ता को सामने समुपस्थित न देखते हुए केवल उसकी वाणी के उतार–चढ़ाव के अनुसार उसकी आंगिक चेष्टाओं की कल्पना करते हुए अर्थ ग्रहण कर सके।

प्रश्न 51. नई शिक्षा नीति, 2020 में भाषा के लिए क्या कहा है ?

***अथवा*, नई शिक्षा नीति में त्रिभाषा प्रणाली को समझाइए।** (ग्वालियर 2021)

उत्तर–राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 शिक्षा व्यवस्था बहुभाषा और मातृभाषा पर केन्द्रित है। इसमें

कहा गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। जहाँ तक संभव हो कम–से–कम 5 वीं तक और उससे आगे भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं नए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ विश्वविद्यालयों ने मेडिकल एवं इंजीनियरिंग जैसे तकनीकी विषयों को भी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़ाना शुरू किया है। नई शिक्षा नीति, 2020 में कहा गया है कि राज्य सरकारों की हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी और अंग्रेजी के अलावा, एक आधुनिक भारतीय भाषा, अधिमानतः दक्षिणी भाषाओं में से एक के अध्ययन को और गैर–हिन्दी भाषी राज्यों ने क्षेत्रीय भाषा और अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी भाषा के अध्ययन को अपनाना और लागू करना चाहिए।

शिक्षा में भाषा नीतियाँ हमारी शिक्षा–प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है जो समग्र रूप से सामाजिक ताने–बाने को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह बच्चों को शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भाषा के विकास में त्रिभाषा सूत्र को पुनः शामिल किया गया और कहा गया कि इसमें कम–से–कम दो भारतीय भाषाएँ होगी।

नई शिक्षा नीति, 2020 में मातृभाषाओं को पुनः जीवित करने का प्रयास किया है। नई शिक्षा नीति में स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में भारतीय भाषाओं के अध्यापन के साथ–साथ भारतीय भाषाओं में अध्यापन पर बल दिया गया है।

प्रश्न 52. भाषा के लक्षणों को बताइए।

***अथवा*, भाषा के उद्देश्य और लक्षणों को समझाइए।** **(ग्वालियर 2021, 22)**

उत्तर–भाषा के उद्देश्य–लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 67 का उत्तर देखिए।

भाषा के लक्षण–

(1) भाषा एक सामाजिक वस्तु है–भाषा के लिए भी पक्ष जरूरी है, वक्ता और श्रोता। जैसे ही व्यक्ति एक से दो होते हैं, समाज के निर्माण की शुरुआत हो जाती है। यहीं से भाषा की सामाजिकता शुरू होती है।

(2) भाषा परम्परागत वस्तु है–भाषा एक सनातन वस्तु है, जो हमें परम्परा से प्राप्त होती है। हम अपने परिवार से जो भाषा बोलते हैं वह हमें अपने माता–पिता से मिलती है।

(3) भाषा का व्याकरण होता है–कोई भी भाषा व्याकरण के नियमों के अनुसार चलती है। हर भाषा का अपना व्याकरण होता है। व्याकरण के नियमों से ही भाषा का संचालन होता है।

(4) भाषा नित्य परिवर्तनशील है–भाषा निरंतर बदलती रहती है। यह परिवर्तन ध्वनि, रूप–रचना, वाक्य विन्यास और अर्थ सभी क्षेत्रों में होता है। ध्वनि परिवर्तन के कारण संस्कृत के हस्त, कर्ण, अक्षि आदि शब्द हाथ, कान और आँख हो गए। रूप–रचना के परिवर्तन के कारण योगात्मक संस्कृत भाषा हिंदी तक पहुँचते–पहुँचते अर्ध अयोगात्मक हो गयी, वाक्य विन्यास में भी परिवर्तन हुआ और पदक्रम जरूरी हो गया। भाषा की परिवर्तनशीलता केवल समय तक ही सीमित नहीं है। स्थान के साथ–साथ उसका स्वरूप बदलता है।

(5) प्रत्येक भाषा की भौगोलिक और ऐतिहासिक सीमा होती है–प्रत्येक भाषा की स्थान और काल की दृष्टि से सुनिश्चित सीमाएँ होती है। जैसे–पंजाबी की सीमा पंजाब, बंगला की बंगाल, मराठी की महाराष्ट्र तथा गुजराती की गुजरात प्रदेश की राजनैतिक सीमाओं तक व्याप्त है। हमारे देश में भाषावार प्रांत की रचना हुई है।

(6) प्रत्येक भाषा का अपना स्वतंत्र ढाँचा होता है–ध्वनि, रूप–रचना, वाक्य विन्यास और अर्थ की दृष्टि से हर एक भाषा की अपनी संरचना होती है। **उदाहरण**–हमारा परम्परागत मूर्धन्य स्वर ऋ मराठी में रू है, हिन्दी में रि वैदिक भाषा की ध्वनि मराठी में विद्यमान है किंतु हिन्दी में नहीं।

(7) भाषा कठिनता से सरलता की ओर जाती है–ध्वनि रूप, वाक्य रचना आदि सभी क्षेत्रों में

भाषा सरलता की ओर गतिमान रहती है। संस्कृत के संयुक्ताक्षर पालि और प्राकृत में द्विताक्षरों में परिवर्तित हो गयी और बाद में द्वित्व भी समाप्त हो गया। कर्म, कम्म, काम, अक्षि, आँख आदि शब्दों का विकास क्रम इसका प्रमाण है। द्विवचन का धीरे–धीरे समाप्त हो जाना, विभक्तियों का घिसना और उनके जगह परसर्गों का प्रयोग और क्रिया के तिड़न रूपों की जगह कृदन्तों का प्रचलन भाषा की इस प्रवृत्ति का द्योतक है।

(8) भाषा भाव सम्प्रेषण का साधन है—भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने भावों और विचारों को एक–दूसरे तक पहुँचाता है। भाषा के द्वारा बोलकर भावों और विचारों को अमूर्त भावों को आरोह–अवरोह की सजीव भावनाओं को बोलकर या लिखित रूप में जितनी विशुद्धता के साथ व्यक्त कर सकते हैं उतना अन्य किसी प्रकार से नहीं।

(9) भाषा का मूलरूप वाक्य है, पद केवल व्यावहारिक है—भाषा का मूल रूप वाक्य है। अतएव पाश्चात्य भाषाशास्त्री भी इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि वाक्य ही वह सत्ता है जो मानव के विचार को पूर्ण एवं स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। वाक्यों का आधार विचार है और विचारों का मूर्तरूप वाक्य है। किसी एक भाव को मन में रखकर विचार किया जाता है। वह विचार पदों के द्वारा नहीं अपितु वाक्य रूप में होता है। वाक्य की सत्ता को सर्वोच्च माना जाता है।

(10) भाषा का मौखिक रूप पहले परिवर्तित होता है—भाषा के मुख्य रूप से दो भेद होते हैं– मौखिक तथा लिखित। परिवर्तन के नियम पहले भाषा के मौखिक रूप को प्रभावित करता है, लिखित को बाद में। अनुकरण को अपूर्णता शारीरिक कारणों तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थितियों के कारण भाषा का मौखिक रूप अधिक परिवर्तित होता है।

(11) भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता और अप्रौढ़ता से प्रौढ़ता की ओर जाती है—भाषा प्रारंभ में स्थूल होती है। धीरे–धीरे सूक्ष्म मनोभावों और विचारों को व्यक्त करने के लिए उसकी अभिव्यक्ति क्षमता भी सूक्ष्म होती है। बालक पहले वस्तुओं का ज्ञान उनके स्थूल रूप में ग्रहण करता है। बाद में धीरे–धीरे वह अन्य सूक्ष्म भावों का परिचय प्राप्त करता है। इस प्रकार भाषा स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाती है।

प्रश्न 53. भाषा शिक्षण में पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत का वर्णन कीजिए। (ग्वालियर 2021)

उत्तर—पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

(1) उपयोगिता का सिद्धांत—उपयोगिता एक अच्छे पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण गुण है। पाठ्यक्रम निर्माण के समय इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि जो विषय या क्रियाएँ पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जा रही है, वे बालक के जीवन में उपयोगी हों। उसमें वही विषय तथा क्रियाएँ अपनायी जाएँ, जो छात्रों को समाज का उपयोगी सदस्य बनाने में मदद कर सकें एवं जीविकोपार्जन में सहायता प्रदान कर सकें।

(2) सृजनात्मकता का सिद्धांत—रैमण्ड के अनुसार—"पाठ्यक्रम में आधुनिक तथा भविष्य की आवश्यकताओं के प्रति अनुकूलता होनी चाहिए तथा निश्चित रूप से सृजनात्मक विषयों पर ध्यान देना आवश्यक है।"

इसके अंतर्गत बालक में सृजनात्मक और रचनात्मक शक्तियाँ जन्म से ही पायी जाती हैं। ये शक्तियाँ किसी में कम तो किसी में अधिक पायी जाती है, किंतु जब तक उन्हें अनुकूल वातावरण व परिस्थितियाँ नहीं मिलती है तब तक उनका विकास संभव नहीं हो सकता है, अतः पाठ्यक्रम में ऐसी विषय–वस्तु व क्रियाओं का समावेश होना चाहिए, जो इन शक्तियों का विकास तथा उपयोग कर सकें। सृजनात्मकता का विकास क्रियाशील होगा, तो उसमें सृजन की शक्ति भी होगी। बालक की रचनात्मक शक्ति वातावरण को अपने अनुसार ढालने में सहायक सिद्ध होती है।

(3) बालक केन्द्रीयता का सिद्धांत—"शिक्षा बालक के लिए है न कि बालक शिक्षा के लिए।" बालक शिक्षा प्रक्रिया की धुरी के समान है समस्त शिक्षा प्रक्रिया उसी के चारों ओर भ्रमण करती है। अतः पाठ्यक्रम निर्माण करते समय बालक की अभिरुचि, रुझान, योग्यता और क्षमता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

(4) समुदाय केन्द्रीयता का सिद्धांत–इस पाठयक्रम में ऐसे विषयों को स्थान देना चाहिए, जो विद्यार्थी के सामुदायिक जीवन से संबंध रखे। इसके लिए बालकों को उसकी कुछ महत्वपूर्ण क्रियाओं के संपर्क में लाना चाहिए अर्थात् पाठ्यक्रम में उत्पादक कार्यों को महत्वपूर्ण स्थान देना चाहिए, क्योंकि यह कार्य व्यवस्थित मानव जीवन का आधार है। इसके अतिरिक्त स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाना चाहिए।

(5) नैतिकता का सिद्धांत–शिक्षा का सर्वोपरी उद्देश्य बालक में मानवीय गुणों का विकास करना होना चाहिए। जिससे उसमें पारस्परिक सहयोग, स्नेह, सद्भावना, त्याग, स्वाभिमान, सामाजिकता, देश–प्रेम, दूरदर्शिता एवं क्रियाशीलता आदि गुणों का समावेश हो सके। अतः पाठ्यक्रम के नैतिक विकास के साथ–साथ नैतिक शिक्षा तथा विषय–वस्तु भी जोड़नी चाहिए।

(6) एकता का सिद्धांत–इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत विषयों, शिक्षकों, क्रियाओं की एकताओं को ध्यान में न रखकर बालक की क्रियाओं में एकता पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

(7) क्रिया–प्रधानता का सिद्धांत–पाठ्यक्रम के अंतर्गत बालक की विभिन्न प्रकार की क्रियाओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जिससे बालकों में स्वाभाविक रुचि का विकास हो सके। इसके लिए 'करके सीखने' पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(8) अंतर्राष्ट्रीय सद्भावना का सिद्धांत–पाठ्यक्रम की व्यापकता उसमें विषयों की भिन्नता तथा संबंध आदि के आधार पर ही अन्य धर्मों, संस्कृति एवं राष्ट्र को भी अपने देश की भाँति समझने लगता है, उसके निकट आता है। इससे उसमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" की सद्भावना विकसित होती है।

प्रश्न 54. भाषा विकास में पुस्तकालय के महत्व को स्पष्ट कीजिए। **(उज्जैन 2021)**

उत्तर–भाषा विकास में पुस्तकालय का बहुत महत्व है, पुस्तकालय के माध्यम से हम विद्यार्थियों में मौन वाचन की आदत का विकास कर सकते हैं, क्योंकि पुस्तकालय में सभी को शांत बैठकर चुपचाप मन में अध्ययन करना पड़ता है। इसके माध्यम से हम स्वाध्याय की आदतों का भी विकास कर सकते हैं। पुस्तकालय के माध्यम से हम विद्यार्थियों को भाषा संबंधी तथ्य, भाषा निर्माण की प्रक्रिया, कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, सस्वर वाचन, मौन वाचन, आदर्श वाचन, अनुकरण वाचन का भी अभ्यास करा सकते हैं। विद्यार्थियों को अधिक–से–अधिक भाषा संबंधी ज्ञान और नवीन भाषा को सिखाने में पुस्तकालय की अहम् भूमिका होती है। पुस्तकालय ही वह स्थान है जहाँ विद्यार्थियों को विभिन्न भाषाओं में किताबें पढ़ने का अवसर मिलता है। हर देश की भाषा, संस्कृति से पुस्तकालय ही विद्यार्थियों को परिचित कराता है। जब विद्यार्थी विभिन्न तरह की पुस्तकों से अंतः क्रिया करते हैं तो बच्चों को भाषा सीखने में मदद मिलती है। पुस्तकों के पढ़ने से उनमें भाषायी क्षमताएँ एवं भाषायी कौशलों का विकास होता है। जो विद्यार्थी जितनी अधिक पुस्तकें पढ़ते हैं, उनकी विभिन्न भाषायी क्षमताएँ यथा–पढ़ना, लिखना, संवाद कर पाना बेहतर होता है। पुस्तकालय में बच्चों को तरह–तरह की किताबें पढ़ने को मिलती है, जिससे उनका न केवल मनोरंजन होता है, बल्कि विद्यार्थी अपने देश की सभ्यता, संस्कृति, धर्म से भी परिचित होते हैं। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है, विद्यार्थियों का भाषिक, चारित्रिक विकास में पुस्तकालय की अहम् भूमिका होती है।

प्रश्न 55. कहानी सुनाते समय शिक्षक को किन–किन बातों को ध्यान रखना चाहिए ? **(उज्जैन 2021)**

उत्तर–कहानी कहना एक अति प्राचीन कला है जिसके द्वारा किसी विषय या घटना को मनोरंजन बनाकर छात्रों को उसका ज्ञान सरलता और सफलता से प्रदान किया जाता है। इसका उद्देश्य है–छात्रों में पाठ्य विषय के प्रति रुचि और उत्साह को जाग्रत करना इसलिए कहानी कहने को औपचारिक शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। शिक्षक को कहानी कहने में निपुण होना चाहिए।

ग्रीन व **बरचेना** ने कहा भी है–"किसी कहानी को अच्छी प्रकार कहने की योग्यता को शिक्षक का उचित रूप से आवश्यक गुण माना जा सकता है।"

शिक्षक को कहानी सुनाते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए—(1) कहानी पढ़ी नहीं जानी चाहिए वरन् कही जानी चाहिए यदि कहानी पढ़ी जाती है तो उसकी अधिकांश रोचकता नष्ट हो जाती है। (2) कहानी कहते समय शिक्षक को उसे पुस्तक आदि में देखने के लिए नहीं रुकना चाहिए, क्योंकि इससे धारा प्रवाहिता और मनोरंजन का क्षय होता है। (3) शिक्षक जिस कहानी को कहना चाहता हैं, उसे वह आद्योपांत याद होनी चाहिए। (4) शिक्षक को कहानी का विवरण उसमें आयी हुई घटनाओं के क्रम में देना चाहिए। (5) छोटे बालकों को कहानियों के मुख्य वाक्यों और वार्तालापों को बार–बार दोहराना चाहिए, क्योंकि बालकों को इसमें आनंद आता है। (6) छोटे बालकों को कहानियों में अधिकाधिक क्रियाओं का समावेश होना चाहिए जिनका उनकों क्रियाओं में पसंद आता है, विवरण में नहीं। (7) यदि कहानी में ऐतिहासिक तथ्य नहीं हो तो छात्रों की आयु को ध्यान में रखकर उसे छोटा या बड़ा कर देना चाहिए। (8) कहानी कहते समय शिक्षक के सामने उसका मानसिक चित्र उपस्थित रहना चाहिए तभी उसकी कहानी क्रमबद्ध और मनोरंजक हो सकती हैं। (9) कहानी कहते समय हास्य की अवहेलना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इससे बालकों को सजग रखनें में सहायता मिलती है। (10) कहानी बिल्कुल स्वाभाविक ढंग से कही जानी चाहिए पर आवश्यकता के अनुसार हाव–भाव और अभिनय अवश्य किया जाना चाहिए। (11) कहानी कहते समय शिक्षक को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि किन उद्देश्यों से कहानी कह रहा है। उद्देश्यहीन कहानी निरर्थक होती है।

प्रश्न 56. कक्षा में आप विद्यार्थियों/शिक्षार्थियों की मौखिक भाषा का विकास कैसे करेंगे ?

(भोपाल 2022)

***अथवा,* कक्षा में विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास कैसे किया जा सकता है ? विभिन्न स्तरों पर मौखिक अभिव्यक्ति विकास को समझाइए।**

उत्तर—मौखिक रचना शिक्षण के लिए छात्रों को विभिन्न विषयों पर मौखिक रूप से बोलने के अवसर प्रदान करना चाहिए। जब तक बालकों को बोलने का अभ्यास नहीं कराया जाता है, तो उनकी अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता तथा कलात्मकता नहीं आती। मौखिक अभिव्यक्ति का विकास निम्न स्तरों पर हम कर सकते हैं—

(1) प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5 तक)—इस स्तर पर बालक को भाषा सुनने व बोलने के अवसर प्रदान करने चाहिए। जहाँ तक हो सके बोलने में उसकी गलतियों में सुधार करके चलना चाहिए। इस स्तर पर हमें उन्हें वर्ण, शब्द, वाक्य, उचित स्वर, उचित गति, स्वराघात मुहावरे, लोकोक्ति आदि का ज्ञान कराना चाहिए। वार्तालाप करने में उसकी रुचि को विकसित करना चाहिए। इस स्तर पर हम निम्नलिखित विधियों का सहारा ले सकते हैं; जैसे—कहानी कहना तथा सुनना, बालगीत व कविताओं का सुनना, चित्रों का वर्णन, समाचार सुनना और सुनाना, अभिनय कराना। बालकों को जो भी समाचार या कहानी सुनायी जाये उसे लिखने के लिए भी कहा जाये। अपनी लिखित सामग्री को फिर वे स्वयं पढ़े।

(2) पूर्व माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से कक्षा 8)—इस स्तर पर छात्रों को व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग करने पर विशेष बल देना चाहिए। बालक जो भी कहानी, लेख, निबंध, नाटक आदि पढ़े उनसे सारांश सुना जा सकता हैं, उनकी त्रुटियों को साथ–साथ सुधारते चलना चाहिए। इसके अतिरिक्त साहित्यिक कार्यक्रमों—जैसे भाषण, वाद–विवाद, अंत्याक्षरी तथा अभिनय आदि का आयोजन करना चाहिए। बालकों को पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने के लिए अधिक–से–अधिक अवसर प्रदान करना चाहिए। इन पत्रिकाओं के उन लेखों, कहानियों आदि की चर्चा एक–दूसरे से करते हैं तो मौखिक भाषायी कौशल का विकास होगा।

(3) माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 से 12)—माध्यमिक स्तर पर बालकों की मौखिक भाषा की शिक्षा के लिए बालकों को भाषण, वाद–विवाद, अंत्याक्षरी, नाटक, अभिनय तथा अन्य साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना चाहिए। इन कार्यक्रमों में भाग लेने से उनकी मौखिक भाषा का अवश्य ही विकास होगा। कक्षा में बालकों को गद्य–पद्य, नाटक, कहानी, लेख, निबंध आदि का शिक्षण किया जाये तथा वे पुस्तकालय एवं वाचनालय में अधिकाधिक साहित्य का अध्ययन करें।

मौखिक भाषा के विकास में कहानी कहने का बड़ा महत्व है। शिक्षक को कहानी पुस्तक से पढ़कर सुनाने की अपेक्षा मौखिक रूप से सुनानी चाहिए। इस प्रकार सुनाने से कक्षा में सजीवता रहती है।

प्रश्न 57. मानक भाषा से आप क्या समझते हैं ? मानक भाषा की विशेषताओं को समझाइए।
***अथवा*, भाषा के मानक रूप को समझाइए।** **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–हिंदी में मानक शब्द की रचना 1945 के आस–पास अंग्रेजी भाषा के (स्टैण्डर्ड) शब्द से हुई है। मानक का अर्थ होता है–'प्रतिमान' जिसके अनुसार किसी भी योग्यता, श्रेष्ठता, गुण आदि का अनुमान किया जाता है। भाषा की योग्यता, श्रेष्ठता, गुणवत्ता का अनुमान उसके व्याकरण द्वारा किया जाता है अर्थात् मानक का अर्थ है–एक निश्चित पैमाने के अनुसार या "गठित" अर्थात् ऐसी भाषा जिसका अपना एक व्याकरण होता हैं, जो एक निश्चित पैमाने के अनुरूप लिखी या बोली जाये।

दूसरे शब्दों में, जब कोई विभाषा अपने एक सुव्यवस्थित व्याकरण के साथ सभ्य एवं शिक्षित वर्ग के दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने लगती है। तब वह **परिनिष्ठित भाषा** या **मानक भाषा** कहलाती है। मानक भाषा को परिनिष्ठित भाषा, साधुभाषा, नागर भाषा नामों से भी जाना जाता है।

मानक हिन्दी भाषा की विशेषताएँ–

(1) मानक भाषा का व्याकरण होता है–मानक भाषा में मानक शब्दों और मानक वाक्यों का प्रयोग होता है। इसकी एक निश्चित वर्णमाला और लिपि होती है तथा इसका अपना एक व्याकरण होता है। और यह उसी व्याकरण के अनुरूप लिखी, बोली और पढ़ी जाती है।

(2) मानक भाषा सभ्य व्यक्तियों की भाषा होती है–मानक भाषा का प्रयोग सुशिक्षित, सभ्य और सामाजिक व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। इसे समाज के प्रत्येक वर्ग द्वारा मान्यता प्राप्त होती हैं।

(3) मानक भाषा शिक्षा का माध्यम होती है–मानक भाषा में ही प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा दी जाती है। इसे विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त होती है। अध्ययन, अध्यापन, परीक्षा, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शोध कार्यों में भी मानक भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।

(4) मानक भाषा सम्प्रेषण का माध्यम होती है–मानक भाषा संदेश सम्प्रेषित करने का माध्यम होती है। इसी भाषा में रेडियो और आकाशवाणी में समाचार प्रसारित किये जाते हैं, विभिन्न प्रकार के धारावाहिक, नाटक, फिल्म एवं पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी मानक भाषा में होता है।

(5) मानक भाषा में ही साहित्य की रचना होती है–मानक भाषा में साहित्य के विविध रूप जैसे–कहानी, कविता, नाटक, एकांकी, रेडियो, रूपक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, रिपोर्ताज, आत्मकथा, डायरी, उपन्यास इत्यादि की रचना की जाती है। मानक भाषा में ही साहित्यिक कृतियाँ एवं पत्र–पत्रिकाएँ लिखी जाती है। विभिन्न प्रकार के भाषा सम्मेलन और साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाता हैं।

(6) मानक भाषा में सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं–मानक भाषा जनभाषा होने के कारण इसमें विविध प्रकार के सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। इसमें राजनैतिक भाषण, धार्मिक आयोजन, सामाजिक सम्मेलन, परिचय सम्मेलन, साहित्यिक गोष्ठियाँ इत्यादि आयोजित किए जाते हैं।

(7) मानक भाषा को शासकीय मान्यता प्राप्त होती है–मानक भाषा को राज्यभाषा, राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त होता है। विश्वविद्यालय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हम मानक भाषा का प्रयोग करते हैं। मानक भाषा में पारिभाषिक शब्द ग्रहण और निर्माण की क्षमता होती है। मानक भाषा में नवीन शब्दों अथवा तत्वों को ग्रहण करने की क्षमता होती है इसलिए मानक भाषा सर्वमान्य सर्वस्वीकृत होती है।

प्रश्न 58. भाषा शिक्षक के गुण या विशेषताओं को समझाइए।
***अथवा*, भाषा ज्ञान के संदर्भ में शिक्षक की भूमिका कैसी होनी चाहिए ? (ग्वालियर 2021)**
***अथवा*, हिन्दी शिक्षक में कौन–कौन से गुण होना चाहिए ?**

उत्तर–हिन्दी शिक्षक में निम्नलिखित गुण होना चाहिए–

(1) शिक्षण कला में दक्षता–शिक्षण कला में दक्षता प्रत्येक भाषा शिक्षक को प्राप्त करनी

चाहिए, क्योंकि हिन्दी का विषय ऐसा विषय है, जिसमें भिन्न–भिन्न परिवेश से आने वाले विद्यार्थी प्रवेश लेते है। ऐसे में उनको हिन्दी अध्यापक से बहुत सारी आशाएँ होती है। शिक्षण कला के अभाव में वह उन सभी को विषय का समुचित ज्ञान नहीं करा पायेगा तथा विद्यार्थी ज्ञानरहित रह जायेंगे। अतः उसे सभी विद्यार्थियों का ध्यान रखना चाहिए तथा ऐसी विधि अपनानी चाहिए जिससे समस्त विद्यार्थियों का समाधान हो जाये।

(2) व्याकरण का ज्ञान–भाषा शिक्षक को व्याकरण का पूरा ज्ञान होना चाहिए, क्योंकि बिना अच्छे से व्याकरण सिखाएँ हम बच्चों का भाषायी विकास नहीं कर सकते हैं, व्याकरण की छोटी–से –छोटी इकाई, व्याकरणिक नियमों का भली–भाँति ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों को व्याकरण में दक्ष बनाने की कला आनी चाहिए।

(3) हिन्दी साहित्य प्रेमी–हिन्दी के अध्यापक की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका यही है कि उसे साहित्य प्रेमी होना चाहिए, क्योंकि हृदय में साहित्य प्रेम न होने पर वह विषय के प्रति संवेदनशीलता, जागरूकता आदि का प्रदर्शन नहीं कर पायेगा।

(4) हिन्दी की समस्त विधाओं में पारंगत–हिन्दी के अध्यापक को हिन्दी की समस्त विधाओं जैसे –कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, रिपोर्ताज, लघुकथा, निबंध आदि में पारंगत होना चाहिए।

(5) हिन्दी की समकालीन गतिविधियों से परिचित–मातृभाषा का शिक्षण करने वाले अध्यापक को हिन्दी की समकालीन गतिविधियों से परिचित होना चाहिए। उसे वर्तमान समय में नवीन प्रवृत्तियों का ज्ञान होना चाहिए।

(6) सभ्यता और संस्कृति–मातृभाषा का शिक्षक होने के कारण हिन्दी के अध्यापक को सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान होना चाहिए। छात्र अपने अतीत का गौरव जानने के लिए मातृभाषा के शिक्षक का ही आश्रय लेते हैं।

(7) कुशल प्रेरक–इन गुणों के अतिरिक्त हिन्दी अध्यापक एक कुशल प्रेरक भी होना चाहिए जो अपने शिक्षण से विद्यार्थी में हिन्दी के प्रति उत्सुकता और प्रेम को जन्म दे सकें। उसे प्रेरक इसलिए भी होना चाहिए कि हिन्दी का ज्ञान ही विद्यार्थी को आगामी कक्षाओं में अध्ययन के योग्य समर्थ बनाता हैं। हिन्दी के शिक्षक को समझना चाहिए कि प्रेरणा के अभाव में विद्यार्थी हिन्दी की आधारभूत बातों से वंचित रह जायेगा तथा उसका भविष्य कठिनाइयों से भर जायेगा।

(8) शिक्षण में निष्ठा और स्वाभिमान–हिन्दी के अध्यापक को निष्ठा के साथ अपना कार्य संपादन करना चाहिए, क्योंकि निष्ठा के अभाव में उसका प्रदर्शन अनुचित होगा। स्वाभिमान भी हिन्दी के शिक्षक का एक प्रमुख गुण होना चाहिए। वह उस विषय का शिक्षण कर रहा है जो विद्यार्थी को तथा स्वयं उसकी मातृभाषा है, अतः उसके मन में गौरव और स्वाभिमान होना चाहिए कि वह हिन्दी जैसे महान विषय का शिक्षण कर रहा है।

(9) आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी–हिन्दी के शिक्षक को आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होना चाहिए। उसे साफ–सुथरे, आकर्षक, सुरुचिपूर्ण वस्त्रों को धारण करना चाहिए। उसकी मुख–मुद्रा आत्मविश्वास से पूर्ण होनी चाहिए। शिक्षण के समय अटकना, शब्दों की पुनरावृत्ति तथा तकिया कलाम आदि दोषों से मुक्त होना चाहिए।

(10) समय का पाबंद–हिन्दी के शिक्षक को समय के प्रति सचेत रहना चाहिए। समय से कक्षा में प्रवेश करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करके वह विद्यार्थियों को भी समय से कक्षा में उपस्थिति दर्ज कराने के लिए प्रेरित कर सकता हैं। विद्यार्थियों में संदेश जाता है कि हिन्दी कोई महत्वपूर्ण विषय नहीं हैं। अगर होता तो अध्यापक अवश्य ही आते।

(11) धैर्यवान–हिन्दी शिक्षण से संबंधित अध्यापकों को धैर्यवान होना चाहिए। हिन्दी ऐसा विषय है जिसमें भिन्न–भिन्न भाषाओं और प्रांतों की आंचलिक भाषाओं का समावेश होता है तथा एक ही शब्द के कई अर्थ होते हैं। ऐसे में संभव है कि विद्यार्थी कुछ शब्दों के अर्थ को न समझ पाये। अतः अध्यापक को अपना धैर्य नहीं खोना चाहिए। परिश्रमपूर्वक छात्रों की समस्या पर विचार करना चाहिए तथा धैर्यपूर्वक प्रश्न का समाधान करना चाहिए।

(12) शैक्षिक समस्याओं के प्रति जागरूक—प्रत्येक विषय में शिक्षण संबंधी कुछ–न–कुछ समस्यायें होती है, परंतु हिन्दी के शिक्षण में यह समस्याएँ और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि अध्यापक का संबंध हिन्दी जैसे आधारभूत विषय के शिक्षण से संबंधित होता है, अतः हिन्दी के शिक्षक को हिन्दी शिक्षण की समस्याओं के संबंध में जागरूक रहना चाहिए। उसे सदैव चिन्तन–मनन करते रहना चाहिए तथा समस्याओं के निराकरण की कोशिश करनी चाहिए।

प्रश्न 59. मातृभाषा के महत्व को समझाइए। घर में मातृभाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिए। **(ग्वालियर 2021)**

***अथवा*, आप मातृभाषा को कैसे परिभाषित करेंगे ?** **(भोपाल 2022)**

***अथवा*, पाठ्यक्रम में मातृभाषा की क्या भूमिका होती है ?** **(भोपाल 2022)**

उत्तर—मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है—'माँ की भाषा'। जिसे बालक माँ के सानिध्य में रहकर सहज रूप से सुनता और सीखता है। बालक का विकास भाषा की क्षमता पर निर्भर होता है। बालक का स्थायी भावों, संवेगों तथा मूल्यों का मातृभाषा से घनिष्ठ संबंध होता हैं। मातृभाषा में वे सभी गुण विद्यमान है जो योग्य नागरिकों के लिए आवश्यक है। स्पष्ट चिंतन, स्पष्ट अभिव्यक्ति, विचारों तथा क्रियाओं की पूर्णता, संवेगात्मक तथा रचनात्मक जीवन की पूर्णता आदि मातृभाषा द्वारा ही अभिव्यक्त किए जा सकते हैं। मातृभाषा के द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। बालक के मस्तिष्क ज्ञान, विचार–विनिमय, मौलिकता आदि का विकास मातृभाषा के द्वारा ही संभव है। मातृभाषा के ज्ञान से बालक के विचार उत्तम, स्पष्ट हो जाते हैं तथा उसका ज्ञान–विज्ञान का आधार होती है। यह अन्य विषयों का आधार स्तम्भ है। मातृभाषा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय भावनाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन हैं। अतः मातृभाषा का पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है।

बच्चे की शिक्षा में मातृभाषा का विशेष महत्व होता है। मातृभाषा शिक्षा का सर्वोत्तम साधन होती हैं। मातृभाषा के महत्व को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) मानसिक विकास—मानसिक विकास के लिए विचार शक्ति की जरूरत होती है। विचारों का प्रवाह मातृभाषा के द्वारा ही हो सकता है। विचार भाषा को जन्म देते हैं और भाषा विचारों को जन्म देती है जिस व्यक्ति के पास जितनी सशक्त मातृभाषा होगी उतनी ही उसकी विचार शक्ति सुदृढ़ होगी।

(2) सामाजिक विकास—भाषा में साहित्य का निर्माण होता है। भाषा साहित्य के द्वारा ही समाज में परिवर्तन होता है तथा सामाजिकता का विकास होता है। इस कार्य के लिए मातृभाषा अत्यंत उपयुक्त साधन है।

(3) नैतिकता का महत्व—भाषा के क्षेत्र में मातृभाषा ही एक साधन है जो भौतिक तथा चारित्रिक गुणों को विकसित करती है।

(4) व्यक्तित्व का विकास—मातृभाषा के ज्ञान पर बालकों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास निर्भर करता है। बालक के बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास में मातृभाषा ही सहायक होती है। बालक के मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने पर उसके शारीरिक अवयवों पर दबाव भी नहीं पड़ता है तथा सुनने, बोलने, लिखने एवं पढ़ने आदि से संबंधित सभी इंद्रियों का विकास ठीक से होता है।

(5) सृजनात्मक विकास—भाषा के द्वारा व्यक्ति स्वतंत्र रूप से मनन, चिंतन तथा वैचारिक अभिव्यक्ति करने में सफल हो पाता है। मातृभाषा का चिंतन मौलिक चिंतन होता है जो कि मातृभाषा के द्वारा ही संभव है। अतः इस मौलिकता में सृजनात्मकता का विकास होता है।

(6) उत्तम नागरिकता—मातृभाषा व्यक्ति में मानवीय जीवन को कला का ज्ञान कराती है। मातृभाषा अपने घर व समाज के प्रति व्यवहार के साथ उत्तम नागरिकता के गुणों का विकास करती है।

(7) सांस्कृतिक जीवन का महत्व—जीवन में सांस्कृतिक का अत्यधिक महत्व हैं। मातृभाषा द्वारा व्यक्ति के मूलभूत संस्कारों का ज्ञान होता है तथा यही सांस्कृतिक विचार, संस्कार के रूप में जीवन दर्शन को शाश्वत् बनाये रखते हैं।

(8) अध्ययन–अध्यापन का मूलधार–मातृभाषा अध्ययन एवं अध्यापन का सरलतम साधन है भाषा शिक्षा की मूलधार है। भाषा के माध्यम से शिक्षक अपने बालकों को ज्ञान की पूर्णता से परिचित करवा सकते हैं।

प्रश्न 60. गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं को बताते हुए किन्हीं दो विधाओं को उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। (छतरपुर 2021, 22)

उत्तर–भावों एवं विचारों की स्वाभाविक एवं सरल अभिव्यक्ति गद्य के द्वारा ही होती हैं। इसी कारण सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक आदि समस्त विषयों के लिखने का माध्यम प्रायः गद्य साहित्य ही होता है। गद्य साहित्य हमारी स्वाभाविक अभिव्यक्ति हैं। गद्य के माध्यम से ही हम अपने दैनिक जीवन में सभी कार्यों को संपन्न करते हैं। गद्य का विकास हिन्दी आधुनिक काल से माना जाता है। गद्य साहित्य की निम्नलिखित विधाएँ हैं–

1. निबंध, 2. नाटक, 3. एकांकी, 4. उपन्यास, 5. कहानी, 6. जीवनी, 7. आत्मकथा, 8. संस्मरण, 9. रेखाचित्र, 10. गद्य काव्य, 11. रिपोर्ताज, 12. आलोचना, 13. यात्रावृतांत, 14. डायरी, 15. पत्र, 16. भेंटवार्ता, 17. इंटरव्यू।

किन्हीं दो विधाओं का उदाहरण सहित वर्णन–(1) कहानी, (2) आत्मकथा।

(1) कहानी–कहानी साहित्य की सबसे प्राचीन गद्य विधा हैं। कहानी एक कलात्मक छोटे रचना होती है। यह किसी घटना, भाव, संवेदना आदि की मार्मिक व्यंजना करती है। इसका आरम्भ और अंत बहुत कलात्मक तथा प्रभावपूर्ण होता है। घटनाएँ परस्पर एक–दूसरे से सम्बद्ध होती हैं। हर घटना लक्ष्य की ओर उन्मुख होती हैं। लक्ष्य पर पहुँचकर कहानी अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ती हुई समाप्त हो जाती हैं।

कहानी की परिभाषाएँ–

एडगर एलन पो के अनुसार–"कहानी एक ऐसा आख्यान हैं, जो एक ही बैठक में पढ़ा जा सके और पाठक पर किसी एक प्रभाव को उत्पन्न कर सके।"

प्रेमचंद के अनुसार–"कहानी वह रचना हैं जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास उसी एक भाव की पुष्टि करते हैं। वह एक गमला हैं, जिसमें एक पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रूप से दृष्टिगोचर होता है।"

कहानी में छः तत्व होते हैं–(i) कथावस्तु, (ii) चरित्र–चित्रण, (iii) कथोपकथन, (iv) देशकाल और वातावरण, (v) उद्देश्य, (vi) शैली शिल्प।

कहानी गद्य विधा की कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

कहानी का नाम		कहानीकार
(i) रानी केतकी की कहानी	–	इंशाअल्ला खां
(ii) राजा भोज का सपना	–	राजा शिव प्रसाद सितारे हिंद
(iii) दुलाई वाली	–	राजा बाला घोष
(iv) अद्भुत अपूर्व सपना	–	भारतेंदु
(v) इंदुमती गुलबहार	–	किशोरीलाल गोस्वामी
(vi) मन की चंचलता	–	माधव प्रसाद मिश्र
(vii) प्लैग की चुड़ैल	–	भगवानदीन
(viii) ग्यारह वर्ष का समय	–	रामचंद्र शुक्ल।

(2) उपन्यास–उपन्यास शब्द का अर्थ हैं 'सामने रखना'। उपन्यास एक ऐसी विस्तृत कथा होती है जो अपने भीतर अन्य गौण कथाओं को समेटे रहती हैं। उपन्यास वह वस्तु या कृति हैं जिसे पढ़कर पाठक को ऐसा लगे कि यह उसी की हैं। उसी के जीवन की कथा, उसी की भाषा में कही गई हैं। अतः उपन्यास मानव जीवन की काल्पनिक कथा हैं।

हिन्दी में उपन्यास शब्द कथा साहित्य के रूप में प्रयोग होता है। वही बंगला भाषा में उपन्यास, गुजराती में नवल कथा, मराठी में कादम्बरी, उर्दू में नावले और अंग्रेजी में नॉवेल (Novel) कहा जाता है। उपन्यास आधुनिक काल की सर्वाधिक लोकप्रिय और सशक्त हिन्दी साहित्य की विधा है। इसका कारण यह हैं कि इसमें मनोरंजन का तत्व तो अधिक रहता ही हैं, साथ–साथ जीवन को इसकी बहुमुखी छवि के साथ व्यक्त करने की शक्ति और अवकाश भी रहता है।

उपन्यास की परिभाषाएँ–

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार–"मैं उपन्यास को मानव जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके सदस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व हैं।"

श्यामसुंदर दास के अनुसार–"उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"

उपन्यास में छः तत्व और चार शैली होती हैं। उपन्यास के छः तत्वों में कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र–चित्रण, कथोपकथन या संवाद, देशकाल तथा वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य होते हैं। उपन्यास की चार शैलियों में आत्मकथात्मक शैली, कथात्मक शैली, पत्र शैली, डायरी शैली होती हैं।

उपन्यास गद्य विधा की कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं –

उपन्यासकारों के नाम		उपन्यास
(i) लाला श्री निवास दास	–	परीक्षा गुरु
(ii) श्रद्धा राम फिल्लौरी	–	भाग्यवती
(iii) बालकृष्ण भट्ट	–	नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान
(iv) भारतेंदु हरिशचंद्र	–	पूर्ण प्रकाश, चंद्रप्रभा
(v) देवकीनंदन खत्री	–	चंद्रकांता, नरेंद्रमोहिनी, भूतनाथ
(vi) मेहता लज्जाराम शर्मा	–	धूर्त रसिक लाल, हिंदू गृहस्थ
(vii) किशोरी लाल गोस्वामी	–	लखनऊ की कब्र, त्रिवेणी, लवंगलता
(viii) गोपालराय गहमरी	–	खूनी कौन, अद्भुत लाश
(ix) प्रेमचंद	–	सेवा सदन, गोदान
(x) हजारी प्रसाद द्विवेदी	–	बाणभट्ट की आत्मकथा।

प्रश्न 61. दृश्य का सारांश लेखन से क्या अभिप्राय हैं ? सर्वोत्तम दृश्य सारांश लेखन की दो विशेषताएँ बताइए। **(छतरपुर 2021)**

उत्तर–विद्यार्थियों के लेखन कौशल को विकसित करने के लिए दृश्य सारांश का अभ्यास कराया जाता है। हम विद्यार्थियों को शुरुआत में छोटे–छोटे दृश्यों का सारांश लिखने को देते हैं। जब धीरे–धीरे विद्यार्थी इसमें पारंगत हो जाते हैं तो उन्हें पूरे वृतांत या कथा का सारांश करने के लिए दिया जाता है। दृश्य सारांश में विद्यार्थी को किसी–भी स्थिति या परिस्थिति का जैसा भी उसने दृश्य देखा है, उसे हू–ब–हू लिखने को दिया जाता है, जिससे हम विद्यार्थियों में कविता, कहानी, लेखन जैसी विधाओं का विकास कर सके और उन्हें साहित्य और लेखन कौशल से जोड़ सके। साथ ही कक्षा–कक्ष में उनकी अधिक–से–अधिक संलग्नता एवं रुचि के स्तर में वृद्धि कर उनके संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सके।

सर्वोत्तम दृश्य सारांश लेखन की विशेषताएँ–

(1) सारांश में मूल भाव का समावेश–जब भी हम किसी–भी दृश्य का सारांश लेखन करते हैं तो हमें हमेशा यह बात ध्यान रखना चाहिए कि दृश्य के मूल भाव का जरूर वर्णन करें। क्योंकि हर दृश्य का मूल भाव जरूर होता है, उसे समझना और बताना ही दृश्य के सारांश को समझाता है। उदाहरण के लिए–राजा हरिशचंद्र के वृतांत में मूल भाव सत्य एवं धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से चलना है। तो सारांश लेखन में भी विद्यार्थियों को इस मूल भाव को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। इसके लिए सर्वप्रथम विद्यार्थियों को वृतांत के दृश्यों की गम्भीरता से अध्ययन करते हुए तथा उनका संश्लेषण करते हुए मूलभाव को समझना चाहिये। इसके पश्चात् सारांश लेखन करना चाहिए। इस प्रकार का सारांश लेखन प्रभावी दृश्य सारांश लेखन होता है।

(2) संक्षिप्तता का समावेश—सारांश लेखन में संक्षिप्तता एक अनिवार्य तत्व है। इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। सारांश की अधिक संक्षिप्तता भी उसकी प्रभावहीनता में वृद्धि करती हैं तो संक्षिप्तता का अभाव भी प्रभावहीनता सिद्ध करता है। इसलिए छात्रों को पहले यह निश्चित कर लेना चाहिए कि सारांश का आकार कितने शब्दों में होगा। इसके पश्चात् यह भी निश्चित कर लेना चाहिए कि कोई भी महत्वपूर्ण तथ्य छूटना नहीं चाहिए। इस प्रकार का संक्षिप्त सारांश प्रभावशाली एवं सर्वोत्तम माना जाता है।

प्रश्न 62. सुनिर्मित हास्यात्मक चित्र कलाओं की चार गुण लिखिए। (छतरपुर 2021)

उत्तर—सुनिर्मित हास्य चित्र कथाओं के माध्यम से छात्रों की रुचि एवं संलग्नता को भाषा कक्षा–कक्ष के प्रति विकसित किया जाता है। भाषायी विषय–वस्तु में हास्य कथाओं का उपयोग मात्र मनोरंजन के लिये ही नहीं होता वरन् इनके माध्यम से छात्रों में विविध प्रकार के गुणों, कौशलों एवं व्यावहारिक योग्यताओं को विकसित किया जाता है। हास्यात्मक चित्र कथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों का मनोरंजन तो होता ही है, साथ ही इससे विद्यार्थियों की संलग्नता, रुचि एवं अधिगम स्तर में भी तीव्र गति से वृद्धि होती हैं।

सुनिर्मित हास्यात्मक चित्र कथाओं के चार गुण इस प्रकार हैं—

(1) हास्य चित्र कथाओं में कल्पनाएँ—हास्य चित्र कथाओं में कल्पनाओं का समावेश होना चाहिए, क्योंकि छात्रों की विविध प्रकार की कल्पनाएँ बहुत अच्छी लगती हैं। कल्पनाओं का स्वरूप छात्रों के स्तरानुकूल होना चाहिए।

(2) हास्य चित्र कथाओं में सकारात्मकता—हास्य चित्र कथाओं में मनोरंजन के साथ–साथ सकारात्मक दृष्टिकोण का भी समावेश होना चाहिए। इससे छात्रों में सफलता एवं आशावादिता के बारे में सीख सकेंगे।

(3) हास्य चित्र कथाओं में सामाजिक मूल्य—हास्य चित्र कथाओं को प्रस्तुत करते समय उनमें सामाजिक मूल्यों एवं व्यवस्थाओं का ध्यान रखना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं गतिविधियों को सीखने के अवसर प्राप्त हो सकेंगे तथा छात्रों के संलग्नता स्तर, सामाजिक कौशल, सामाजिकता, व्यावहारिकता आदि का भी विकास होगा।

(4) हास्य चित्र कथाओं में जीवन कौशल का समावेश—हास्य चित्र कथाओं में जीवन कौशलों से संबंधित घटनाओं को स्थान देना चाहिए। जीवन कौशलों को महत्व देने से उनमें जीवन के प्रति उत्तरदायित्व व निर्णयन कौशल का विकास होगा।

इस प्रकार से हास्यात्मक चित्र कथाओं के माध्यम से हम न केवल विद्यार्थियों का मनोरंजन कर सकते हैं, अपितु विद्यार्थियों में कल्पनाओं का, सांस्कृतिक कौशलों का, परम्पराओं का तथा सही जीवन निर्णयों का भी विकास कर सकेंगे।

प्रश्न 63. अच्छे वाचन की विशेषताएँ बताइए। **(छतरपुर 2021, 22)**

उत्तर—वाचन के बिना व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त नहीं कर सकता हैं। व्यक्ति का सबसे बड़ा आभूषण उसकी सुसंस्कृत एवं मधुर वाणी हैं। वाचन एक कला हैं, जो व्यक्ति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है—(1) वाचन व्यक्तित्व के विकास का श्रेष्ठतम् साधन है। वाचन के द्वारा ही व्यक्ति के आत्मप्रकाशन का सुअवसर प्राप्त होता है। (2) वाचन शुद्ध भाषा के प्रयोग की दक्षता का विकास करता है। वाचन में शब्दों के शुद्ध उच्चारण के साथ–साथ स्वर का उतार–चढ़ाव, पदबंध और वाक्य के शुद्धतम् रूप पर बल दिया जाता है। (3) वाचन भावों एवं विचारों के सम्प्रेषण का साधन है। वाचन द्वारा ही व्यक्ति अपने भावों, विचारों और अनुभूतियों को दूसरों को सम्प्रेषित करता है। (4) वाचन शरीर के अवयवों के व्यायाम का साधन हैं—वाचन करते समय शरीर के अवयवों का संचालन होता रहता है, जिसमें हाथों की गतिविधियों, नेत्रों की गति, मुख की मुद्राओं का विशेष महत्व हैं। वाचन में हाव–भावों, स्वरों, आरोह, अवरोह वाणी की मधुरता व शब्दों के शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्व होता है। जिससे उच्चारण अवयवों का विकास होता है। इनसे अभिव्यक्ति के सम्प्रेषण

में एक अद्भुत शक्ति, सजीवता और हृदय स्पर्शिता प्राप्त होती है। (5) वाचन ही भाषा को पूर्णता प्रदान करता हैं। लिखित भाषा को सीखने के लिए वाचन की आवश्यकता होती हैं। अक्षरों को सिखाने के लिए अक्षर की ध्वनि के उच्चारण की सहायता की जाती हैं। वाचन के अभाव में भाषा का ज्ञान अधूरा माना जाता हैं। (6) वाचन शिक्षा की प्रक्रिया के संचालन का साधन होता है। शिक्षा की प्रक्रिया का संचालन सभी स्तरों (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर वाचन के माध्यम से ही किया जाता है।) बिना वाचन के शिक्षा प्रक्रिया का संचालन संभव ही नहीं हैं। (7) वाचन के माध्यम से व्यक्तियों में आत्मविश्वास पैदा होता है। (8) वाचन सामाजिक दक्षता का आधार बिंदु है, इसके माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल एवं सामाजिक दक्षता का विकास किया जा सकता है।

प्रश्न 64. काल्पनिक कथाओं से आप क्या समझते हैं? एक अच्छी काल्पनिक कथा की विशेषताएँ बताइए। **(छतरपुर 2021)**

उत्तर—काल्पनिक कथा—जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हैं, जिसमें कल्पना का समावेश हो, कल्पना के माध्यम से हम विद्यार्थियों में लेखन कौशल, पठन कौशल व जीवन कौशलों का विकास कर सकते हैं।

बच्चों को पढ़ाने, लिखाने, सिखाने और संचार पर उनका अधिकार बनाए रखने के लिए उनके मूल पाठों तथा अध्यायों में उपन्यास अथवा ऐसी काल्पनिक कहानियों का समावेश करना चाहिए, जिससे बच्चे एक ओर उसमें रुचि ले, तो दूसरी ओर पढ़ने में उनकी रुचि जाग्रत हो। काल्पनिक कहानियों के माध्यम से हम विद्यार्थियों को पढ़ना सिखाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

काल्पनिक कहानियों की विशेषताएँ—एक अच्छी काल्पनिक कथाओं की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) नैतिक संदेश का समावेश—एक अच्छी काल्पनिक कथा में नैतिक संदेश निहित होना चाहिए। हम विद्यार्थियों को विभिन्न काल्पनिक पात्रों के माध्यम से ऐसे नैतिक संदेश दे जिससे विद्यार्थियों में नैतिकता, कर्त्तव्यनिष्ठता, प्रेम की भावना का विकास हो।

(2) जीवन मूल्यों का समावेश—काल्पनिक कथाएँ संदेश देने वाली तथा विद्यार्थियों को लिखने और पढ़ने की प्रेरणा देने वाली और उनमें जीवन मूल्यों का विकास करने वाली होनी चाहिए। काल्पनिक कथाओं के माध्यम से हम विद्यार्थियों में मूल्य आधारित शिक्षा प्रदान कर सकते हैं जिसमें बड़ों का सम्मान करना, लिंगभेद न करना और ऐसे अनेक मूल्य हैं जो बिना सिखाए इन काल्पनिक कथाओं के माध्यम से बच्चा अंगीकार कर सकता है।

(3) बाल मनोदशा के अनुरूप कहानियाँ सुनाए—जब भी कहानियों का चयन किया जाए तो छात्रों की मनोदशा का अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए। जैसे छोटे स्तर के छात्रों को कहानियों में राजा–रानी एवं परी आदि की कहानी अच्छी लगती हैं। हमें हमेशा छात्रों की कक्षा के स्तर एवं मानसिक स्तर के अनुरूप उनकी मनोदशा को ध्यान में रखकर ही कहानियों का चयन करने से हम विद्यार्थियों में कल्पना का विकास कर सकते हैं।

(4) कल्पनाओं का समावेश—काल्पनिक कथाओं में बच्चों की कल्पना के अनुरूप काल्पनिक पात्र बनाए जाते हैं, जिससे बच्चों को मजा आता है और मजे–मजे में विद्यार्थी बहुत सारी काम की बाते भी सीख लेते हैं।

(5) मनोरंजनात्मकता—कहानी ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का मनोरंजन हो। कहानी में जिज्ञासा का पुट अंत तक बना रहना चाहिए। जिज्ञासा, कौतुहलपूर्ण एवं मनोरंजनात्मकता से परिपूर्ण कहानी होनी चाहिए।

प्रश्न 65. भाषा शिक्षण के सिद्धांतों को समझाइए। **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर—भाषा शिक्षण के सिद्धांत—

(1) अनुबंधन का सिद्धांत—बच्चों के भाषा विकास हेतु यह बहुत महत्वपूर्ण है कि सीखने में यदि प्रत्यक्ष किसी चीज का प्रयोग हो, तो शिक्षण का यह तरीका बहुत सरल और रुचिकर होगा।

(2) अनुकरण का सिद्धांत—वाइगोत्स्की के अनुसार, बच्चा सामाजिक अंतःक्रिया द्वारा भाषा अर्जित करता है और सीखता है।

(3) भाषा अर्जन का सिद्धांत—यह सिद्धांत मुख्यतः चॉम्स्की का दिया हुआ है। उनके अनुसार, बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात क्षमता होती हैं। उन्होंने सार्वभौमिक व्याकरण का नियम बताते हुए बताया था कि बच्चे एक निश्चित समय में अनुकरण द्वारा भाषा के नियम जानकर धीरे–धीरे सही वाक्य बनाना सीख जाते हैं और नए शब्द भी सीख जाते हैं।

(4) क्रियाशीलता का सिद्धांत—यह सिद्धांत भाषा प्रयोगों के अधिकाधिक अवसरों और सृजनात्मकता की ओर ध्यान देता हैं। इसके अनुसार कक्षा में परिचर्चा करना, प्रश्न पूछना आदि सहगामी क्रियाएँ बच्चों को सक्रिय, पठन के प्रति सजग, प्रोत्साहित और आनंदित रखती है। इससे भाषा शिक्षण बहुत सरल हो जाता है।

(5) अभ्यास का सिद्धांत—किसी भी चीज को सीखने के लिए अभ्यास सबसे महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि, उसी से वह हमारे व्यवहार में आती है और निपुणता भी आती हैं। भाषा प्रयोग के अधिकाधिक लिखित, मौखिक या वैचारिक अवसर मिलने से बच्चों का भाषा विकास सही प्रकार से होना संभव है।

(6) अनुपात एवं क्रम का सिद्धांत—भाषा कौशल विशेषतः चार प्रकार के होते हैं—सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना। सही कौशलों का सही से क्रमबद्ध एवं साथ–साथ विकास होना बहुत आवश्यक है। एक कौशल में कमी हो तो भाषा विकास अधूरा ही माना जाएगा। भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य छात्रों में सभी भाषा कौशलों में निपुणता हासिल करवाना है, जिससे वे भाषा का प्रभावी संदर्भ युक्त प्रयोग कर सकें।

(7) बोलचाल का सिद्धांत—इसके अनुसार बातचीत के माध्यम से भाषा सरलता और स्थायी रूप से सीखी जाती है, जो लम्बे समय तक याद रहती है। यह भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर केन्द्रित है।

(8) चयन का सिद्धांत—भाषा शिक्षण हेतु यह सिद्धांत अति महत्वपूर्ण हैं। कक्षा में किस प्रकार के छात्रों को कब, क्या और कैसे पढ़ना है, इसमें सही विधि, समय, पठन सामग्री और विषय का चयन बहुत महत्व रखता है। शिक्षक को हर समय मूल्यांकन करते रहना चाहिए कि कौन–सी विधि सही काम कर रही है और बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार सही दृश्य–श्रव्य सामग्री उपलब्ध है या नहीं।

(9) बाल केन्द्रित का सिद्धांत—शिक्षक को यह समझना चाहिए कि शिक्षण के केन्द्र में छात्र है। उसी के शिक्षण हेतु सभी प्रयास किये जा रहे हैं। इसलिए छात्र वर्ग की रुचि, उसका मानसिक स्तर, उसकी विशेष आवश्यकताओं, स्वभाव और विशेषताओं आदि का ज्ञान होना शिक्षण को सही दिशा प्रदान करता है।

(10) साहचर्य (संगति) का सिद्धांत—बच्चे सर्वप्रथम भाषा को अपने परिवार और समाज अपनी संगति से सीखते हैं। इसलिए यह बहुत आवश्यक हैं कि बच्चों को भाषा सीखने के लिए एक समृद्ध भाषिक परिवेश मिले, जिससे अपने हर तरफ भाषा का प्रयोग होते देखकर बच्चा सहज रूप से भाषा को अधिक सीखने लगेगा।

प्रश्न 66. पठन के स्तरों को समझाइए।

उत्तर—पढ़ते समय व्यक्ति की अनुभूतियाँ जाग्रत होती हैं और उसमें भावोद्रेक होता हैं। पाठक पढ़ते समय केवल विचार ही नहीं ग्रहण करता वरन् वह विचारों की सृष्टि भी करता है। इस प्रकार पठन द्वारा अर्जित ज्ञान और अनुभव पाठक के जीवन का अंग बन जाता है। वह उनका उपयोग दैनिक कार्यकलापों में उपयोग करने लगता है। पठन प्रक्रिया चार स्तरों से होकर गुजरती है। ये प्रक्रिया के चार स्तर निम्नलिखित हैं—

(1) प्रत्यभिज्ञान—पठन के इस स्तर को पठन का यांत्रिक पक्ष कहते हैं। प्रत्यभिज्ञान का आशय हैं—शब्द के दृश्य (रचना) तथा श्रव्य (उच्चारण) रूपों को समझकर उसके स्पष्ट मानसिक बिंब की

रचना करना हैं। शब्द के रूप, ध्वनि और अर्थ तीनों के संयोग से हमारे मस्तिष्क में शब्द का बिम्ब बनता है। इस बिम्ब से या संप्रत्यय की सृष्टि हमारे पूर्व अनुभवों पर आधारित होती है। पठन में दक्षता प्राप्त पाठक शब्द के प्रत्येक अक्षर को अलग–अलग न देखकर उसे संपूर्ण रूप में देखता है। इतना ही नहीं कभी–कभी तो वह एक साथ अनेक शब्दों को देखते हुए उनका अर्थ भी समझता जाता है। तीव्र गति से पढ़ने के लिए यह कौशल अत्यंत आवश्यक हैं।

(2) अर्थग्रहण—अर्थग्रहण के द्वारा हम पठित सामग्री में निहित अर्थ को भली–भाँति समझते हैं। पढ़ते समय विचारों और घटनाओं के क्रम को समझना, विशिष्ट तथ्यों का चुनाव करना, विस्तृत विवरण (किसने कहा ? कब कहा ? क्यों कहा ?) आदि की जानकारी प्राप्त करना तथा लेखक के मंतव्य को समझना सम्मिलित होता है।

(3) मूल्यांकन तथा प्रतिक्रिया—अर्थग्रहण के साथ ही पाठक गृहीत विचारों की उपयोगिता, औचित्य और विश्वसनियता का निर्धारण भी करता चलता है। अच्छा पाठक वही हैं जो लेखक के द्वारा प्रस्तुत घटना, विचार, चरित्र या मन्तव्य को समझते हुए उसका मूल्यांकन करे एवं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करे।

(4) अनुप्रयोग—अनुप्रयोग पठन का अंतिम सोपान हैं। पठन का उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब किसी पुस्तक अथवा रचना को पढ़कर हमारे विचार, व्यवहार, कौशल, अभिरुचि तथा जीवन मूल्यों में विकास तथा परिष्कार दिखाई दे। पठन की सार्थकता इसी बात में हैं कि पाठ्य–सामग्री में निहित जिस भाव, आदर्श अथवा मूल्य से हम सहमत हो उसे आत्मसात् कर अपने जीवन में उतार लें। पठन द्वारा अपने विचार, भावना और कार्य में परिवर्तन या विकास लाना ही उसका अनुप्रयोग है।

प्रश्न 67. अपने जीवन की किसी महत्वपूर्ण घटना को कहानी के रूप में व्याख्या कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर—बचपन में एक समय की बात है। हम अपने नानी के घर गए थे। नानी का घर उत्तरप्रदेश में है। नानी के घर बहुत बड़े–बड़े बगीचे थे, वहाँ तरह–तरह के फूल एवं पत्ती खिला करती थी। हम सब बच्चे सारा दिन बगीचे में ही खेलते रहते थे। दिनभर खूब मस्ती करते थे। एक बार हर दिन की तरह हम खेल रहे थे, इतनी देर में हम सबको बहुत जोरों की भूख लगी हमने कई सारे फल खा लिए, मैंने गलती से फल के संग बीज भी खा लिया। बीज खाने से मैं बहुत घबरा गयी और मेरे दोस्तों ने भी मुझे ये कहकर डरा दिया कि तुने जहरीला बीज खा लिया, अब तू मर जाएगी। ये सब सुनकर मैं बहुत डर गई। घर आकर मैं जिद करने लगी कि मेरी तबियत खराब है, मुझे डॉक्टर के पास ले चलो, घर में नाना–नानी, मामा–मामी सब घबरा गए कि अचानक इसे क्या हो गया, जब डॉक्टर घर आया, डॉक्टर ने चेकअप किया और चेकअप करने के बाद बताया कि इसे कुछ नहीं हुआ, सब ठीक है, तब सबकी जान में जान आई। फिर मामा–मामी ने कहा कि कल तुम्हें क्या हो गया था ? तो मैंने उन्हें सारा वाक्या सुनाया। वाक्या सुनते ही घर के सभी सदस्य ठहाके मारकर धीरे–धीरे से खूब हँसने लगे। इस कहानी से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें किसी की बातों में बहुत जल्दी नहीं आना चाहिए।

प्रश्न 68. विवरण और वर्णन प्रविधि में अंतर बताइए। **(जबलपुर 2021)**

उत्तर–विवरण और वर्णन विधि में अंतर–

क्र.	विवरण विधि	वर्णन विधि
1.	विवरण विधि का संबंध व्यक्ति विशेष से होता है।	वर्णन विधि का संबंध किसी व्यक्ति विशेष से नहीं होता है, बल्कि सम्पूर्ण जनसंख्या से होता है।
2.	विवरण विधि वैज्ञानिक नियमों पर बल देती है।	वर्णन विधि समस्या समाधान पर बल देती है।

3.	विवरण विधि में तथ्यों को केवल तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाता है।	वर्णन विधि में तथ्यों को तार्किक और मनोवैज्ञानिक दोनों ही रूपों में प्रस्तुत किया जाता है।
4.	विवरण छोटा होता है।	वर्णन विस्तृत (व्यापक) होता है।
5.	विवरण प्रायः मौखिक होता है।	वर्णन मौखिक और लिखित दोनों ही होता है।
6.	विवरण विधि छोटी विधि है। विवरण के आगे की स्थिति वर्णन कहलाती है।	वर्णन विधि विवरण प्रविधि से बड़ी विधि है।
7.	विवरण की प्रकृति विश्लेषणात्मक होती है।	वर्णन की प्रकृति संश्लेषणात्मक होती है।
8.	विवरण में किसी विषय–वस्तु को कल्पना के माध्यम से सरलतापूर्वक समझाया जाता है। इसलिए इसे कथन विधि भी कहते हैं।	वर्णन में किसी विषय–वस्तु तथा घटना को शाब्दिक चित्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।
9.	विवरण अज्ञात से ज्ञात स्थिति की ओर अग्रसर होती है।	वर्णन ज्ञात से अज्ञात स्थिति की ओर अग्रसर होती है।
10.	विवरण विधि में शिक्षक के साथ–साथ विद्यार्थी भी सक्रिय रहता है।	वर्णन विधि में शिक्षक ज्यादा सक्रिय और प्रभावी रहता है।

प्रश्न 69. शिक्षार्थी की भाषायी क्षमताओं की अवधारणा समझाइए। (भोपाल 2022)

उत्तर–कक्षाओं में भाषा के चार मूल कौशलों में अपेक्षित क्षमताओं का विभिन्न स्तरों पर विभिन्न अभिकरणों द्वारा निर्धारित करने का प्रयास किया गया है, जो कि निम्नलिखित हैं–

(1. सुनने की क्षमता/योग्यता–भाषा की शिक्षा के अंतर्गत सुनने का अर्थ है– बोधपूर्वक श्रवण। केवल ध्वनि–संकेतों का श्रवण ही, सुनने की योग्यताओं के अंतर्गत प्रकाम्य नहीं है वरन् ध्वनि-संकेतों के श्रवण के साथ–साथ उनका अर्थग्रहण भी सुनने की योग्यता का अविभाज्य अंग है।

श्रवण क्षमताओं से अपेक्षाएँ

(1) शिक्षार्थी सुनने के शिष्टाचार का पालन कर सके–(i) मतभेद होते हुए भी धैर्यपूर्वक सुन सके। (ii) वक्ता के साथ सहानुभूति रख सके। (iii) बीच में अपने साथियों के साथ बातचीत न करे। (2) वह मनोयोगपूर्वक सुन सके। (3) बालक सुनते–सुनते समान ध्वनियों का पारस्परिक अंतर समझ सके। (4) वह भाषा के चित्रमय प्रयोगों के अनुसार अर्थग्रहण कर सके। (5) वाचक द्वारा अशुद्ध उच्चारित ध्वनियों की त्रुटियाँ पकड़ सकें, उनका शुद्ध रूप निर्धारित करते हुए उनके प्रभाव से बना सके। (6) वाद–विवाद में पक्ष एवं विपक्ष के विचारों को तटस्थ रूप से सुनकर उनकी तुलना कर सके तथा वह अपना मत बना सके। (7) भाषण या चर्चा के अंतर्गत मन में उठने वाली शंकाओं के संबंध में प्रश्न पूछने के लिए उन्हें ध्यान में रख सके।

(2) बोलने की क्षमताओं का विवरण–

अपेक्षित क्षमताएँ–(1) बालक शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करते हुए बोल सके। (2) अर्थानुकूल उचित आरोह–अवरोह सहित बोल सके। (3) उच्चारण और लहजे में स्थानीय बोलियों के प्रभाव से मुक्त रह सके। (4) विषय और अवसर के अनुकूल अपनी वाणी को नियंत्रित कर सके। (5) वाक्य में यथोचित बलाघात करते हुए बोल सके। (6) बोलने में समुचित गति, यति तथा प्रवाह का निर्वाह कर सके। (7) वाक्य को उचित अर्थान्वितियों में विभक्त करते हुए बोल सके।

(3) पठन संबंधी क्षमताएँ–(1) शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ पढ़ना यथा–श, स, छ, क्ष, च्छ, क्ष्य, द्ध, द्द, द्य, स्थ, स्न, स्प की शुद्धता का ध्यान रखना। इ, ई,उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ की मात्रायुक्त ध्वनियों की शुद्धता का भी ध्यान रखना। (2) विरामादि चिन्हों का समुचित ध्यान रखते हुए पढ़ना। (3) उचित बल और आरोह–अवरोह के साथ पढ़ना। (4) भावानुरूप एवं अवसर के अनुकूल पढ़ना। (5) श्रोताओं की संख्या एवं अवसर के अनुसार वाणी को नियंत्रित करना। (6) उच्चारण एवं सुर में स्थानीय बोलियों का प्रभाव न आने देना।

(4) बोध क्षमता (विषय एवं अर्थ)–(1) पठित सामग्री का केन्द्रीय भाव या विस्तार ग्रहण कर लेना। (2) अनावश्यक स्थलों को छोड़ते हुए, मुख्य सूचनाओं एवं भावों को ग्रहण करते हुए पढ़ते जाना। (3) पठित सामग्री में तथ्यों, भावों एवं विचारों का चयन कर सकना तथा सारांश बता सकना। (4) तथ्यों, भावों एवं विचारों की क्रमबद्धता पहचान सकना तथा उनमें कार्य–कारण संबंध बता सकना। (5) पठित सामग्री पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे सकना। (6) पठित सामग्री से निष्कर्ष निकाल सकना। (7) उपर्युक्त शीर्षक दे सकना। (8) भाषा एवं भाव संबंधी कठिनाइयाँ सामने रख सकना। (9) पठित अंशों में आए हुए तथ्यों या विचारों को और विस्तार से जानने के लिए संबंधित अथवा संदर्भ ग्रंथों का अनुशीलन करना तथा वांछित सामग्री ढूँढ लेना। (10) विविध साहित्यिक विधाओं–निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास, जीवनी, संस्मरण आदि के प्रमुख तथ्यों को पहचान सकना।

(5) समीक्षात्मक क्षमताएँ–(1) भावपूर्ण मार्मिक स्थलों को पहचान सकना। (2) रचना को प्रभावशाली बनाने वाले प्रयोगों तथा अभिव्यक्ति के सौंदर्य को पहचान सकना। (3) पाठ्य–वस्तु विचारों और मूल्यों को परख सकना। (4) प्रस्तुत पाठ्य–वस्तु की तुलना पूर्वपठित वस्तु से कर सकना। (5) लेखक द्वारा व्यक्त भावों या विचारों से अपनी सहमति अथवा असहमति प्रकट कर सकना। (6) भाषा की विशेषता को पहचान सकना, जैसे–(i) सरल या दुरुह, मुहावरेदार, तत्सम प्रधान, बोलचाल की। (ii) आंचलिक प्रयोग एवं विदेशी शब्द आदि। (7) तत्वों के आधार पर पठित–कहानी, नाटक, एकांकी की सामान्य समीक्षा कर सकना, विशेषतः– कथानक, चरित्र–चित्रण, संवाद की दृष्टि से। (8) कविता के सौंदर्य तत्वों का बोध और उनकी रसानुभूति। (9) पठित रचना पर अपना स्वतंत्र विचार प्रकट कर सकना।

(6) अध्ययन रूचि के विस्तार की क्षमता–(1) पाठ्य–पुस्तक में आए हुए कवियों एवं लेखकों की अन्य भाषाओं को पढ़ना, उन कवियों एवं लेखकों की जीवनी से भी परिचय प्राप्त करना। (2) पाठ्य–पुस्तक के अतिरिक्त अन्य प्रकार की साहित्यिक रचनाओं, जैसे–सामाजिक समस्या प्रधान कहानियों, विचारात्मक एवं प्रेरणात्मक निबंधों, वैज्ञानिक लेखों एवं निबंधों, जीवनियों एवं संस्मरणों को पढ़ना। (3) पाठ्य–पुस्तक में पढ़ी हुई सामग्री के संबंध में उत्पन्न जिज्ञासा की तृप्ति के लिए साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त अन्य विषयों की पुस्तकों को भी पढ़ना। (4) स्वाध्याय की प्रवृत्ति का विकास होना, यथा–समाचार–पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ, मनोरंजनात्मक साहित्य पढ़ना। (5) अच्छी सूक्तियों, कविताओं, गद्य खण्डों का चयन करना और उन्हें कण्ठस्थ करना।

(7) लिखने की क्षमता–(1) तीव्र गति से सुपाठ्य लिखावट का अभ्यास करना। (2) सभी शब्दों की शुद्ध वर्तनी का प्रयोग करना तथा विशेषतः अनुनासिक, अनुस्वार एवं एकायिक वर्तनी वाले शब्दों के प्रयोग की जानकारी होना। (3) सभी प्रकार के विराम चिन्हों का उचित प्रयोग। (4) विषय–वस्तु को विचार बिंदुओं के अनुसार अनुच्छेदों में विभाजित करके लेखबद्ध करने की योग्यता विकसित करना। (5) व्याकरण सम्मत शुद्ध लिख सकना, यथावश्यक शब्द चित्रों, दृष्टांतों और उद्धरणों के द्वारा सशक्त एवं प्रभावपूर्ण भाषा लिखने की क्षमता विकसित करना। (6) सभी प्रकार के पत्र–लेखन जैसे–व्यक्तिगत पत्र, आवेदन पत्र, अभिनंदन पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, विदाई पत्र, विरोध पत्र, व्यावसायिक पत्र इत्यादि सारांश लेखन, प्रसंग और संदर्भ बताते हुए पठित गद्यांश तथा पद्यांश की व्याख्या कर सकने की क्षमता प्राप्त करना। (7) साथ ही आँखों देखी घटना, स्थान, दृश्य एवं इमारत आदि के सजीव एवं संश्लिष्ट वर्णन की क्षमता का विकास होना एवं उनके विषय में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकना। (8) दिए गए शीर्षक अथवा रूपरेखा पर आधारित कहानी एवं एकांकी की रचना कर सकना (9) आत्मकथा को जीवनी लेखन एवं जीवनी को आत्मकथा की विधा में बदलना।

(8) चिंतन क्षमता–(1) सुनने, बोलने, पढ़ने, लिखने की योग्यता का चिंतन की योग्यता से सीधा संबंध है। शारीरिक अंगों के पीछे मस्तिष्क में होने वाली प्रक्रिया सभी में समान है। (2) बोलने या लिखने से पहले व्यक्ति चिंतन करता है जिसके परिणाम को वह वाणी या लेखनी में से किसी एक

के माध्यम द्वारा प्रकट कर सकता है। (3) किसी व्यक्ति की सक्रिय भाषा प्रक्रिया को हम एक तरफ चिंतन की योग्यताओं में और दूसरी तरफ बोलने और लिखने की कुशलताओं में बाँट सकते हैं।

प्रश्न 70. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ''पाठ्यक्रम में भाषा'' पर क्या कहा गया है ?

(भोपाल 2022)

उत्तर–शिक्षा नीति में सिफारिश की गई है कि जहाँ तक संभव हो शिक्षा के माध्यम के रूप में 5वीं कक्षा तक मातृभाषा/घर की भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जाए और 8वीं कक्षा व उसके बाद की शिक्षा में भी इसकी पूरी कोशिश की जाए।

बहुभाषावाद

(1) भारतीय भाषाओं एवं बहुभाषिकता पर जोर देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में त्रिभाषा सूत्र का भी उल्लेख है। लेकिन प्रस्तावित त्रिभाषा सूत्र एन.ई.पी.–1986 के त्रिभाषा सूत्र से थोड़ा भिन्न है। एन.ई.पी.–1986 के त्रिभाषा सूत्र में क्षेत्र विशेष में द्वितीय व तृतीय भाषा के चयन में बाध्यता थी, जबकि एन.ई.पी.–2020 में प्रथम मातृभाषा के अलावा द्वितीय व तृतीय भाषा के चयन में लचीलापन दृष्टिगोचर होता है। (2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषा शिक्षा और भाषा अधिगम को बहुभाषावाद के रूप में वर्णित करती है। (3) राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्याय चार के अनुसार विद्यालयों में छठी कक्षा से शुरू कर कम–से–कम दो वर्षों के लिए संस्कृत तथा शास्त्रीय भाषाओं का अध्ययन कराया जाएगा। (4) उच्च शिक्षा में भी संस्कृत पर बल दिया जाएगा। (5) संस्कृत के महत्व को समझते हुए अन्य समकालीन और प्रासंगिक विषयों जैसे कि गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, भाषा विज्ञान आदि से जोड़ा जाएगा। (6) राष्ट्रीय शिक्षा नीति की इस नीति के अनुरूप संस्कृत विश्वविद्यालय भी उच्च शिक्षा के बड़े बहु–विषयक संस्थान बनने की ओर अग्रसर होंगे।

भाषा की सत्ता

(1) व्यापार, रोजगार और देशव्यापी उपयोगिता की दृष्टि से हिंदी को त्रिभाषा सूत्र में उचित स्थान मिला है। (2) राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक अन्य समस्या विदेशी भाषाओं के अध्ययन से संबंधित है। (3) विद्यार्थियों में एक वैश्विक दृष्टि विकसित करने हेतु सेकण्डरी स्तर पर विदेशी भाषाओं का भी अध्ययन कराया जाएगा। (4) विदेशी भाषाओं का अध्ययन सेकण्डरी स्तर पर न होकर सीनियर सेकण्डरी या बैचलर स्तर पर कराया जाए, क्योंकि छोटी कक्षाओं में बच्चों को पता नहीं होता कि उसे कौन–सी विदेशी भाषा पढ़ना चाहिए तथा भविष्य में उसका क्या उपयोगा होगा।

अतः निष्कर्ष निकलता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषा शिक्षा और भाषा अधिगम को बहुभाषावाद और भाषा की सत्ता के रूप में वर्णित करती है।

मातृभाषा के बिना व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति अधूरी है। नए भारत के निर्माण और भारत भाव के जागरण के लिए मातृभाषा में चिंतन–वंदन की आवश्यकता है मातृभाषा वह है जिसे बालक सबसे पहले अपनी माँ से सीखता है और फिर परिजनों के साथ उसका विकास करता है। मातृभाषा का चिंतन–वंदन व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के आत्मबल की उन्नति करता है। यह दूसरे पर निर्भरता से मुक्ति और आत्मनिर्भरता की राह खोलने वाला है। मातृभाषा में व्यवहार और शिक्षा किसी के बहिष्कार से परे स्वयं के स्वीकार की दिशा में जाना है।

सकारात्मक यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा व्यवस्था में बहुभाषा और मातृभाषा पर केन्द्रित है। यह जहाँ एक ओर भारत केन्द्रित है, वहीं दूसरी ओर बालक केन्द्रित भी है। यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा/मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं और समझ लेते हैं। घर की भाषा आमतौर पर मातृभाषा या स्थानीय समुदायों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। जहाँ तक संभव हो कम–से–कम ग्रेड पाँच तक और उससे आगे भी शिक्षा का माध्यम घर की भाषा/मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं नए भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कुछ विश्वविद्यालयों ने मेडिकल एवं इंजीनियरिंग जैसे तकनीकी विषयों को भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़ाना

शुरू किया है। पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुरूप मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध करवाना एक बड़ी चुनौती होगी, किंतु संकल्प से उसमें भी सफलता मिलेगी। मातृभाषा में वह शक्ति है जिसके सहारे बालक नैसर्गिक रूप में ज्ञानात्मक और विकासात्मक अवस्थाओं तक आसानी से पहुँच सकता है। विभिन्न देशों में उनकी शिक्षा व्यवस्था, उनका व्यवहार उनकी अपनी भाषाओं में ही होता है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी यह प्रावधान किया गया है कि हम अपनी मातृभाषाओं के व्यवहार में सम्मान महसूस करें। देशी–विदेशी सभी भाषाओं में ज्ञान का भंडार है, उन्हें सीखने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन पहला सम्मान अपनी मातृभूमि और मातृभाषा के लिए आवश्यक है। मातृभाषा में बालक की सहज प्रकृति का निर्माण करने की क्षमता है, यह समरसता का सेतु है।

प्रश्न 71. शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा का क्या महत्व है ? **(उज्जैन 2022)**

उत्तर–शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा की भूमिका सर्वविदित है। मनुष्य के कृत्रिम आविष्कारों में भाषा निश्चित ही सर्वोत्कृष्ट है। वह प्रतीक होने पर भी कितनी समर्थ और शक्तिशाली व्यवस्था है इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो भाषा से अछूता हो, जागरण हो या स्वप्न, हम भाषा की दुनिया में जीते हैं। हमारी भावनाएँ, हास–परिहास, पीड़ा की अभिव्यक्तियों और संवाद को संभव बनाते हुए भाषा सामाजिक जीवन को संयोजित करती है। उसी के माध्यम से हम दुनिया देखते और रचते भी हैं। भाषा की बेजोड़ सर्जनात्मक शक्ति साहित्य, कला और संस्कृति के अन्याय पक्षों में प्रतिबिम्बित होती है। इस तरह भाषा हमारे अस्तित्व की सीमाएँ तय करती चलती हैं।

विभिन्न प्रकार के ज्ञान–विज्ञान के संकलन, संचार और प्रसार के लिए भाषा अपरिहार्य हो चुकी है। भाषा के आलोक से ही हम काल का भी अतिक्रमण कर पाते हैं और संस्कृति का प्रवाह बना रहता है इसलिए यह अतिश्योक्ति नहीं है की भाषा का वैभव ही असली वैभव और आभूषण है– वाग्भूषणं भूषणम्। वाक् की शक्ति को भारत में बहुत पहले पहचान लिया गया था और वेद के वाक्सूक्त में उसका बड़ा विस्तृत विवेचन मिलता है। परा, पश्यन्ति, मध्यमा और वैखरी आदि वाक् प्रस्फुटन के विभिन्न स्तरों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। शब्द की शक्ति को बड़ी बारीकी से समझा गया है और भाषा को लक्ष्य कर जो चिंतन परम्परा शुरू हुई वह पाणिनी द्वारा व्यवस्थित हुई और आगे चलकर उसका बड़ा विस्तार हुआ। शिक्षा, व्याकरण, काव्यशास्त्र, नाट्यशास्त्र तथा तंत्र आदि भाषा के प्रति व्यापक, गहन और प्रामाणिक अभिरूचि मिलती है।

शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व

शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा का महत्व निम्नलिखित हैं–

(1) भाषा की प्रभावपूर्ण सीखने के लिए–भाषा को विषय के रूप में सीखा जाता है। उसका गहरा ज्ञान व कुशलतापूर्वक प्रयोग दूसरे विषयों के माध्यम से सीखा जाता है। सभी विषयों की अलग–अलग शब्दावली समतुल्य होते हैं, उनका ज्ञान भाषा को भी समृद्ध करता है व प्रभावशाली तरीके से भाषा सीखी जाती है।

(2) भाषा व विषयों का संबंधित होना–भाषा के माध्यम से ही सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। सभी प्रकार की जानकारी का आधार भाषा है। सभी विषयों के द्वारा भाषा की व्यावहारिक कुशलता बढ़ती है। अतः भाषा द्वारा विषयों के सम्प्रत्यय तथा विषयों द्वारा भाषा पर कुशलता का निर्माण करने की आवश्यकता है।

(3) सम्प्रेषण में अभिव्यक्ति के लिए–विभिन्न विषयों के द्वारा भाषा का ज्ञान अलग–अलग संदर्भ में प्राप्त होता है। सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान आदि के ज्ञान से अलग–अलग परिस्थितियों में भाषा के प्रयोग की जानकारी मिलती है तथा सम्प्रेषण में हाव–भाव के साथ वास्तविक रूप से अभिव्यक्त करने की कुशलता प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या में भाषा उपागम का प्रयोग करना चाहिए।

(4) शैक्षिक ज्ञान में वृद्धि के लिए—पाठ्यचर्या से भाषा उपागम द्वारा भाषा ज्ञान में कुशलता बढ़ती है जिसके द्वारा विद्यार्थी शैक्षिक ज्ञान को बढ़ा सकते हैं। विद्यार्थी द्वारा शिक्षा प्राप्ति में स्वयं का प्रदर्शन बढ़ाने के लिए व शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम से परे भाषा उपागम एक सहायक के रूप में कार्य करता है।

(5) सीखने के अवसर बढ़ाने के लिए—भाषा का ज्ञान विषयों को समझने में मदद करता है तथा विषयों के माध्यम से भाषा पर पकड़ बनती है। भाषा का व्यावहारिक व प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त होता है।

(6) भाषा का कुशलतापूर्वक उपयोग करना—भाषा–कक्षा व विषय–कक्षा दोनों में भाषा संबंधी ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे भाषा पर पकड़ मजबूत हो जाती है। विषय की कक्षाओं में भाषा का प्रयोग होता है तथा भाषा का अभ्यास भी होता रहता है। विद्यार्थी दोनों कक्षाओं के मदद से भाषा पर कुशलता प्राप्त करके प्रभावशाली प्रयोग कर सकते हैं।

(7) ज्ञान में वृद्धि—जब एक साथ दो चीजों का ज्ञान प्राप्त होता है तो ज्ञान में बढ़ोत्तरी साथ-साथ हो जाती है। भाषा कक्षा में सैद्धांतिक ज्ञान व विषय कक्षा में भाषा का प्रयोग करने का ज्ञान मिलता है तथा भाषा के माध्यम से आगे किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर खोजना, बाँटना आदि किया जा सकता है। इस प्रकार भाषा व विषय–वस्तु पर ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है। अच्छी समझ का विकास होता है, जिस आधार पर नया ज्ञान प्राप्त करने का रास्ता खुल जाता है।

प्रश्न 72. पठन हेतु व्यूह नीतियाँ क्या है ? स्कीमिंग और स्कैनिंग से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। **(जबलपुर 2022)**

उत्तर—पठन कौशल, भाषा का महत्वपूर्ण कौशल है। इसमें लिखित अक्षरों को पहचान कर उनका उच्चारण किया जाता है। पठन एक प्रक्रिया है लेकिन वाक्यों को पढ़ लेना ही पठन कौशल नहीं है बल्कि उन वाक्यों में छिपे अर्थ को ग्रहण करना भी इसी कौशल का हिस्सा है। विद्यार्थी पठन करके अर्थ समझते हैं तथा पढ़ी गई सामग्री को मस्तिष्क में याद रख पाते हैं। जितनी सामग्री पढ़ी जाती है वह पूरी–की–पूरी याद नहीं रहती परंतु उसकी मुख्य बातें याद रह जाती हैं। पठन की कई विधियाँ हैं–सस्वर विधि, मौन विधि, गहन विधि आदि। उसी प्रकार पढ़कर अर्थ समझना, सूचनाएँ निकालना, मुख्य–मुख्य बिंदुओं से मुख्य विचार निकालना भी पठन के माध्यम होते हैं, जो निम्नलिखित प्रकार से हैं—1. स्कीमिंग, 2. स्कैनिंग (अवलोकन)।

1. स्कीमिंग—स्कीमिंग पठन, पठन के सबसे प्रारंभिक प्रकारों में से एक है। इसका उद्देश्य आप जो पठन सामग्री अध्ययन कर रहे हैं, उसके उद्देश्यों से यथाशीघ्र परिचित होता है। दूसरे शब्दों में स्कीमिंग एक त्वरित (शीघ्र) पठन है, जिससे हमें निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त होती हैं– (1) किसी गद्यांश (passage) का सामान्य अर्थ। (2) गद्यांश को किस प्रकार से संगठित किया गया है तथा पाठ की संरचना किस प्रकार की है। (3) लेखक के मुख्य विचार (इरादे) की जानकारी प्राप्त होती हैं।

I. स्कीमिंग पठन के उद्देश्य—स्कीमिंग पठन के निम्नलिखित उद्देश्य है—(1) पाठ के मुख्य तत्वों को खोजना। (2) पाठ को त्वरित गति से पढ़कर समझना। (3) पठन सामग्री के उद्देश्यों से यथाशीघ्र परिचत होना। (4) विषय–वस्तु/तथ्य/पाठ आदि का पुनर्विलोकन करना।

II. स्कीमिंग पठन के प्रयोग—स्कीमिंग पठन को निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है– (1) स्कीमिंग का प्रयोग विद्यार्थियों में आत्मविश्वास को मजबूत करने के लिए किया जाता है। (2) सम्पूर्ण पाठ के प्रत्येक शब्द को बिना पढ़े ही उसके अर्थ को समझना। (3) स्कीमिंग का प्रयोग गठन के SQ3R (Survey, Question, Read, Recite, Review) विधि के एक भाग के रूप में किया जाता है, विशेषकर उस समय जब विद्यार्थियों (पाठकों) को तीव्रगति से पठन करना होता है। (4) स्कीमिंग का प्रयोग विषय–वस्तु/तथ्य/पाठ आदि के पुनर्विलोकन (Review) के लिए किया जाता है। (5) स्कीमिंग का प्रयोग उस समय किया जाता है जब पाठक (विद्यार्थी) के मस्तिष्क में अनेक

प्रकार के सामान्य प्रश्न होते हैं। (6) स्कीमिंग का प्रयोग विद्यार्थी किसी लेखक या अन्य के दृष्टिकोण को समझने के लिए करता है। (7) स्कीमिंग एक प्रकार का कौशल है जो विद्यार्थियों में अकादमिक अध्ययन के दौरान निरंतर योजना बनाकर पठन से विकसित किया जाता है। (8) स्कीमिंग का प्रयोग विद्यार्थी परीक्षा के दौरान पाठ को दोहराने के लिए करते हैं।

स्कीमिंग स्कैनिंग की तुलना में एक अधिक जटिल कार्य है क्योंकि इसमें पाठक को लेखक द्वारा दी गई जानकारियों को संगठित कर समझना होता है जो वास्तव में उसमें (सामग्री) दिखाई नहीं देती है।

2. स्कैनिंग (अवलोकन) पठन—स्कैनिंग एक प्रकार का कौशल है जिसकी आवश्यकता हमें उस समय होती है जब हमें किसी विषय–वस्तु या तथ्य की विशेष जानकारी तत्काल प्राप्त करनी होती है। जब हम किसी पाठ का पठन कर रहे होते हैं तो हमें अपनी आँखों को तीव्र गति से पाठ के शीर्ष और अंत तक बहुत तीव्र गति से गतिमान करना चाहिए जिससे हमें जो विशेष सूचना चाहिए वह प्राप्त हो सके। सामान्यतः स्कैनिंग एक तकनीक है जो हमें एक ज्ञात प्रश्न या समस्या का हल प्राप्त करने में सहायता पहुँचाती है। स्कैनिंग के माध्यम से विद्यार्थियों को निम्नलिखित तथ्यों की सूचना (जानकारी) प्राप्त होती है—(i) स्कैनिंग एक तीव्र पठन है जो हमें किसी विशिष्ट तथ्य की जानकारी प्राप्त करने के लिए उस पर केन्द्रित रखता है। (ii) स्कैनिंग में आँखों की गति का विशेष महत्व होता है। यह पाठक की समस्या या प्रश्न का समाधान प्राप्त करने की एक विधि है। (iii) स्कैनिंग का प्रयोग किसी विशिष्ट जानकारी (सूचना) को प्राप्त करने के लिए किया जाता है, जैसे–नाम, दिनांक, सूत्र या उपवाक्य आदि।

I. स्कैनिंग (अवलोकन) का प्रयोग—स्कैनिंग का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है—(i) स्कैनिंग का प्रयोग प्रायः तकनीकी, वैज्ञानिक या व्यावसायिक सामग्री की विशिष्ट जानकारी का पता लगाने के लिए किया जाता है। (ii) स्कैनिंग दूसरी भाषा के शिक्षार्थियों के लिए एक बहुत मूल्यवान कौशल है क्योंकि वे प्रायः किसी पाठ का विस्तृत पठन नहीं करते हैं। (iii) दैनिक जीवन में भी स्कैनिंग का प्रयोग किया जाता है, जैसे–पठन का कार्यक्रम का निर्धारण तथा एक उद्देश्य की प्रांसगिकता आदि। (iv) विशिष्ट तथ्यों–नाम, दिनांक, सूत्र, उपवाक्य आदि की जानकारी प्राप्त करने में प्रयोग किया जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि स्कैनिंग पठन की एक सक्रिय विधि है। इसके माध्यम से विद्यार्थी वाक्य, वाक्यांश आदि द्वारा विशिष्ट जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। विद्यार्थियों को परीक्षा के दौरान स्कैनिंग से बहुत ही लाभ होता है। वे परीक्षा संबंधी विभिन्न तथ्यों को बिंदुवार तैयार कर उसका पठन करते हैं। स्कैनिंग में विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का अपना विशेष महत्व होता है क्योंकि ये विद्यार्थियों को किसी समस्या या प्रश्न का हल प्राप्त करने के समय में सहायता पहुँचाता है। स्कीमिंग एवं स्कैनिंग का प्रयोग अधिकांश विद्वान एक साथ करते हैं तो कुछ इन्हें एक कौशल के रूप में मान्यता देते हैं। स्कैनिंग का विद्यार्थी जीवन में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन में अपना विशिष्ट स्थान होता है।

प्रश्न 73. नाटक के तत्वों को संक्षिप्त में समझाइए। **(जबलपुर 2022)**

उत्तर–नाटक या नाटकीय घटनाएँ—विद्यार्थियों को भाषा का ज्ञान प्रदान करने के लिए कुछ नाटकीय घटनाओं को भी मूल पाठों तथा अध्यायों में जोड़ना चाहिए। नाटकीय घटनाएँ जहाँ बच्चों में उत्सुकता उत्पन्न करती है वहीं वातावरण का सजीव चित्रण भी प्रस्तुत करती है। नाटकीय घटनाएँ बहुत ही गंभीर विषय को भी हल्के–फुल्के रूप में विद्यार्थियों को समझा देती है। सामाजिक समस्याएँ हो या राजनीतिक स्थितियाँ हो अथवा घरेलू समस्याएँ, नाटकीय घटनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ देती हैं। ऐसी नाटकीय घटनाएँ जिनके विषय विद्यार्थी के स्तर के अनुसार हो उनका मूल अध्यायों में समावेश जहाँ बच्चों को साहित्य से परिचित कराता है, वहीं सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों, भेदभाव के विषय में भी एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है।

नाटकीय घटनाओं के माध्यम से शिक्षा दो प्रयोजनों को ध्यान में रखकर दी जाती है– (1) ऐसा उपदेश देना जिससे दूसरों का हित हो तथा (2) दर्शकों का मनोविनोद हो।

इसके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान भी अर्जित करता है तथा नीरस भाषण की अपेक्षा इसे अधिक पसंद करता है। भिन्न–भिन्न रुचि वाले लोगों को समान रूप से संतुष्ट करने का साधन नाटक अथवा नाटकीय घटनाएँ हैं। ये वातावरण को अत्यंत सजीव कर देती है और बालक उस वातावरण में स्वयं को रखकर सोचने के लिए बाध्य हो जाता है। अब नाटक केवल मनोविनोद की वस्तु ही नहीं रहा, वरन् इसका प्रयोग शिक्षा में भी होने लगा है।

नाटकीय तत्व–नाट्य शास्त्रानुसार नाटक के निम्नलिखित तत्व होते हैं–

(1) कथावस्तु–नाटकीय कथावस्तु अर्थात् संघर्ष के विकास के आधार पर भारतीय आचार्यों ने पाँच भागों में बाँटा है–

(i) प्रारंभ–नायक तथा नायिका के मन में किसी प्रकार का फल प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न होती है और उसी अभिलाषा से नाटक का आरंभ होता है।

(ii) प्रयत्न–फल की प्राप्ति के लिए जो क्रिया व्यापार होता है, वह प्रयत्न कहलाता है।

(iii) प्राप्त्याशा–संघर्षों तथा विघ्नों पर विजय लाभ करते हुए जब उस फल को प्राप्त होने की आशा होने लगती है तब उसे प्राप्त्याशा कहा जाता है।

(iv) नियताप्ति–जब विघ्नों का नाश हो जाता है और फल की प्राप्ति निश्चित हो जाती है तब नियताप्ति कहलाती है।

(v) फलागम–अंत में फल प्राप्ति पर फलागम कहलाता है।

(2) पात्र–जहाँ कथावस्तु के प्रबंध की दृष्टि से नाटक और उपन्यास में वैधानिक भेद है। वहाँ चरित्र के प्रदर्शन की दृष्टि से इन दोनों में और भी बड़ा भेद है।

पाश्चात्य नाटकों के अनुसार, नायक–परिस्थितियों के भँवर में पड़ा साधारण प्राणी होता है, लेकिन भारतीय परम्परा के अनुसार नायक को चार प्रकार के वर्गों में रखा गया है, जिसके अनुसार यथायोग्य नाटक की रचना की जाती है–

(1) धीरोदत्त नायक, (2) धीर ललित नायक, (3) धीर प्रशांता नायक, (4) धोरोद्धत नायक।

इनके चरित्र–चित्रण में नाटककार को संकोच से काम लेना पड़ता है और उनके चरित्र पर प्रकाश डालने के लिए यह निम्न प्रकार का चरित्र–चित्रण करता है–(1) मति अथवा आशय द्वारा, (2) कार्य व्यापार द्वारा, (3) आकृति एवं वेशभूषा द्वारा, (4) कथनोपकथन द्वारा अथवा वाणी द्वारा, (5) आत्मभाषण तथा विचारों द्वारा।

(3) कथनोपकथन–यदि कथा का वर्णन नाटक या नाटकीय घटनाओं का ढाँचा है तो कथनोपकथन को हम ढाँचे को अनुप्राणित करने वाला रूधिर अथवा प्राणी कह सकते हैं। सामान्य वार्तालाप और नाटकीय कथनोपकथन में मौलिक भेद हैं। जहाँ सामान्य वार्तालाप उखड़ा–पुखड़ा, निरुद्देश्य, विषय से विषयांतर भटकने वाला होता है, वहाँ नाटकीय कथनोपकथन पर नाटक के उस दृश्य–विशेष का नियंत्रण होता है। वार्तालाप के समान कथनोपकथन की दो वृत्तियाँ होती है–

(1) उपयोगिनी तथा (2) अनुपयोगिनी।

उपयोगी कथनोपकथन वह है, जो कथावस्तु को गतिमान बनाता है। विद्यार्थियों के विचार, मनोवेग तथा उनके मार्मिक स्तरों को विवृत्त करता है और विज्ञान का वर्णन करता है। दूसरी ओर अनुपयोगी कथनोपकथन अपनी कवीय उदात्तता तथा काल्पनिक विशदता आदि वृत्तियों से हमारी रुचि की अभिवृद्धि करता है।

(4) देशकाल विधान–प्राचीन यूनानी आचार्यों ने यह सिद्धांत स्थिर किया था कि आदि से अंत तक विशेष अभिनय किसी एक ही कृत्य के संबंध में होना चाहिए, जिसको संकलन क्रय के नाम से पुकारा जाता है, परंतु वर्तमान समय में यह संभव नहीं है। नाटककार को अपनी रचना में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कथा का निर्वाह आदि से अंत तक उसकी एक ही कथा और एक ही मुख्य सिद्धांत के आधार पर हो। पात्रों के नाम, कार्य, कथावस्तु तथा नाटक का उद्देश्य भी देशकाल के अनुसार होना वांछनीय है।

(5) उद्देश्य—भारतीय नाटकों का उद्देश्य साधारणतया परम्परागत धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष था। ये अधिकांशतः सुखांत ही होते थे।

प्रश्न 74. वाचन शिक्षण की कौन–कौन सी विधियाँ हैं ? किन्हीं चार पर प्रकाश डालिए। (छतरपुर 2022)

उत्तर—शिक्षा प्राप्त करने के लिए वाचन का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। वाचन की बोधगम्यता बढ़ाने के लिए वाचन को समझना आवश्यक है। भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चरित होता है। इसका दृष्टिपरक प्रतीक लिपिबद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपिबद्ध रूप का प्रतिनिधि है। जब कोई बालक पठन या वाचन करता है तो उस समय वह एक पुस्तक या पत्रिका या साइन बोर्ड या कॉपी को देख रहा होता है। प्रायः उसके सामने पठनीय वस्तु के रूप में सफेद कागज पर बने हुए कुछ चित्र होते हैं। ये चिन्ह प्रायः गहरे रंग की स्याही में बने होते हैं। वाचन के समय बस यही निशान ही तो होते हैं किंतु इन्हें पढ़ते ही वाचक का चेहरा लाल हो सकता है, खिल सकता है या पीला पड़ सकता है। यह प्रतिक्रिया उन चिन्हों को दिए गए अर्थ पर निर्भर है। ये अर्थ बालक के मस्तिष्क में रहते हैं, न कि चिन्हों में। अतः यह कहा जा सकता है कि ''वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि और अर्थ साथ–साथ चलते हैं।''

कैथरीन ओकानर के शब्दों में ''वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य, श्रव्य एवं गतिवाही सर्किटों का मस्तिष्क के अधिगम केन्द्र के संबंध निहित है।''

वाचन शिक्षण की विधियाँ—शिक्षा जगत में वाचन की शिक्षा के लिए अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से मुख्य निम्नलिखित हैं—

(1) देखो और कहो विधि—इस विधि में एक पूरा शब्द श्यामपट्ट पर लिख दिया जाता है और अक्षरों की पहचान के स्थान पर शब्द के स्वरूप की पहचान कराई जाती है। इस प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि अव्यवहृत शब्दों के रूप और प्रयोग में धोखा हो जाता है। एक तो शब्दों की संख्या अपरिमित होती है– कहाँ तक उसका परिचय कराया जाए। दूसरी बात यह है कि थोड़ी सी असावधानी से 'मर्म' का 'धर्म' अथवा 'धर्म' का 'घर्म' पढ़ा जा सकता है। अतः यह विधि त्याज्य है।

(2) अक्षर–बोध विधि—इसमें वर्णमाला के अक्षरों के क्रम उच्चारण के स्थानानुसार सज्जित है। जब वर्णन पहचान लिया जाता है तो बालक को शब्द दे दिया जाता है, जैसे–क, म, ल अक्षरों से मिलकर 'कमल' शब्द। इस विधि में इस प्रकार ऐसा अभ्यास कराया जाए कि विद्यार्थी की दृष्टि–परिधि सध जाए। अक्षर का स्वरूप उसे स्थिर न करना पड़े, वरन् देखते ही शब्द का स्वरूप उसकी दृष्टि पकड़ ले।

(3) ध्वनि–साम्य विधि—इसमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं, जैसे–श्रम, क्रम, भ्रम आदि। इनमें जानबूझकर बालको को ऐसे शब्द सीखने पड़ते हैं, जिसको वह अपने व्यवहार में नहीं पाते, जैसे–चर्म, कर्म, गर्म, वर्म तथा मर्म आदि। इनमें कुछ ऐसे शब्द है, जिनका बालक तद्भव रूप में प्रयोग करते हैं, अतः यह विधि भी असंगत तथा त्याज्य है।

(4) अनुध्वनि विधि—यह भी 'देखो और कहो' विधि का रूपांतर मात्र ही है। अंतर केवल इतना है कि इसमें एक समान उच्चरित होने वाले शब्द एक साथ ही सिखाये जाते हैं। इसमें शिक्षक एक शब्द कहता है और विद्यार्थी उस शब्द की ध्वनि का अनुकरण करता है। इसका प्रयोग अधिकतर उन भाषाओं में होता है, जिनमें एक अक्षर की अनेक ध्वनियाँ हो अथवा लिखा कुछ जाए, पढ़ा कुछ जाए, जैसे–अंग्रेजी भाषा में Put, Cut, But में U अक्षर एक ध्वनि न होकर 3, क् + अ, व + अ की ध्वनि से उच्चरित होता है, परंतु नागरी में यह प्रश्न नहीं उठता।

(5) भाषा–शिक्षण की यंत्र विधि—यह एक नवीन विधि है। इसमें ग्रामोफोन के एक तवे में एक पाठ भरा रहता है, जिसे सुनकर बालक उसी का अनुकरण करके पढ़ाने का अभ्यास करते हैं। इससे उच्चारण में एकरूपता और पढ़ने के क्रम में समता आ जाती है लेकिन अभी तक नागरी शिक्षा के लिंग्वाफोन के तवे नहीं बन पाए हैं और बनने पर सभी स्थानों पर प्राप्त हो सकेंगे, इसमें भी संदेह है। साथ ही यह अधिक व्यय साध्य और दुर्लभ है, अतः त्याज्य है।

(6) समवेत पाठ विधि—इस विधि से छोटे पद्य तथा गीत सिखाने में सुविधा होती है। अध्यापक

पाठ के इस अंश को स्वयं भावपूर्ण रीति से पढ़ता है और कक्षा के सब विद्यार्थी एक साथ उसकी आवृति करते है। ऐसा करने में स्वर सधता है और वाचन संस्कार दृढ़ हो जाता है। अतः यह विधि कुछ सीमा तक लाभकारी है।

(7) संगति विधि—इस विधि का प्रयोग मॉण्टेसरी ने किया था। इसमें बहुत–सी वस्तुओं, चित्रों, खिलौनों आदि के आगे उनके नाम कार्डों पर लिखकर रखे जाते हैं। वे कार्ड फेंक दिए जाते हैं और बालकों से कहा जाता है कि जिस वस्तु का जो नाम है, वह नाम वाला कार्ड उसी वस्तु के आगे रख दिया जाए। खिलवाड़ मात्र होने के कारण इस विधि को शिक्षा में सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रश्न 75. एक बालक भाषाई कौशल कैसे सीखता है ? (ग्वालियर 2022)

उत्तर—भाषा एक प्रकार का कौशल है यह अन्य विषयों जैसे–अर्थशास्त्र, इतिहास, जीव विज्ञान आदि की भाँति केवल संज्ञानात्मक स्तर पर ही विकसित नहीं की जाती वरन् भाषा कौशल का उद्देश्य कक्षा–शिक्षण की नियंत्रित परिस्थितियों में भाषा की उत्पत्ति, प्राकृतिक तत्वों तथा इसके अनुप्रयोग का ज्ञान प्रदान करना भी है। अतः भाषा को सीखना मात्र एक सैद्धांतिक पक्ष न होकर सीखने वालों को भाषा से परिचित कराना है। भाषा एक कौशल केन्द्रित अधिगम है। मूलतः भाषा उच्च संज्ञानात्मक स्तर अर्थात् अनुप्रयोग के स्तर पर कार्य करती है। भाषा शिक्षण का एक विशेष स्थान है।

भारतीय परिवेश में भाषा कौशल को विकसित करने की दिशा में निम्नलिखित दो दृष्टिकोणों को रखने की आवश्यकता हैं–

पहला–प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय भाषा के रूप में किसीं भाषा का अध्ययन–अध्यापन तथा

दूसरा–प्रारंभिक कक्षाओं से उच्च स्तरीय कक्षाओं तक अध्यापन।

भाषा कौशल को विकसित करने हेतु भाषा की शिक्षा देना अनिवार्य है। भाषा शिक्षण के निम्न चार स्तम्भ होते हैं–(1) सुनने की क्षमता का विकास करना, (2) बोलने की क्षमता का विकास करना, (3) पढ़ने की क्षमता का विकास करना एवं (4) लिखने की क्षमता का विकास करना।

1. श्रवण कौशल का अर्थ है किसी को बोलते सुनना तथा सुनकर समझ लेना।
2. भाषण कौशल का अर्थ है, स्वर व्यंजन के उच्चारण, संगम, अनुतान तथा व्याकरणिक नियमों आदि की दृष्टि से ठीक बोलना।
3. लेखन कौशल का अर्थ है वर्तनी तथा व्याकरण आदि की दृष्टि से शुद्ध रूप में तथा अर्थ की दृष्टि से तर्कसंगत रूप में वाक्य लिखना। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि भाषा–शिक्षण का तात्पर्य किसी भाषा के बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने की शिक्षा देना है तथा दूसरे शब्दों में भाषण, श्रवण, पठन एवं लेखन का विकास करना भाषा–शिक्षण में सम्मिलित है।

किसी भाषा का सर्वांगीण विकास करते समय उपर्युक्त समस्त बाते आती हैं किंतु शिक्षक भाषा शिक्षण, भाषा शिक्षार्थी की आवश्यकतानुरूप कभी तो उपरोक्त चारों कौशलों श्रवण, भाषण, पठन तथा लेखन आदि की शिक्षा देता है और कभी इनमें से दो या तीन का भी चुनाव कर लेता है। जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि भाषा एक प्रकार का अधिगम कौशल है अतः इसे विकसित ही करना पड़ता है, यह जन्मजात नहीं होता है। अतः यहाँ पर भाषा कौशल के प्रकारों की व्याख्या करना अनिवार्य है।

भाषा कौशल के प्रकार—भाषा कौशल को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(1) प्रधान कौशल—इस कोटि में भाषा के श्रवण एवं उच्चारण संबंधी कौशल आते हैं। निरक्षर लोग भी इन कौशलों में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक भाषा–शिक्षण के सिद्धांतों के अनुसार इन्हीं कौशलों को प्रधानता प्रदान की गई है। इन कौशलों के अंतर्गत निम्न दो कौशल आते हैं–

(i) सुनना एवं (ii) बोलना।

जो व्यक्ति सुनने एवं बोलने संबंधी दोनों कौशलों में दक्षता प्राप्त कर लेता है, वह फिर आसानी से तथा अपेक्षाकृत कम समय में ही शेष दो गौण कौशलों में भी दक्षता प्राप्त कर लेता है।

(2) गौण कौशल—इस कोटि में भाषा को पढ़ने व लिखने संबंधी कौशलों का विकास किया जाता है। प्रधान कौशलों के विकास के बाद ही बालक गौण कौशलों को सीख पाता है। आधुनिक

शिक्षण पद्धति में भी सीखने/सिखाने पर बल दिया जाता है। अतः गौण कौशलों के अंतर्गत निम्न दो कौशल आते हैं—(i) पढ़ना या वाचन एवं (ii) लिखना या लेखन।

प्रश्न 76. समस्या समाधान का अर्थ स्पष्ट कीजिए और बालकों के लिए इसके महत्व का मूल्यांकन कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर—समस्या समाधान विधि—विधि के जनक प्राचीन काल के अनुसार, **सुकरात** व **सेंट थॉमस** तथा आधुनिक समय के अनुसार, **जॉन डी वी** हैं। समस्या उस समय प्रकट होती है जब लक्ष्य की प्राप्ति में किसी प्रकार की बाधा आती है। यदि लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग सीधा और आसान हो तो समस्या आती ही नहीं है।

समस्या समाधान विधि मनोविज्ञान के कोहलर अंतर्दृष्टि सिद्धांत पर आधारित है।

समस्या समाधान का अर्थ—विद्यार्थियों को शिक्षण काल में अनेक कठिनाईयों या समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिनका समाधान उसे स्वयं करना पड़ता है। समस्या समाधान लक्ष्य को प्राप्त करने और समस्याओं का समाधान या हल करने की विधि भी कहते हैं।

समस्या समाधान विधि परिभाषा—

वुडवर्थ—"समस्या समाधान उस समय प्रकट होता है जब उद्देश्य की प्राप्ति में किसी प्रकार की बाधा पड़ती है। यदि लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग सीधा और आसान हो तो समस्या आती ही नहीं।"

स्किनर—"समस्या समाधान एक ऐसी रूपरेखा जिसमें सर्जनात्मक चिंतन तथा तर्क दोनों होते हैं।"

समस्या समाधान विधि का बालकों व विद्यार्थियों के लिए महत्व—समस्या समाधान विधि मनोवैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक विधि है। समस्या विद्यार्थी के पाठ्यवस्तु से संबंधित होती है। इसमें विद्यार्थी को करके सीखने के अवसर उपलब्ध होते हैं।

इस विधि में विद्यार्थी के सामने एक समस्या रखी जाती है और विद्यार्थी उसका हल ढूँढने के लिए प्रयास करता है। शिक्षक हल ढूँढने के लिए प्रेरित करते हैं।

समस्या समाधान विधि के सोपान—इस विधि का अनुपालन करते समय सर्वप्रथम समस्या की पहचान की जाती है। समस्या को हल करने के लिए समस्या समाधान विधि के चरण को पालन करते हुए हम अपनी समस्या का निराकरण अपने लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

(1) समस्या की पहचान—(a) समस्या का स्पष्ट विवरण अथवा समस्या कथन। (b) समस्या का स्पष्टीकरण विद्यार्थियों द्वारा आपस में चर्चा। (c) समस्या परिसीमन समस्या का क्षेत्र निर्धारित करना।

(2) परिकल्पना का निर्माण—जाँच एवं परीक्षण के लिए परिकल्पना का निर्माण।

(3) प्रयोग द्वारा परीक्षण—परिकल्पनाओं का परीक्षण करना।

(4) विश्लेषण।

(5) समस्या के निष्कर्ष पर पहुँचना।

समस्या समाधान विधि के गुण—(1) इस विधि से विद्यार्थी सहयोग करके सीखने के लिये प्रेरित होते हैं। (2) विद्यार्थी समस्या को हल करने की प्रक्रिया में शामिल होकर उसे हल करना सीखते हैं। (3) विद्यार्थी परिकल्पना निर्माण करना सीखते हैं और इस प्रक्रिया से उसकी कल्पनाशीलता में वृद्धि होती है। (4) विद्यार्थी जीवन में आने वाली समस्याओं को हल करना सीखते हैं। (5) यह विधि विद्यार्थी में वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विकास में सहायक है।

समस्या समाधान विधि के दोष—(1) इस विधि के प्रयोग में समय ज्यादा लगता है। (2) पाठ्य-पुस्तक का अभाव होता है। (3) इस विधि में त्रुटियाँ प्रभावहीन के कारण होती है। (4) गति धीमी रहती है। (5) इस विधि से हर विषय-वस्तु का शिक्षण नहीं किया जा सकता है। (6) विद्यार्थी समस्या उचित रूप में चुनी हुई न हो तो वह असफल रहती है। (7) चूँकि इस विधि में प्रायोगिक कार्य भी करना होता है। अतः शिक्षक का प्रायोगिक कार्य में दक्ष होना आवश्यक होता है।

प्रश्न 77. परिचर्चा प्रविधि की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए। कक्षा में आज परिचर्चा किस प्रकार आयोजित करेंगे ? **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर—परिचर्चा एक परिसंवाद का रूप होती है। परिचर्चा के अंतर्गत पहले से दिए गए विषय पर अपने विचार प्रकट करना और दूसरे व्यक्तियों द्वारा दिए गए विचारों को सुनने का अवसर प्राप्त

होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विचार–विनिमय करना ही चर्चा होती है, परिचर्चा के माध्यम से विद्यार्थियों का संकोच एवं झिझक दूर होती है। विद्यार्थी स्वतंत्र होकर अपनी बात कह सकते हैं, परिचर्चा से जहाँ एक ओर विद्यार्थियों के ज्ञान में वृद्धि होती है वहीं दूसरी ओर उसकी मौखिक वाकपटुता का भी विकास होता है इसलिए कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य करते समय शिक्षक को पढ़ायी गयी पाठ्य–वस्तु, समस्या तथा स्थानीय घटनाओं के विषय में चर्चाओं का आयोजन करते रहना चाहिए।

परिचर्चा प्रविधि की विशेषताएँ–विभिन्न शिक्षाविदों ने कक्षा–कक्ष परिचर्चा प्रविधि की जिन विशेषताओं का उल्लेख किया है वे इस प्रकार हैं– (1) शिक्षण की परिचर्चा प्रविधि में शिक्षार्थियों के समूह में परस्पर अंतः क्रिया होती है इस प्रकार वे एक–दूसरे से प्रभावित होते हैं और एक–दूसरे को प्रेरित करते हैं। (2) कक्षा–कक्ष में परिचर्चा करते समय कई बार कुछ ऐसी समस्याएँ सामने आ जाती है जिन पर विद्यार्थी अपने स्पष्ट विचार व्यक्त नहीं कर पाते किंतु समूह में रहने के कारण उनमें आपस में परस्पर अंतःक्रिया होती है और उन समस्याओं के संबंध में समूह में स्पष्ट निर्णय हो जाते हैं। (3) कक्षा–कक्ष में परिचर्चा करते समय विद्यार्थियों को एक ही प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है अतः उनके समाधान में सुविधा रहती है। (4) परिचर्चा द्वारा विद्यार्थी जो कुछ भी सीखते हैं उसका प्रभाव उनकी सामाजिक और संवेगात्मक आवश्यकताओं पर भी पड़ता है। (5) कक्षा–कक्ष में परिचर्चा द्वारा सीखने से विद्यार्थियों के परस्पर संबंधों का प्रभाव उनके सीखने की प्रक्रिया पर पड़ता है। यदि विद्यार्थी एक साथ शांतिपूर्वक परिचर्चा करेंगे तो उनमें एकाग्रता होगी और सीखना सुगम होगा। इसके विपरीत यदि परिवेश में तनातनी होगी तो विद्यार्थियों में आपस में तनाव आ सकता है और ऐसी परिस्थिति में सीखना अत्यंत कठिन होता हैं। (6) कक्षा–कक्ष परिचर्चा शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता का उपयोग उनके व्यवहार और अभिवृत्ति में परिवर्तन लाने के लिए किया जा सकता है।

प्रश्न 78. भाषा का अर्थ, प्रकृति और महत्व को समझाते हुए समाज के बीच संबंधों की विस्तृत चर्चा कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर–भाषा का अर्थ एवं परिभाषा–समस्त प्राणी जगत में केवल मनुष्य को ही भाषा का अमूल्य वरदान प्राप्त है। भाषा प्रकृति द्वारा प्रदत्त वह उपहार व शक्ति है जिससे मानवीय जीवन सुगम हुआ है। भाषा के बिना मानव पशु तुल्य है।

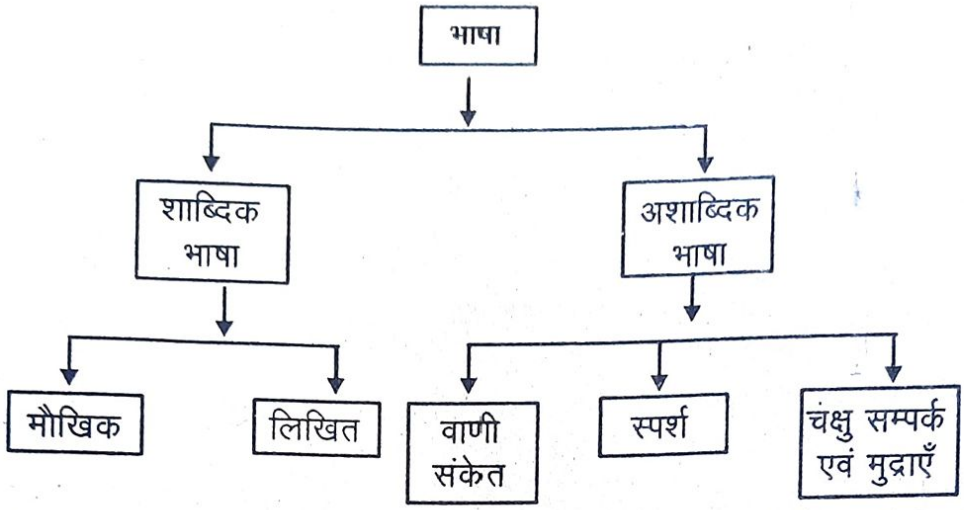
बॉन हम्बोलर ने उचित लिखा है कि "भाषा के कारण ही मनुष्य, मनुष्य है, पर भाषा के आविष्कार के लिए उसका पहले से ही मनुष्य होना आवश्यक है।" भाषा की उत्पत्ति वैज्ञानिकों के लिए एक रहस्य है। **डॉर्विन** जैसे विचारकों का मत है कि, "भाषा ईश्वरीय वरदान नहीं है, अपितु ध्वनियों, शब्दों, बोली से विकसित एवं परिष्कृत होकर आज इस अवस्था तक पहुँची है।" परंतु प्राचीन विचारक भाषा को ईश्वरीय कृति मानते थे। इसी कारण संस्कृत को देववाणी की संज्ञा प्रदान की गयी है। पतंजलि ने ईश्वर को ही भाषा का आदि गुरु माना है।

भाषा की उत्पत्ति का सफर बहुत लंबा है और इसके प्रति व्यक्त किए गए दृष्टिकोण भी अलग–अलग हैं। सारगर्भित तथ्य यह है कि भाषा का कोई अंतिम स्वरूप नहीं है और यह चिर परिवर्तनशील है। मानव सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है, इसलिए भाषा की कहानी सभ्यता की कहानी है। दूसरे शब्दों में जिसके साधन से हम अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक पहुँचा सके उसे ही भाषा कहते हैं।

बुद्धि, विचार एवं चिंतनशक्ति के कारण ही मनुष्य भाषा का अधिकारी बन सका है। वह मुँह एवं शरीर के अंगों की सहायता से विविध प्रकार की ध्वनियों को उच्चारण के माध्यम से उत्पन्न करता है जिनको वह अक्षरों तथा शब्दों के द्वारा व्यक्त करता है। आज भी मनुष्य के द्वारा अभिव्यक्ति के लिए भाषा का ही प्रयोग किया जाता हैं।

इस प्रकार भाषा के दो रूप है–(1) शाब्दिक भाषा एवं (2) अशाब्दिक भाषा।

उपरोक्त प्रकार से वर्णित भाषा को हम निम्नांकित चार्ट के द्वारा भी समझ सकते हैं–



उपरोक्त चार्ट के आधार पर भाषा का प्रवाह कई रूपों में चलता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने माध्यम से अपनी बात पहुँचाता है। स्पष्ट है कि सामान्य दृष्टि से भाषा वह साधन है जिसके द्वारा एक प्राणी दूसरे प्राणी के समक्ष अपने विचार, भाव या इच्छा प्रकट करता है।

परिभाषाएँ–

महर्षि पतंजलि के अनुसार–''भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।''

स्वीट के अनुसार–''ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।''

भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ–भाषा क्या है ? इसे किस रूप में परिभाषित किया जा सकता है ? यह जानने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि भाषा की वास्तविक प्रकृति क्या है ? उसके स्वरूप के बारे में क्या कुछ कहा जा सकता है ? इस संदर्भ में संक्षिप्त रूप से निम्न बातें कहीं जा सकती हैं–(1) भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। (2) भाषा का विचारों से गहरा संबंध है। (3) भाषा अर्जित सम्पत्ति है। (4) भाषा का अर्जन अनुकरण द्वारा होता है। (5) भाषा का संबंध परम्परा से होता है। (6) भाषा गतिशील और परिवर्तनशील होती है। (7) प्रत्येक भाषा की अपनी भौगोलिक सीमा होती है। (8) प्रत्येक भाषा की अपनी अलग संरचना होती है। (9) भाषा संस्कृति और सभ्यता से जुड़ी रहती है। (10) भाषा में विभिन्नता और अनेकरुपता होती है।

भाषा का महत्व–मानव जिस शक्ति से प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है वह शक्ति भाषा की शक्ति है। संसार के अन्य प्राणियों के पास अपनी–अपनी भाषाएँ हैं परंतु विचार प्रधान भाषा केवल मानव के पास ही है। अन्य प्राणी जो भाव प्रकट करते हैं वे अस्थायी होते हैं। मानव अपने पूर्वजों के भाव, विचार तथा अनुभवों को सुरक्षित रखने में भाषा के द्वारा ही सफल हुआ है। भाषा विचार–विनिमय का एक सर्वश्रेष्ठ माध्यम एवं साधन है। भाषा ही शिक्षा एवं ज्ञान का प्रमुख आधार है। लिपि की सहायता से भाषा में स्थायित्व आ गया है। बिना भाषा के शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है। भाषा के द्वारा ही किसी समाज का ज्ञान सुरक्षित रखा जा सकता है साथ ही भाषा सामाजिक एकता में भी सहायता पहुँचाती है। भाषा के द्वारा ही शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास एवं व्यक्तित्व का विकास होता है। भाषा ही भावात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय भावनाओं का विकास करती है। क्षेत्रीय भाषाओं के बीच कड़ी बनकर राष्ट्र–भाषा लोगों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाती है एवं उनमें एकीकरण की भावना का विकास करती है।

भाषा व समाज में संबंध–भाषा व्यक्तियों द्वारा सम्प्रेषण करने का माध्यम है। भाषा व्यक्तियों को जोड़ती है तथा उन कार्यों को संभव बनाती है जो एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता है। भाषा मनुष्य के अस्तित्व का केन्द्र बिंदु है। भाषा के बिना समाज, व्यक्ति व संस्कृति की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाजीकरण का मुख्य साधन भाषा है।

भाषा ही है जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक संरचना की

शक्तियों का वर्णन करती है। भाषा ज्ञान व विचारों का निर्माण व आदान–प्रदान करती है। इसके अलावा भाषा व्यक्ति को पहचान व शक्ति प्रदान करती है। सभी व्यक्ति एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं। भाषा समाज में होने वाली प्रक्रिया है। भाषा व समाज एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। भाषा समाज का एक हिस्सा है और भाषा के बिना समाज का निर्माण संभव नहीं है। भाषा के बिना व्यक्ति के विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भाषा व समाज एक–दूसरे पर आधारित हैं व एक–दूसरे को निम्न प्रकार से प्रभावित करते हैं–

I. भाषा समाज को प्रभावित करती है

(1) सामाजिक संबंधों की स्थापना–भाषा की सहायता से ही आपसी संबंध बनते हैं बातचीत से जानकारी बढ़ती है तथा रिश्ते बनते हैं।

(2) व्यक्ति की पहचान–भाषा व्यक्ति को पहचान दिलाती है। भाषा एक जादू की तरह काम करती है। भाषा से व्यक्ति दूसरों से सम्मत ले सकता है तथा भाषा से ही सम्मान खो भी सकता है। भाषा समाज व संस्कृति को जीवित तथा सुरक्षित रखती है।

II. समाज भाषा को प्रभावित करता है

(1) भाषा का स्तर–व्यक्ति जिस समाज में रहता है वहाँ के अनुसार भाषा का चुनाव करता है। विभिन्न वर्ग अपनी–अपनी विशिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं। जैसे शहरी क्षेत्र की भाषा ग्रामीण क्षेत्र से अलग होती है, वहीं शिक्षित वर्ग व अनपढ़ वर्ग की भाषा भी अलग होती है।

(2) भाषा को नियंत्रित करना–समाज भाषा को नियंत्रित करती है। समाज भाषा को जिस रूप में स्वीकार करता है, समाज में वही रूप प्रयोग में लाया जाता है। एक समाज के द्वारा वही भाषा स्वीकार्य होती है, दूसरे समाज के लिए अपमानजनक होती है। अपराध जगत व शिक्षित समाज की भाषा में यह अंतर दिखाई देता है।

(3) भाषा में परिवर्तन आना–समाज में परिवर्तन आने से भाषा में भी परिवर्तन उत्पन्न होते हैं। आज समाज में वैश्वीकरण से पाश्चात्य संस्कृति बढ़ रही है जिससे भाषा में यह परिवर्तन दिखाई दे रहा है। भाषा में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का प्रचलन बढ़ गया है।

प्रश्न 79. पढ़ने की विभिन्न रणनीतियाँ कौन–कौन सी हैं? सीखने में इन रणनीतियों के महत्व को समझाइए। **(छिंदवाड़ा 2022)**

उत्तर–पढ़ने की विभिन्न रणनीतियाँ–जब हम घर की भाषा और मातृभाषा या प्रथम भाषा की बात करते हैं तो इसके अंतर्गत घर की भाषा तथा आस–पड़ोस की भाषा आ जाती है। जो बच्चा स्वाभाविक रूप से अपने घर और समाज के वातावरण से ग्रहण कर लेता है।

भाषा–कौशल के चार प्रकार होते हैं जिसमें Listen, Speak, Read & write (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) शामिल है। पढ़ना व्यक्ति को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भाषा शब्दावली के साथ–साथ गहन अंतर्दृष्टि के परिणामस्वरूप समझ को स्थापित करती है।

वेस्ट के अनुसार, ''पढ़ना दृष्टि–ध्वनि–दृश्य की एक प्रक्रिया है।'' पढ़ने को प्रतीकों में डिकोडिंग की एक जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो अर्थ का निर्माण या व्युत्पन्न करने का आदेश देती है। इसलिए पढ़ने का मतलब है मुद्रित शब्दों या लिखित प्रतीकों के अर्थ को समझना। इसका तात्पर्य है पढ़ने के साथ समझना। संक्षिप्त तरीके से यह कहा जा सकता है कि पढ़ना–सीखने की कुंजी है।

पढ़ने के अंतर्गत आते हैं–

(1) डिकोडिंग–दिए गए प्रतीकों/लिपियों से अर्थ निकालना।

(2) समझना–उस प्रतीक/लिपियों के अर्थ को समझने के लिए।

(3) प्रतिधारणा–प्राप्त ज्ञान को बनाए रखने और सीखने के लिए।

भाषा विकास के लिए पढ़ना क्यों महत्वपूर्ण है ?

(1) इससे मन का विकास होता है। (2) यह है कि हम नई चीजों की खोज कैसे करते हैं ? (3) यह कल्पना को विकसित करता है। (4) यह पाठकों के रचनात्मक पक्ष को विकसित करता है।

(5) यह शब्दावली का विस्तार करने में मदद करता है। (6) यह महत्वपूर्ण है क्योंकि शब्द बोले और लिखे गए–जीवनी के निर्माण खंड है।

पठन कौशल के उद्देश्य–(1) सटीकता के साथ पढ़ना। (2) प्रवाह के साथ पढ़ना। (3) सही सर्वनाम के साथ पढ़ना। (4) समझ के साथ पढ़ना। (5) खुशी के साथ पढ़ना। (6) नई परिस्थितियों में विचारों के अनुप्रयोग के साथ पढ़ना।

पढ़ने में शामिल रणनीति–निम्नलिखित कौशल या रणनीति पढ़ने में शामिल हैं– (1) आँखों की गति की क्षमता। (2) व्यापक आँख की अवधि की क्षमता। (3) अक्षरों, शब्दों और वाक्यों में दृश्य भेदभाव की क्षमता। (4) दृश्य संकेतों और भाषण ध्वनियों के बीच मानसिक लिंक की क्षमता। (5) शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों की व्याख्या की क्षमता। (6) मार्ग के केन्द्रीय विषय को समझने की क्षमता।

पढ़ने के प्रकार–पढ़ने के कुछ प्रकार हैं–

(1) स्कीमिंग–पाठ के सामान्य विचार प्राप्त करने के लिए स्पीड रीडिंग तकनीक का उपयोग किया जाता है। मुख्य बिंदुओं को समझने के लिए पढ़ना तेजी से किया जाता हैं। सबसे महत्वपूर्ण जानकारी इकट्ठा करने के लिए स्कीमिंग का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार के पठन में, आँखे पाठ के ऊपर जाती हैं। स्कीमिंग करते समय प्रत्येक शब्द को समझना आवश्यक नहीं है।

(2) स्कैनिंग–विशिष्ट पठन कौशल जिसमें विशिष्ट जानकारी के लिए ग्रंथों के माध्यम से जल्दी से खोज शामिल है यह कीवर्ड या वाक्यांश हो सकते हैं। यहाँ रीडिंग एक्टीविटी एक टेक्सट के माध्यम से तेजी से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए की जाती है। स्कैनिंग का उपयोग किसी विशेष जानकारी को खोजने के लिए जाता है। इस प्रकार के पठन में, आँखे विशिष्ट जानकारी की तलाश में पाठ पर चलती है।

(3) मौन पढ़ना–मौन पठन ध्यान और ऊर्जा को अर्थ पर ध्यान केन्द्रित करने में सक्षम बनाता है और इसलिए ध्यान का एक विभाजन बचाता है जिसके परिणामस्वरूप जानकारी का अधिक–से–अधिक आत्मसात होता है। यह पढ़ने की गति, प्रवाह और समझ के साथ होता है। यह शब्दावली के विस्तार में भी मदद करता है। दूसरी ओर, इसका उपयोग विद्यार्थियों द्वारा उच्च कक्षाओं और स्वयं के लिए किया जा सकता है।

(4) सस्वर–शिक्षक द्वारा या विद्यार्थियों द्वारा जोर से या मौखिक रूप से किया जाता है। यह सही उच्चारण, अभिव्यक्ति, तनाव और सूचना के कौशल को विकसित करने पर केन्द्रित है। यह विद्यार्थियों को एक प्रभावी मूक पढ़ने के लिए तैयार करने का आधार है। यह संवेदी अंगों, आँखों, कानों और मुँह को भी प्रशिक्षित करने में मदद करता है।

(5) गहन पढ़ना–इस तरह के रीडिंग में, सटीक समझ पर जोर देने के साथ विस्तृत जानकारी के लिए छोटे पाठ पढ़े जाते हैं। विशिष्ट जानकारी निकालने के लिए छोटे पाठों पर गहन पठन का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार यह एक माइक्रो रीडिंग प्रकार है जो मिनट और पाठ के विस्तृत अध्ययन पर आधारित है। इसमें विस्तार के लिए बहुत सटीक–सटीक पढ़ना शामिल है। यह कार्यात्मक व्याकरण के उपयोग पर भी जोर देता है।

(6) व्यापक पढ़ना–लंबे समय का पाठ पढ़ना, अक्सर आनंद के लिए और सभी समझ पर व्यापक रीडिंग का उपयोग किसी विषय की सामान्य समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसे रैपिड रीडिंग या इंडिपेंडेंट साइलेंट रीडिंग भी कहा जाता है। यह मार्ग पाठ के अर्थ की समझ पर जोर देता है। इस प्रकार का पठन पढ़ने और जानकारी प्राप्त करने के लिए आनंद और लाभ विकसित करने में सहायक है। इस तरह पढ़ने के लिए सामग्री आमतौर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुसार होती है।

●●

इकाई 2

प्रसिद्ध विषय आधारित व्याख्यात्मक लेखन से जुड़ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आलोचनात्मक चिंतन का अभिप्राय क्या है ? (ग्वालियर 2018; जबलपुर 18)

उत्तर–आलोचनात्मक चिंतन का शाब्दिक अर्थ है–किसी वस्तु पर आलोचना के साथ चिंतन करना। अर्थात् किसी विषय–वस्तु के अर्थ, अवधारणा, पक्ष–विपक्ष, उसके गुण, अवगुण इत्यादि सभी पक्षों पर विचार करना ही आलोचनात्मक चिंतन कहलाता है।

प्रश्न 2. आलोचनात्मक चिंतन की विशेषताएँ एवं दैनिक जीवन में इसके महत्व को समझाइए। (ग्वालियर 2018; जबलपुर 19)

उत्तर–आलोचनात्मक चिंतन की विशेषताएँ–

(1) आलोचनात्मक चिंतन निष्पक्षता प्रदर्शित करता है। अर्थात् यह गुण एवं दोष का निष्पक्ष मूल्यांकन करता है।

(2) आलोचनात्मक चिंतन व्यक्तिगत क्षमता तथा विविधता का पोषक है।

(3) यह वस्तुनिष्ठता तथा विषयनिष्ठता में सामंजस्य को प्रोत्साहन देता है।

(4) आलोचनात्मक चिंतन समाज को पूर्वाग्रह मुक्त बनाने में भागीदारी निभाता है।

आलोचनात्मक चिंतन का महत्व–

(1) आलोचनात्मक चिंतन व्यक्तिगत गलतियों से बचने में सहायक है।

(2) यह उचित निर्णय लेने तथा क्रियान्वयन में सहायक है।

(3) आलोचनात्मक चिंतन स्वतंत्र व्यक्तिगत सोच का निर्माण करता है।

प्रश्न 3. चयन की गई विषय–वस्तु का स्वरूप कैसा होना चाहिए ?

उत्तर–सामान्यतः छात्राध्यापकों के लिए चयनित विषय–वस्तु का एक निश्चित स्वरूप न होकर इसके लिए एक क्षेत्र निर्धारित किया गया है। इस क्षेत्र में छात्राध्यापकों के विषयों को आधार बनाया गया। छात्राध्यापकों के विषयों से पृथक्, कोई भी विषय–वस्तु नहीं हो सकती है। दूसरे शब्दों में, चयनित विषय–वस्तु छात्राध्यापकों के विषय से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होनी चाहिये।

प्रश्न 4. चयनित विषय–वस्तु में साहित्यिक लेख तथा जीवन–चरित्र लेखन का होना क्यों आवश्यक है ? (ग्वालियर 2016)

उत्तर–छात्राध्यापकों के लिए चयनित विषयों में विविध प्रकार के साहित्यिक लेख या अनुच्छेदों को तथा जीवन–चरित्र सम्बन्धी लेखन को व्यापक रूप से स्थान प्रदान करना चाहिए। चयनित विषय वस्तु में छात्राध्यापकों के समक्ष अनुच्छेद एवं जीवन–चरित्र, लेखन सम्बन्धी ऐसी सामग्री प्रस्तुत की जाए जो कि छात्राध्यापकों के विषय से सम्बन्धित हों, जैसे–हिन्दी विषय से संबंधित कवियों, निबंधकारों एवं साहित्यकारों की जीवनियाँ विषय–वस्तु के साथ सम्मिलित की जा सकती है। इन जीवनियों के अतिरिक्त इन साहित्यकारों के लेखों एवं निबंधों को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इन दोनों विधाओं के आधार पर छात्राध्यापकों को सर्वप्रथम पठन का कार्य करना पड़ता है। इसके उपरांत छात्राध्यापकों द्वारा अनेक विद्वानों के लेख एवं जीवनियों की समीक्षा की जाती है। इसके साथ–साथ छात्राध्यापक जीवनी एवं लेखों को अपने शब्दों में लिखना प्रारंभ कर देते हैं। छात्राध्यापकों द्वारा विविध शैक्षिक विषयों एवं विद्यालयी विषयों पर अनुच्छेद लेखन का कार्य किया जाता है।

प्रश्न 5. चयन की गई विषय–वस्तु के अंतर्गत अकाल्पनिक लेखन के मुख्य तत्वों के समावेश से क्या आशय है ? **(छतरपुर 2022)**

उत्तर–चयन की गई वस्तु के अंतर्गत अकाल्पनिक लेखन के सार तत्वों को निहित करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि अकाल्पनिक लेखन एवं अकाल्पनिक सार तत्व ही वास्तविक जीवन में उपयोगी होते हैं। अकाल्पनिक अर्थात् वास्तविक परिस्थितियों से संबंधित तथ्यों का समावेश विषय वस्तु के अंतर्गत हो सकता है। विभिन्न प्रकार की दार्शनिक विचारधाराओं के अन्तर्गत आदर्शवाद की तुलना में प्रयोजनवादी विचारधारा को प्रमुख स्थान दिया गया क्योंकि प्रयोजनवादी विचारधारा वास्तविक एवं अकाल्पनिक व्यवस्था से सम्बन्धित है। अतः चयनित विषय–वस्तु में अकाल्पनिक विचारधारा का समावेश एक ओर छात्राध्यापक को वास्तविक परिस्थितियों से अवगत कराता है, तो दूसरी ओर विविध प्रकार की अनावश्यक कल्पनाओं से मुक्त करता है। अतः छात्राध्यापकों के लिए अकाल्पनिक लेखन संबंधी सार तत्वों को विषय–वस्तु में सम्मिलित करना उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रश्न 6. प्रस्तावित गतिविधियों से क्या आशय है ? **(जबलपुर 2016)**

उत्तर–जो भी विषयवस्तु छात्राध्यापकों के लिए प्रस्तावित की जाती है। उसको सम्पन्न करने में कुछ सरल एवं उपयोगी गतिविधियों को भी समझना आवश्यक है। इन गतिविधियों के सर्वोत्तम रूप में सम्पन्न होने पर ही विषय–वस्तु द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। अतः छात्राध्यापकों के लिए प्रस्तावित गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

(1) विषयवस्तु के सम्पूर्ण विषय ज्ञान, सूचनाएँ एवं अर्थ निकालने के लिए जोड़ों में निर्देशित पठन एवं साधारण टिप्पणी निर्माण करना।

(2) विषयवस्तु में समाहित प्रमुख अवधारणा एवं विचारों की जोड़ों में निर्देशित कार्य करते हुए पहचान करना।

(3) विषयवस्तु में समाहित अवधारणाओं एवं विचारों को आरेखीय स्वरूप में लिखना, जैसे फ्लो चित्र, ट्री चित्र एवं मानसिक चित्र आदि।

(4) बड़े विषय समूह के समक्ष विषय–वस्तु या प्रकरण के सार की व्याख्या करना।

(5) भिन्न प्रकरणों की लेखन शैली पर ध्यान देना।

(6) विषय विशेष आधारित शब्दकोश पर ध्यान देना।

(7) भिन्न प्रकरणों के दृष्टिकोण या संदर्भित संरचना पर ध्यान देना।

प्रश्न 7. विषय आधारित शब्दकोश से क्या आशय है ? **(उज्जैन 2015)**

उत्तर–विषय आधारित शब्दकोश–इस गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य छात्राध्यापकों को विषय विशेष के शब्दकोश से परिचित कराना होता है। सामान्य रूप से जब शिक्षक, शिक्षण कार्य करता है, तो उसको अपने विषय के शब्दकोश का ज्ञान होना चाहिए। जैसे–विज्ञान विषय से संबंधित छात्राध्यापकों को विज्ञान विषय के शब्दकोश के बारे में पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इसके साथ–साथ उसको सामान्य विषयों से सम्बन्धित शब्दकोश का भी ज्ञान होना चाहिए। इसलिए एक छात्राध्यापक को विशेष योग्यता के रूप में अपने विषय के शब्दकोश पर ध्यान देना चाहिए। शब्दकोष पर ध्यान देने का आशय विषय–विशेष के बारे में उन शब्दों को स्मृति में लाना है, जो कि उस विषय के महत्वपूर्ण होते हैं। जैसे–गणित विषय के अध्यापक को वर्गमूल, घातांक, ऐकिक, कार्य, समय, चाल, परिमाप, प्रमेय आदि शब्दों का अर्थ सरलता से समझ में आता है।

प्रश्न 8. फ्लो चित्र (चार्ट) से आप क्या समझते हैं ? **(जबलपुर 2015, 19)**

उत्तर–फ्लो चार्ट को क्रमदर्शी आरेख और प्रवाह तालिका के नाम से भी जाना जाता है। इसमें विभिन्न रेखाओं एवं आकृतियों का प्रयोग किया जाता है, जो कि विभिन्न प्रकार के निर्देशों के लिए प्रयोग की जाती हैं। जिस प्रकार यातायात के निर्देश विशेष चिन्हों द्वारा प्रदर्शित करने से सूक्ष्म एवं

सरल हो जाते हैं उसी प्रकार प्रवाह तालिका में विभिन्न चिन्हों एवं आकृतियों के माध्यम से निर्देशों का प्रदर्शन सूक्ष्म एवं सरल हो जाता है।

प्रश्न 9. शब्दकोश के माध्यम से हम विद्यार्थियों में किस प्रकार समझ विकसित कर सकते हैं ? **(जबलपुर 2018; ग्वालियर 22)**

उत्तर—शब्दकोश/साहित्य हमें भाषा के अनेक आयामों पर विचार करने, सोचने, समझने और कल्पना करने के विविध तरीकों से परिचित कराता है। यही नहीं उसमें भाषा के विभिन्न प्रयोगों की समझ के साथ ही अनेकानेक सामाजिक अनुभव भी गुँथे रहते हैं।

प्रश्न 10. शैली से क्या आशय है ?

उत्तर—शैली 'शील' धातु से व्युत्पन्न शब्द है। शैली का आशय लहजा, ढंग, परिपाटी, पद्धति, विधि, तौर–तरीका आदि से है। शैली आंग्ल शब्द 'स्टाइल' (Style) का समानार्थी है। हमारा उठना–बैठना, खाना–पीना, आचार–विचार एवं आचरण हमारी विशिष्ट शैली के ही द्योतक हैं। इस प्रकार हमारा व्यक्तित्व ही हमारी शैली है। दूसरे शब्दों में, अनुभूत विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाने वाले तरीके को एक शब्द में शैली के रूप में अभिग्रहित किया जाता है।

प्रश्न 11. सृजनात्मक लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—सृजनात्मक लेखन को कुछ लोग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया मानते हैं। इसका उद्देश्य सूचित करना मात्र ही नहीं अपितु रहस्यों व रसों को उद्घाटित करना है। एक सृजनात्मक लेखन कभी तटस्थ रूप से दुनिया की ठोस चीजों के बारे में बात करता है तो कभी भाव विघ्न होकर वह प्रेम, पवित्रता, पलायन, ईश्वर आदि विषयों के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करता है। इस प्रकार वह अपने लेखन में अपने दिल के करीब विषयों को प्रकाशित करता है, उन्हें ऊँचा उठाता है और लेखन के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। एक प्रकार से उसका वजूद ही उसके लेख, कहानी या उपन्यास में होता है। किसी विषय पर लेखक क्या सोचता है यह हम उसके लेखन में महसूस कर सकते हैं अर्थात् किसी लेखक के निजी दृष्टिकोण से उसके लेखन के माध्यम से परिचित हुआ जा सकता है।

प्रश्न 12. विद्यार्थियों को शब्दकोश का उपयोग करना क्यों सिखाना चाहिए ? **(जबलपुर 2018)**

उत्तर—शब्दकोश एक या एक से अधिक विशिष्ट भाषाओं में शब्दों का एक संग्रह है, जिसमें, सूचना, परिभाषाएँ, उच्चारण, अनुवाद, अर्थ, अन्य जानकारियाँ उपलब्ध रहती हैं अर्थात् शब्दकोश उस ग्रन्थ को कहते हैं जिसमें अक्षरक्रम/वर्णक्रम से शब्द और उनके अर्थ दिए गए होते हैं, हमें विद्यार्थियों को शब्दकोश का प्रयोग करना सिखाना चाहिए। उन्हें किसी शब्द के ठीक–ठीक अर्थ, वर्तनी और उच्चारण को सिखाने के लिए शब्दकोश को देखने की आदत डालनी चाहिए। इससे स्वतः क्रिया तथा आत्मविश्वास बढ़ेगा और अधिक ज्ञान प्राप्त होगा। शब्दकोश के क्रियात्मक तथा सार्थक प्रयोग में आवश्यक कौशलों तथा संकल्पनाओं का अवबोध कोश की तत्परता कहलाता है। इन्हें सीख लेने पर विद्यार्थी शब्दकोश का प्रयोग स्वेच्छा सें करते हैं।

प्रश्न 13. पुस्तक समीक्षा से आप क्या समझते हैं ? **(ग्वालियर 2016)**

उत्तर—समीक्षा का शाब्दिक अर्थ है— सम्यक परीक्षा, सन्मति, अन्वेषण आदि। पुस्तक समीक्षा में किसी पुस्तक की सम्यक परीक्षा और विश्लेषण किया जाता है। इस परीक्षा और विश्लेषण से पाठक को पुस्तक विशेष के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। पुस्तक समीक्षा में एक पुस्तक की पूरी छानबीन की जाती है। समीक्षक पाठक को पुस्तक से परिचित कराता है। इस क्रम में वह पुस्तक के लेखक, विषय–वस्तु, शिल्प, प्रकाशन स्तर आदि पर प्रकाश डालता है। इसके साथ ही साथ वह समग्र रूप में पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है।

प्रश्न 14. जीवनी के अर्थ एवं परिभाषा को समझाइए। (जबलपुर 2016, 22; छिन्दवाड़ा 22)

उत्तर–जीवनी साहित्य का भवन अनुभूत और सामात्कृत सत्यों की आधारशिला पर प्रतिष्ठित है। 'जीवनी' को अंग्रेजी में 'बायोग्राफी' (Biography) कहते हैं। पश्चिम में इस विधा का इतिहास बहुत पुराना है। हिंदी में 'जीवनी' आधुनिक गद्य की एक महत्वपूर्ण विधा है। जीवनी विद्या का केन्द्र है– मनुष्य किसी व्यक्ति का जीवन, उसके कार्यकलाप उस केन्द्र की परिधि बनाते हैं। जीवनी के विषय में 'हिन्दी साहित्य कोश' में कहा गया है– "किसी व्यक्ति विशेष के जीवन वृतान्त को जीवनी कहते हैं।" अर्थात् जीवनी में व्यक्ति विशेष के जीवन को उसकी सम्पूर्णता एवं व्यापकता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जीवन का यह ब्यौरा स्व–रचित न होकर किसी अन्य द्वारा तटस्थ तथा निष्पक्ष दृष्टिकोण के आधार पर रचा जाता है। इस दृष्टि से यह आत्मकथा के विपरीत 'परकथा' है।

बाबू गुलाबराय के अनुसार– "जीवनी घटनाओं का अंकन नहीं वरन् चित्रण है, वह साहित्य की विधा है और उसमें साहित्य और काव्य के सभी गुण हैं, वह एक मनुष्य के अंतर और बाह्य स्वरूप का कलात्मक निरूपण है।"

हेराल्ड निकल्सन के अनुसार– "जीवनी लिखने के लिए एक विशेष प्रकार की बुद्धि, कौशल की आवश्यकता है।"

प्रश्न 15. नोट्स लेने के लाभ बताइए।

उत्तर–नोट्स लेने के लाभ–

(1) विस्तार पर ध्यान और ध्यान में सुधार, (2) सक्रिय शिक्षण को बढ़ावा देता है, (3) समझ और पतिधारा को बढ़ा देता है, (4) कौशल को प्राथमिकता देता है, (5) ध्यान अवधि बढ़ाता है, (6) संगठन कौशल में सुधार, (7) रचनात्मकता बढ़ जाती है।

प्रश्न 16. जीवन–चरित्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **(भोपाल 2022)**

***अथवा*, जीवनी से आप क्या समझते हैं ?**

उत्तर–जीवनी शब्द का अंग्रेजी पर्याय लाइफ (जीवन) अथवा बायोग्राफी (अपने जीवन) है। हिन्दी में इसे जीवन–चरित्र अथवा जीवनी कहा जाता है। जीवनी या जीवन–चरित्र का शाब्दिक अर्थ हैं 'जीवन की व्याख्या' या 'जीवन के सम्पूर्ण चरित्र की व्याख्या'।

जीवन–चरित्र इतिहास, साहित्य और नायक की त्रिवेणी होती हैं। इसमें व्यक्ति की छोटी–छोटी घटना का वर्णन किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति के जीवन वृतांतों को सचेत और कलात्मक ढंग के बारे में लिखे उपन्यास या लेख को जीवन–चरित्र या जीवनी कहा जाता है। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ और जीवनी लेखक **टॉमस कॉरलाइन** ने अत्यंत सीधी–सादी और संक्षिप्त परिभाषा में इसे–'एक व्यक्ति का जीवन' कहा है। जीवन–चरित्र में किसी एक व्यक्ति के यथार्थ जीवन के इतिहास का आलेखन होता है, अनेक व्यक्तियों के जीवन का नहीं। किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का चरित्र–चित्रण व वर्णन करना ही जीवन–चरित्र कहलाता है। लेखक द्वारा किसी विशेष व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की सत्य घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण ही जीवन–चरित्र कहलाता है। जीवन–चरित्र पूर्णतः सत्य कथनों पर आधारित होता हैं। इसमें व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन की जानकारी प्रमाणों के साथ प्रस्तुत की जाती हैं। इसमें व्यक्ति के जीवन की घटनाओं को ऐतिहासिक क्रम में ही दर्शाया जाता है। जीवन–चरित्र में जीवित या मृत किसी भी व्यक्ति के जीवन पर लिखी जा सकती है।

उदाहरण–हिन्दी की इस गद्य विधा की कुछ रचनाएँ इस प्रकार है–

जीवनी/जीवन–चरित्र का नाम		**जीवनीकार**
(1) भक्तमाल (1585)	–	नाभादास
(2) कलम का सिपाही	–	अमृतराय (1962)
(3) प्रेमचंद घर में (1944)	–	शिवरानी देवी

(4) जयप्रकाश नारायण (1951) – रामवृक्ष बेनीपुरी
(5) धर्मवीर गाँधी (1914) – संपूर्णानंद
(6) चंपारण में महात्मा गाँधी (1919) – राजेंद्र प्रसाद
(7) चरित्र चर्चा (1929) – महावीर प्रसाद द्विवेदी
(8) बाबू राधाकृष्णराज (1913) – रामचंद्र शुक्ल।

प्रश्न 17. जीवंत वर्णन पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए। **(छतरपुर 2021, 22)**

उत्तर–जीवंत वर्णन–जीवंत वर्णन में लेखक एक व्यक्ति, स्थान या चीज को इस तरह से वर्णित करता हैं कि पढ़ने वाले के दिमाग में एक चित्र निर्मित हो जाए। जीवंत वर्णन विद्यार्थियों की लेखन कुशलताओं को विकसित करने, नए–नए शब्दों के प्रयोग करने तथा नई विषय–सामग्री को खोजने के लिए प्रेरित करता है। जीवंत वर्णन के माध्यम से हम विद्यार्थियों में साहित्यिक कौशल का, जीवन मूल्यों का, आदर्शों आदि का विकास कर सकते हैं।

प्रश्न 18. निरंतरता के सिद्धांत को समझाइए।

उत्तर–निरंतरता शब्द से तात्पर्य 'लगातार' से हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, विकास एक न रुकने वाली प्रक्रिया हैं। यह प्रक्रिया माँ के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती हैं और मृत्युपर्यन्त तक चलती हैं। मनुष्य एक छोटे से नगण्य आकार से अपना जीवन प्रारम्भ करके हम सबके व्यक्तित्व के सभी पक्षों, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि का गुण 'निरंतरता के सिद्धांत' के कारण सम्पन्न होता रहता है।

दूसरे शब्दों में, विकास जीवन चक्र के माध्यम से निरंतर होता रहता है। यह मानव के दोनों अनुक्षेत्रों (मनोवैज्ञानिक और शारीरिक) में क्रमिक और निरंतर परिवर्तन की प्रक्रिया होती है।

प्रश्न 19. अभिव्यक्ति शक्ति का शिक्षण अधिगम क्रिया में महत्व को समझाइए।

(भोपाल 2022)

उत्तर–शिक्षण अधिगम क्रिया–प्रत्येक बच्चा स्वाभाविक रूप से सीखने के लिए अभिप्रेरित होता हैं। बच्चों के सीखने के तरीके में विविधता होती हैं। जैसे–अनुभवों के माध्यम से, प्रश्न पूछने, सुनने, सोचने व चिंतन करने, अभिव्यक्त करने, छोटे एवं बड़े समूहों में गतिविधियाँ करने आदि से सीखते हैं। इसे **शिक्षण अधिगम क्रिया** कहते हैं।

अभिव्यक्ति–व्यक्तित्व के समायोजन के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अभिव्यक्ति को मुख्य साधन माना है। इसके द्वारा मनुष्य अपने मनोभावों को प्रकाशित करता हैं तथा अपनी भावनाओं को नया रूप देता है। अभिव्यक्ति का मतलब अपनी बातों व विचारों को इस तरह से व्यक्त करना जिससे आप क्या कहना चाहते हैं, क्या सोचते हैं, सब समझ आ जाए।

जब विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति कौशल व अभिव्यक्ति शक्ति होगी, तब ही विद्यार्थी शिक्षण अधिगम क्रिया में सिखायी जाने वाली समस्त गतिविधियों को अच्छे से सीख सकेंगे। इसके माध्यम से हम विद्यार्थियों के वाचन कौशल, लेखन कौशल व भाषायी कौशल का विकास कर सकेंगे।

प्रश्न 20. आप शिक्षार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि को कैसे जानेंगे ? समझाइए। (भोपाल 2022)

उत्तर–कक्षा वह स्थल हैं जहाँ छात्रों एवं शिक्षकों के मध्य अन्तःक्रिया होती हैं। यह कार्य भाषा के माध्यम से ही होता है। कक्षा–कक्ष अन्तःक्रिया में छात्रों की भाषायी पृष्ठभूमि का अहम् स्थान हैं। हम शिक्षार्थियों की भाषा को उनके बोलने के तरीके, उनके उच्चारण व उनके रहन–सहन से समझ सकते हैं। विद्यालय वह स्थान हैं, जहाँ पर अलग–अलग जाति–धर्म, विभिन्न भाषा–बोली बोलने वाले विद्यार्थी आते हैं और शिक्षक को हर विद्यार्थी को पढ़ाना होता है, ऐसे में शिक्षक की विद्यार्थियों की भाषायी पृष्ठभूमि के बारे में पता होना चाहिए, तभी शिक्षक सही तरह से विद्यार्थियों को ज्ञान दे पाएगा, क्योंकि पठन–पाठन करने या कराने का माध्यम भाषा ही होती है। कक्षा–कक्ष की अंतःक्रिया पर सांस्कृतिक क्षेत्र का सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है। मानव विज्ञानवादियों ने तो भाषा को एक सांस्कृतिक

वस्तु ही कहा है। उन्होंने कहा है, कि जैसे–जैसे संस्कृतियों में कुछ हेर–फेर होता है। वैसे ही भाषा भी प्रभावित होती है। कक्षा–कक्ष में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों के छात्र आते हैं उनकी भाषा, उच्चारण, शब्दों की रचना, शब्द भण्डार आदि में भी अंतर आ जाता है। भिन्न सांस्कृतिक परिवेश के लोगों के लहजे में भी भिन्नता पायी जाती है। उदाहरण के लिए, उत्तरप्रदेश के निवासियों के हिन्दी उच्चारण एवं बिहार के लोगों के हिन्दी उच्चारण तथा लहजे में पर्याप्त भिन्नता होती है। इन भिन्नताओं के आधार पर ही शिक्षक विद्यार्थियों को भाषायी पृष्ठभूमि, भाषायी ज्ञान को समझ पाते हैं।

प्रश्न 21. आख्यान से आप क्या समझते हैं ? आख्यान के उद्देश्य को बताइए।

उत्तर–आख्यान शब्द लैटिन भाषा के 'Narori' से निकला है, जिसका अर्थ हैं–'बताना'। एक आख्यान किसी घटनाक्रम से जुड़ी रिपोर्ट संबंधित होता है। इसमें वास्तविकता एवं काल्पनिकता का समावेश होता है। जो स्थिर या चलती ध्वनियों या लिखित या मौखिक रूप से क्रमबद्ध होती हैं। यह कई वर्ग में विभाजित होता है। ज्यादातर लोगों के बचपन के दौरान, आख्यान उन्हें उचित व्यवहार, सांस्कृतिक इतिहास, साम्प्रदायिक पहचान बनाने उचित मूलों के निर्माण में मार्गदर्शन करता है। आख्यान पढ़ना काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसके लिए आवश्यक हैं कि आख्यान के बारीकी से पठन अनापेक्षित विवरणों को ध्यान से देखे एवं उनमें छिपी हुई भावनाओं और अर्थों को ध्यान से समझें। आख्यान पढ़कर अक्सर प्रतिभाशाली रूप को और प्रतीकों के माध्यम से कल्पनाशील भाषा का प्रयोग करके संवेगों को अभिव्यक्ति कर कहानी सुनाता है।

आख्यान के उद्देश्य–(1) छात्रों को अपने वास्तविक अनुभवों के बारे में निजी लेखन लिखने में सक्षम बनाना।

(2) छात्रों को छोटे–छोटे क्षणों पर ध्यान केन्द्रित कर उनका पृष्ठों में वर्णन करने योग्य बनाना।

(3) छात्रों में दूसरे लेखकों की तकनीकी को अपने लेखन में उपयोग करने हेतु पारंगत करना।

(4) विद्यार्थियों को प्रभावी आख्यान लिखने योग्य बनाना।

प्रश्न 22. विद्यार्थियों को पृष्ठभूमि की समझ क्यों आवश्यक हैं ? **(ग्वालियर 2021)**

उत्तर–विद्यार्थियों को पृष्ठभूमि की समझ होना अत्यंत आवश्यक है, उन्हें पता होना चाहिए कि उनका सामाजिक, आर्थिक स्तर कैसा है, क्योंकि उनके इस स्तर का प्रभाव विद्यालय के प्रति उनकी अभिरुचि को उत्पन्न करेगा। जब विद्यार्थी अपनी पृष्ठभूमि को समझेंगे कि वो शहरी है या ग्रामीण है, पिछड़े है या अल्प पिछड़े है, तो अपनी इस पृष्ठभूमि को और बेहतर बनाने की कोशिश करेंगे।

प्रश्न 23. विषय–विशेष शब्दकोश का महत्व बताइए। **(छतरपुर 2021)**

***अथवा*, विषय–विशेष शब्दकोश पर ध्यान देने का महत्व बतलाइए।** **(छतरपुर 2022)**

उत्तर–विषय–विशेष शब्दकोश के माध्यम से उस विषय विशेष से संबंधित छात्रों, शोधार्थियों, विशेषज्ञों आदि की संबंधित विषय के पदों एवं शब्दों को पूर्ण जानकारी मिल जाती है। ये शब्दकोश किसी विषय–विशेष पर बने होते हैं, उस विषय से संबंधित सूचना प्राप्त करने हेतु विद्यार्थी इसका उपयोग करके अपनी समस्त परेशानी को दूर कर सकते हैं, विद्यार्थियों को किसी विषय–विशेष से सम्बंधित समस्त कठिनाइयों को दूर करने का माध्यम विषय–विशेष शब्दकोश ही होता है।

प्रश्न 24. बच्चों की अधिगम प्रतिच्छाया क्या है ? कक्षा में इसका क्या महत्व है ? **(भोपाल 2022)**

उत्तर–अधिगम प्रतिच्छाया अथवा प्रेक्षणात्मक में, हम दूसरों को देखकर सीखते हैं और फिर जो करते हैं या कहते हैं, उसकी नकल या प्रतिरूपण करते हैं। अनुकरणीय व्यवहार करने वाले व्यक्तियों को प्रतिरूप कहा जाता है। बंडूरा ने प्रतिरूपण या प्रतिच्छाया की प्रक्रिया में विशिष्ट चरणों ध्यान, प्रतिधारण, पुनरुत्पादन और प्रेरण का वर्णन किया है जिसका पालन करना चाहिए यदि अधिगम को सफल बनाना है।

(1) ध्यान—सबसे पहले हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि प्रतिरूप या प्रतिच्छाया क्या कर रहा है ? हमें ध्यान देना होगा।

(2) प्रतिधारण—इसके बाद हमें जो कुछ हमने देखा, उसे बनाए रखने या याद रखने में सक्षम होना चाहिए, यह प्रतिधारण है।

(3) उत्पादन/उत्पत्ति—फिर, हमें उस व्यवहार को करने में सक्षम होना चाहिए जिसे हमने देखा और स्मृति के लिए प्रतिबद्ध किया, यह उत्पत्ति है।

(4) प्रेरण—अंत में, हमारे पास प्रेरण होना चाहिए। हमें व्यवहार की नकल करने की आवश्यकता है और हम प्रेरित हैं या नहीं यह इस बात पर निर्भर करता है कि—प्रतिरूप का क्या हुआ है ?

अतः प्रतिरूपण प्रक्रिया का सही क्रम ध्यान, प्रतिधारण, उत्पत्ति और प्रेक्षण है।

प्रश्न 25. समझ से आप क्या समझते हैं ? (भोपाल 2022)

उत्तर—समझ/बोध का अर्थ है भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की समझ। सामान्यतः प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि व्यवस्था होती है। इन लिपि प्रतीकों को वही लोग समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा की लिपि व्यवस्था का ज्ञान है। इसका तात्पर्य यह है कि लेखक द्वारा लिपिबद्ध विचारों तथा भावों को वे ही पढ़ एवं समझ सकते हैं, जिन्हें उस भाषा तथा उसकी लिपि व्यवस्था की समुचित जानकारी है स्पष्ट है कि लेखन लिपि प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है।

साधारणतया बोध पठन समझ की एक क्रिया है जिसे व्यक्ति पढ़ता है। यह कृत्य पढ़ाने, स्मृति या अभ्यास के लिए सरल नहीं है जबकि इसकी परिभाषा को साधारणतया वर्णित किया जा सकता है। पठन बोध/समझ एक सक्रिय अभिप्रायपूर्वक, परस्पर संवादात्मक प्रक्रिया है जो कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी विशेष लेखन भाग को पढ़ने से पहले, उसी समय या बाद में होती है।

प्रश्न 26. जीवन–चरित्र व आत्मकथा में अंतर बताइए। (भोपाल 2022)

उत्तर—जीवन–चरित्र या जीवनी—वह रचना होती है जो किसी व्यक्ति के जीवन का विस्तृत वर्णन करती है। किसी जीवनी में एक व्यक्ति के जन्म, कार्य, संबंध, शिक्षा, मृत्यु आदि जैसे बुनियादी तथ्यों को शामिल किया जाता है। यह मुख्य रूप से एक व्यक्ति के जीवन में घटित सभी घटनाओं का चित्रण करने का कार्य करती है। एक लेखक जीवनी के माध्यम से किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इतिहास लेखन की तरह ही जीवनी भी किसी व्यक्ति के जीवन में घटित सभी सत्य घटनाओं पर आधारित होती है। जीवनी वास्तव में व्यक्ति के जीवन की सभी महत्वपूर्ण घटनाओं की सत्यता की रक्षा करते हुए उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है। जीवनी की रचना में कथात्मक एवं रोचक शैली का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा इसमें लेखक किसी व्यक्ति के जीवन के सभी तथ्यों को भी उजागर करता है।

आत्मकथा—वह रचना होती है जिसमें लेखक स्वयं के जीवन का विस्तार करता है। आत्मकथा के लेखन में लेखक स्वयं के व्यक्तित्व का वर्णन करता है। इस रचना में बताई गई जानकारी स्वयं लेखक ही साक्षी होता है एवं इसका उद्देश्य स्वयं का आत्म–निर्माण करना भी होता है। एक आत्मकथा में लेखक अपने जीवन में घटित सभी महत्वपूर्ण घटनाओं एवं उपलब्धियों की जानकारी देता है। एक लेखक आत्मकथा के माध्यम से समाज के सम्मुख स्वयं को प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत करता है। कई विद्वानों के अनुसार आत्मकथा में लेखक निष्पक्ष भाव से स्वयं के जीवन के अनुभव का चित्रण करता है। आत्मकथा का उद्देश्य समाज को लेखक के संपूर्ण जीवन की अनुभूति कराना होता है।

जीवनी (जीवन–चरित्र) और आत्मकथा में अंतर—

जीवनी और आत्मकथा में निम्नलिखित अंतर होते हैं—

(1) जीवनी में किसी महापुरुष या किसी व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन किया जाता है जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन के अनुभव का वर्णन करता है।

(2) जीवनी किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा लिखी जाती है परंतु आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखी जाती है।

(3) जीवनी काल्पनिक हो सकती है जबकि आत्मकथा केवल सत्य घटनाओं पर आधारित होती है।

(4) जीवनी की रचना में लेखक अपने विचारों को अभिव्यक्त नहीं करता जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं के विचारों को व्यक्त कर सकता है।

(5) जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति के गुण–दोषों का वर्णन करता है परंतु आत्मकथा में लेखक स्वयं के गुण एवं दोषों का वर्णन करता है।

(6) जीवनी की रचना मुख्य रूप से वर्णनात्मक शैली में की जाती है जबकि आत्मकथा की रचना कथात्मक शैली में की जाती है।

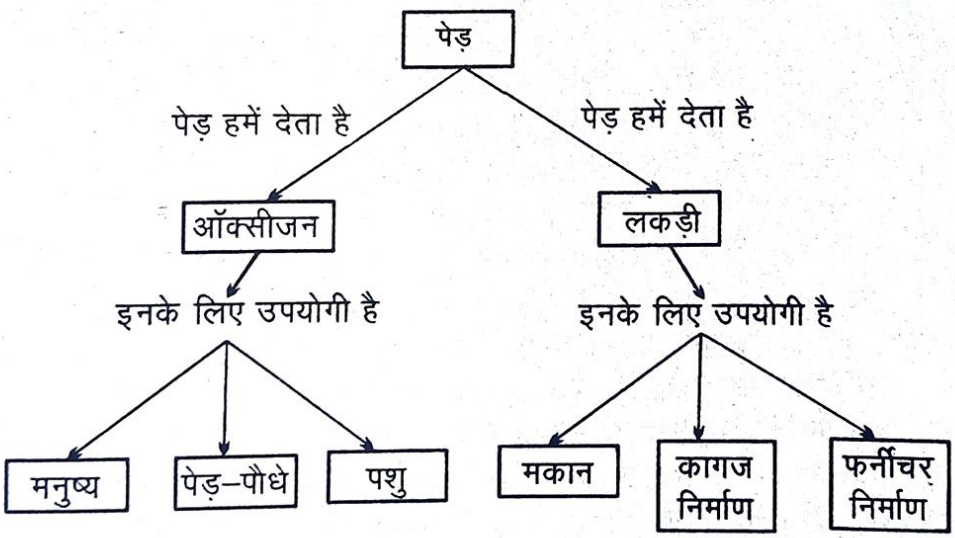
(7) जीवन की रचना में प्रमाणिकता की आवश्यकता होती है जबकि आत्मकथा में प्रमाणिकता की आवश्यकता नहीं होती।

प्रश्न 27. ट्री–डायग्राम को सोदाहरण समझाइए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर–ट्री–डायग्राम अथवा वृक्ष आरेख एक नया प्रबंधन पदानुक्रमित संरचनाओं का एक चित्रमय प्रतिनिधित्व है जो संभावित परिणामों या निर्णयों का प्रतिनिधित्व करने के लिए शाखाओं का उपयोग करता है। अर्थात् वृक्ष आरेख सूचना विजुअलाइजेशन का एक सामान्य रूप है।

पदानुक्रमित डेटा को दर्शाने के लिए वृक्ष आरेख का उपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक नोड या तत्व रोकथाम के सिद्धांत के माध्यम से अगले से संबंधित है। जब कोई भी दो तत्व पदानुक्रम पर समान होते हैं, तो वे ''सहोदर'' इकाइयाँ होती है।

ट्री–डायग्राम अथवा वृक्ष आरेख का पदानुक्रम पहले नोड से शुरू होता है, जिसे आमतौर पर ''रूट इकाई'' कहा जाता है। वहाँ से संबंधित ''बच्चे'' संस्थाओं की शाखाएँ निकालती है।



प्रश्न 28. ''समूह चर्चा'' किसे कहते हैं ? यह बच्चों के व्यक्तित्व विकास में कैसे सहायक है ? **(भोपाल 2022)**

उत्तर–समूह चर्चा में बौद्धिक मनोरंजन किया जाता है। इसका आधुनिक अर्थ यह है कि ''वह सभा जिसमें एक प्रकरण पर वक्तागण अपने विचार प्रस्तुत करते हैं।'' इसके अंतर्गत एक क्रम में प्रकरण संबंधी विचारों को प्रस्तुत करने का आयोजन किया जाता है। किसी विशिष्ट प्रकरण पर कोई भी व्यक्ति अपने विचारों को प्रस्तुत कर सकता है।

समूह चर्चा समिति का एक ऐसा समूह है जिसमें श्रोताओं को उत्तर के प्रकार के विचारों से

अवगत कराया जाता है। श्रोतागण प्रकरण संबंधी सामान्य तैयारी में अपने कुशल हुए विचारों को सम्मिलित करते हैं और नीति, मूल्यों एवं बोधगम्यता के संबंध में निर्णय लेते हैं। समूह चर्चा की प्रक्रिया में समस्या के विभिन्न पक्षों को समझना होता है। समूह चर्चा किसी निर्णय पर नहीं पहुँचती है। श्रोतागण अपने निर्णय लेने में स्वतंत्र होते हैं। समूह चर्चा के अंत में भी प्रकरण संबंधी वाद–विवाद खुला रहता है। वक्ताओं एवं श्रोताओं में अंत:प्रक्रिया नहीं होती है, इसमें अप्रत्यक्ष रूप में अंत:प्रक्रिया होती है।

प्रश्न 29. श्यामपट्ट कौशल के घटकों का वर्णन कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर–श्यामपट्ट कौशल के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं–

(1) लेख की स्पष्टता–इसके अंतर्गत अस्पष्ट अंतर, अनुपयुक्त अक्षर, बड़े व छोटे आकार के अक्षरों में अंतर और अक्षरों का आकार जो कि कक्षा के अंतिम छोर से भी पढ़ा जा सके आते हैं।

(2) श्यामपट्ट कार्य में स्वच्छता–इसके अंतर्गत दो रेखाओं के मध्य अंतराल, सीधी रेखाएँ व समानांतर वाक्य विन्यास आते हैं।

(3) श्यामपट्ट कार्य की उपयुक्तता–इसमें मुख्य बिंदुओं व शब्दों का रेखांकन, उपयुक्त रेखाचित्र आदि आते हैं।

श्यामपट्ट कौशल के उपघटकों की तालिका निम्नानुसार हैं–

क्र.	उपकौशल घटक	उत्तम	सामान्य	निम्न
1.	स्पष्टता–			
	(i) शब्दों में पर्याप्त दूरी			
	(ii) शब्दों का आकार			
	(iii) रेखाओं की मोटाई			
2.	लेखन में स्वच्छता–			
	(i) सीधी रेखा में लिखना			
	(ii) रेखाओं के मध्य अंतर			
	(iii) महत्वपूर्ण पाठ्यवस्तु के केन्द्रीयकरण			
3.	उपयुक्तता–			
	(i) लेखन बिंदुओं में निरंतरता			
	(ii) सरलता			
	(iii) अवधान केन्द्रीयकरण			
4.	अन्य–			
	(i) रंगीन चॉक का उपयुक्त प्रयोग			
	(ii) लिखते समय बोलते रहना			
	(iii) लेखन करते समय टेढ़े खड़ा होना व पीठ को कक्षा की ओर न रखना			
	(iv) प्रयोग के पश्चात श्यामपट्ट को साफ कर देना			

प्रश्न 30. समालोचनात्मक चिंतन को परिभाषित कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर–समालोचनात्मक चिंतन तर्क या तर्क को नई या अपरिचित स्थितियों, विचारों और सुझावों पर लागू करने की क्षमता है। यह तथ्यों, घटनाओं आदि को पहचानने या उनका विश्लेषण करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

मुख्य बिंदु–

(1) समालोचनात्मक चिंतन के लिए उचित विश्लेषण, मूल्यांकन, निष्कर्ष और स्पष्टीकरण की आवश्यकता होती है।

(2) गहन चिंतन एक ऐसी प्रक्रिया है जो किसी निर्णय को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को चिंतनशील एवं उचित तर्कसंगत सोच का उपयोग करने, व्याख्या करने और जानकारी का मूल्यांकन करने के लिए चुनौती देती है।

(3) समालोचनात्मक चिंतन में चीजों को खुले दिमाग से देखना और अवलोकन करना और एक विचार या अवधारणा को यथासंभव कई कोणों के रूप में जाँचना शामिल है।

महत्वपूर्ण बिंदु–

समालोचनात्मक चिंतन क्षमता और कौशल विकसित करने में एक व्यक्ति की मदद करती है–

(1) खुले दिमाग के साथ किसी मुद्दे पर पहुँचने के लिए।

(2) किसी भी मुद्दे को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना।

(3) यह समझने के लिए कि मुद्दे उनके अपने जीवन से कैसे संबंधित है।

(4) तर्कसंगत रूप से विचार करके विचारों के बीच तार्किक संबंध बनना।

(5) कई बातों में अपनी अंतर्दृष्टि बढ़ाने के लिए।

(6) दी गई अनिर्मित डेटा से जानकारी का आकलन और निष्कर्ष निकालना।

(7) उचित व्याख्या, विश्लेषण, मूल्यांकन और अनुमान लगाने के लिए।

इसलिए, उपर्युक्त बिंदुओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि समालोचनात्मक चिंतन व्यक्ति को उचित व्याख्या, विश्लेषण, मूल्यांकन और अनुमान के लिए क्षमताओं और कौशल विकसित करने में मदद करती है।

प्रश्न 31. ''विचार–विनिमय सीखने का एक साधन है।'' स्पष्ट कीजिए।(ग्वालियर 2022)

उत्तर–सामान्यतः विचार–विनिमय हेतु किसी प्रसंग के पक्ष–विपक्ष में विद्यार्थियों के दो दल बनाए जाते हैं। विचार–विनिमय या परिचर्चा में कक्षा–कक्ष शिक्षण की अपेक्षा अधिक समय दिया जाता है। इसमें विषय–वस्तु का क्षेत्र कम होता है। विद्यार्थी कभी भी विषय–वस्तु पर पक्ष और विपक्ष में तर्क दे सकते हैं। कक्षा–कक्ष विचार–विनिमय के अधिगम या सीखने के लिए निम्नलिखित लाभ है–

(1) विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति का विकास होता है।

(2) अध्यापकों और विद्यार्थियों में अच्छे संबंध विकसित होते हैं।

(3) विद्यार्थी संकोची व्यवहार और डरने की प्रवृत्ति से बाहर आते हैं।

(4) विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जागृत होता है।

(5) विद्यार्थियों को विषय–वस्तु की पूरी जानकारी प्राप्त होती है।

(6) विद्यार्थी कक्षा–कक्ष के निश्चित वातावरण से बाहर आते हैं।

(7) विद्यार्थियों में तर्कशक्ति का विकास होता है।

(8) विद्यार्थी मानसिक रूप से क्रियाशील रहते हैं।

(9) शिक्षकों की दक्षता में भी सुधार होता है।

(10) कक्षा–कक्ष का अनुशासन अच्छा रहता है।

(11) शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाना उद्देश्य होता है।

प्रश्न 32. आपके द्वारा पढ़ी किसी किताब की संक्षिप्त समीक्षा लिखिए। (छिंदवाड़ा 2022)

उत्तर–पुस्तक की समीक्षा हेतु लेखिका मनीषाश्री की पुस्तक 'ज़िंदगी की गुल्लक', एपीएन प्रकाशन, नई दिल्ली को चुना गया है।

'जिंदगी की गुल्लक' (किस्से कविताओं के) जैसा कि इस किताब का नाम है, बिल्कुल उसी तरह उसे बनाया गया है। इसे कविता संग्रह कहना इसलिए उचित नहीं होगा कि इसमें कविताएँ तो है, पर वे अपनी कहानियों के साथ है। ये कविताओं वाली इस किताब में मनीषा ने हर कविता के साथ, कविता से भी बड़ा एक ऐसा डिस्क्रिपशन दिया है, जो उस कविता के जन्म लेने की कहानी है

या फिर उस कविता में आए जज्बात की जमीन है। यह किताब किसी डायरी की तरह प्रतीत होती है, जो आपको मनीषा के जीवन और उनकी सोच के भीतर झाँकने का मौका देती है। इस लिहाज से पुस्तक का नाम सही प्रतीत होता है कि उनके अनुभवों की गुल्लक है। जीवन और उसके अनुभव से जुड़ी ये कविताएँ और इनकी कहानी रुचिकर है पर वे आपके दिलो–दिमाग पर गहरी छाप छोड़ जाती हो, ऐसा नहीं होता। हाँ, इस किताब को पढ़ते हुए आप अपनी जिंदगी के किसी बीते हुए लम्हे में जाकर पहुँच जाते हैं और उन्हें याद करने लगते हैं, जो पुस्तक को सार्थक बना देता है। पुस्तक की लेखिका ने खुद भी स्पष्ट किया है कि ये उनके अंदर की वह आवाज है, जिसे उन्होंने अपनी डायरी में दबा रखा था। असमंजस, माँ और टुकड़े इन तीन कविताओं के भाव अच्छे बन पड़े हैं। यह बात भी सच है कि कविता में कहानी और कहानी में कविता के रूप में यह एक अभिनव प्रयोग है। यदि आप एक नए प्रयोग के रूप में इस पुस्तक को पढ़ना चाहेंगे तो निराशा नहीं होगी।

प्रश्न 33. नोट मेकिंग क्या है ? इसकी विशेषताओं का संक्षिप्त में वर्णन कीजिए।

(छिन्दवाड़ा 2022)

उत्तर–नोट्स स्मृति में सहायता के लिए तथ्यों का संक्षिप्त लिखित रिकॉर्ड है। नोट्स आमतौर पर किसी भाषण या श्रुत लेख को सुनते समय या किताब पत्रिका या लेख पढ़ने के बाद रिकॉर्ड करने के लिए जाते हैं। जब भी आवश्यकता होती है उन्हें वापस भेजा जाता है और वांछित तरीके से पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

नोट बनाने की आवश्यकता–ज्ञान विशाल और असीमित है, लेकिन हमारी याददाश्त सीमित है। हम सभी सूचनाएँ हर समय याद नहीं रख सकते, इसलिए नोट्स बनाना जरूरी है। नोट्स की मदद से हम महीनों पहले पढ़ी/सुनी गई सारी जानकारी याद कर सकते हैं। कई विषयों की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए नोट्स बनाना काफी उपयोगी है। परीक्षाओं के समय बड़ी–बड़ी किताबें पढ़ पाना संभव नहीं होता। ऐसे नाजुक समय में नोट्स काफी काम आते हैं। इसलिए नोट्स बनाने से तीन उपयोगी कार्य पूरे होते हैं–

(1) यह तत्काल संदर्भ के लिए हमारे पास बहुत सारी जानकारी रखता है।

(2) यह हमें जो कहा या लिखा गया था उसका पुनर्निर्माण करने में मदद करता है और इस प्रकार याद रखने की प्रक्रिया को तेज करता है।

(3) यह भाषण देने बहस, चर्चा में भाग लेने, निबंध लिखने और परीक्षा से पहले पाठों को दोहराने में काम आता है।

नोट्स बनाने से हमें किस प्रकार मदद मिलती है–नोट्स बनाते समय हम केवल गद्यांश नहीं पढ़ते या केवल भाषण नहीं सुनते बल्कि लेखक वक्ता द्वारा बताए गए विभिन्न बिंदुओं पर विचार करते हैं और जो प्रस्तुत किया जा रहा हैं उसके बारे में अपना निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार नोट्स बनाने में हमें गद्यांश को बेहतर तरीके से समझने में और अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।

नोट्स बनाने की विशेषताएँ–(1) अच्छे नोट्स संक्षिप्त होने चाहिए। (2) उनमें सभी महत्वपूर्ण जानकारी होनी चाहिए। (3) उन्हें तार्किक तरीके से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। (4) बाद के चरण में परामर्श करने पर उन्हें समझने योग्य होना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रचना शिक्षण से आप क्या समझते हैं ? रचना शिक्षण के उद्देश्य एवं इसकी प्रणालियों को समझाइए।

(छतरपुर 2016)

उत्तर–रचना शिक्षण का अर्थ–जब भाषा तथा भाव को सुंदर ढंग से क्रमबद्ध रूप से संजोया जाता है, तो वह रचना कहलाती है। इस तरह, किसी विचार या बात को अच्छी तरह से मनन एवं

क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना ही रचना है, लेकिन रचना केवल भाषा से सम्बन्धित न होकर साहित्य एवं कला से सम्बन्धित है।

योगेन्द्रजीत ने रचना के सम्बन्ध में लिखा है कि– "रचना वह सार्थक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा हम निश्चित उद्देश्य को सामने रखकर अपने विचारों को लिपिबद्ध करते हैं।"

रचना शिक्षण के उद्देश्य–(1) छात्रों में विचार शक्ति एवं निरीक्षण शक्ति का विकास करना।

(2) साहित्य में रुचि रखने वाले एवं प्रभावशाली छात्रों को रचना कला में निपुण करना।

(3) छात्रों में रचनात्मक तथा सृजनात्मक शक्तियों का विकास करना।

(4) छात्रों में स्वयं के शब्द भण्डार का उचित प्रयोग कर सकने की योग्यता उत्पन्न करना।

(5) छात्रों में विभिन्न लेखकों की शैलियों का ज्ञान कराना, जिससे वे भी स्वतंत्र शैली का निर्माण कर सकें।

रचना शिक्षण की प्रणालियाँ–

(1) खेल प्रणाली–इस प्रणाली द्वारा छात्र सीखने के साथ–ही–साथ रुचि एवं आनंद भी प्राप्त करते हैं, इसे खेल प्रणाली कहा जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, छात्र खेलों में विशेष रूप से आनंद लेते हैं। अतः जो शिक्षा खेलों के द्वारा प्रदान की जाती है, वह शिक्षा सबसे अच्छी होती है।

(2) उद्बोधन प्रणाली–इस प्रणाली में आत्मकथा, जीवन चरित्र, ऐतिहासिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एवं धार्मिक स्थानों का वर्णन कराया जाता है। इसमें तथ्यों के लिए छात्रों को प्रेरित करके कल्पना एवं विचार शक्ति को उद्बोधित करके रचना के निमित्त एवं सुसुप्त भावनाओं को उत्पन्न किया जाता है।

(3) प्रश्नोत्तर प्रणाली–प्रश्नोत्तर प्रणाली के माध्यम से ही विषय पूरी तरह से आत्मसात् अर्थात् उसका सार ग्रहण कर लिया जाता है। प्रश्नोत्तर पहले मौखिक कार्य में इसके बाद में लिखित कार्य में सम्पादित किया जाता है।

(4) रूपरेखा प्रणाली–रूपरेखा प्रणाली का प्रयोग प्रत्येक स्तर पर किया जाता है। इस प्रणाली में शिक्षक प्रश्न पूछकर छात्रों एवं रचना का विकास करता है तथा उसे सूत्र रूप में श्यामपट्ट पर लिखता है।

(5) प्रवचन या व्याख्यान प्रणाली–इस प्रणाली में शिक्षक अपने व्याख्यान के द्वारा छात्रों को उद्बोधित करता है। इसके बाद शिक्षक छात्रों को रचना का रूप देने का आदेश देता है।

(6) आदर्श प्रणाली–इस प्रणाली में छात्रों के सामने मौखिक रूप से निबंध प्रस्तुत किया जाता है। इसके पश्चात् छात्र आदर्श रचना के अनुसार रचना करते हैं।

(7) प्रबोधन प्रणाली–इस प्रणाली को निर्देशन प्रणाली भी कहा जाता है। इसके माध्यम से छात्रों को सामान्य रूप से एक दिशा का ज्ञान कराया जाता है।

(8) अनुकरण प्रणाली–इस प्रणाली में छात्रों के सामने कोई एक आदर्श रचना प्रस्तुत की जाती है। इस प्रकार की प्रस्तुत रचना भाषा एवं शैली की दृष्टि से अधिक उत्तम एवं अनुकरणीय होती है।

प्रश्न 2. चार्ट क्या होते हैं ? इसके प्रकारों को समझाइए।

उत्तर–चार्ट सर्वाधिक प्रयोग होने वाली दृश्य सामग्री है। यह संकेत, शब्द, चित्र तथा रेखा के सम्मिश्रण से बनता है। इसमें वैज्ञानिक विचारों, सूत्रों या नियमों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। चार्ट के प्रयोग से शिक्षक को शिक्षण का उद्देश्य प्राप्त करने में अधिक सहायता मिलती है। चार्ट का प्रयोग सभी विषयों में किया जाता है। अतः शिक्षक को पाठ की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए अधिक से अधिक चार्ट स्वयं ही तैयार करके उचित ढंग से प्रयोग करना चाहिए। जब भी चार्ट का उपयोग करें यह ध्यान रखें कि चार्ट द्वारा प्रदर्शित की हुई विषयवस्तु इतनी सुंदर एवं सुडौल होना

चाहिए कि कक्षा के प्रत्येक बालक का ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो जाये और शिक्षक अपने प्रयोजन को आसानी से स्पष्ट कर सके।

चार्ट के प्रकार—चार्ट के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं—

(1) वृक्ष की आकृति वाले चार्ट—इन मानचित्रों में रेखा द्वारा या तने को व्यक्त करने वाले अन्य किसी विधि के उद्‌भव को व्यक्त किया जाता है और बहु–विध विकास को शाखाओं, तने तथा परतों के माध्यम से दर्शाया जाता है।

(2) समय चार्ट—इस प्रकार के चार्ट कालक्रम को बताने के काम आते हैं।

(3) प्रवाह चार्ट—इस प्रकार के चार्ट का प्रयोग किसी संगठन, विचारधारा, आन्दोलन, प्रक्रिया, वंश आदि के क्रमिक विकास एवं प्रवाह को भलीभाँति दिखाने के लिए किया जाता है।

(4) तालिका चार्ट—इस चार्ट में तथ्य एवं सूचनाओं को तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। विद्यालयीन टाइम टेबल इसका सबसे अच्छा उदाहरण है। इस प्रकार के चार्ट द्वारा देश या संसार के विभिन्न सामग्री और संपदा के उत्पादन, औसत वर्षा, औसत उपज, तापमान आदि के आँकड़ों को भली–भाँति दर्शाया जा सकता है।

(5) चित्रात्मक चार्ट—इस चार्ट द्वारा पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु को आलेख, ग्राफ, रेखाकृतियों, शब्दों तथा परंपरागत चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयत्न किया जाता है। कक्षा–शिक्षण में सबसे अधिक प्रयोग इसी प्रकार के चार्ट का होता है।

प्रश्न 3. व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—व्याख्यात्मक लेखन के प्रमुख सोपान—इसके प्रमुख सोपान निम्नलिखित हैं—

(1) मुख्य अवधारणाओं एवं विचारों को पहचानना एवं उनको योजनाबद्ध रूप से नोट करना—छात्र की लेखन कार्य में दक्षता बढ़ाने के लिए मूल पाठ की मुख्य अवधारणाओं तथा विचारों को पहचानना चाहिए तथा उन अवधारणाओं और विचारों को योजनाबद्ध रूप से नोट करना चाहिए। जिससे लेखन करते समय सारगर्भिता आ सके और वह सभी विचारों को शामिल करते हुए लेख कार्य दक्षता से कर सकें। मुख्य अवधारणाओं तथा विचारों को लेखन में प्रस्तुत करते समय चार्ट का प्रयोग किया जा सकता है।

(2) सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर पढ़ना—विषय आधारित शिक्षण का अध्ययन करते समय छात्राध्यापक को किसी भी विषय–वस्तु को पढ़ते समय सम्पूर्ण अर्थ को बल लगाकर उसकी अवधारणा का बोध कराना होगा।

(3) मूलपाठ/विषय के सारांश को समझना—छात्रों को व्याख्यात्मक लेखन कार्य कराने के लिए सर्वप्रथम मूल पाठ या विषय को उन्हें सारांश के रूप में समझा देना चाहिए। मूल पाठ को सारांश के रूप में समझ लेने के बाद लेखन कार्य करते समय उनसे कोई भी महत्वपूर्ण घटना या चरित्र नहीं छूटेगा।

(4) प्रत्येक मूल पाठ के संदर्भ में व्याख्यात्मक कौशलों की आवश्यकता—मूल पाठ से छात्र को क्या शिक्षा प्राप्त हो रही है, इसके लिए व्याख्यात्मक कौशल होने चाहिए। अतः विषय–वस्तु के संदर्भ में व्याख्या स्पष्टीकरण, संश्लेषण, विश्लेषण तथा वाद–विवाद आदि व्याख्यात्मक कौशल विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए छात्रों से उनका स्पष्टीकरण, प्रकरण के अंशों की व्याख्या करायी जानी चाहिए। व्याख्यात्मक कौशल के विकास के लिए छात्रों द्वारा लोकोक्तियों तथा मुहावरों के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। व्याख्यात्मक कौशल का विकास करते समय इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि छात्र विषयवस्तु की किसी एक बात पर ध्यान केन्द्रित न करके सम्पूर्ण प्रकरण पर, प्रत्येक पात्र के चरित्र पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करें। व्याख्यात्मक कौशल के अंतर्गत पात्र, प्रयोजन, कथावस्तु, कथोपकथन, चरित्र–चित्रण, भाषा–शैली, भाव–सौन्दर्य आदि सभी का वर्णन किया जाता है। जिससे सम्पूर्ण लेख की विशेषताएँ सुस्पष्ट हो सकें।

(5) विषय ज्ञान—व्याख्यात्मक लेख से जुड़ने के लिए छात्रों को विषय का ज्ञान होना आवश्यक है। लेखन के लिए कुछ–न–कुछ आधार होना आवश्यक होता है। यह आधार हमें विषय के ज्ञान के रूप में प्राप्त होता है। किसी भी प्रकरण पर हम तब तक लेखन नहीं कर सकते हैं जब तक हमें उस प्रकरण तथा विषय की पूर्ण जानकारी एवं तथ्यों का संकलन न हो। लेखन विषय ज्ञान पर ही अवलम्बित होता है। छात्र को अपनी आयु, रुचि योग्यता तथा क्षमता के अनुसार विषय का ज्ञान अर्जित करना है एवं व्याख्यात्मक लेखन का यही अर्जित ज्ञान उसका आधार बनता है। विषय ज्ञान के लिए छात्रों में वाचन की आदत डालनी चाहिए।

(6) विषय विशिष्ट शब्दावली एवं स्वरूप या संदर्भ फ्रेम—लेख लिखते समय विषय के अनुसार समूह का विभाजन होने से यह लाभ होता है कि विषय विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग किया जा सकता है। प्रत्येक विषय में कुछ विशेष तकनीकी विशिष्ट शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वे विशिष्ट शब्द उसी विषय के विशेषज्ञों को अच्छी तरह से ज्ञात होते हैं। विषय आधारित शब्दकोश भी प्राप्त होते हैं जिनमें इस प्रकार के शब्द और उनके अर्थ दिये गये होते हैं। छात्रों का भाषा ज्ञान तथा शब्द ज्ञान बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार वे अपने विषय में तकनीकी शब्दों का प्रयोग करना सीखेंगे तथा उनमें विषय विशेषज्ञता के गुण भी विकसित होंगे। वे जो भी लेखन कार्य कर रहे हैं, उसमें स्वरूप का फ्रेम बना लें और उसी आकार पर रचना कार्य सम्पन्न करें। विषय–आधारित शब्दावली को मूल पाठ या अध्याय में जोड़ना चाहिए जिससे छात्र उस शब्दावली का कई बार अभ्यास कर सकें और उसे याद कर सकें।

(7) जानकारी—छात्राध्यापक के लिए अपने विषय की जानकारी होना अत्यन्त आवश्यक है। जब शिक्षण विषय के आधार पर समूह बनाकर दिया जाता है और उसमें छात्राध्यापकों को जोड़े के रूप में अपने विषय को पढ़ना तथा समझना पड़ता है तो उन्हें अपने विषय की जानकारी होनी चाहिए। जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्हें पुस्तक तथा पत्र–पत्रिकाओं से भी ज्ञान अर्जित करना चाहिए। आवश्यक जानकारी के अभाव में शिक्षण बोधगम्यात्मक स्तर तक नहीं हो पायेगा।

प्रश्न 4. पुस्तक समीक्षा की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर—पुस्तक समीक्षा विशेषताएँ—

(1) वस्तुनिष्ठता—एक अच्छी समीक्षा की पहली शर्त है—वस्तुनिष्ठता। पुस्तक समीक्षा पढ़कर पाठक को यह महसूस होना चाहिए कि इसमें पुस्तक के साथ न्याय किया गया है और समीक्षक ने अनावश्यक रूप से भर्त्सना या स्तुति नहीं की है। पुस्तक की समीक्षा करते हुए ध्यान रखना चाहिए कि आपकी समीक्षा कहीं पुस्तक का विज्ञापन तो नहीं बन रही हैं।

(2) पूर्वाग्रह मुक्तता—पुस्तक समीक्षा वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता होनी चाहिए। यह वस्तुनिष्ठता तभी आ सकती है, जब समीक्षा पूर्वाग्रहमुक्त हो।

(3) प्रासंगिकता—समीक्षा की जीवंतता के लिए उसका प्रासंगिक होना जरूरी है। एक सजग पाठक लगातार नयी पुस्तकों की जानकारी प्राप्त करता रहना चाहता है। अतः नयी पुस्तकों की समीक्षा यथाशीघ्र होनी चाहिए। पुस्तकों की समीक्षा में विलंब होने से समीक्षा के अप्रासंगिक हो जाने का खतरा बना रहता है तथा फिर से प्रकाशित समीक्षाओं में पाठक की रुचि नहीं रह जाती है क्योंकि वह दूसरे स्त्रोतों से पुस्तक से परिचित हो जाता है।

(4) निजता—प्रत्येक समीक्षक का दृष्टिकोण और उसकी लेखन शैली अलग–अलग होती हैं। इसकी झलक समीक्षा में मिलती है। समीक्षक की विश्लेषण क्षमता के कारण भी समीक्षाओं का स्वरूप अलग–अलग होता है। लेखन की यह निजता समीक्षा का खास गुण है। प्रत्येक नये समीक्षक को अपने में यह गुण विकसित करना चाहिए। लेकिन निजता के नाम पर दुरुहता, अत्यधिक विद्वता पाठक पसंद नहीं करता है। समीक्षा में स्पष्टता और सहजता ही पसंद की जाती है।

(5) केन्द्रीय बिन्दु की पहचान—समीक्षा का मुख्य उद्देश्य पाठक को पुस्तक के मूल कथ्य से परिचित कराना होता है, इसे केन्द्रीय बिन्दु, मुख्य विचार आदि भी कहते हैं। अच्छी समीक्षा में पुस्तक

के केन्द्रीय विषय को सहज रूप में उजागर कर दिया जाता है। पाठक समीक्षा के द्वारा पुस्तक की विषयवस्तु के सम्बन्ध में समीक्षक की विशेषज्ञतापूर्ण राय जानना चाहता है। इसलिए अच्छी समीक्षा केन्द्रीय बिन्दु या केंद्रीय कक्ष को उभारने का कार्य करती हैं।

(6) सोदेश्यता—पुस्तक समीक्षा पुस्तक और पाठक के बीच पुल का काम करती है। पुस्तक समीक्षा पाठक को पुस्तक से जोड़ती है। जब भी समीक्षा लिखे समीक्षक को ध्यान रखना चाहिए कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए कि वह एक दायित्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पुस्तक की समीक्षा इस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए कि पाठक के सामने सारी तस्वीर स्पष्ट हो जाए। पाठक के मन में यह जिज्ञासा होती है कि पुस्तक का केन्द्रीय कथ्य क्या है, इसकी भाषा और शैली कैसी है, लेखक का दृष्टिकोण क्या है आदि। समीक्षा पाठक की इन जिज्ञासाओं को ध्यान में रखकर लिखी जानी चाहिए।

प्रश्न 5. पुस्तक समीक्षा के प्रकारों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—पुस्तक समीक्षा के प्रकार निम्नलिखित हैं—

(1) परिचयात्मक समीक्षा, (2) विश्लेषणात्मक समीक्षा एवं (3) मूल्यांकन परक समीक्षा।

(1) परिचयात्मक समीक्षा—परिचयात्मक समीक्षा पद्धति समीक्षा लिखने की सरल और लोकप्रिय पद्धति है। इस प्रकार की समीक्षा में समीक्षक पुस्तक की विषयवस्तु और उसके महत्व से पाठक को परिचित कराता है तथा पुस्तक की आलोचना पर वह कम जोर देता है। परिचयात्मक समीक्षा में पुस्तक की विषय–वस्तु से पाठक को अवगत कराया जाता है। परिचयात्मक समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तकों की "सूचना" प्राप्त करने में विशेष दिलचस्पी रखता है ताकि वह अपनी मनपसंद पुस्तक का चुनाव कर सके। व्यावसायिक पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाली अधिकांश पुस्तक समीक्षाएँ इसी प्रकार के पाठकों को संबोधित होती हैं। अधिक–से–अधिक पाठकों तक पुस्तक को पहुँचाना इस प्रकार की पुस्तक समीक्षा का प्रमुख उद्देश्य होता है। वस्तुतः पुस्तक समीक्षा की यह अनिवार्य शर्त है कि वह पाठक को पुस्तक से परिचित कराए। "पुस्तक–परिचय", पुस्तक समीक्षा का अनिवार्य अंग है, जिसे परिचयात्मक समीक्षा में विशेष प्रमुखता दी जाती है।

(2) विश्लेषणात्मक समीक्षा—विश्लेषणात्मक समीक्षा में पुस्तक में वर्णित विषय, प्रस्तुति और भाषा–शैली का विश्लेषण किया जाता है। परिचयात्मक समीक्षा में जहाँ समीक्षक पुस्तक को पाठक के सामने रख देता है, वहीं विश्लेषणात्मक समीक्षा में वह पुस्तक के विभिन्न पहलुओं की छानबीन करता है। परिचयात्मक समीक्षा यदि पुस्तक का फोटो चित्र है, तो विश्लेषणात्मक समीक्षा उसका एक्स–रे चित्र। वह पुस्तक के विषय, प्रस्तुति और भाषा की छान–बीन एक सधे हुए वैज्ञानिक की तरह करता है और अपने इस विश्लेषण को पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर देता है। इस प्रकार की समीक्षा का उद्देश्य पाठकों को पुस्तक की अधिक विस्तृत जानकारी देना है तथा उसकी मूलवत्ता से भी पाठकों को परिचित कराना होता है। इस समीक्षा का पाठक वर्ग पुस्तक–परिचय से संतुष्ट नहीं होता, बल्कि वह पुस्तक में लेखक के दृष्टिकोण, विषय पर लेखक की पकड़, भाषा और प्रस्तुति के ढंग पर विस्तार से जानना चाहता है। इस प्रकार की समीक्षाएँ उन पाठकों के लिए होती हैं जो पुस्तक के एकेडमिक से भी परिचित होना चाहते हैं तथा समीक्षक के विचारों को भी जानना चाहते हैं। इस तरह की समीक्षा पाठकों द्वारा पुस्तक के पढ़े जाने के बाद भी मूल्यवान होती है, बल्कि कई बार ये समीक्षाएँ पठित पुस्तक को नयी दृष्टि से जानने–समझने का अवसर भी प्रदान करती है।

(3) मूल्यांकन परक समीक्षा—मूल्यांकन समीक्षा में समीक्षक एक कदम आगे बढ़ता है और पुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन भी करता है। इस मूल्यांकन के क्रम में वह उसी विषय पर लिखी गयी दूसरी पुस्तकों से तुलना भी करता है। इस प्रकार की समीक्षा में भी पुस्तक परिचय का अंश होता है। पर इसका महत्व यहाँ गौण होता है। इसमें पुस्तक का विश्लेषण भी होता है, क्योंकि विश्लेषण के अभाव में किसी कृति का मूल्यांकन संभव नहीं है। परन्तु इस प्रकार की समीक्षा में पुस्तक का

मूल्यांकन हावी रहता है। इसके लिए समीक्षक उस पुस्तक में प्रासंगिकता, रचनाधर्मिता और मूल्यवत्ता की खोज करता है।

प्रश्न 6. आत्मकथा की विशेषताएँ बताइए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर—आत्मकथा की विशेषताएँ— ये निम्न हैं—

(1) आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखा गया स्वयं के जीवन का इतिहास है।

(2) लेखक के आत्मानुभवों की प्रस्तुति होने व अंतर्जगत से सम्बन्धित होने के कारण यह एक आत्मपरक विधा हैं।

(3) आत्मकथा में लेखक अपने सम्पूर्ण जीवन का विवरण देकर कुछ विशेष अथवा चुनिंदा घटनाओं को, जो उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक हुआ करती हैं, क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करता है।

(4) आत्मकथा लिखने में लेखक के विगत् जीवन की स्मृतियाँ मुख्य रूप से सहायक हुआ करती हैं।

(5) स्वयं भोक्ता होने के कारण आत्मकथाकार अपने जीवन की घटनाओं को सत्य एवं ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करता है।

(6) यह नायक के सम्पूर्ण विवेचन का सुदृढ़ आधार है।

(7) आत्मकथा दर्पण के समान स्पष्ट, सत्य, निश्छल, सहज, सरल एवं निर्भीक अभिव्यक्ति है।

(8) आत्मकथा में लेखक का समाज से परिचय होता है। समाज लेखक की आत्मकथा को पढ़कर उसके जीवन से बहुत कुछ आत्मसात् करने की कोशिश करता है।

(9) आत्मकथा में जीवन की घटनाओं का विवरण क्रमिक रूप से होता है।

प्रश्न 7. मूल पाठ पर पुनर्विचार किस प्रकार किया जा सकता है ? विस्तृत रूप से समझाइए एवं पुनर्विचार के अर्थ एवं विशेषताओं को भी समझाइए। **(जबलपुर 2019)**

***अथवा*, विषय आधारित लेखन के लिए छात्रों से मूल पाठ का सारांश किस प्रकार लिखवाना चाहिए ?**

उत्तर—मूल पाठ पर पुनर्विचार—विषय आधारित लेखन कार्य कराते समय छात्रों से मूल पाठ पर अपने पुनर्विचार आमंत्रित कराये जा सकते हैं अथवा सम्पूर्ण पाठ का सारांश लिखवाया जा सकता है। यह कार्य व्यक्तिगत आधार पर प्रत्येक छात्र को दिया जा सकता है। पुनर्विचार अथवा सारांश लिखवाते समय छात्रों की टिप्पणी और उसकी राय दोनों को लिखवाना चाहिए। इससे उनमें विषय का विश्लेषण करने तथा उसके गुण—दोषों को तौलने की क्षमता का विकास होगा। इससे छात्र लेखन में भी पारंगत होंगे तथा उसकी ज्ञान वृद्धि के साथ कौशलों में भी वृद्धि होगी। वे विषय को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझने का प्रयास करेंगे तथा अपनी राय देने से पूर्व उस मूल पाठ का मन में विश्लेषण करेंगे। इससे उनमें चिंतन तथा मनन क्षमता का विकास होगा और वे किसी विषय को कई दृष्टिकोणों से समझने का प्रयास करेंगे।

पुनर्विचार (रिव्यू) का अर्थ— रिव्यू को हिंदी में पुनरावलोकन, पुनर्विचार या समीक्षा भी कहा जाता है। इसका आशय फिर से विचार करने, तथ्यों का स्मरण करने, उनकी समीक्षा करने तथा महत्वपूर्ण निष्कर्षों तक पहुँचने से है। रिव्यू के माध्यम से शिक्षक अपने पाठ को तैयार कर पुनः प्रमुख बिन्दुओं पर विचार करता है और यह जानने का प्रयास करता है कि कौन—सा प्रकरण छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है, कितने पाठ पढ़ा दिए गए हैं और कितने शेष रह गये हैं। रिव्यू शिक्षक को यह भी बताता है कि—उसके शिक्षण में क्या—क्या दोष रह गये हैं और उन्हें कैसे सुधारा जा सकता है।

रिव्यू की विशेषताएँ—ये निम्नलिखित हैं—

(1) इसमें अनौपचारिकता अधिक रहती है। (2) छात्र और शिक्षक दोनों ही सक्रिय रहते हैं। (3) आंतरिक मूल्यांकन में उपयोगी होता है। (4) उच्च कक्षाओं के लिए प्रभावकारी है। (5) छात्रों को

पुस्तकालय में पढ़ने की आदत विकसित होती है। (6) इसके माध्यम से शिक्षक अपने उद्देश्य प्राप्ति में सफल हो जाते हैं। (7) शोध कार्यों में अत्यन्त उपयोगी है। (8) किसी भी तथ्य की समीक्षा की जा सकती है। (9) यह ज्ञान को स्थायी बनाने में सहायक है। (10) विद्यार्थियों में संश्लेषण–विश्लेषण की क्षमताओं का विकास होता है।

मूल पाठ का सारांश–विषय आधारित लेखन के लिए छात्रों से मूल पाठ का सारांश लिखवाना चाहिए। यह कार्य छात्रों को व्यक्तिगत तौर पर कराना चाहिए। सारांश लिखवाते समय छात्रों की टिप्पणी और उनकी उस विषय पर राय भी पूछनी चाहिए इससे छात्र उस मूल पाठ को बहुत अच्छी तरह से पढ़ेंगे अन्यथा न तो वे उसका सारांश लिख पायेंगे और न ही इसके विषय में कोई टिप्पणी अथवा अपनी राय दे पायेंगे।

सारांश लिखने के लिए छात्रों को निम्नलिखित निर्देश दिए जाने चाहिए–

(1) मूल पाठ को दो से तीन बार अच्छी तरह से पढ़ें।

(2) तत्पश्चात् इसमें महत्वपूर्ण विषयों तथा संवादों को रेखांकित करें।

(3) इसके पश्चात् पुनः उस पाठ को पढ़ें यह देखने के लिए कि कहीं कोई महत्वपूर्ण संदेश या घटना छूट तो नहीं गयी है।

(4) इसके पश्चात् सभी रेखांकित वाक्यों को क्रम में शृंखलाबद्ध करें और सारगर्भित शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने शब्दों में उसका संक्षिप्त सार लिखे। पाठ का उद्देश्य, संदेश तथा महत्वपूर्ण घटनाएँ सार में अवश्य सम्मिलित करें। अंत में उस मूल पाठ पर टिप्पणी लिखे और अपनी राय भी लिखे।

छात्रों को यह कार्य व्यक्तिगत रूप से देना चाहिए जिससे सभी छात्र अपनी योग्यता तथा क्षमता के अनुसार अपने पढ़ने–लिखने तथा संवाद के कौशलों का विकास कर सके और उस पर विशेष रूप से चिंतन तथा मनन कर सकें। इस प्रकार मूल पाठ उसे याद भी हो जायेगा और उसकी बोधगम्यता भी बढ़ जायेगी।

प्रश्न 8. मानचित्र के प्रकारों को समझाते हुए मानचित्र का प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए ? समझाइए।

उत्तर–मानचित्र के प्रकार–

(1) प्राकृतिक मानचित्र–इसमें जलवायु, मृदा, वन, क्षेत्रों, संसाधनों, वर्षा आदि को प्रकट करते रहना चाहिए।

(2) राजनैतिक मानचित्र–राजनैतिक मानचित्र में देश और स्थानों का राजनैतिक विभाजन दिखाया जाता है।

(3) आर्थिक मानचित्र–आर्थिक मानचित्र में देश में फसलों का फैलाव का वितरण दिखाया जाता है।

(4) सामाजिक मानचित्र–इसमें देश की जन–सांख्यिकीय बंटन दिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसे भली–भाँति समझने के लिए साक्षरता दर, भाषा, जनजातियाँ इत्यादि को मानचित्रों पर दिखाया जाता है।

(5) ऐतिहासिक मानचित्र–इसमें शासन (साम्राज्यों) की सीमाएँ, पर्यटकों द्वारा अपनाए जाने वाले मार्ग, युद्ध के स्थान, राजनीतिक संधियाँ आदि दिखाई जाती हैं।

प्रश्न 9. मानचित्र का प्रयोग कैसे करें ?

उत्तर–मानचित्र का प्रयोग–इनका प्रयोग निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता हैं–

(1) मानचित्र को बहुत सघन नहीं बनाना चाहिए क्योंकि इससे मानचित्र की स्पष्टता व बोधगम्यता समाप्त हो जाती है।

(2) मानचित्र इतना बड़ा अवश्य होना चाहिए कि कक्षा के सभी स्थलों से उसे स्पष्ट रूप में देखा जा सके।

(3) मानचित्र आसानीपूर्वक समझा जा सके इसके लिए यह जरूरी है कि उसमें जो संकेत प्रयोग किये जायें, वह छात्रों को बता दिया जाय।

(4) जिस मापन प्रणाली का प्रयोग मानचित्र में किया गया हो, उसकी भी जानकारी बच्चों को दी जानी चाहिए।

(5) मानचित्र का प्रयोग उचित ढंग से यथास्थल किया जाना चाहिए। इसे पाठ्य–वस्तु के एक अभिन्न रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए।

(6) मानचित्र को उपयुक्त स्थान पर टाँगना चाहिए। इसे श्यामपट्ट पर नहीं टाँगना चाहिए।

(7) मानचित्र की शुद्धता सदैव बनी रहनी चाहिए।

(8) उस पर किसी भी वस्तु या स्थान को दर्शाने हेतु संकेतक का प्रयोग करना चाहिए।

प्रश्न 10. जीवनी के तत्व एवं विशेषताओं को समझाइए। **(जबलपुर 2016)**

उत्तर–जीवनी के तत्व–

(1) घटना–जीवनी का अपना स्वयं एक इतिहास होता है। इसका वास्तविकता से सम्बन्ध होता है। इसीलिए लेखक पूरे इतिहास को न लिखकर केवल महत्वपूर्ण घटनाओं को ही लिखता है।

(2) चरित्र–जीवनी लेखक द्वारा लिखे जाने वाले विषय का चरित्र–नायक केवल वही व्यक्ति होता है जिसने देश, जाति या इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण कार्य किया हो।

(3) देशकाल–देशकाल का जीवनी में बड़ा महत्व होता है। जीवनी में देशकाल का प्रत्यक्ष चित्रण नहीं होता है। जब लेखक नायक से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख करता है तब देशकाल अथवा वातावरण स्वत: ही उभरकर सामने आ जाता है।

(4) भाषा–शैली–जीवनी की भाषा–शैली घटनाओं के चयन, विश्लेषण और उसके प्रस्तुतीकरण के आधार पर होनी चाहिए।

जीवनी की विशेषताएँ–

(1) ऐतिहासिक सत्यता–जीवनी को इतिहास की दृष्टि से सत्य होना चाहिए, नहीं तो उसे प्रामाणिक नहीं माना जाएगा।

(2) तटस्थता–जीवनी लेखक को तटस्थ रहना आवश्यक होता है, क्योंकि लेखक यदि तटस्थ नहीं रहेगा तो सही तथ्य सामने नहीं आ सकेंगे।

(3) वैज्ञानिकता–जीवनी लेखक को चाहिए कि सामग्री का चयन और उसका विश्लेषण वैज्ञानिक आधार पर करे।

(4) मनोदशा का विश्लेषण–जीवनी में नायक की मनोदशा का भी वर्णन होना चाहिए और यह तभी सम्भव है जब लेखक इतना सामर्थ्यवान हो कि वह नायक की मन:स्थिति का समग्र दृष्टि से विश्लेषण कर सके।

(5) साहित्यिकता–जीवनी में साहित्यिकता भी होनी चाहिए, क्योंकि जीवनी एक साहित्यिक विधा है।

प्रश्न 11. आत्मकथा के प्रकारों को समझाइए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर–आत्मकथा में मानव जीवन का वृतांत उसके प्रत्येक शब्द में व्यक्त होता है। समाज के जिस क्षेत्र का व्यक्ति होगा, तद्नुरूप उसकी आत्मकथा होगी। **डॉ. गोविंद त्रिगुणायन** ने इसे तीन वर्गों में बाँटा हैं–

(1) धार्मिक प्रवृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथा–धार्मिक प्रवृत्ति के लोगों की आत्मकथाएँ धर्म प्रधान होती हैं। **उदाहरण**–वियोगी हरि कृत 'मेरा जीवन प्रवाह', हरिभाऊ उपाध्याय कृत 'साधना के पथ पर' आदि।

(2) राजनीतिक प्रवृत्ति प्रधान व्यक्तियों की आत्मकथा– राजनीतिक नेताओं का जीवन एक संघर्ष का जीवन होता है। उनके जीवन में विभिन्न द्वन्द्व, उतार–चढ़ाव, उत्थान–पतन आता जाता

रहता है। **उदाहरण**– राजनैतिक पुरुषों में प्रमुख महात्मा गाँधी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू है।

(3) साहित्यकारों के जीवन की आत्मकथा–साहित्यकार के आत्मकथात्मक वर्णनों में एक प्रकार की कलात्मक अभिव्यक्ति रहती है और सुरभि भी हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने भी अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं। **उदाहरण**– डॉ. श्यामसुन्दर दास कृत मेरी आत्म–कहानी, पाण्डेय बेचन शर्मा कृत 'अपनी खबर' आदि।

प्रश्न 12. रचना, निबंध, पत्र, एकांकी के माध्यम से लेखन कौशल का विकास किस प्रकार किया जा सकता है ? (जबलपुर 2019)

अथवा, **निबंध की परिभाषा दीजिए तथा निबंध लिखने के आवश्यक बिंदुओं की विवेचना कीजिए।** (उज्जैन 2021)

उत्तर–रचना शिक्षण का उद्देश्य है– बालकों में वह क्षमता उत्पन्न करना जिसके आधार पर वे अपने भावों को शुद्ध भाषा में व्यक्त कर सकें। रचना का अर्थ है– सजाना या सँवारना अथवा किसी बात या विषय पर क्रमबद्ध विचार प्रस्तुत करना। रचना मौलिक अभिव्यक्ति को लिखित रूप में व्यक्त करने का साधन है। इस दृष्टि से लिखित अभ्यास की सामग्री में वाक्य रचना का बड़ा महत्व है। छोटी कक्षाओं में बालक मौखिक रूप से अपने विचार सरलता से व्यक्त करने लगते हैं, वे लिखित रूप में भी अपने विचार धीरे–धीरे व्यक्त करने लगते हैं। इसके लिए हमें विद्यार्थियों को निम्नलिखित अभ्यास कराना चाहिए जिससे उनमें रचना, निबंध, पत्र, एकांकी आदि विधाओं का विकास हो सके–

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कराना– यह एक ऐसा अभ्यास है जो प्रारंभिक कक्षाओं से बड़ी कक्षाओं तक सरलता से विद्यार्थियों से करा सकते हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं में इस अभ्यास के निम्न लाभ होंगे–

(1) बालकों को व्याकरण के व्यावहारिक ज्ञान का अभ्यास हो जाता है।
(2) बालक पूर्ण एवं सार्थक वाक्यों की रचना कर सकेंगे।
(3) बालक अपनी बोध शक्ति का परिचय दे सकते हैं।

(2) वाक्य प्रयोग– शब्द से सार्थक वाक्य रचना करने का अभ्यास भी प्रारंभिक कक्षाओं से बड़ी कक्षाओं तक दिया जा सकता है। शब्द का सही–सही अर्थ समझकर उसके भाव बोध की अभिव्यक्ति हेतु यह अभ्यास सामान्यतया किया जाता है। **जैसे**– महान देशभक्त, बुद्धिमान, परिश्रम आदि शब्दों को वाक्य प्रयोग हेतु दिया जाए और यह ज्ञात किया जाय कि छात्र उक्त शब्द विशेष का सही–सही अर्थ जानते हुए सार्थक वाक्य में उसका प्रयोग कर सकेगा अथवा नहीं।

(3) अनेक शब्दों में उपयुक्त शब्द चुनाव–अनेक शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर वाक्यपूर्ति कर वाक्य रचना का अभ्यास किया जा सकता है। जैसे–..... में कई प्रकार की पुस्तकें होती हैं। (घर/दुकान)

(4) निबंध–निबंध की परिभाषा–इकाई 1 में, लघु उत्तरीय प्रश्न क्रमांक 61 का उत्तर देखिये।

निबंध लेखन के आवश्यक बिंदु–विभिन्न प्रकार की रचनाओं के अभ्यासों से बालक अपने विचारों को क्रमबद्ध और सुसम्बद्ध रूप में चित्रित कर लिख पाने की क्षमता प्राप्त करने के बाद निबंध लिखने का अभ्यास करता है। निबंध एक क्रमबद्ध लेख है। इसके लिए कोई एक शिल्प विधान निर्धारित नहीं किया जा सकता। इसे नियमों में भी नहीं बाँधा जा सकता पर सुगठित निबंध लिखने के लिए तीन बातों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए–

(1) विषय निरूपण या भूमिका। (2) विषय–वर्णन, व्याख्या, विवेचन एवं (3) निष्कर्ष या उपसंहार।

निबंध लेखन, पत्र, कहानी, एकांकी आदि सभी साहित्यिक गतिविधियों का निरंतर अभ्यास कराने से विद्यार्थियों को हम लेखन कौशल से जोड़ सकते हैं। उन्हें विभिन्न नए–नए तरीके सीखा सकते हैं। निबंध लेखन एक कला है। अतः निबंध लिखने से पूर्व निबंध के विषय को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए तथा उससे सम्बन्धित जानकारी भी इकट्ठा कर लेनी चाहिए। निबंध की प्रस्तावना

और उपसंहार प्रभावशाली ढंग से लिखना चाहिए। भाषा सरल, सुबोध, व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध और मुहावरेदार हो सकती है।

निबंध में विद्यार्थी को अपने मन या विचारों का निरूपण भी यथास्थान करना चाहिए। प्रस्तावना के रूप में विषय का संक्षिप्त परिचय देना चाहिये। विद्यार्थी को विषय का विश्लेषण कर उस पर समुचित प्रकाश डालना चाहिये। समाप्ति या निष्कर्ष में पहले कही गई बातों को सार रूप में सुंदर ढंग से लिखना चाहिये।

(5) पत्र–लेखन–रचना शिक्षण के अभ्यास के लिए पत्र–लेखन का भी बड़ा महत्व है। पत्र–लेखन हेतु यद्यपि विशेष रूपरेखा बालकों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। सबसे पहले बालकों को पत्र लेखन से सम्बन्धित सभी बातें बताई जाती हैं। फिर उन्हें लिखने के लिए कहा जाता है। संबोधन, अभिवादन, संकेत, पत्र लिखने का स्थान, दिनांक आदि के बारे में बता दिया जाता है। शेष भाग को उन्हें अपने मन से लिखने हेतु कहा जाता है। अभ्यास हो जाने पर वे अपने बराबरी वाले लोगों तथा अपने से बड़े लोगों जैसे– माता–पिता, चाचा, मामा आदि को पत्र लिखने का प्रयास करते हैं। थोड़ा अभ्यास होने के बाद उन्हें आवेदन पत्र और व्यावसायिक पत्रों के लेखन का अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार पहले निजी (व्यक्तिगत पत्र) पत्रों, फिर आवेदन पत्रों तथा बाद में व्यावसायिक पत्रों की रूपरेखा बताकर उनका अभ्यास कराया जाना चाहिए। छोटी कक्षाओं में व्यक्तिगत पत्रों का अभ्यास तथा प्रधानाध्यापक को अवकाश के आवेदन–पत्र, माध्यमिक कक्षाओं में व्यक्तिगत–पत्र और आवेदन–पत्रों के साथ व्यावसायिक पत्रों का भी अभ्यास कराया जाना चाहिये। माध्यमिक कक्षाओं के बाद उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में सभी प्रकार के पत्रों, आवेदन पत्रों का अभ्यास कराया जाना चाहिये।

(6) कहानी लेखन–कहानी लेखन के सामान्यतया तीन प्रचलित रूपों को अभ्यास के रूप में बालकों के समक्ष रखा जाता हैं–

(1) किसी चित्र के आधार पर कहानी लिखना।

(2) दी गई संक्षिप्त रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखना।

(3) मौखिक सुनाई गई कहानी को लिखने हेतु कहना।

बालकों के समक्ष कहानी का प्रारूप अत्यंत संक्षेप में प्रस्तुत कर साधारण वाक्य में उस कहानी विशेष को लिखने के लिए दिया जा सकता है।

बालक के सामने किन्हीं चित्रों के माध्यम से भी समझाकर कहानी लिखने को कहा जा सकता है। कहानी के पात्रों के नाम भी बनाकर कहानी को सजीव, मौलिक और रोचक बनाया जा सकता है। सुनाई गई कहानी को भी मन से लिखने के लिए कहा जा सकता है। कहानी–लेखन के अभ्यास में बालक क्रिया के भूतकाल का ही मुख्यतः प्रयोग करेगा। किसी मूल कहानी को ध्यान सें पढ़कर कहानी लिखने का अभ्यास भी छात्र कर सकते हैं।

(7) एकांकी–एकांकी एक ऐसी पूर्ण नाटकीय रचना है, जिसमें मानव–जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक समस्या और एक भाषा की अभिव्यक्ति होती है। एकांकी एक अंक वाला नाटक जैसा होता है, पर इसकी कला व शैली नाटक से भिन्न होती है। एकांकी की कथावस्तु का आकार छोटा होता है और पात्रों की संख्या कम होती है। इसके संवाद छोटे पर प्रभावपूर्ण होते हैं। इसमें अभिनेता के सभी गुण विद्यमान होते हैं। एकांकी की रचना कथा, चरित्र और संवाद तीन तत्वों से की जाती है। एकांकी लेखन का अभ्यास बड़ी कक्षाओं के छात्रों को कराया जा सकता है। लेकिन छोटी कक्षाओं में कराने में परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रचना, निबंध, पत्र, कहानी, एकांकी आदि के माध्यम से लेखन कौशल का विकास कर सकते हैं।

प्रश्न 13. कहानी कथन विधि से आप क्या समझते हैं ? इसके गुण और दोषों की चर्चा कीजिए। (उज्जैन 2019; जबलपुर 21)

अथवा, **कहानी विधा पर अपने शब्दो में एक लेख लिखिए।** (जबलपुर 2021)

उत्तर– कहानी कथन विधि एक महत्वपूर्ण विधि है। इसके माध्यम से शिक्षक छात्रों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। इस विधि के द्वारा छात्रों के मन में कल्पना एवं कौतूहल जाग्रत होता है। यह विधि मनोवैज्ञानिक विधि है, इसके द्वारा बालकों में नैसर्गिक शक्तियों का विकास किया जाता है। इसके द्वारा शिक्षक छात्रों के लिए पाठ्यवस्तु को सरल एवं रोचक बनाने में समर्थ होता है। अत: छात्रों को महापुरुषों, समाज सुधारकों, लेखकों, संतों, अन्वेषकों एवं वैज्ञानिकों की कहानियाँ सुनानी चाहिए।

कहानी कथन विधि के गुण–ये निम्न हैं–

(1) इस विधि द्वारा छात्रों को सरलता से ज्ञान प्रदान किया जा सकता है, क्योंकि बालकों में कौतूहल तथा कल्पनाप्रियता अधिक होती है।

(2) इस विधि में छात्र अपने आंतरिक भावों को प्रकाशित करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

(3) इस विधि द्वारा छात्रों में कल्पना, स्मरण एवं चिंतन शक्तियों का विकास किया जाता है।

(4) इसके द्वारा छात्रों में उत्तम नागरिक एवं सामाजिक गुणों का विकास होता है।

(5) कहानी को क्रमानुसार सुनाना चाहिए।

(6) कहानी उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए।

(7) कहानी मौखिक रूप से सुनानी चाहिए। बीच–बीच में प्रश्न भी करते रहना चाहिए ताकि छात्र रुचि एवं ध्यान से सुनें एवं ज्ञान प्राप्त करें।

(8) शिक्षक को स्पष्ट और प्रभावशाली शैली में कहानी को सुनाना चाहिए।

(9) कहानी सुनाते समय विषयवस्तु को बोधगम्य बनाने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए।

(10) कहानी अर्थपूर्ण तथा वास्तविक होना चाहिए।

कहानी कथन विधि के दोष–इनके दोष निम्नलिखित हैं–

(1) यह विधि बड़ी कक्षाओं के लिए उपयोगी नहीं है।

(2) कहानी की निष्क्रियता छात्रों को निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

(3) कहानी कथन शैली से रहित शिक्षक द्वारा इसका प्रयोग इसको अप्रभावी एवं हास्यपद बनाने में सहायक है।

(4) कहानी में कल्पना की अधिकता रहती है, इससे बच्चों में अविश्वसनीयता का भाव उत्पन्न होता है।

प्रश्न 14. पत्र लेखन से आप क्या समझते हैं ? पत्रों के प्रकार एवं महत्व को समझाइए। (जबलपुर 2019, 21)

अथवा, **पत्रों के कितने प्रकार होते हैं ? किसी एक प्रकार के पत्र का उदाहरण दीजिए।** (जबलपुर 2021)

उत्तर–पत्र लेखन–लिखित रूप से अपने मन के भावों एवं विचारों को प्रकट करने का माध्यम 'पत्र' है। 'पत्र' का शाब्दिक अर्थ है, ऐसा कागज जिस पर कोई बात 'लिखी' अथवा 'छपी' हो। पत्र के द्वारा व्यक्ति अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाता है, हम पत्र को अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी कह सकते हैं।

पत्रों के प्रकार–ये दो प्रकार के हैं– (1) अनौपचारिक पत्र एवं (2) औपचारिक पत्र।

(1) अनौपचारिक पत्र– अनौपचारिक पत्राचार उनके साथ किया जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत सम्बन्ध होता है। इसे व्यक्तिगत पत्राचार भी कहा जाता है। इन पत्रों में व्यक्तिगत सुख-

दुख का ब्यौरा और विवरण होता है। ये पत्र अपने परिवार के लोगों, मित्रों और निकट सम्बन्धियों को लिखे जाते हैं। अनौपचारिक पत्र के अंतर्गत बधाई पत्र, धन्यवाद पत्र, शुभकामना पत्र, निमंत्रण पत्र, संवेदना पत्र आदि आते हैं।

(2) औपचारिक पत्र—यह पत्राचार उन लोगों के साथ किया जाता है जिनसे हमारा व्यक्तिगत सम्बन्ध नहीं होता है। इसमें औपचारिकता और कथ्य संदेश ही मुख्य होता है। इसमें तथ्यों और सूचनाओं को ही अधिक महत्व दिया जाता है। औपचारिक पत्रों के अन्तर्गत आवेदन पत्र, व्यावसायिक पत्र, सरकारी समाचार, अव्यावसायिक संस्थाओं के साथ पत्राचार आदि आते हैं।

पत्रों का महत्व—जिस प्रकार कुंजियाँ बॉक्स खोलती हैं, उसी प्रकार पत्र हृदय के विभिन्न पटलों को खोलते हैं। मनुष्य की भावनाओं की स्वाभाविक अभिव्यक्ति पत्राचार से भी होती है। निश्छल भावों और विचारों का आदान–प्रदान पत्रों द्वारा ही सम्भव है। व्यावहारिक जीवन में यह वह सेतु है, जिससे मानवीय सम्बन्धों की परस्परता सिद्ध होती है। अतएव पत्राचार का बड़ा महत्व है। पत्रों के महत्व को हम इस प्रकार समझ सकते हैं—

(1) पत्र साहित्य की वह विधा है, जिसके द्वारा मनुष्य समाज में रहते हुए अपने भावों एवं विचारों को दूसरों तक सम्प्रेषित करना चाहता है, इसके लिए वह पत्रों का सहारा लेता है। अतः व्यावसायिक, सामाजिक, कार्यालय आदि से सम्बन्धित अपने भावों एवं विचारों को प्रकट करने में पत्र अत्यन्त उपयोगी होते हैं।

(2) पत्र मित्रों एवं परिजनों से आत्मीय सम्बन्ध एवं सम्पर्क स्थापित करने हेतु उपयोगी होते हैं। पत्र के माध्यम से मनुष्य प्रेम, सहानुभूति, क्रोध आदि प्रकट करता है।

(3) कार्यालय एवं व्यवसाय के सम्बन्ध में मुद्रित रूप में प्राप्त पत्रों का विशेष महत्व होता है। मुद्रित रूप से प्राप्त पत्रों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

(4) छात्र जीवन में भी पत्रों का विशेष महत्व है। स्कूल से अवकाश लेना, फीस माफी, स्कूल छोड़ने, स्कॉलरशिप पाने, व्यवसाय चुनने, नौकरी प्राप्त करने में पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

(5) पत्र सामाजिक सम्बन्धों को मजबूत करने का माध्यम है। पत्रों की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि कभी–कभी पत्र भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज भी बन जाते हैं।

प्रश्न 15. शिक्षण कौशल के अर्थ, परिभाषा एवं विशेषताओं को समझाइए।

(जबलपुर 2019; उज्जैन 22)

उत्तर—शिक्षण कौशल का आशय—कक्षा में शिक्षक जो कुछ पढ़ाता है या जो कुछ बताता है या जिस प्रकार का व्यवहार करता है, उसी को शिक्षण कौशल कहते हैं अर्थात् शिक्षण कौशल सामान्य व्यवहारों का एक समूह है, जो शिक्षण प्रक्रिया का निर्माण करते हैं। शिक्षण एक विज्ञान है। इस आधार पर प्रशिक्षण द्वारा अच्छे शिक्षक तैयार किये जा सकते हैं। उनमें शिक्षण के लिए आवश्यक कौशलों को विकसित किया जा सकता है। इन्हीं कौशलों का उपयोग कर कक्षा में प्रभावी शिक्षण कर अच्छे शिक्षक बन सकते हैं। अतः शिक्षक प्रशिक्षण में इन कौशलों का विकास महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

शिक्षण कौशल की परिभाषाएँ—

(1) डॉक्टर बी.के. पासी के अनुसार— "शिक्षण–कौशल, छात्रों के सीखने के लिए सुगमता प्रदान करने के विचार से सम्पन्न की गई सम्बन्धित शिक्षण क्रियाओं का समूह है।"

(2) डॉ. कुलश्रेष्ठ के अनुसार— "शिक्षण कौशल शिक्षक के हाथ में वह शस्त्र है, जिसका प्रयोग करके शिक्षक अपनी कक्षा शिक्षण को प्रभावी एवं सक्रिय बनाता है एवं कक्षा की अंतःक्रिया में सुधार लाने का प्रयास करता है।"

(3) एम.एल.गेज के अनुसार— "शिक्षण कौशल वह अनुदेशन प्रक्रियाएँ हैं जिन्हें अध्यापक अपनी कक्षा शिक्षण में प्रयोग करता है। यह शिक्षण क्रम की विभिन्न क्रियाओं से सम्बन्धित होता है। जिन्हें शिक्षक अपने कक्ष अंतःक्रिया में लगातार उपयोग करता है।"

(1) शिक्षण कौशल स्पष्ट चिंतन, छात्रों की रुचि, कार्यशालाओं का विकास, बुद्धि का विकास एवं व्यक्तित्व संतुलन को विकसित करने में सहायक सिद्ध होता है।

(2) शिक्षकों द्वारा शिक्षण कौशल के आयोजन से पता चलता है कि शिक्षक शिक्षण क्रिया के सम्पादन में कितने सजग और जागरूक हैं।

(3) शिक्षण कौशल, शिक्षण कार्यों का विश्लेषण करने में सहायक होता है, इनके द्वारा शिक्षण की क्रियाओं का विश्लेषण करते हुए उनकी संरचना पर विशेष ध्यान दिया जाता है, शिक्षण क्रिया के संचालन की शिक्षण कौशल एक महत्वपूर्ण इकाई होती है।

(4) शिक्षण कौशल की कार्यकुशलता में वृद्धि होती है, जिससे उन्हें शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में सहायता मिलती है, और वे सरलता से अपने शिक्षण शैक्षिक उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

(5) शिक्षण कौशल कक्षा शिक्षण व्यवहार की इकाई से संबंधित होती हैं।

(6) शिक्षण कौशल शिक्षण प्रक्रिया तथा व्यवहार से सम्बन्धित है।

(7) शिक्षण कौशल शिक्षा के विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

(8) शिक्षण कौशल से समस्त अंतःक्रिया को सक्रिय बनाया जाता है।

(9) शिक्षण कौशल शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होते हैं।

(10) शिक्षण कौशल प्रभावी शिक्षण में सहायक होते हैं।

प्रश्न 16. प्रमुख शिक्षण कौशल के प्रकारों को समझाइए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर–शिक्षण कौशल के प्रकार–शिक्षण के निम्न प्रकार हैं–

(1) प्रश्न कौशल, (2) व्याख्या कौशल, (3) दृष्टांत उदाहरण कौशल, (4) पुनर्बलन कौशल, (5) उद्दीपन कौशल एवं (6) श्यामपट्ट कौशल।

(1) प्रश्न कौशल–शिक्षण कौशल में प्रश्न कौशल की भूमिका महत्वपूर्ण है। छात्रों को प्रभावपूर्ण प्रश्न कौशल में निपुण होना आवश्यक है। इन कौशलों में निम्नलिखित घटक होते हैं–

(1) संकेत देना, (2) विस्तृत सूचना प्राप्ति, (3) पुनःकेन्द्रीकरण, (4) पुनः प्रेषण एवं (5) आलोचनात्मक सजगता।

(2) व्याख्या कौशल–व्याख्या कौशल में भाषा की स्पष्टता, शब्दों की सुसंगता और भावाभिव्यक्ति का होना आवश्यक है। व्याख्या कौशल में निम्न वांछित व्यवहारों का होना आवश्यक है–

(1) विचारों का सतत् प्रवाह, (2) प्रत्येक कथन तार्किकता एवं स्पष्टता, (3) भाषा में प्रवाह होना एवं (4) कथनों में तारतम्यता।

(3) दृष्टांत/उदाहरण कौशल–इस कौशल से कथानक को और अधिक बोधगम्य और स्पष्ट बनाया जाता है। इसमें शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों तरह की क्रियाएँ आती हैं। शाब्दिक दृष्टांत के उदाहरण में कथा, कहानी, कविता तथा अशाब्दिक में मॉडल, चार्ट, प्राकृतिक दृश्य आदि आते हैं। दृष्टांत उदाहरण कौशल में निम्न क्षमताओं का विकास होना चाहिए–

(1) सिद्धांत, विचार या तथ्य से संबंधित समुचित उदाहरण या दृष्टांत का चयन करने की क्षमता का होना।

(2) दृष्टांत/उदाहरण को कक्षा में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की क्षमता।

(4) पुनर्बलन कौशल–पुनर्बलन कौशल दो तरह के होते हैं। सकारात्मक पुनर्बलन और नकारात्मक पुनर्बलन तथा सकारात्मक पुनर्बलन भी दो प्रकार के होते हैं। एक सकारात्मक शाब्दिक पुनर्बलन जैसे–बहुत सुंदर, अति उत्तम आदि और दूसरा अशाब्दिक पुनर्बलन जैसे– हाव–भाव, हाथों के इशारे आदि।

(5) उद्दीपन कौशल–शिक्षक द्वारा छात्रों के ध्यान को आकर्षित कर पाठ्यवस्तु पर केन्द्रित कराने के लिए उद्दीपन कौशल का प्रयोग किया जाता है। इस कौशल में अग्र तत्व होते हैं–

संचलन, हाव–भाव, इंगित, वाक परिवर्तन, केन्द्रण, अंतःक्रिया, शैली परिवर्तन, विराम एवं मौखिक दृश्य।

(6) श्यामपट्ट कौशल–सूक्ष्म शिक्षण के विभिन्न कौशलों का एक अंग है। शिक्षण प्रशिक्षण के दौरान सूक्ष्म शिक्षण के अंतर्गत छात्रों के इस कौशल का विकास किया जाता है। इस कौशल के बिना कोई भी छात्र उत्तम शिक्षक नहीं बन सकता। एक शिक्षक को श्यामपट्ट कौशल का ज्ञान होना आवश्यक है। श्यामपट्ट कार्यों में तीन पक्षों पर विशेष ध्यान रखा जाता है–

(1) श्यामपट्ट कार्य में स्वच्छता–श्यामपट्ट कार्य में वाक्य सीधी रेखा में होनी चाहिए। इन वाक्यों के बीच की दूरी एक जैसी होनी चाहिए और साथ ही साथ यह ध्यान रखना चाहिए कि एक शब्द के ऊपर दूसरा शब्द न लिखा जाए।

(2) लेख की स्पष्टता–श्यामपट्ट पर लिखे गए अक्षर एक–दूसरे के बराबर और समान दूरी पर लिखे जाए।

(3) श्यामपट्ट कार्यों की उपयुक्तता–श्याम पट्टकार्य में शब्दों अथवा वाक्यों का लेख होता है और रेखाचित्र बनाकर उसकी व्याख्या की जाती है। श्यामपट्ट पर कार्य करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी होती है–

(1) लिखित सामग्री संक्षिप्त हो, (2) स्पष्ट हो, (3) ध्यान आकर्षित करें, (4) रंगीन चॉक का जरूरत के अनुसार उपयोग करें एवं (5) मुख्य बिन्दुओं को रेखांकित करना।

प्रश्न 17. वाद–विवाद के बारे में आप क्या जानते हैं ? वाद–विवाद के रूपों का वर्णन कीजिए। **(उज्जैन 2015)**

उत्तर–वाद–विवाद पद्धति में शिक्षक स्वयं या छात्रों की सहायता से किसी प्रकरण या समस्या का निश्चय किया जाता है। तत्पश्चात् छात्र आपस में वाद–विवाद करने के लिए स्वयं विषय–सामग्री का संकलन करते हैं। वाद–विवाद पद्धति में छात्रों को अपने विचारों, भावों तथा अनुभवों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता रहती है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों ही हो सकता है। इसमें शिक्षक छात्रों का पथ–प्रदर्शन करते हैं।

वाद–विवाद के प्रकार– वाद–विवाद दो रूपों में प्रयोग में लाए जाते हैं–

1. औपचारिक वाद–विवाद–इसमें प्रत्येक कार्य विधिवत् ढंग से किया जाता है। इसका संचालन पूर्व निर्धारित नियमों या विशिष्ट पद्धति के अनुसार किया जाता है। इस प्रकार के वाद–विवाद के लिए छात्र स्वयं में से सभापति, मंत्री तथा अन्य पदाधिकारी चुनते हैं। वाद–विवाद में भाग लेने वाले सभी छात्र इन पदाधिकारियों के निर्देशन में समस्त कार्यों को करते हैं। इसमें शिक्षक एक साधारण सदस्य के रूप में कार्य करता है।

औपचारिक वाद–विवाद के निम्नलिखित रूप प्रचलित हैं–

(1) पैनल या चर्चा–जहाँ अधिक संख्या के कारण आपसी वाद–विवाद नहीं हो सके वहाँ पैनल चर्चा का उपयोग किया जा सकता है। इसमें पैनल के सदस्य अपने–अपने दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं और अपने मत का प्रतिपादन करते हैं। इस प्रकार इसमें भाषण को स्थान नहीं दिया जाता है। पैनल चर्चा की समाप्ति पर श्रोतागण अपनी शंकाओं को प्रस्तुत करते हैं। इन शंकाओं का निवारण पैनल सदस्यों द्वारा किया जाता है।

(2) परिसंवाद–इसमें भी पैनल की भाँति चार से आठ तक छात्र किसी विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। इसमें प्रत्येक सदस्य को 5 से 25 मिनट अपने विचारों को प्रस्तुत कर लेते हैं तब उसके बाद प्रश्न आमंत्रित किए जाते हैं। ये सदस्यगण ही इन प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

2. अनौपचारिक वाद–विवाद–इसके संचालन हेतु किन्हीं निर्धारित नियमों या किसी पूर्व निर्धारित पद्धति की आवश्यकता नहीं है। इसमें छात्र या भाग लेने वाले किसी प्रकरण या समस्या पर

स्वतन्त्रतापूर्वक विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। इस प्रक्रिया का काफी प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः इसमें शिक्षक ही नेतृत्व करते हैं।

प्रश्न 18. एक आदर्श शिक्षक के गुणों को लिखिए। **(जबलपुर 2019, 22)**

उत्तर–एक आदर्श शिक्षक के निम्नलिखित गुण होने चाहिए–

(1) उत्तम स्वास्थ्य–एक आदर्श शिक्षक के लिए आवश्यक है कि उसका स्वास्थ्य उत्तम हो, क्योंकि तभी वह अपने कर्त्तव्यों को भली प्रकार निभा सकेगा अन्यथा नहीं। यदि उसका स्वास्थ्य अच्छा होता है तो उसका मस्तिष्क भी स्वस्थ होगा। प्रभावशाली शिक्षण एक स्वस्थ अध्यापक ही कर सकता है। जब उसका स्वास्थ्य अच्छा होगा तो उसका शरीर और व्यक्तित्व देखने में आकर्षक प्रतीत होगा जिसका प्रभाव बालकों पर भी अच्छा पड़ेगा और तब वे वैसा ही सम्मान भी देंगे।

(2) बुद्धिमान–अध्यापक को बुद्धिमान तथा अध्यापन प्रेमी होना चाहिए। यह जन्मजात गुण है जिसके पास यह गुण हो वही इस व्यवसाय को ग्रहण करे, अन्यथा नहीं, क्योंकि उसको सदैव अपने बुद्धि का ही प्रयोग करना पड़ता है।

(3) सहानुभूति–शिक्षक में सहानुभूति का होना आवश्यक है। सहानुभूति का अर्थ दूसरे के सुख के साथ सुख और दुःख का अनुभव करना होता है। यदि अध्यापक बालकों के साथ सदा सहानुभूति व्यवहार रखेगा तो छात्र भी उसको सम्मान देंगे और प्रत्येक आज्ञा का पालन करेंगे।

(4) धैर्य और सहनशीलता–अध्यापक को बड़ा धैर्यवान और सहनशील होना चाहिए। उसे हर बालक की समस्याओं को समझकर धैर्य और सहनशीलता के साथ समाधान करना चाहिए।

(5) भाषा–अध्यापक की भाषा सरल, मधुर और स्पष्ट होनी चाहिए जिसे छात्र अच्छी तरह से समझ सकें।

(6) सामाजिकता–अध्यापक को सामाजिक होना चाहिए। समाज से अलग तो कोई नहीं रह सकता। अध्यापक समाज का नेता है और भावी नागरिकों का निर्माता है। इसलिए उसे अपने आपको समाज के निकट रखना चाहिए।

(7) नेतृत्व की योग्यता–अध्यापकों में नेतृत्व का गुण होना चाहिए किन्तु उसका नेतृत्व राजनीतिक नेतृत्व न हो बल्कि उसका नेतृत्व उसके चरित्र, प्रभावपूर्ण वाणी, अनुशासनप्रियता, सामाजिकता एवं दूसरों से प्राप्त श्रद्धा तथा आदर पर आधारित हो। अध्यापक को छात्रों की कठिनाइयों को दूर करना चाहिए।

(8) समय की नियमितता–अध्यापकों को प्रत्येक क्षेत्र में आदर्श होना चाहिए। उन्हें स्वयं विद्यालय में समय से आना चाहिए। क्योंकि यदि उनमें स्वयं समय का पाबंद नहीं होगा तो विद्यार्थियों में समय की नियमितता का विकास नहीं कर पाएंगे।

(9) देशभक्ति–अध्यापकों में देशभक्ति की प्रबल भावना होनी चाहिए, क्योंकि उसे राष्ट्र का निर्माता कहा जाता है। उसका बड़ा व्यापक दृष्टिकोण होना चाहिए।

(10) निष्पक्षता–अध्यापक को निष्पक्ष होना चाहिए। कक्षा में हर प्रकार के छात्र पढ़ते हैं। अध्यापक को इन सभी को एक दृष्टि से देखना और न्यायपूर्ण व्यवहार करना चाहिए जिससे कक्षा में अनुशासन बना रहे।

प्रश्न 19. विद्यार्थियों में हम सृजनात्मक क्षमता का विकास किस तरह से कर सकते हैं ?

(जबलपुर 2015)

उत्तर–वर्तमान समय में सर्वांगीण विकास के लिए छात्रों में सृजनात्मक चिंतन के विकास की प्रमुख रूप से आवश्यकता है। सृजनात्मक चिंतन शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए सबसे आवश्यक है। हम विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिंतन का विकास निम्नलिखित तरीकों से कर सकते हैं–

(1) पाठ्यक्रम संबंधी उपाय–छात्रों में सृजनात्मक चिंतन का विकास करने के लिए पाठ्यक्रम का स्वरूप सृजनात्मक गतिविधियों और विचारों से परिपूर्ण होना चाहिए। जिससे छात्र उस पाठ्यक्रम के आधार पर प्रत्येक विषय एवं तथ्यों पर सोचने के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

प्रत्येक पाठ के अंत में छात्रों को शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए तथा यह शिक्षा चिंतन एवं मनन से संबंधित होना चाहिए। पाठ्यक्रम द्वारा छात्रों को इस प्रकार की गतिविधियों को करने के लिए प्रेरणा देनी चाहिए जो कि चिंतन एवं तर्क से सम्बन्धित हो तथा छात्रों को विविध प्रकार से सोचने के अवसर उपलब्ध कराए। इसमें विचारकों, वैज्ञानिकों और चिंतकों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण घटनाओं एवं प्रसंगों को सम्मिलित करना चाहिए।

(2) सृजनात्मक शिक्षकों की व्यवस्था—शिक्षकों को अपनी शिक्षण तकनीक में परिवर्तन करना चाहिए तथा छात्रों को सृजनात्मक कार्यों में सहयोग देना चाहिए। छात्रों के समक्ष छोटी–छोटी समस्याओं का प्रस्तुतीकरण करना चाहिए जिससे छात्र उसके समाधान के लिए सृजनात्मक तथ्यों की व्याख्या कर सकें।

(3) सामूहिक कार्य—कक्षा में सामूहिक कार्य करने से सृजनात्मक चिंतन में वृद्धि होती है, क्योंकि किसी भी कार्य को छात्र सामूहिक विचार–विमर्श के बाद ही उचित रूप से सम्पन्न कर पाते हैं। इस कार्य में छात्र पृथक्–पृथक् रूप से सूचनाओं तथा तथ्यों का संकलन करते हैं और अंत में एक निश्चित विचार पर पहुँचते हैं। इस कार्य से छात्रों में कार्य करने के कौशल तथा तार्किक चिंतन का विकास होता है, इससे छात्रों के ज्ञान का विस्तार भी संभव होता है।

(4) कला संबंधी खेल—विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की कलाओं और चित्र बनाने में भी बहुत रुचि होती है। इस आधार पर छात्रों में मानसिक विचार कौशल एवं सृजनात्मक चिंतन के स्तर को जाना जा सकता है तथा उसमें अपेक्षित सुधार किया जा सकता है। इसके लिए विद्यार्थियों को शिक्षकों द्वारा कला–संबंधी खेल का प्रशिक्षण देना चाहिए।

(5) खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ—छात्रों को खेल खेलना बहुत ही अच्छा लगता है। यदि छात्रों से विभिन्न खेलों के बारे में बातचीत की जाए तो उनके विचारों एवं कार्यों में तीव्रता आ जाती है, उनका शरीर एवं मस्तिष्क तेजी से चलने लगता है। उन्हें सृजनात्मक खेल खिलाने चाहिए जिससे उनमें सृजनात्मकता का विकास हो।

प्रश्न 20. सर्वोत्तम लेखन शैली की सावधानियों को बताइए।

उत्तर—सर्वोत्तम लेखन शैली—सर्वोत्तम लेखन कला का विकास छात्राध्यापकों में प्रशिक्षण काल में करना आवश्यक है। आज का छात्राध्यापक ही कल का भावी शिक्षक है। जब शिक्षक द्वारा छात्रों के समक्ष सर्वोत्तम लेखन को प्रदर्शित किया जाएगा तो सामान्य रूप से छात्र में भी सर्वोत्तम लेखन कला का विकास किया जा सकेगा। सर्वोत्तम लेखन शैली के विकास हेतु निम्नलिखित उपाय एवं सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए–

(1) अक्षरों की बनावट पर ध्यान—लेखन शैली के लिये अक्षरों की बनावट प्रमाणिक रूप में होनी चाहिए। यदि किसी अक्षर को विकृत स्वरूप में बनाया जाता है तो वह दो प्रकार की हानियाँ पहुँचाता है। प्रथम वह अर्थ का अनर्थ कर सकता है। पढ़ने वाला उसको गलत समझता है। द्वितीय वह लेखन कला को त्रुटिपूर्ण बना सकता है। अतः छात्राध्यापकों द्वारा प्रत्येक अक्षर को उसके मूल स्वरूप में बनाना चाहिये। इससे पहले यदि उसके द्वारा अक्षरों को बनाने का स्वरूप त्रुटिपूर्ण है तो उसमें धीरे–धीरे सुधार लाना चाहिये।

(2) अंकों एवं चिन्हों की बनावट—छात्राध्यापक को अपने शैक्षिक जीवन में किसी भी विषय को पढ़ाने का अवसर मिल सकता है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर छात्राध्यापकों को गणित एवं विज्ञान लेखन पर भी ध्यान देना चाहिये। अंकों की बनावट एवं गणित चिन्हों का प्रदर्शन भी लेखन में उचित प्रकार से करना चाहिये।

(3) भाषायी चिन्हों का उपयोग—लेखन शैली के लिये विराम चिन्हों का सार्थक उपयोग करना चाहिये क्योंकि जब लेखन शैली में विराम चिन्ह का उपयोग होता है तो इसको पृथक् रूप में पढ़ा

जाता है। भाषायी चिन्हों के उचित एवं सार्थक उपयोग से लेखक जो भी तथ्य कहना चाहता है, पठन करने वाला व्यक्ति वही समझता है। इस प्रकार की शैली से लेखन सर्वोत्तम बनता है।

(4) सार्थक शब्दों का प्रयोग—लेखन शैली में सार्थक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जिससे लेखक के भाव एवं विचार स्पष्ट हो सकें। लेखन में निरर्थक शब्दों का प्रयोग करके उसको अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ाना चाहिए।

(5) सरल एवं बोधगम्य भाषा—लेखन शैली को प्रभावी बनाने के लिए सरल एवं बोधगम्य भाषा का उपयोग करना चाहिए। छात्राध्यापकों द्वारा जो भी टिप्पणी लेखन किया जाता है, उसकी भाषा का स्तर एक सामान्य मानक के अनुरूप होना चाहिए।

(6) साहित्यिक शब्दों का उपयोग—लेखन शैली को प्रभावशील एवं उपयोगी बनाने के लिए साहित्यिक शब्दों का उपयोग करना चाहिए। साहित्यिक शब्दों के उपयोग से वाक्यों में प्रभावशीलता उत्पन्न होती है। जो लेखक की शैली एवं योग्यता को प्रकट करते हैं।

प्रश्न 21. चयनित विषय–वस्तु में समाहित सर्वोत्तम वर्णनात्मक वृतांतों में कौन–कौन सी प्रमुख विशेषताएँ होनी चाहिए ? समझाइए। **(छतरपुर 2021)**

उत्तर—वर्णनात्मक वृतान्तों का स्वरूप जितना अधिक सर्वोत्तम रूप में होगा छात्रों की संलग्नता का स्तर उतना ही अधिक व्यापक होगा। अतः विषय–वस्तु का चयन करने से पूर्व चयनित वर्णनात्मक वृतांतों के प्रत्येक पक्ष पर पूर्ण ध्यान देना आवश्यक हैं। सर्वोत्तम वर्णनात्मक वृतांतों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(1) वर्णनात्मक वृतांतों में उद्देश्यों का समावेश—भाषायी चयनित विषय–वस्तु में जो भी वृतांत सम्मिलित किये जाये उनका उद्देश्य पूर्ण होना आवश्यक हैं। इसमें भाषायी उद्देश्यों के साथ–साथ जीवन संबंधी उद्देश्यों का समावेश किया जाना चाहिए। जैसे—एक वृतांत की भाषा सरल एवं बोधगम्य है। जिससे पठन एवं समझने में सरलता होती है तथा उसके माध्यम से छात्रों को मात्रा संबंधी अनेक सूचनाएँ प्राप्त होती है क्योंकि वृतांत का संबंध मात्रा से है। इस प्रकार के ज्ञान का उपयोग छात्र भावी जीवन में कर सकेंगे। इन वृतांतों से छात्रों की कक्षा–कक्ष संलग्नता सर्वोत्तम रूप में होगी।

(2) वर्णनात्मक वृतांतों में जीवन मूल्य—वर्णनात्मक वृतांतों का संबंध सदैव जीवन मूल्यों से होना चाहिए। चयनित विषय–वस्तु में उन वृतांतों को ही स्थान दिया जाना चाहिए जिससे छात्रों में जीवन मूल्य विकसित होते हैं।

(3) वर्णनात्मक वृतांतों में सामाजिक मूल्य—चयनित विषय–वस्तु में उन वर्णनात्मक वृतांतों को स्थान देना चाहिए जो कि सामाजिक मूल्यों एवं सामाजिक गतिविधियों से संबंधित होना चाहिए।

(4) वर्णनात्मक वृतांतों में सांस्कृतिक मूल्य—वर्णनात्मक वृतांतों में सांस्कृतिक गतिविधियों का वर्णन किया जाना चाहिए। इससे छात्रों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का ज्ञान प्राप्त होता है।

(5) वर्णनात्मक वृतांतों में ऐतिहासिकता—छात्रों को जब कक्षा–कक्ष में ऐतिहासिक तथ्यों से संबंधित वर्णनात्मक वृतांत पढ़ने को मिलते हैं तो छात्रों की रुचि एवं संलग्नता में व्यापकता से वृद्धि होती है।

(6) वर्णनात्मक वृतांतों में नैतिक मूल्य—चयनित विषय–वस्तु में उन वृतांतों का समावेश करना चाहिए जिनमें नैतिक घटनाओं का व्यापक वर्णन हो। इन घटनाओं से छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है तथा कक्षा–कक्ष में उनकी संलग्नता में वृद्धि होती है।

(7) वर्णनात्मक वृतांतों में जीवन कौशल—चयनित विषय–वस्तु के अंतर्गत इन वृतांतों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जिसमें जीवन कौशलों का उपयोग हुआ है। जैसे—एक बालक ने अपनी सूझ–बूझ एवं निर्णयन योग्यता से ग्रामीणों को विपत्ति से बचा लिया या किसी रेल दुर्घटना को रोक दिया।

(8) वर्णनात्मकता वृतांतों में सकारात्मकता—चयनित विषय–वस्तु के अंतर्गत उन वृतांतों को ही विषय–वस्तु का भाग बनाया जाना चाहिए जिससे कि छात्रों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो तथा छात्र अपने जीवन में आशावादी बन सकें।

प्रश्न 22. नोट्स बनाने के स्टेप्स (चरणों) को बताइए। **(छतरपुर 2021)**

***अथवा*, एक पाठ का समग्र अर्थ निकालने में नोट कैसे मदद करता है ? साधारण नोट बनाने के चरणों को लिखिए।** **(भोपाल 2022)**

***अथवा*, नोट्स बनाते समय किन–किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए? (जबलपुर 2022)**

उत्तर—स्टडी (अध्ययन) नोट्स सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सारांश होता है तथा स्टडी नोट्स स्वयं की भाषा में लिखे जाते हैं, जिससे आसानी से समझ में आ जाते हैं। स्टडी नोट्स इस प्रकार से तैयार किए जाने चाहिए जिससे महत्वपूर्ण जानकारी को आसानी से याद कर सके। किताबी भाषा में न लिखकर स्वयं की भाषा तथा सरल रूप में स्टडी नोट्स लिखना चाहिए।

नोट्स बनाते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) स्टडी नोट्स संक्षिप्त व सार में लिखें—स्टडी नोट्स इस तरह से लिखे जाने चाहिए कि उसमें महत्वपूर्ण जानकारी शामिल हो जाए। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि नोट्स विस्तृत रूप में न लिखकर संक्षिप्त रूप में लिखना चाहिए। स्टडी नोट्स में पूर्ण सिलेबस का सार शामिल हो जाना चाहिए। कक्षा में शिक्षक कई ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी बनाते हैं जो पुस्तकों में नहीं मिलती हैं। इसलिए कक्षा में शिक्षक द्वारा बतायी गई महत्वपूर्ण जानकारी को लिख लें और उन्हें भी स्टडी नोट्स में शामिल करें।

(2) हर टॉपिक को क्रम में लिखें—प्रत्येक टॉपिक को क्रम से लिखें। जिससे विषय–वस्तु की तारतम्यता बनी रहे और आपको याद करने में आसानी रहे।

(3) पुस्तकों तथा शिक्षक द्वारा दी गई महत्वपूर्ण जानकारी नोट करें—स्टडी नोट्स में महत्वपूर्ण जानकारी ही नोट करें। साथ ही शिक्षक द्वारा बताई गई महत्वपूर्ण जानकारी को भी नोट कर लें जिससे आपको नोट्स बनाने में ही बहुत मदद मिलती है।

(4) चार्ट, चित्र तथा सारणी का प्रयोग करें—नोट्स को रोचक बनाने के लिए जिन टॉपिक्स की जानकारी को चार्ट, चित्र तथा सारणी के द्वारा लिखा जा सकता है, उनकों चार्ट, चित्र तथा सारणी के द्वारा नोट कर लें। असल लिखित सामग्री को लगातार पढ़ने से बोरियत होने लगती है इसलिए अपने स्टडी नोट्स को चार्ट, चित्रों तथा सारणियों का जहाँ आवश्यक हो वहाँ पर प्रयोग करें। चार्ट, चित्रों व सारणी को एक बार में देखने पर ही आसानी से याद हो जाती है।

(5) स्टडी नोट्स को स्वयं की भाषा तथा सरल रूपों में लिखें—पुस्तकों में बहुत बार कठिन (क्रिटिकल) भाषा का प्रयोग किया जाता है इसलिए पुस्तकों से नोट्स बनाते समय हुबहू नकल नहीं करना चाहिए। पहले पुस्तक में टॉपिक को ठीक तरह से पढ़कर समझ लें तथा पढ़ते समय महत्वपूर्ण जानकारी को रेखांकित (अंडरलाइन) कर लें। पुस्तक में महत्वपूर्ण जानकारी तथा शिक्षक द्वारा बतायी गई महत्वपूर्ण जानकारी को स्टडी नोट्स बनाते समय स्वयं की भाषा में लिखें।

(6) हर विषय तथा टॉपिक को एक नोटबुक में लिखें—स्टडी नोट्स बनाते समय इस बात का ध्यान रखें कि नोट्स लूज पेपर्स में न बनाएँ। लूज पेपर्स में बनाए गए नोट्स को संभालना मुश्किल होता है। हमेशा हर विषय और एक ही टॉपिक से संबंधित नोट्स एक ही नोटबुक में तैयार करें। नोटबुक को आप आसानी से कहीं भी रख सकते हैं और कहीं भी ले जा सकते हैं।

प्रश्न 23. आत्मकथात्मक आख्यान से आप क्या समझते हैं ? **(उज्जैन 2021)**

उत्तर—आत्मकथात्मक आख्यान वे कहानियाँ हैं, जिन्हें लोग अपने जीवन की घटनाओं के बारें में याद रखते हैं और अक्सर बताते हैं। आत्मकथात्मक आख्यान महत्वपूर्ण व्यक्तिगत घटनाओं की यादों को संदर्भित करते हैं।

आख्यान का सामान्य अर्थ है–कथन, निवेदन, कथा–कहानी, पुरावृत्त कथन, ऐतिहासिक पौराणिक कथा/कथा–कथानक, आख्यायिका, वृतांत ये सभी आख्यान के ही पर्याय है। आत्मकथात्मक आख्यान के पाठों में मौलिकता तथा लेखक के निजी जीवन दर्शन और दृष्टिकोणों का परिचय मिलता है। प्रायः आत्मकथात्मक पाठ किसी महान नेता, विचारक, लेखक, कार्यकर्ता द्वारा लिखे जाते हैं।

आत्मकथात्मक आख्यान/आत्मकथात्मक पाठ्यों की विशेषताएँ–

(1) व्यक्तित्व का बाहुल्य–इन पाठ्यों में लेखक के व्यक्तित्व, निजी जीवन की घटनाओं, उसकी बचपन से लेकर वर्तमान आयु तक की यात्रा, उसके विश्वास, आदर्श, संघर्ष, सफलता, असफलता, उसके जीवन के अनुभव, घटनाक्रम को देखने का नजरिया आदि।

(2) आत्मनिष्ठता के साथ वस्तुनिष्ठता–आत्मकथात्मक में आत्मनिष्ठता तो रहती ही है, किंतु वस्तुनिष्ठता की उपेक्षा नहीं होती। घटना, वृतांत, देशकाल, विभिन्न चरित्रों, विचारधाराओं परिस्थितियों का भी ईमानदारी चित्रण होता है। केवल आत्मनिष्ठता आत्मकथा का बाधक तत्व है, वस्तुनिष्ठता ही उसे प्रामाणिकता, रोचक तथा लोकप्रियता प्रदान करती हैं।

(3) सरलता, प्रवाह तथा गूढ़ता का योग–आत्मकथात्मक में जीवंतता, निरंतरता, तारतम्यता, क्रमबद्धता होती है, साथ ही लेखन को जीवन दृष्टि, विचार, मूल्य व आदर्श गूढ़ता तथा दर्शन की गंभीरता भी उत्पन्न करती है।

(4) उद्देश्यपरकता–आत्मकथात्मक में केवल किस्सागोई न होकर सदृश्य विचारों को उजागर करती हैं। लेखक आत्मकथात्मक हेतु जिन घटनाओं, परिस्थितियों के लेखन का चयन करना है, उनके पीछे उसकी अन्तर्दृष्टि व विचार निहित होते हैं।

(5) वास्तविक परिस्थिति का चित्रण–आत्मकथाओं में कल्पनात्मक घटनाओं का चित्रण न होकर ठोस वास्तविक परिस्थितियों में घटित घटनाक्रम चित्रित होते हैं। किस्से कहना आत्मकथा का उद्देश्य न होकर वास्तविक परिस्थिति में आत्मतत्व का प्रकाशन इसमें निहित होता हैं। वास्तविकता की चित्रण के साथ लेखक की वैचारिकता भी समांतर रूप से गतिशील रहती है।

(6) मौलिकता–आत्मकथात्मक विवरण लेखक के मौलिक घटना–चक्र और मौलिक विवादों को उजागर करते हैं। लेखक का मौलिक जीवन दर्शन भी उसकी कथा से झलकता है।

(7) निजी भाषा शैली–आत्मकथात्मक लेखक की निजी भाषा शैली, अपने वैशिष्टय को व्यक्त करती लेखनी को अभिव्यक्ति देती है। लेखक की विनोदप्रियता तथा व्यंग्य लेखन की गंभीरता, लेखक की सरलता, लेखक की भावनात्मक या द्रवित करने वाली वृत्ति, घटनाओं के प्रति लेखक का आक्रोश उसकी आत्मकथा की भाषा शैली से स्पष्ट होता है।

आत्मकथात्मक के पठन से पाठक छात्रों में आत्माभिव्यक्ति कौशल, आत्मालोचना, दूसरों व स्वयं के प्रति अभिवृत्ति का निर्माण, स्वयं की क्षमताओं पर विश्वास, कथ्य को विभिन्न भाषा–शैलियों में प्रस्तुत करने का सामर्थ्य आदि योग्यताएँ विकसित होती है।

प्रश्न 24. अपने पढ़े हुए किसी उपन्यास के मुख्य चरित्र की चर्चा कीजिए। (भोपाल 2022)

उत्तर–प्रेमचंद कृत 'गोदान' हिन्दी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास है। गोदान की रचना कृषक जीवन से जुड़ी समस्याओं का चित्रण करने के लिए की गई है। गोदान उपन्यास में होरी, मेहता, रायसाहब, गोबर, धनिया और मालती इत्यादि है। गोदान उपन्यास का मुख्य पात्र होरी है।

होरी का चरित्र चित्रण–गोदान का प्रधान पात्र होरी अवध प्रांत के एक ग्राम बेलारी का पाँच बीघे का कृषक हैं। प्रेमचंद जी ने होरी के रूप में एक अमरपात्र की सृष्टि की है जो भारतीय कृषक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता हैं। होरी के चरित्र में उपलब्ध दो गुण है–

(1) उसकी शाश्वत् गरीबी एवं (2) परिश्रम की दृढ़ इच्छा शक्ति।

होरी, रायसाहब का **आसामी** है और भाग्यवादी है। होरी निहायत ईमानदार, परोपकारी एवं सीधा–साधा कृषक हैं, किंतु उसमें भी वे दुर्गुण है जो एक सामान्य कृषक में होते हैं। वह पक्का स्वार्थी भी है, बाँस बेचते समय कुछ पैसों के लिए अपने भाई का हिस्सा मारने हेतु बन्तोर से सौदा करता है। अन्य किसानों की भाँति वह भी रूई में बिनौले मिला देता है, सन को गीला कर देता है तथा घर में कुछ रुपये होते हुए भी रुपये न होने की बात कहकर झूठ बोलता है। होरी की धर्मभीरुता, भाग्यवादिता और व्यवहार कुशलता एक साधारण कृषक जैसी ही है। आर्थिक अभाव से ग्रस्त होरी कर्ज एवं ऋणग्रस्तता के बोझ से दबा हुआ है और शोषण का शिकार है। होरी जानता है कि किसानी से पेट नहीं भरता, किंतु किसानी छोड़कर मजदूरी करने में उसकी प्रतिष्ठा को ठेस लगती है। अपने खेत–खलिहान एवं घर–द्वार से उसे लगाव है, वह मानवीय गुणों से सम्पन्न है। निश्चय ही होरी प्रेमचंद की अमर सृष्टि है और जब तक प्रेमचंद का नाम रहेगा तब तक लोग होरी को भी स्मरण रखेंगे।

प्रश्न 25. पाठ योजना का अर्थ, विशेषताएँ एवं महत्व को बताइए।

उत्तर–पाठ योजना का सामान्यतः तात्पर्य है कक्षा में प्रवेश करने के पूर्व पाठ संबंधी का विधिवत् ब्यौरा तैयार करना। मौखिक रूप से शिक्षण में तथ्यों का संकलन नहीं रहता है तथा त्रुटियों की सम्भावना रहती है। पाठ–योजना के द्वारा पाठ वैज्ञानिक तरीके से आगे अग्रसर होता है। कब, क्या, कैसे, कितने समय में प्रस्तुत करना है इसका पूरा–पूरा शिक्षक को पाठ योजना के द्वारा रहता है। पाठ योजना के द्वारा शिक्षक को यह ज्ञान रहता है कि छात्रों ने क्या पढ़ लिया है आगे किस दिशा में उनका मार्गदर्शन किया जाये और क्या पढ़ाया जाए। इस प्रकार जो कुछ पढ़ाना है या अर्जित करना है उसका विवरण पाठ–योजना में निहित रहता है। एक उत्तम शिक्षक की सफलता अच्छी प्रकार से तैयार की गयी पाठ–योजना पर निर्भर होती है।

पाठ योजना की विशेषताएँ–(1) पाठ योजना लिखित रूप में होनी चाहिए।

(2) पाठ योजना में सामान्य एवं पाठ से संबंधित विशिष्ट उद्देश्यों का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना चाहिए।

(3) पाठ्यगत क्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख होना चाहिए।

(4) पाठ्यगत संबंधी कठिनाई को किस प्रकार दूर किया जायेगा। इसका वर्णन पाठ–योजना में होना चाहिए।

(5) पाठ योजना का निर्माण बालक की अभिरुचि, प्रवृत्ति, योग्यता एवं क्षमतानुसार होना चाहिए।

(6) पाठ योजना उत्तम शिक्षण विधियों पर आधारित होनी चाहिए।

(7) पाठ योजना में प्रत्येक स्थल पर अपेक्षित समय दिया जाना चाहिए।

(8) पाठ योजना प्रेरणाप्रद एवं प्रोत्साहित करने वाली होनी चाहिए।

(9) पाठ को सरल, सहज एवं रुचिकर बनाने हेतु इसमें सहायक सामग्री का प्रयोग होना चाहिए।

(10) पाठ योजना बालक के जीवन से संबंधित होनी चाहिए।

(11) पाठ योजना सुंदर एवं स्पष्ट होनी चाहिए तथा सोपानों में विभक्त होनी चाहिए।

(12) पाठ योजना में अभ्यास के प्रश्नों के साथ–साथ गृह कार्य का भी उल्लेख होना चाहिए।

(13) पाठ योजना में परिस्थिति से तारात्मय स्थापित करने की क्षमता होनी चाहिए।

(14) पाठ योजना में लचीलापन होना चाहिए।

(15) पाठ योजना में आलोचना के लिए स्थान होना चाहिए।

पाठ योजना की आवश्यकता एवं महत्व–(1) उत्तम अध्यापन के लिए पाठ योजना आवश्यक है।

(2) पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार कार्य करने से शिक्षक का समय बर्बाद नहीं होता है।

(3) पाठ योजना के निर्धारण से विषय का विधिवत् गठन एवं संचालन होता है। शिक्षक के सम्मुख यह समस्या नहीं आती की पाठ्यक्रम का कोई भाग बिना पढ़ाए हुए रह जाए।

(4) पाठ योजना शिक्षक को प्रभावशाली बनाने के लिए आवश्यक है।

(5) पाठ योजना शिक्षण कार्य को नियमित एवं व्यवस्थित बनाती है तथा शिक्षक भी नियमित संगठित रूप से कार्य करने का अभ्यस्त हो जाता है।

(6) यह शिक्षण के दोषों का परिष्कार करती हैं।

(7) इससे शिक्षक एवं छात्रों में आत्मविश्वास की भावना का विकास होता है।

(8) पाठ योजना अधिगम के लिए अनुकूल वातावरण का सृजन करती है।

(9) सहायक सामग्रियों के माध्यम से पाठ को सरल, रोचक एवं प्रभावशाली बनाती हैं।

(10) पाठ योजना शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होती हैं।

(11) कक्षा अनुशासन में सहायक सिद्ध होती है।

(12) इसके माध्यम से पाठ के सभी महत्वपूर्ण पक्षों पर प्रश्न पूछ लिए जाते हैं।

(13) पाठ योजना के माध्यम से शिक्षण क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित रूप में सोपानों के रूप में आगे बढ़ता है।

(14) शिक्षण में कौन–कौन सी समस्या आयेगी इसका ज्ञान शिक्षक को पूर्व में होने से उनके निवारण का प्रबंध कर लेता है।

(15) पाठ योजना से परम्परागत शिक्षण के दोषों को दूर किया जा सकता है।

(16) पाठोपरांत छात्रों को अंत में सारांश मिल जाता है जिसकी विषय–वस्तु सरल, सहज, ग्राह्य हो जाती है।

प्रश्न 26. दिए गए मूल पाठ का सारांश लिखने के सोपान सोदाहरण समझाइए।

(भोपाल 2022)

उत्तर–किसी पाठ का सारांश या सार लिखने की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण या सोपान हैं–

(1) मूल सामग्री का बोध। (2) मूलभाव की पहचान। (3) संबंधित भावों की पहचान। (4) मूलभाव को स्पष्ट करने वाली व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की पहचान। (5) मूलभाव को प्रभावी बनाने वाले तत्वों अर्थात् कथाओं, अलंकारों, प्रसिद्ध कथनों और रचनात्मक तथा व्यास शैली की पहचान। (6) मूलभाव को स्पष्ट करने के लिए विस्तार देने वाले वाक्यों को हटाते हुए सार लेखन।

सबसे पहले हम मूल सामग्री को एक बार, दो बार या ज्यादा बार पढ़कर उसे समझते हैं और पता लगाते हैं कि उसमें क्या कहा गया है इसे पढ़ने और समझने के दौरान हम जान लेते हैं कि सामग्री का मूलभाव क्या हैं और उससे संबंधित अन्य भाव कौन–से हैं।

सारांश लिखने की विधि–अवतरण के मूल भाव को जीवित रखते हुए शब्दों को कम करना भी एक कला है। इसकी दो विधियाँ हैं–(1) त्याग विधि, (2) परिवर्तन विधि।

(1) त्याग विधि–इसके अंतर्गत शब्दों को छोड़ना होता है अर्थात् जो शब्द काम के नहीं हैं, जिन्हें हटा देने पर भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता, उसे त्याग विधि कहते हैं इसमें लेखक का परिचय, पता आदि नहीं लिखा जाता। किसी बात को यदि उदाहरण आदि देकर समझाया गया है तो उन्हें छोड़ दिया जाता है। केवल मूल संदेश ही लिया जाता है। लोकोक्ति, अलंकार आदि का प्रयोग भी त्याग दिया जाता है। वाक्यों को संकुचित करके लिखा जाता है। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से काम चलाया जाता है। भाषा में चुस्ती और कसाव अपेक्षित है, जिससे संक्षेपण सरल, स्वाभाविक, सुंदर और प्रभावी लगे। इन बातों का कार्यालय में पत्रों, टिप्पणियों, रिपोर्टों आदि को संक्षेप में लिखते समय भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

(2) परिवर्तन विधि—इस विधि में मूल अवतरण की भाषा को ज्यो–का–त्यो न उतार कर कुछ परिवर्तन करना अपेक्षित है, जैसे–संधि और समास का प्रयोग करके शब्दों को कम किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'पीला वस्त्र पहनने वाले कृष्ण भगवान' के लिए हम केवल 'पीताम्बर' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं या फिर 'राजा का पुत्र' के लिए मात्र 'राज पुत्र' कह सकते हैं। इसी प्रकार कई शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग कर वाक्यों को छोटा किया जा सकता है। जैसे 'जो ईश्वर को न मानता हो' उसे 'नास्तिक' कहकर काम चलाया जा सकता है या फिर जिस पर मुकदमा चल रहा हो वह 'अभियुक्त' कहलाता है। अच्छे आचरण वाला' 'सदाचारी' और 'जो पढ़ा जा सके' वह 'पठनीय' आदि।

सारांश—लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए–

(1) सार लिखते समय सबसे पहले मूल अनुच्छेद या विषय–वस्तु को एकाधिक बार ध्यानपूर्वक पढ़ लेना चाहिए। इससे मूल अनुच्छेद का भावार्थ समझ में आ जाएगा तब तक सार लेखन की शुरुआत नहीं करनी चाहिए जब तक कि मूल विषय का भावार्थ समझ में न आ जाए।

(2) मूल अनुच्छेद को पढ़ने के बाद महत्वपूर्ण तथ्यों, बातों तथा विचारों को रेखांकित कर लिया जाना चाहिए। रेखांकन करते समय मूल विषय से संबंधित कोई भी महत्वपूर्ण अंश नहीं छूटना चाहिए।

(3) इसके बाद मूल में व्यक्त किए गए विचारों, भावों तथा तथ्यों को क्रमबद्ध कर लेना चाहिए।

(4) मूल अनुच्छेद का एक–तिहाई में सार करना चाहिए। इसमें संक्षेपक को अपनी ओर से कोई भी तर्क–वितर्क करने तथा किसी अतिरिक्त अंश को जोड़ने की अनुमति या छूट नहीं होती।

(5) सार को अंतिम रूप दिए जाने से पूर्व उसका पहले कच्चा रूप तैयार कर लेना चाहिए और अच्छी तरह से देख लिया जाना चाहिए कि सभी महत्वपूर्ण भावों का अंतर्भाव उसमें हो चुका है या नहीं।

(6) सार तैयार करते समय मूल अनुच्छेद में वर्णित या उल्लेखित कहावते, मुहावरे, वाक् प्रचार तथा अलंकार आदि को हटा देना चाहिए।

(7) सार तैयार करने के बाद उसके लिए सुयोग्य शीर्षक का चयन किया जाना चाहिए।

प्रश्न 27. 'अभिक्रमित अध्ययन' से क्या तात्पर्य है ? **(उज्जैन 2022)**

उत्तर—'अभिक्रमित अनुदेशन' तथा 'अभिक्रमित अधिगम' को एक ही अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है क्योंकि अधिगम की सफलता अनुदेशन पर भी आधारित होती है। शिक्षण की दृष्टि से जब तक अनुदेशी पर ध्यान दिया जाता है, तब तक यह 'अभिक्रमित अनुदेशन' का रूप होता है और जब इन अनुदेशों के आधार पर विद्यार्थी कुछ सीखने का प्रयत्न करता है तो यह 'अभिक्रमित अधिगम' अथवा **'अभिक्रमित अध्ययन'** कहलाता है।

'अभिक्रमित अधिगम' अथवा 'अभिक्रमित अनुदेशन' संप्रत्यय के आविर्भाव का श्रेय बीसवीं सदी के दूसरे दशक में अमेरिकन मनोवैज्ञानिकों को दिया जाता है। सर्वप्रथम इसका स्वरूप 'शिक्षण मशीन' के रूप में देखने को मिलता है जिसका विकास ओहियो स्टेट विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक **सिडनी, एल. प्रेसी** ने 1920 में किया था। इस मशीन की सहायता से विद्यार्थियों के समक्ष प्रश्न एक क्रम में प्रस्तुत किए जाते थे तथा विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया की जाँच भी साथ–साथ हो जाती थी किंतु तत्कालीन परिस्थितियों में उन्हें इस मशीन के संदर्भ में विशेष सफलता नहीं मिली। अतः 1932 में उनका यह कार्य लगभग बंद हो गया।

किंतु बाद में **स्किनर, क्राउडर, मगर, बिलबर्ट** आदि मनोवैज्ञानिकों ने प्रेसी के विचारों को ही आगे बढ़ाया। 'अभिक्रमित' शब्द का अर्थ है–क्रमबद्ध अथवा योजनाबद्ध। इस प्रकार योजनाबद्ध 'अधिगम' अथवा 'अभिक्रमित अधिगम' में विद्यार्थियों के समक्ष विषय–वस्तु को अनेक छोटे–छोटे एवं नियोजित किए गए खण्डों एवं सोपानों में प्रस्तुत किया जाता है। इनकी संरचना में 'शिक्षण सूत्रों का

अनुसरण किया जाता है। इसके द्वारा विद्यार्थी स्वयं ज्ञान अर्जित करता हुआ ज्ञात से अज्ञात की ओर बढ़ता है। इस प्रयास से विद्यार्थी को उसके द्वारा किए गए कार्य की तुरंत पुष्टि भी करा दी जाती है। प्रत्येक पद पर उसे सफलता की अनुभूति करायी जाती है, इससे उसके प्रयास को पुनर्बलन मिलता है। स्वाध्याय की यह प्रक्रिया विद्यार्थी में आत्मविश्वास उत्पन्न करती है।

अभिक्रमित अध्ययन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने हेतु विद्वानों द्वारा दी गई। कुछ परिभाषाएँ यहाँ प्रस्तुत की जा रही है–

(1) रिचमण्ड–"अभिक्रमित अध्ययन उस प्रायोगिक प्रयत्न का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें अध्यापन कौशल को भावी शिक्षण के सिद्धांतों और व्यवहारों में परिवर्तित करने का प्रयास किया जा रहा है।"

(2) सूरुन मार्कले–"अभिक्रमित अध्यापन शिक्षण की प्रक्रियाओं को पुनः प्रस्तुत करने के लिए तारतम्ययुक्त संरचना बनाने की एक प्रणाली है। जिसकी सहायता से हर एक विद्यार्थी में एक मानवीय व्यावहारिक परिवर्तन किया जा सकता है।"

(3) बी.एफ. स्किनर–"अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण की कला तथा सीखने का विज्ञान है।"

अभिक्रमित अधिगम या अध्ययन की विशेषताएँ–

(1) कठिन बात को छोटे–छोटे भागों में बाँटकर विद्यार्थियों के लिए सरल और सुग्राह्य बनाना।

(2) यह व्यक्तिगत तथा पत्राचार द्वारा पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है।

(3) यह स्वशिक्षण की पद्धति है जिसमें पाठ्य–पुस्तक कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयार की जाती है।

(4) यह विद्यार्थियों में अपनी त्रुटियों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा गति का अध्ययन कर मूल्यांकन के अवसर प्रदान करती है।

(5) इसमें शिक्षक की अनुपस्थिति में पाठ्य–वस्तु अत्यंत तार्किक एवं नियंत्रित छोटे खण्डों में बाँटकर विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत की जाती है।

(6) यह दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग न होकर अनुदेशन तकनीकी का एक अंग है।

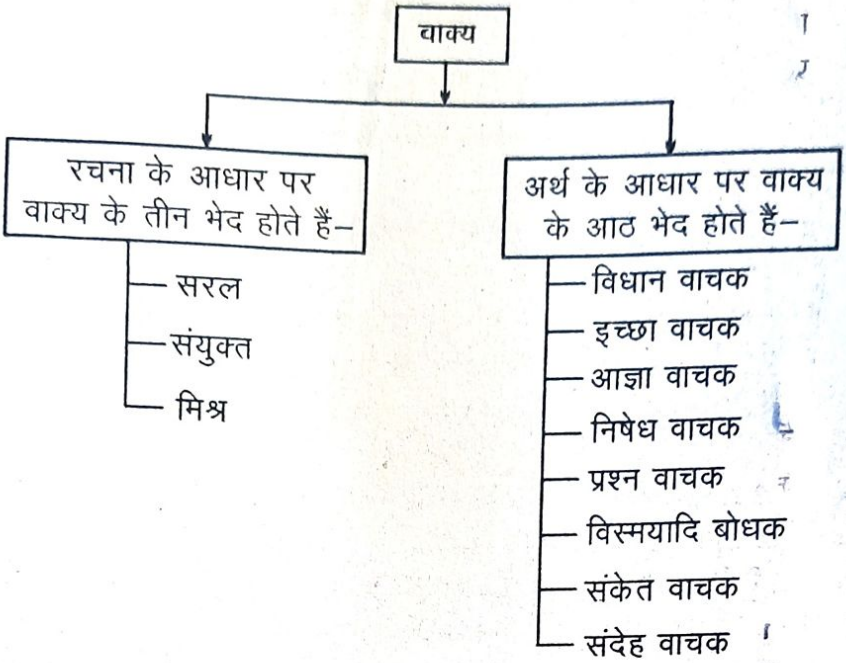
(7) इसमें विद्यार्थी के समय शृंखलाबद्ध विषय–वस्तु इस प्रकार प्रस्तुत की जाती है कि एक खण्ड के समाप्त होने पर नए खण्ड के विषय में जानने की जिज्ञासा विद्यार्थी में बनी रहती है, जैसे- पंचतंत्र, हितोपदेश, रामायण, महाभारत आदि में भी हमें देखने को मिलती है।

प्रश्न 28. फ्लोचार्ट व ट्री–चार्ट का महत्व समझाइए। **(जबलपुर 2022)**

उत्तर–फ्लोचार्ट–यह एक एल्गोरिथम या किसी प्रक्रिया का एक योजनाबद्ध निरुपण है जिसमें किसी समस्या के क्रमशः समाधान होते हैं। प्रवाह चार्ट या फ्लोचार्ट आरेख का सबसे साधारण प्रकार है। फ्लोचार्ट्स का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किसी प्रक्रिया या कार्यक्रम के विश्लेषण, डिजाइन, दस्तावेज या प्रबंधन में किया जाता है। अर्थात् फ्लोचार्ट एक आरेख है जो किसी प्रक्रिया या वर्क फ्लो की कल्पना करता है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रक्रियाओं का अध्ययन, सुधार और संचार करने के लिए फ्लोचार्ट का उपयोग किया जाता है। ये जानकारी को तोड़ने, समझने और फॉलो करने में आसान बनाने के लिए बेहतरीन उपकरण है।

फ्लोचार्ट का महत्व–(1) फ्लोचार्ट किसी समस्या के समाधान को चित्रीय रूप में प्रस्तुत करता है। (2) चित्रीय होने के कारण, इसमें लॉजिक का प्रवाह आसानी से समझ आता है। (3) विभिन्न चरणों का क्रम आसानी से समझा जा सकता है। (4) फ्लोचार्ट में सरल व सामान्य संकेत तथा संक्षिप्त कथन प्रयुक्त होते हैं जो पढ़ने व समझने में आसान होते हैं। (5) कई बार कठिन समाधानों को भी फ्लोचार्ट की मदद से चित्रीय रूप में आसानी से समझाया जा सकता है।

उदाहरणस्वरूप वाक्य के भेद का फ्लोचार्ट यहाँ दिया जा रहा है–



ट्री–चार्ट–ट्री–चार्ट या ट्री आरेख एक लचीला आरेख है जिसमें स्पष्ट क्षमताएँ होती है। इसलिए, इसे वृक्ष विश्लेषण, विश्लेषणात्मक वृक्ष, पदानुक्रम आरेख और व्यवस्थित आरेख के रूप में भी जाना जाता है। वास्तव में, इसका उपयोग आधुनिक प्रबंधन योजन उपकरण के रूप में किया जा रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह उन कार्यों और उप–कार्यों का पदानुक्रम प्रदर्शित कर सकता है जिन्हें पूरा करने की आवश्यकता है।

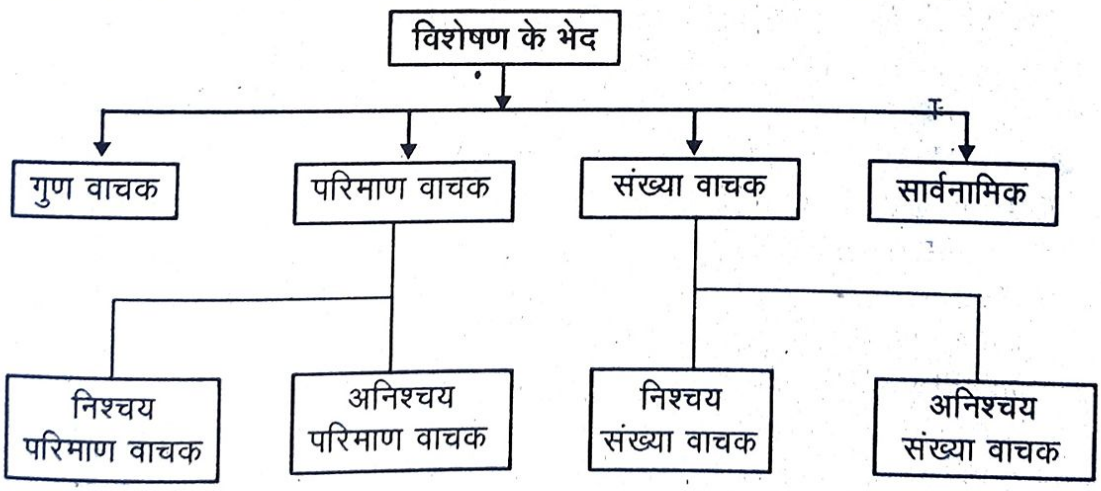
यह मूल रूप से एक आइटम के साथ शुरू होता है, जिसे केन्द्रीय विषय के रूप में भी जाना जाता है, जो शाखाओं में अधिक होता है। इसके अलावा जिनमें से प्रत्येक की अपनी उप–शाखाएँ है। फिर, एक बार जब आप पहले से ही एक आरेख बनाना समाप्त कर लेते हैं, तो आपको एक पेड़ जैसा रूप दिखाई देगा।

ट्री–चार्ट का महत्व–(1) प्रत्येक व्यक्ति ट्री–डायग्राम या चार्ट को आसानी से समझ सकता है।

(2) ट्री–आरेख तब भी काम करता है जब कुछ मान गायब हो। लापता मूल्यों का निर्माण की प्रक्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(3) ट्री–डायग्राम या चार्ट बनाते वक्त डेटा स्केलिंग की कोई समस्या नहीं होती है।

उदाहरणस्वरूप विशेषण के भेद का ट्री आरेख या चार्ट यहाँ दिया जा रहा है–



●●

इकाई 3

पत्रकारिता लेखन से जुड़ना

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. समाचार के अर्थ को परिभाषित कीजिए।

उत्तर—समाचार शब्द अंग्रेजी के 'NEWS' का पर्याय है। NEWS (न्यूज़) शब्द चारों दिशाओं (North, East, West एवं South) के नामों का संक्षिप्त रूप है। इस प्रकार समाचार का संबंध चारों दिशाओं से हो जाता है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने आस–पास के समाज एवं देश–दुनिया की घटनाओं के बारे में जानने को उत्सुक रहता है, यह जानकारी हमें 'समाचार' के अंतर्गत प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में, महत्वपूर्ण घटनाओं एवं गतिविधियों का सही एवं पक्षपातरहित विवरण प्रस्तुत करना ही समाचार है।

प्रश्न 2. समाचार की परिभाषाएँ लिखिए।

उत्तर— समाचार को परिभाषित करते हुए विभिन्न विद्वानों ने परिभाषाएँ दी हैं जो इस प्रकार हैं—

1. मैलविन मैंचर के अनुसार—"वे घटनाएँ, क्रियाएँ या वक्तव्य जो हमें सोचने पर मजबूर करते हैं या दुविधा में डालते हैं, समाचार कहलाते हैं।"

2. चार्ल्स ए. दाना के अनुसार—"समाचार वो कोई भी चीज है जिसके बारे में लोग चर्चा करते हैं।"

3. गेराल्ड जोन्सन के अनुसार—"किसी मंझे हुए समाचार कर्मी को रुचिकर लगने वाली चीज समाचार है।"

प्रश्न 3. समाचार पत्र का विद्यार्थियों के लिए क्या महत्व है ?

उत्तर—विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र का बहुत महत्व है। छात्रों को समाचार पत्र पढ़ने से विभिन्न लाभ मिल सकते हैं। जैसे—अखबार पढ़ने से उनकी शब्दावली बढ़ सकती है। अंग्रेजी सीखने वाले अखबार से अंग्रेजी को और बेहतर बना सकते हैं। विभिन्न प्रकार के सामान्य ज्ञान और नौकरी से संबंधित विभिन्न जानकारी विद्यार्थी वर्ग समाचार के माध्यम से जुटा सकते हैं।

प्रश्न 4. आलेख से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—आलेख वास्तव में लेख का ही प्रतिरूप होता है। यह आकार में लेख से बड़ा होता है। आलेख में 'आ' उपसर्ग लगा है, जो कि यह प्रकट करता है कि आलेख सम्यक् और संपूर्ण होना चाहिए। आलेख गद्य की वह विधा है जो किसी एक विषय पर सर्वांगपूर्ण और सम्यक् विचार प्रस्तुत करती है। आलेख में मुख्य रूप से ज्वलंत मुद्दों, समस्याओं, अवसरों, चरित्र आदि के ऊपर लिखा जाता है। दूसरे शब्दों में, किसी एक विषय पर विचार प्रधान छोटी–सी संयुक्त गद्य रचना को आलेख कहते हैं, इसमें तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक अथवा विचारात्मक सम्पूर्ण जानकारी होती है।

प्रश्न 5. पत्रकारीय लेखन क्या है ? इसके कितने रूप होते हैं ?

उत्तर—अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचना पहुँचाने के लिये लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं। इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। इसके कई रूप हैं। पत्रकार तीन तरह के होते हैं, पूर्णकालिक, अंशकालिक और फ्रीलांसर यानी स्वतन्त्र। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है, जबकि अंशकालिक पत्रकार (स्टिंगर) किसी समाचार संगठन के लिये एक निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार है, लेकिन फ्रीलांसर पत्रकार का संबंध किसी खास अखबार से नहीं होता है। पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध और दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों से हैं।

प्रश्न 6. समाचार लेखन और छः ककार का सम्बन्ध बताइए।

उत्तर—किसी समाचार को लिखते हुए मुख्यतः छः सवालों का जवाब देने की कोशिश की जाती है। क्या हुआ, किसके साथ हुआ, कहाँ हुआ, कब हुआ, कैसे और क्यों हुआ ? इसे क्या, किसके (या कौन), कहाँ, कब, क्यों और कैसे को छः ककारों के रूप में भी जाना जाता है। किसी घटना, समस्या या विचार से सम्बन्धित खबर लिखते हुए इन छः ककारों को ही ध्यान में रखा जाता है। समाचार के मुखड़े (इंट्रो) यानी पहले पैराग्राफ या शुरुआती दो–तीन पंक्तियों में आमतौर पर तीन या चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है। ये चार ककार हैं— क्या, कौन, कब और कहाँ ? इन चार ककारों के बाद दो ककारों कैसे और क्यों का जवाब दिया जाता है। इस तरह छः ककारों के आधार पर समाचार तैयार होता है। इसमें से पहले चार ककार क्या, कौन, कब और कहाँ सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं। जबकि बाकी दो ककार कैसे और क्यों में विवरणात्मक, व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर दिया जाता है।

प्रश्न 7. संपादकीय लेखन पर टिप्पणी लिखिए। **(उज्जैन 2016)**

उत्तर—संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले संपादकीय को उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय के जरिये अखबार किसी घटना, समस्या या मुद्दे के प्रति अपनी राय प्रकट करते हैं। संपादकीय किसी व्यक्ति विशेष का विचार नहीं होता इसलिए इसे किसी के नाम के साथ नहीं छापा जाता। संपादकीय लिखने का दायित्व उस अखबार में काम करने वाले संपादक और उनके सहयोगियों पर होता है।

प्रश्न 8. संपादक के कार्य बताइए।

उत्तर—संपादक संवाददाताओं तथा रिर्पोटरों से प्राप्त समाचार–सामग्री की अशुद्धियाँ दूर करते हैं तथा उसे त्रुटिहीन बनाकर प्रस्तुति के योग्य बनाते हैं। वे रिपोर्ट की महत्वपूर्ण बातों को पहले तथा कम महत्व की बातों को अंत में छापते हैं तथा समाचार पत्र की नीति, आचार–संहिता और जन–कल्याण का विशेष ध्यान रखते हैं।

प्रश्न 9. समाचार लेखन की शैलियों को समझाइए।

उत्तर—समाचार लेखन की दो प्रमुख शैलियाँ निम्न हैं—

(1) सीधा पिरामिड शैली एवं (2) उल्टा पिरामिड शैली।

(1) सीधा पिरामिड शैली—सीधा पिरामिड शैली में सबसे महत्वपूर्ण समाचार (घटना, समस्या, विचार के सबसे महत्वपूर्ण अंश) को पहले पैराग्राफ में लिखा जाता है। इसके बाद कम महत्वपूर्ण समाचार की जानकारी दी जाती है।

(2) उल्टा पिरामिड शैली (इन्वर्टेड पिरामिड शैली)—यह समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय, उपयोगी और बुनियादी शैली है। यह कहानी या कथा लेखन शैली की ठीक उल्टी होती है। इसमें आधार ऊपर और शीर्ष नीचे होता है। इसमें शुरू में समापन, मध्य में बॉडी और अंत में मुखड़ा होता है।

प्रश्न 10. समाचार पत्र संपूर्ण कब बनता है ?

उत्तर—जब समाचार पत्र में समाचारों के अलावा विचार, संपादकीय, टिप्पणी, फोटो और कार्टून होते हैं, तब समाचार पत्र संपूर्ण बनता है।

प्रश्न 11. साहित्य और पत्रकारीय लेखन में अंतर को समझाइए।

उत्तर—साहित्य और पत्रकारीय लेखन में निम्न संबंध हैं—

(1) पत्रकारीय लेखन का सम्बन्ध तथा दायरा समसामयिक और वास्तविक घटनाओं, समस्याओं तथा मुद्दों से होता है। यह साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन जैसे— कविता, कहानी, उपन्यास आदि इसे मापने से अलग हैं इसका रिश्ता तथ्यों से होता है, न कि कल्पना से।

(2) पत्रकारीय लेखन, साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन से इस मायने में भी अलग है कि यह अनिवार्य रूप से तात्कालिकता और अपने पाठकों की रुचियों तथा जरूरतों को ध्यान में रखकर

किया जाने वाला लेखन है, जबकि साहित्यिक और सृजनात्मक लेखन में लेखक को लेखन में काफी छूट होती है।

प्रश्न 12. स्तंभ लेखन क्या है ?

उत्तर–स्तंभ लेखन विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप है। कुछ महत्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रूझान के लिए जाने जाते हैं। उनकी अपनी एक लेखन–शैली भी विकसित हो जाती है। ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर अखबार उन्हें एक नियमित स्तंभ लिखने की जिम्मेदारी दे देते हैं। स्तंभ का विषय चुनने और उसमें अपने विचार व्यक्त करने की स्तंभ लेखक को पूरी छूट होती है। स्तंभ में लेखक के विचार अभिव्यक्त होते हैं।

प्रश्न 13. एक अच्छे आलेख लेखन में कौन–कौन से गुण होते हैं ?

उत्तर–एक अच्छे आलेख लेखन में निम्न गुण होते हैं–

(1) आलेख की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
(2) आलेख को पढ़कर पाठक में जिज्ञासा उत्पन्न हो जाए ऐसा आलेख होना चाहिए।
(3) आलेख हमेशा स्वतन्त्र और प्रसिद्ध मुद्दों या समारोह पर होना चाहिए।
(4) आलेख विचार कथात्मक न होकर विवेचन विश्लेषण वाले होने चाहिए।
(5) आलेख का आरम्भ तथा समापन रोचक तथा जिज्ञासापूर्ण होना चाहिए।

प्रश्न 14. पत्रिकाओं के प्रकार बताइए।

उत्तर–विद्यालय पत्रिकाएँ तीन प्रकार की होती हैं– (1) भित्ति पत्रिका, (2) हस्तलिखित पत्रिका तथा (3) मुद्रित पत्रिका।

(1) भित्ति पत्रिका–भित्ति पत्रिकाएँ विभिन्न समय तथा पर्वों पर विद्यालय में प्रकाशित कराई जाती हैं।

(2) हस्तलिखित–हस्तलिखित पत्रिकाओं में विद्यालय के सत्र भर का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया जाता है।

(3) मुद्रित पत्रिका– इसमें विद्यालय की सारी जानकारी होती है। यह प्रत्येक छात्र व अध्यापक को मिलती है तथा छात्रों द्वारा अभिभावकों व जन–जन तक पहुँचती हैं, यह अधिक उपयोगी होती है।

प्रश्न 15. विद्यालयीन पत्रिका से विद्यार्थियों को होने वाले लाभ का वर्णन कीजिए।

उत्तर– विद्यालयीन पत्रिका से विद्यार्थियों को होने वाले लाभ निम्न हैं–

(1) हम बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता का विकास कर सकते हैं।
(2) उनमें नवीन खोज की प्रेरणा जाग्रत कर सकते हैं।
(3) उनकी जिज्ञासाओं का समाधान कर सकते हैं।
(4) उनकी कल्पनाशक्ति को बढ़ावा दे सकते हैं।
(5) विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम से अलग कुछ पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
(6) विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि कर सकते हैं।
(7) विद्यार्थियों को पठन, श्रवण, कौशल से जोड़ सकते हैं।

प्रश्न 16. पाठ्य सहगामी क्रिया क्या होती है ? इसकी विशेषताओं को समझाइए।

(उज्जैन 2018, 22)

उत्तर–पाठ्य सहगामी से आशय–पाठ्य या पाठ्यक्रम के साथ चलने वाला या पाठ्यक्रम का अनुकरण करने वाला। अर्थात् ऐसे क्रियाकलाप या गतिविधि जो पाठ्यक्रम के साथ–साथ चलते हों अथवा सम्पन्न किये जाते हों, उन्हें ही विस्तृत रूप में पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप कहा जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को केवल पाठ्य–पुस्तक तक सीमित न रखकर उनकी जिज्ञासा को विस्तृत क्षेत्र प्रदान करने के उद्देश्य से ही पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप की अवधारणा को विकसित किया गया है। बच्चों के मन–मस्तिष्क में जो शिक्षा एक 'बोझ' का रूप धारण कर लेती है, उसे पाठ्य सहगामी

क्रियाकलाप द्वारा ही दूर या कम किया जा सकता है। यह क्रिया छात्र जीवन के लिए महत्वपूर्ण है और इन्हीं के माध्यम से छात्र अपनी प्रतिभा को सभी के सामने ला पाता है।

पाठ्य सहगामी की विशेषताएँ—ये निम्नलिखित हैं—

(1) बालकों के व्यक्तित्व का विकास करना।

(2) विद्यालय में विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थियों में आपसी सहयोग की भावना का विकास करना।

(3) विद्यार्थियों को स्वशासन की शिक्षा प्रदान करना।

(4) विद्यार्थियों को लोकतंत्र तथा नागरिकता की शिक्षा प्रदान करना।

(5) विद्यार्थियों की अंतर्निहित शक्तियों का विकास करना।

प्रश्न 17. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का विद्यार्थियों के जीवन में क्या महत्व है ? समझाइए। **(उज्जैन 2018)**

उत्तर—पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व—इनके प्रमुख महत्व निम्न हैं—

(1) छात्रों में निहित प्रतिभाओं की खोज एवं विकास करना।

(2) छात्रों की अतिरिक्त शक्तियों का समुचित विकास करना।

(3) विद्यार्थियों में परस्पर सहयोग, प्रेम, सद्भावना, सहकारिता आदि गुणों का निर्माण करना।

(4) विद्यार्थियों में सामाजिकता का विकास करना।

(5) विद्यार्थियों में नैतिकता के गुणों का विकास करना।

प्रश्न 18. ई—समाचार पत्र से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—ई—समाचार पत्र वे समाचार पत्र हैं जो इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रकाशित होते हैं। ये इंटरनेट पर प्रकाशित सामान्य प्रिंट प्रकाशनों का रूप ले सकते हैं। ई—समाचार पत्र गंभीर समाचारों, सुविधाओं से लेकर कला और मनोरंजन, खेल और हर चीज के बीच में अखबारों का समूह संचालित करते हैं।

प्रश्न 19. स्टोरी क्या है ?

उत्तर—मीडिया की भाषा में खबर को 'स्टोरी' कहा जाता है। 'स्टोरी' से तात्पर्य कोई साहित्यिक कहानी से नहीं होता बल्कि बड़ी या विस्तारपूर्वक लिखी जाने वाली खबरें ही 'स्टोरी' कहलाती हैं। समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाली विस्तृत खबर कवर स्टोरी कहलाती है।

प्रश्न 20. अनुच्छेद लेखन से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—एक पैराग्राफ लेखन का एक संक्षिप्त टुकड़ा है जो लगभग सात से दस वाक्य लंबा हैं। इसमें एक विषय वाक्य और सहायक वाक्य है जो सभी विषय वाक्य के निकट से संबंधित है। पैराग्राफ रूप में इसकी समग्र संरचना को संदर्भित किया जाता है, जो कि एक ही विषय पर ध्यान देने वाले वाक्यों का एक समूह है।

प्रश्न 21. की—वर्ड क्या होते हैं ? व्याख्या कीजिए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर—की—वर्ड दो शब्दों से मिलकर बना है। Keyword इसमें दो शब्द है—पहला 'Key' जिसका हिन्दी में अर्थ 'चाबी' और दूसरा शब्द 'Word' जिसका अर्थ 'शब्द' होता है अर्थात् एक ऐसा महत्वपूर्ण शब्द जो किसी चाबी की तरह काम करता हो या जिसकी मूल्य चाबी के समान हो **की—वर्ड** (Keyword) कहलाता है। की—वर्ड के दो अर्थ है—पहला जब हम इंटरनेट की दुनिया में कोई सूचना ढूँढते हैं या हम कोई नया प्रोडक्ट, नई सर्विस के बारे में जानना चाहते हैं, तो हम कोई—न—कोई शब्द लिखकर ही सर्च करते हैं। जब सर्च इंजन लिखे शब्दों के अनुसार जानकारी ढूँढता है, तो जब उससे संबंधित शब्द की जानकारी जिस भी वेबसाइट पर मिलती है वह उस वेबसाइट का "की वर्ड" हो गया। उसी जानकारी को सर्च इंजन यूजर के सामने दिखता है।

दूसरे शब्दों में, की—वर्ड का तात्पर्य जब हम कोई आर्टिकल लिखते हैं या रिसर्च पेपर लिखते हैं तो मुख्य शब्दों को सबसे ऊपर लिखकर उसका अर्थ बताते हैं, पूरे आर्टिकल या रिसर्च पेपर के

मुख्य–मुख्य शब्दों को निकालना और उनके अर्थों को लिखना या बताना की–वर्ड कहलाता है। ये किसी भी आर्टिकल या रिसर्च पेपर के लिए बहुत जरूरी है।

प्रश्न 22. मध्यप्रदेश की किसी एक ज्वलंत समस्या का चयन कीजिए तथा उसके कारण एवं निवारण पर एक विस्तृत चर्चा कीजिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर–मध्यप्रदेश, देश के मध्य भाग में स्थित वो प्रदेश जिसे हिन्दुस्तान का दिल भी कहते हैं। सतपुड़ा के घने जंगल, सूबे के अनेक टाइगर रिजर्व ने विलुप्त होते बाघों को बचाया, इसलिए टाइगर स्टेट का दर्जा मिला। यहाँ जीवनदायिनी नर्मदा का कल–कल बहता पानी है और खजुराहों जैसी इतिहास की विरासत भी हैं। हर मायने में खास है देश का दिल। हाँ, अगर यहाँ कोई समस्या है तो वो है स्वास्थ्य सुविधाओं की, जिसे दूर करने की हर मुमकिन कोशिश की जा रही है।

स्वास्थ्य सुविधाएँ पुरानी समस्या–आजादी के पहले और बाद भी देश के अन्य हिस्सों की तरह मध्यप्रदेश में भी स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी बनी रही। घने जंगलों और पहाड़ों से घिरे सूबे के कई इलाके आदिवासी बहुलता वाले हैं। एक वक्त ऐसा भी था जब सड़क और संचार सुविधाएँ ना के बराबर थी। आजादी के बाद सिर्फ 6 मेडिकल कॉलेज थे। इतने बड़े सूबे की विविधता भरी भौगोलिक परिस्थिति में सबके लिए स्वास्थ्य सुविधाएँ मुहैया कराना आसान नहीं था। स्वास्थ्य सुविधाओं की नींव मजबूत करने के लिए लगातार कदम उठाए गए। लेकिन जब कोरोना जैसी महामारी आई तो लगा कि अभी खामियाँ और भी है। हालाँकि, मौजूदा सरकार के प्रयासों से आज सूबे में 13 सरकारी मेडिकल कॉलेज है और 10 नए मेडिकल कॉलेज कतार में है। इसके अलावा भी कई प्राइवेट–मेडिकल कॉलेज है। वैश्विक महामारी कोरोना ने भी सबक दिया है। सरकार कई कारगर कदम उठा रही है, ताकि प्रदेश से स्वास्थ्य सुविधाओं की समस्या पूरी तरह खत्म हो जाए।

प्रश्न 23. अपने विद्यालय में आयोजित विज्ञान अथवा भाषा प्रदर्शनी पर एक रिपोर्ट लिखिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर–विद्यालय में आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी पर रिपोर्ट या प्रतिवेदन 13 दिसंबर, 2018 को गोखले विद्यालय के कक्षा आठवीं से दसवीं तक के विद्यार्थियों ने विद्यालय के सभागृह में विज्ञान प्रदर्शनी लगाई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करने हेतु पूर्णया प्रदन्या विद्यालय के प्राचार्य अविनाश बासुजी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। प्रमुख अतिथि अविनाश बासु के साथ गोखले विद्यालय के प्रधानाचार्य व विभागाध्यक्ष ने अपने करकमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए 40 मॉडल प्रदर्शित किए गए। किसी ने सौर ऊर्जा से संबंधित मॉडल प्रस्तुत किया, तो किसी ने पानी को फिल्टर करने का यंत्र। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए विज्ञान से संबंधित इन यंत्रों को देखकर सभी अचंभित हो गए। इन मॉडलों को देखकर विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति रुचि साफ झलक रही थी।

प्रदर्शनी के दौरान विद्यार्थियों के मनोरंजन हेतु विविध कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। अंत में निर्णायक मंडल द्वारा निर्णय घोषित किए गए। जिसमें कक्षा आठवीं के विवेक नाविक को प्रथम पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार समीक्षा सणरु को तथा तृतीय पुरस्कार एकता चौहान को दिया गया। अन्य विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि ने अपने आशीष वचनों से प्रोत्साहित किया। विद्यालय के उप–प्रधानाचार्य ने अतिथि महोदय तथा विद्यार्थियों के प्रति आभार प्रकट किया तथा राष्ट्रगान के साथ शाम 5:00 बजे इस भव्य विज्ञान प्रदर्शनी समारोह का समापन हुआ।

प्रश्न 24. स्कूल पत्रिका का बच्चों के संप्रेषण में क्या महत्व है? **(छिन्दवाड़ा 2022)**

उत्तर–स्कूल पत्रिका एक साक्षरता पत्रिका है जो विद्यार्थी, माता–पिता, स्कूल से संबंधित समुदाय के लिए प्रकाशित होती है। किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। उसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है। विद्यालय की पत्रिका अभिव्यक्ति इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय प्रबंध परिवार प्रतिबद्ध है।

स्कूल पत्रिका का बच्चों के संप्रेषण में महत्व–

(1) विद्यार्थियों की तार्किक, काल्पनिक और मानसिक शक्तियों का विकास करना।

(2) विद्यार्थियों की भाषा और शैली को सुव्यवस्थित करना।

(3) विद्यार्थियों में भाषा और साहित्य के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।

(4) विद्यार्थियों की रुचियों का विकास करना।

(5) विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के बीच सम्प्रेषण में सुधार करना।

(6) यह विद्यार्थियों को अपने खाली समय का सर्वोत्तम उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित करता है।

(7) विद्यार्थियों के मुखर ज्ञान और कौशल को बढ़ाने के लिए।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि उपरोक्त सभी कथन स्पष्ट करते हैं कि स्कूल पत्रिका बच्चों के सम्प्रेषण में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पत्रकारिता के सिद्धान्तों को समझाइए। **(जबलपुर 2019)**

उत्तर–पत्रकारिता पत्रकार की ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे गुणों से चलती है। इसलिए पत्रकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इसका पालन करे। यह पत्रकारिता का आदर्श है। इस आदर्श का पालन कर एक पत्रकार पाठकों का विश्वास जीत सकता है और यह विश्वसनीयता समाचार संगठन की पूँजी है। पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों का पालन करना जरूरी है–

(1) यथार्थता–पत्रकार पर सामाजिक और नैतिक मूल्य की जवाबदेही है। यह वास्तविकता या यथार्थता की ओर इशारा करती है। एक पत्रकार संगठन को अपनी साख बनाए रखने के लिए समाज के यथार्थ को दिखाना होगा। यहाँ पर कल्पना की कोई जगह नहीं होती है। यह पत्रकारिता की पहली कसौटी है! समाचार समाज के किसी न किसी व्यक्ति, समूह या देश का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए इसका जुड़ाव सीधे समाज की सच्चाई यानी वास्तविकता से हो जाता है। इसलिए यह कह सकते हैं कि समाचार समाज का प्रतिबिम्ब होता है। पत्रकार हमेशा समाचार यथार्थ को पेश करने की कोशिश करता है। यह अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है।

(2) वस्तुपरकता–वस्तु की अवधारणा हमें सामाजिक माहौल से मिलते हैं। बचपन से ही हम घर में, स्कूल में, सड़क पर चलते समय हर कदम, हर पल सूचनाएँ प्राप्त करते हैं और दुनियाभर के स्थानों, लोगों, संस्कृतियों आदि सैकड़ों विषय के बारे में अपनी एक धारणा या छवि बना लेते हैं जो वास्तविकता से बहुत दूर होती है। वस्तुपरकता का सम्बन्ध सीधे–सीधे पत्रकार के कर्त्तव्य से जुड़ा है। जहाँ तक वस्तुपरकता की बात है, पत्रकार को समाचार के लिए तथ्यों का संकलन और उसे प्रस्तुत करते हुए अपने आकलन को अपनी धारणाओं या विचारों से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए क्योंकि वस्तुपरकता का सम्बन्ध हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मूल्यों से कहीं अधिक है। इसलिए पत्रकार को हमेशा वस्तुपरकता का ध्यान रखना चाहिए।

(3) निष्पक्षता–पत्रकारिता लेखन में निष्पक्षता की अहम् भूमिका होती है। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ है इसलिए राष्ट्रीय एवं सामाजिक जीवन में इसकी अहम् भूमिका है। इसलिए पत्रकारिता को सही और गलत, न्याय और अन्याय जैसे मसलों के बीच तटस्थ नहीं होना चाहिए बल्कि निष्पक्ष होते हुए सही एवं न्याय के साथ होना चाहिए। इसलिए पत्रकारिता का प्रमुख सिद्धान्त है उसका निष्पक्ष होना। पत्रकार को उसका शत–प्रतिशत पालन करना जरूरी है तभी उसके समाचार संगठन की साख बनी रहेगी। पत्रकार को समाचार लिखते समय न किसी से दोस्ती न किसी से बैर वाले सिद्धान्त को अपनाना चाहिए तभी वह समाचार के साथ न्याय कर पाएगा।

(4) संतुलन–पत्रकारिता में निष्पक्षता के साथ संतुलन की बात भी जुड़ी हुई है। जब किसी समाचार के कवरेज पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह संतुलित नहीं है तो यहाँ यह बात सामने

आती है कि समाचार किसी एक पक्ष की ओर झुका हुआ है। इसलिए पत्रकार को इस बात का ध्यान हमेशा रखना चाहिए कि पत्रकारिता में संतुलन बनाए रखना।

(5) स्त्रोत—पत्रकारिता के मूल समाचार में कोई सूचना या जानकारी होती है। पत्रकार उस सूचना एवं जानकारी के आधार पर समाचार तैयार करता है। किसी भी समाचार के लिए जरूरी सूचना एवं जानकारी प्राप्त करने के लिए समाचार संगठन एवं पत्रकार को किसी–न–किसी स्त्रोत की आवश्यकता होती है। यह समाचार स्त्रोत समाचार संगठन के या पत्रकार के अपने स्त्रोत होते हैं। स्त्रोतों में समाचार ऐजेन्सियाँ भी आती हैं।

प्रश्न 2. पत्रकारिता के उद्देश्य समझाइए। **(जबलपुर 2019, 21; छतरपुर 22)**

उत्तर–पत्रकारिता के उद्देश्य–

(1) सूचना—पत्रकारिता का मुख्य कार्य घटनाओं को लोगों तक पहुँचाना है। समाचार अपने समय के विचार, घटना और समस्याओं के बारे में सूचना प्रदान करता है, यानि कि समाचार के माध्यम से देश–दुनिया की समसामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों की सूचना लोगों तक पहुँचाई जाती है। इस सूचना का सीधे–सीधे अधिक–से–अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ता है। जैसे भारत में नोट–बंदी या किसानों की ऋण माफी आदि ये सब सूचनाएँ लोगों को प्रभावित करती हैं। ये सूचनाएँ हमारे दैनिक जीवन के साथ–साथ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। इस तरह दुनिया के बारे में हमें अधिकांश जानकारियाँ समाचार माध्यमों द्वारा दिए जाने वाले समाचारों से ही मिलती है। अतः इस प्रकार पत्रकारिता आज के जमाने में सूचना प्रदान करने का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है।

(2) शिक्षा—समाचार के माध्यम से हमें देश–दुनिया की तमाम घटनाओं, विचारों एवं समस्याओं की जानकारी मिलती है। यह समाचार विभिन्न समाचार माध्यमों के जरिए हमारे घरों में पहुँचते हैं। समाचार संगठनों में काम करने वाले पत्रकार देश–दुनिया में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुँचाते हैं। यह हमें विभिन्न विषय में शिक्षा प्रदान करते हैं। इस तरह से हमें समाचार के माध्यम से अलग–अलग क्षेत्रों की जानकारी मिलती है।

(3) मनोरंजन—पत्रकारिता का आयाम बहुत ही विस्तृत है। यह केवल सूचना और शिक्षा प्रदान करने तक सीमित न रहकर लोगों का मनोरंजन करने के लिए भी सशक्त माध्यम के रूप में उभरकर सामने आया है। समाचार पत्र में कथा, कहानी, जीवनी, व्यंग्य आदि लेख जैसे प्रकाशित होते हैं। इस तरह के साहित्यिक लेखों से लोगों का मनोरंजन होता है। इसके अलावा समाज में नित्य प्रतिदिन घटित हो रही घटनाओं पर कार्टून तथा व्यंग्य चित्र पेश किए जाते हैं। समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा श्रव्य–दृश्य माध्यमों में सिनेमा, दूरदर्शन, नाटक आदि से जुड़ी खबरें तथा लेख प्रकाशित किये जाते हैं,जो पाठकों तथा दर्शकों का पूरा मनोरंजन करता है।

(4) लोकतंत्र का रक्षक—पत्रकारिता की पहुँच का सीधा अर्थ है—जनमत की पहुँच। इसलिए कहा गया है कि पत्रकारिता लोकतंत्र की सुरक्षा एवं बचाव का सबसे बड़ा माध्यम है। यह नेता एवं जनता दोनों के लिए लाभकारी है।

(5) जनमत—पत्रकारिता के कार्य में सबसे प्रमुख है जनमत को आकार देना, उसको दिशा-निर्देश देना और जनमत का प्रचार–प्रसार करना। पत्रकारिता का यह कार्य लोकतंत्र स्थापित करता है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पत्रकारिता यानि मीडिया लोगों के मध्य जागरूकता लाने का एक सशक्त माध्यम है।

एजेंडा निर्धारण—उपरोक्त कार्यों के अलावा पत्रकारिता यानी मीडिया अब एजेंडा निर्धारण करने के कार्य में भी शामिल हो चुका है। इसका अर्थ यह है कि मीडिया ही सरकार और जनता का एजेंडा तय करता है। मीडिया में जो होगा वह मुद्दा है और जो मीडिया से नदारद है वह मुद्दा नहीं रह जाता। एजेंडा निर्धारण में मीडिया की यह भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है। वर्तमान में मीडिया ही जनमत का सबसे बड़ा माध्यम बन गया है। शासक पर सामूहिक सतर्कता बनाए रखने के लिए

सबसे बड़ा भाग बन गया है। पत्रकारिता के कार्य में अब एक और नया कार्य जुड़ गया है, वह है सत्ता एवं जनता का एजेंडा निर्धारण करना।

प्रश्न 3. पत्रकारिता के प्रकार को समझाइए। (जबलपुर 2019; छतरपुर 21)

उत्तर–पत्रकारिता के प्रकार–

(1) खोजी पत्रकारिता–जिसमें आमतौर पर सार्वजनिक महत्व के मामलों जैसे– भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों की गहराई से छानबीन कर तथ्य सामने लाने की कोशिश की जाती है। स्टिंग ऑपरेशन खोजी पत्रकारिता का ही एक नया रूप है।

(2) वाचडाग पत्रकारिता–लोकतन्त्र में पत्रकारिता और समाचार मीडिया का मुख्य उत्तरदायित्व सरकार के कामकाज पर निगाह रखना है और कोई गड़बड़ी होने पर उसका पर्दाफाश करना होता है, इसे ही वाचडाग पत्रकारिता कहते हैं।

(3) एडवोकेसी पत्रकारिता–इसे पक्षधर पत्रकारिता भी कहते हैं। किसी खास मुद्दे या विचारधारा के पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार अभियान चलाने वाली पत्रकारिता को एडवोकेसी पत्रकारिता कहते हैं।

(4) पीत पत्रकारिता–पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफवाहों, आरोपों–प्रत्यारोपों, प्रेमसम्बन्धों आदि से संबंधित सनसनीखेज समाचारों से संबंधित पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते हैं।

(5) पेज थ्री पत्रकारिता–ऐसी पत्रकारिता जिसमें फैशन, अमीरों की पार्टियों, महफिलों और जाने माने लोगों के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है।

(6) संसदीय पत्रकारिता–लोकतंत्र में संसदीय व्यवस्था की प्रमुख भूमिका होती है। संसदीय व्यवस्था के तहत संसद में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि पहुँचते हैं। बहुमत हासिल करने वाला शासन करता है तो दूसरा विपक्ष में बैठता है। दोनों की अपनी–अपनी अहम् भूमिका होती है। इनके द्वारा किए जा रहे कार्य पर नजर रखना। पत्रकारिता की अहम् जिम्मेदारी है, और पत्रकार अपनी इस जिम्मेदारी को सही तरह की जानकारी देकर तथा आम लोगों को सच बताकर पुरी कर सकते हैं।

(7) विशेषीकृत पत्रकारिता–पत्रकारिता का अर्थ घटनाओं की सूचना देना मात्र नहीं है। पत्रकार से अपेक्षा की जाती है कि वह घटनाओं की तह तक जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और आम पाठक को बताए कि उस समाचार का क्या महत्व है, इसके लिए विशेषीकृत पत्रकारिता की आवश्यकता होती है।

(8) एडवोकेसी पत्रकारिता–ऐसे अनेक संगठन होते हैं जो किसी विचारधारा या किसी खास उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर आगे बढ़ते हैं और उस विचारधारा या उद्देश्य या मुद्दे के पक्ष में जनमत बनाने के लिए लगातार और जोर–शोर से अभियान चलाते हैं। इस तरह की पत्रकारिता को पक्षधर या एडवोकेसी पत्रकारिता कहा जाता है।

(9) खेल पत्रकारिता–खेल से जुड़ी पत्रकारिता को खेल पत्रकारिता कहा जाता है। खेल आधुनिक हो या प्राचीन खेलों में होने वाले अद्भूत कारनामों को जगजाहिर करने तथा उसका व्यापक प्रचार–प्रसार करने में खेल पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

(10) आर्थिक पत्रकारिता–आर्थिक पत्रकारिता में व्यक्तियों, संस्थाओं, राज्यों या देशों के बीच होने वाले आर्थिक या व्यापारिक संबंध के गुण दोषों की समीक्षा और विवेचना की जाती है। आर्थिक पत्रकारिता का उद्देश्य अर्थव्यवस्था के हर पहलू पर सूक्ष्म नजर रखते हुए उसका विश्लेषण कर, समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभावों का प्रचार–प्रसार करना है। आर्थिक पत्रकारिता को आर्थिक व्यवस्था और उपभोक्ता के बीच सेतू की भूमिका निभानी पड़ती है।

(11) ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता–भारत जैसे कृषि प्रधान देश में हमारी अर्थव्यवस्था काफी कुछ कृषि और कृषि उत्पादों पर निर्भर है। भारत में आज भी लगभग 70% आबादी गाँवों में बसती है। देश के बजट प्रावधानों का बड़ा हिस्सा कृषि और ग्रामीण विकास पर खर्च होता है। ग्रामीण विकास

के बिना देश का विकास अधूरा है। ऐसे में ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है कि वह कृषि एवं कृषि आधारित योजनाओं तथा ग्रामीण भारत में चल रहे विकास कार्यक्रम का सटीक आकलन कर तस्वीर पेश करे।

(12) टेलीविजन पत्रकारिता—टेलीविजन पत्रकारिता में फिल्मों से संबंधित कार्यक्रम, नाटक, धारावाहिक, नृत्य संगीत तथा मनोरंजन जगत की समस्त गतिविधियों से संबंधित खबरों का उल्लेख किया जाता है।

(13) फोटो पत्रकारिता—फोटो पत्रकारिता ने छपाई तकनीक के विकास के साथ ही समाचार पत्रों में अहम् स्थान बना लिया है। कहा जाता है कि जो बात हजारों शब्दों में लिखकर नहीं की जा सकती है, वह एक तस्वीर कह देती है। फोटो और टिप्पणियों का असर व्यापक और सीधा होता है। तथा ऐसी घटना जिसमें सबूत की जरूरत होती है, वैसे समाचारों में फोटो के साथ समाचार पेश करने में उसकी विश्वसनीयता बढ़ जाती है।

(14) अपराध पत्रकारिता—अपराध से संबंधित समस्त घटनाओं का विवरण अपराध पत्रकारिता के अंतर्गत आता है।

(15) विज्ञान पत्रकारिता—विज्ञान पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य विस्तृत तकनीकी और कभी-कभी शब्दजाल को दिलचस्प रिपोर्ट में बदलकर समाचार पाठक या दर्शक की समझ के आधार पर प्रस्तुत करना होता है। समस्त वैज्ञानिक घटनाओं की वर्णन विज्ञान पत्रकारिता के अंतर्गत आता है।

प्रश्न 4. एक अच्छे पत्रकार के गुणों को समझाइए। (ग्वालियर 2016)

उत्तर—एक अच्छे पत्रकार के गुण—

(1) समाचार बोध—यह किसी भी पत्रकार का आवश्यक गुण है। प्रत्येक रिपोर्टर में समाचार बोध या समाचार चेतना होनी चाहिए। उसमें यह क्षमता होनी चाहिए कि समाचार और असमाचार में अंतर कर सके। उसमें यह भी योग्यता होनी चाहिए कि वह विभिन्न समाचार मूल्यों में अंतर कर सके। समाचार बोध के कारण ही कोई रिपोर्टर किसी समाचार को पकड़ता है।

(2) सतर्कता—एक पत्रकार को हमेशा सतर्क होना चाहिए। सतर्क पत्रकार ही अच्छी खबरें निकालते हैं। खबर को सूंघते हैं, उसका पीछा करते हैं। पत्रकार के लिए सतर्कता हटी दुर्घटना घटी वाली स्थिति हमेशा रहती है। थोड़ी-सी लापरवाही पर दूसरा समाचार माध्यम उससे आगे निकल जाता है।

(3) स्पष्टता—एक पत्रकार में स्पष्टता होनी चाहिए कि वह क्या लिख रहा है और क्या लिखा जाना चाहिए। संशयग्रस्त रिपोर्टर अपने समाचार के साथ न्याय नहीं कर पाता है। समाचार इतना स्पष्ट होना चाहिए कि पाठकों को समझने में कोई दिक्कत न हो।

(4) भाषा ज्ञान—एक अच्छी रिपोर्ट अच्छी भाषा में ही प्रस्तुत की जा सकती है। इसलिए अच्छे पत्रकार का भाषा पर अधिकार होना चाहिए। समाचार प्रभावशाली तभी बनता है जब उसकी भाषा प्रभावशाली हो। उसके पास क्षमता होनी चाहिए कि जिस कल्पना के साथ उसने समाचार लिखना शुरू किया था, उसे मुकाम तक पहुँचा सके।

(5) जिज्ञासा—पत्रकार में जिज्ञासा की प्रवृत्ति हमेशा विद्यमान रहनी चाहिए। उसकी इच्छा नए से नए तथ्य जानने, नया ज्ञान प्राप्त करने, नया तलाशने की बनी रहनी चाहिए। छः ककार या पाँच डब्ल्यू (W) और एक एच (H) का उत्तर पाने की ललक हमेशा बनी रहे। तभी अच्छी रिपोर्ट सामने आएगी।

(6) यथार्थ—पत्रकार को यथार्थता जाने बिना समाचार नहीं दिया जाना चाहिए। पत्रकार को सबसे पहले समाचार प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए लेकिन उससे पहले यह भी पता लगा लेना चाहिए कि वह सत्य है कि नहीं। सत्य ही समाचार का मूल आधार है।

(7) निष्पक्षता—पत्रकार को समाचार लिखते समय पूरी तरह निष्पक्षता बरतनी चाहिए। समाचार से जुड़े सभी पक्षों का पक्ष देखना चाहिए। अच्छी तरह से जाँच-पड़ताल कर लेना चाहिए।

(8) व्यवहार कुशलता—पत्रकार को व्यवहार कुशल होना चाहिए। इसी के बल पर वह विभिन्न लोगों से सम्पर्क बनाता है और एक्सक्लूसिव समाचार प्राप्त करता है। व्यावहारिक विचलन से बचने के लिए उसे कई अन्य मनोभावों पर नियंत्रण करने की कला आनी चाहिए।

(9) आत्मानुशासन—पत्रकारिता में आत्मानुशासन का बड़ा महत्व है। कोई भी रिपोर्टर क्रमिक प्रयास और आत्मनियन्त्रण द्वारा अपना काम दक्षता से पूरा करने की कुशलता प्राप्त कर सकता है।

(10) अध्ययनशीलता—पत्रकार का अध्ययनशील होना बहुत जरूरी है। यह प्रवृत्ति होने पर ही रिपोर्टर प्रेस कान्फ्रेन्स, इंटरव्यू आदि के समय में अपने दायित्व का कुशलता से निर्वहन कर सकेगा। एक अच्छा पत्रकार जीवन भर एक अच्छा विद्यार्थी रहता है।

(11) निर्भय और स्पष्टवादी—इस गुण के कारण ही कोई पत्रकार इस तरह के प्रश्न पूछकर सत्य उगलवा सकते हैं, जो अप्रिय होते हैं। इस तरह के प्रश्न के जोखिम भी होते हैं। प्रलोभन और दबाव पत्रकार को गुमराह न कर सके।

(12) गतिशीलता—पत्रकार लगातार गतिशील रहेगा तभी वह अधिक से अधिक लोगों के संपर्क में आएगा और उसे अधिक से अधिक सूचनाएँ प्राप्त होंगी। समाचार के लिए जहाँ जाने की जरूरत हो, वहाँ जाने का उसमें उत्साह होना चाहिए।

(13) कल्पनाशीलता—पत्रकार में कल्पनाशीलता वह गुण है, जो उसे कहानी लिखने में सिद्धहस्त बनाती है। घटनाओं तथा स्थितियों की रचनात्मक कल्पना के साथ लिखी गई स्टोरी पाठकों को बाँध लेती है।

प्रश्न 5. समाचार के स्त्रोत कौन–कौन से हैं ?

उत्तर—कभी भी कोई समाचार निश्चित समय या स्थान पर नहीं मिलते। समाचार संकलन के लिए संवाददाताओं को फील्ड में घूमना होता है। क्योंकि कहीं भी कोई ऐसी घटना घट सकती है, जो एक महत्वपूर्ण समाचार बन सकती है। समाचार पत्र के कुछ महत्वपूर्ण स्त्रोत निम्न हैं–

(1) संवाददाता—टेलीविजन और समाचार पत्रों में संवाददाताओं की नियुक्ति ही इसलिए होती है कि वह दिन भर की महत्वपूर्ण घटनाओं का संकलन करें और उन्हें समाचार का स्वरूप दें।

(2) समाचार समितियाँ—देश–विदेश में अनेक ऐसी समितियाँ हैं जो विस्तृत क्षेत्रों के समाचारों को संकलित करके अपने सदस्य अखबारों और टीवी को प्रकाशन और प्रसारण के लिए प्रस्तुत करती हैं। मुख्य समितियों में पी.टी.आई. (भारत), यू.एन.आई. (भारत), ए.पी. (अमेरिका) हैं।

(3) प्रेस विज्ञप्तियाँ—सरकारी विभाग, सार्वजनिक अथवा व्यक्तिगत प्रतिष्ठान तथा अन्य व्यक्ति या संगठन अपने से संबंधित समाचार को सरल और स्पष्ट भाषा में लिखकर ब्यूरो ऑफिस में प्रसारण के लिए भिजवाते हैं। सरकारी विज्ञप्तियों में चार प्रकार (प्रेस कम्यूनिक्स, प्रेस रिलीज, हैण्ड आउट एवं गैर विभागीय हैण्ड आउट) आते हैं।

(4) पुलिस विभाग—सूचना का सबसे बड़ा केन्द्र पुलिस विभाग का होता है। पूरे जिले में होने वाली सभी घटनाओं की जानकारी पुलिस विभाग की होती है, जिसे पुलिसकर्मी प्रेस के प्रभावी संवाददाताओं को बताते हैं।

(5) सरकारी विभाग—पुलिस विभाग के अतिरिक्त अन्य सरकारी विभाग समाचारों के केन्द्र होते हैं। संवाददाता स्वयं जाकर खबरों का संकलन करते हैं अथवा यह विभाग अपनी उपलब्धियों को समय–समय पर प्रकाशन हेतु समाचार पत्र और टीवी कार्यालयों को भेजते रहते हैं।

(6) चिकित्सालय—शहर के स्वास्थ्य संबंधी समाचारों के लिए सरकारी चिकित्सालयों अथवा बड़े प्राइवेट अस्पतालों से महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्राप्त होती हैं।

(7) न्यायालय—जिना अदालतों के फैसले व उनके द्वारा व्यक्ति या संस्थाओं को दिए गए निर्देश न्यायालय समाचार के प्रमुख स्रोत हैं।

(8) साक्षात्कार—विभागाध्यक्षों अथवा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के साक्षात्कार इस समाचार के महत्वपूर्ण अंग होते हैं।

(9) समाचारों का फॉलो–अप या अनुवर्तन–महत्वपूर्ण घटनाओं की विस्तृत रिपोर्ट रुचिकर समाचार बनते हैं। दर्शक चाहते हैं कि बड़ी घटनाओं के सम्बन्ध में उन्हें सविस्तार जानकारी मिलती रहे। इसके लिए संवाददाताओं को घटनाओं की तह तक जाना पड़ता है।

(10) पत्रकार वार्ता–सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थान अक्सर अपनी उपलब्धियों को प्रकाशित करने के लिए पत्रकार वार्ता का आयोजन करते हैं। उनके द्वारा दिए गए वक्तव्य समृद्ध समाचारों को जन्म देते हैं।

प्रश्न 6. समाचार संपादन के तत्वों का वर्णन कीजिए। (उज्जैन 2019)

उत्तर–संपादन की दृष्टि से समाचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं–

(1) शीर्षक–किसी भी समाचार का शीर्षक उस समाचार की आत्मा होती है। शीर्षक के माध्यम से न केवल श्रोता किसी समाचार को पढ़ने के लिए प्रेरित होता है, अपितु शीर्षकों के द्वारा वह समाचार की विषय–वस्तु को भी समझ लेता है।

(2) आमुख–आमुख लिखते समय 'पाँच डब्ल्यू' तथा 'एक एच' के सिद्धान्त का पालन करना चाहिए। अर्थात् आमुख में समाचार से संबंधित छः प्रश्न who, when, where, what, how और why का अंतर पाठक को मिल जाना चाहिए। इस तरह से आमुख लिखना चाहिए कि इन तत्वों का समावेश हो जाए।

(3) समाचार का ढाँचा–समाचार के ढाँचे में महत्वपूर्ण तथ्यों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना चाहिए। समाचार सामान्यतः कम से कम 150 शब्दों तथा अधिकतम 400 शब्दों में लिखा जाना चाहिए। श्रोताओं को अधिक लम्बे समाचार आकर्षित नहीं करते हैं।

प्रश्न 7. लेखकला से क्या आशय है ? लेख कला की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–लेखकला से आशय–किसी भी लेख को लिखना एक कला है। इसमें लेखक किसी विषय के विभिन्न तथ्यों एवं मुख्य विचारों को व्यवस्थित करके लोगों का ध्यान अपने प्रकरण की ओर आकर्षित करता है। इसमें लेखक के विचारों का सार होता है। दूसरे शब्दों में, यह भी कहा जा सकता है कि किसी प्रकरण पर लेखक के विचारों का सार ही लेख कहलाता है।

लेखकला की विशेषताएँ–लेखकला के प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(1) लेख कितना भी छोटा या बड़ा लिखा जा सकता है, यह अच्छा हो या बुरा हो प्रत्यक्षतः कोई हानि नहीं होती है। आप लेख में क्रमिक सुधार कर उसमें प्रवीणता अर्जित कर सकते हैं।

(2) लेख में अधिक तैयारी की आवश्यकता नहीं होती है। लेख के लिए लेखक में सम्भाषण के कौशल की भी आवश्यकता नहीं होती है।

(3) लेख अधिकतर विचारात्मक दृष्टिकोण से लिखे जाते हैं। इसमें विवादास्पद विचारों को अधिक स्थान नहीं दिया जाता है। मस्तिष्क को झकझोर देने वाले विचारों को स्थान दिया जाता है।

(4) लेख लिखने में समय का कोई बंधन नहीं होता है, व्यक्ति जितना चाहे उतना समय लेकर उसे पूरा कर सकता है।

(5) लेख में दीर्घकालीन सफलता काम्य है। अतः इसमें बुद्धि, बल, कौशल और परिश्रम की आवश्यकता नहीं होती है।

(6) लेख अधिकतर मानवीयता पर आधारित होते हैं।

(7) लेख अधिकतर समसामयिक विषयों पर ही लिखे जाते हैं। इसकी पृष्ठ–भूमि राजनीतिक अथवा ऐतिहासिक होती है। कुछ लेख सामाजिक बुराइयों के रूप में समाज में उपस्थित ज्वलंत समस्याओं पर आधारित होकर सुधारात्मक दृष्टिकोण से लिखे जाते हैं।

(8) लेख में विशेष गम्भीर एक विषय के ज्ञान से काम चल सकता है।

(9) लेख लिखते समय नवीन विचारों पर निरंतर शोध करते रहना चाहिए।

(10) लेख हमेशा क्रमबद्ध विचारों के साथ स्पष्ट रूप से लिखे जाने चाहिए।

प्रश्न 8. स्कूल मैगजीन से आप क्या समझते हैं ? एक लेख लिखिए। (जबलपुर 2019)

उत्तर– स्कूल मैगजीन एक महत्वपूर्ण पत्रिका होती है। स्कूल के प्रबंधक इसे प्रकाशित करते हैं। अध्यापकों की सहायता से विद्यार्थी इसका प्रबंध करते हैं। स्कूल मैगजीन में निबंध, कविताएँ एवं कहानियाँ आते हैं। स्कूल मैगजीन कई दृष्टि से अन्य पत्रिकाओं से भिन्न होती हैं। यह केवल विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच वितरित होती हैं। अपितु इससे विद्यार्थियों और अध्यापक दोनों को प्रेरणा मिलती है। मैगजीन विद्यार्थियों को लिखने के साथ–साथ पढ़ने के लिए भी प्रेरित करती हैं। इससे उनमें लेखन और पठन दोनों ही कौशलों का विकास होता है। साथ ही साथ विद्यार्थी अपना नाम और फोटो देखने के लिए बड़े उत्साह से खेलकूदों में भी भाग लेते हैं। प्रत्येक स्कूल मैगजीन में विद्यार्थियों की प्रगति का विवरण होता है। इसमें उनके द्वारा जीते गये पुरस्कारों और तमगों का वर्णन होता है। इसलिए वे विद्यार्थी अपनी पढ़ाई और खेलकूद में कठिन परिश्रम करते हैं जो अपना नाम स्कूल मैगजीन में देखना चाहते हैं। मैगजीन विद्यार्थियों को एक–दूसरे के नजदीक लाने में सहायता करती है। मैगजीन में लेख देने वाले विद्यार्थियों को अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए अन्य बहुत–सी पुस्तकें पढ़नी पड़ती हैं। इसके अलावा वे स्वयं विचार करना सीख लेते हैं। सोच–विचार से उनकी तर्क बुद्धि प्रखर होती है। मैग्जीन के लिए नियमित रूप से लिखते रहने से उनकी लेखन कला विकसित होती है। इससे उनकी भाषा भी सुधर जाती है और धीरे–धीरे भाषा पर अधिकार हो जाता है। स्कूल की मैगजीन का महत्व अध्यापक से कम नहीं है। इससे विद्यार्थियों के दिमाग और कलम दोनों की ही नियमित कसरत हो जाती है।

प्रश्न 9. ई–पत्रिकाओं का शिक्षा के क्षेत्र में क्या योगदान है ?

उत्तर– ई–पत्रिकाओं का शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित योगदान हैं–

(1) दैनिक समाचार पत्र तथा साप्ताहिक पत्र, पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकाओं में भारत में शिक्षा तथा निरक्षरता का ब्यौरा रहता है। इसे देखकर निरक्षर वयस्कों तथा शिक्षित व्यक्तियों के मन में उन पत्र–पत्रिकाओं को पढ़ने तथा समझने की ललक उत्पन्न होती है।

(2) दूरदर्शन, आकाशवाणी, कम्प्यूटर संयंत्रों में शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं। उन्हें देखकर शिक्षित समाज तथा शिक्षा के महत्व के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(3) ई पत्र–पत्रिकाओं से सम्प्रेषण तथा समाचार की प्रक्रिया होती है। जिनके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को दूसरे व्यक्तियों तक पहुँचाते हैं। इससे एक ओर सम्प्रेषण व समाचार सरलता से प्राप्त हो जाता है, तो दूसरी ओर शिक्षा का प्रसार भी हो जाता है।

(4) धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक, समाज कल्याण की बातें आदि भी ई–पत्रिकाओं से प्राप्त होती हैं। इस कारण पढ़े–लिखे लोग उनको समझने का प्रयास करते हैं।

प्रश्न 10. एक अच्छी पत्रिका के लिए अनुच्छेद किस प्रकार लिखना चाहिये ?

उत्तर–एक अच्छी पत्रिका के लिए अनुच्छेद लेखन–पत्रिका के प्रकाशन हेतु अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित उपायों एवं सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिये–

(1) रुचिपूर्ण प्रकरणों पर लेखन–छात्राध्यापकों को उन प्रकरणों का चुनाव करना चाहिए जिसमें स्थानीय स्तर पर नागरिकों की रुचि हो। इसके साथ–साथ उन प्रकरणों को सारगर्भित रूप में समझा जाना चाहिये। जैसे वर्तमान समय में बालकों के लिये संतुलित भोजन पर लेख लिखे जाये तो प्रत्येक अभिभावक द्वारा इसे ध्यानपूर्वक पढ़ा जायेगा तथा उस पत्रिका को भी महत्व दिया जाएगा जिसमें यह लेख प्रकाशित होगा।

(2) सरल एवं प्रभावी भाषा में लेखन–छात्राध्यापकों को सरल एवं प्रभावी भाषा में अनुच्छेद लिखने का प्रयास करना चाहिये क्योंकि स्थानीय स्तर पर इस पत्रिका को पढ़ा जाता है। इसलिए इसकी भाषा में बोधगम्यता होनी चाहिये। इसकी भाषा में एक ओर स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग होना चाहिए जिससे स्थानीय नागरिकों की रुचि का संवर्द्धन हो तो दूसरी ओर इसमें साहित्यिक शब्दों का प्रयोग भी होना चाहिए जिससे जो भी इस अनुच्छेद का पठन करे उसको साहित्य और भाषा का सही ज्ञान हो सके।

(3) अनुसंधान कार्यों पर अनुच्छेद लेखन—छात्राध्यापकों को जिस प्रकरण पर अनुसंधान करना है उसकी प्रारंभिक सूचना आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन भी पत्रिका में करना चाहिए। इससे पाठकों के मन में यह उत्साह होता है कि इस संदर्भ में भी सार्थक परिणाम आने वाले हैं।

(4) उद्देश्य आधारित अनुच्छेद लेखन— छात्राध्यापकों को अनुच्छेद लेखन की प्रक्रिया में उद्देश्यनिष्ठता का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। अनुच्छेद के पठन से ही उसके उद्देश्य का ज्ञान सामान्य रूप से होना चाहिए। जैसे स्वच्छता पर अनुच्छेद लेखन से यह स्पष्ट होना चाहिये कि विद्यालयी व्यवस्था, ग्रामीण स्तरीय व्यवस्था एवं शारीरिक दृष्टि से स्वच्छता का वातावरण होना चाहिये। उद्देश्य आधारित अनुच्छेद लेखन को सर्वोत्तम लेखन माना जाता है।

(5) मुहावरे, लोकोक्तियों के साथ लेखन—पत्रिका के अनुच्छेद लेखन में स्थानीय स्तर पर प्रयुक्त किये जाने वाले मुहावरे एवं लोकोक्तियों का उपयोग किया जाए। इससे एक ओर स्थानीय नागरिकों में अनुच्छेद पठन एवं पत्रिका के प्रति रुचि उत्पन्न होगी तथा दूसरी ओर वे अनुच्छेद के मूल भाव एवं उद्देश्य को समझ सकेंगे। मुहावरे एवं लोकोक्तियों का प्रयोग अनुच्छेद लेखन को प्रभावशाली बनाता है। इसके साथ साहित्यिक शब्दों का उपयोग भी करना चाहिये जिससे भाषायी दृष्टि से भी अनुच्छेद एवं पत्रिका में प्रभावशीलता उत्पन्न हो।

(6) सकारात्मक दृष्टिकोण आधारित लेखन—अनुच्छेद लेखन की प्रक्रिया में सदैव यह ध्यान रखना चाहिये कि उससे आशावादिता एवं विकास की सुगंध उत्पन्न होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, अनुच्छेद के पठन के बाद पाठक को यह अनुभव होना चाहिये कि इस क्षेत्र में भी सुधार की पूर्ण सम्भावना है। इसलिए अनुच्छेद में सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाना चाहिए।

(7) वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित लेखन—अनुच्छेद लेखन की प्रक्रिया वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होनी चाहिये। स्थानीय स्तर पर नागरिकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिये अनुच्छेद लेखन किया जाना चाहिए।

(8) क्रमबद्ध एवं सुसंगठित अनुच्छेद लेखन—छात्राध्यापकों को अनुच्छेद लेखन में यह ध्यान रखना चाहिए कि विचारों एवं भावों के प्रस्तुतीकरण में क्रमबद्धता का समावेश हो। विचारों को संगठित रूप से अनुच्छेद लेखन में दृष्टिगोचर होना चाहिये। अनुच्छेद लेखन में भटकाव की स्थिति नहीं होनी चाहिए।

प्रश्न 11. विद्यालयीन समाचार पत्र के प्रकाशन पर एक लेख लिखिए। (जबलपुर 2019, 22)

उत्तर—विद्यालयीन पत्र कैसा हो ? दैनिक ? साप्ताहिक ? पाक्षिक ? मासिक ? इसका एक ही उत्तर है, जैसा भी सम्भव हो। किन्तु अच्छा तो यह है कि वह यथासम्भव दैनिक हो, नहीं तो साप्ताहिक तो है ही। पत्र कैसा भी हो–वह दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक हो एवं मासिक। उसकी सम्भाव्यता विद्यालय की छात्र संख्या, अध्यापक संख्या और उसकी साधनशीलता पर निर्भर है। यदि विद्यालय के पास छात्र कार्यकर्ता पर्याप्त संख्या में हैं तो वह सब कुछ कर सकता है। यह एक परमोपयोगी रचनात्मक शिक्षा प्रशिक्षण है। छात्रों को इनके अनेक लाभ हैं। किंतु यदि विद्यालय छोटा है, पर्याप्त कार्यकर्ता नहीं हैं, तो छोटा–सा समाचार पत्र दे देने वाला पत्र निकाला जाए और छात्र सभा में प्रति सप्ताह उन समाचारों पर चर्चा की जाए। कमियाँ, त्रुटियाँ और दोष तो रहेंगे ही। हमें इनसे हतोत्साहित कभी नहीं होना है और आगे बढ़ते जाना है। विद्यालयीन समाचार पत्र निकालने में बहुत–सी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हमारा पत्र आकर्षक हो, जिसे लोग उत्सुकता से पढ़ें इसके लिए सम्पादक में पर्याप्त सावधानी, कुशलता आदि होना आवश्यक है। यदि वह कुशल है तो बहुत थोड़ी सामग्री होते हुए भी पत्र को अच्छे रूप में प्रस्तुत कर देगा। पत्र निकालते समय हमें निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए–

(1) पत्र का मुख्य पृष्ठ तथा आवरण पृष्ठ, (2) पत्र का उपयुक्त आकर्षक नाम, (3) आकार, (4) मुख्य शीर्षक, (5) विविध स्तम्भ, (6) लेखों और समाचारों तथा सामग्री का उपयुक्त सम्पादन, (7) आवश्यक चित्र, मानचित्र, व्यंग्य चित्र एवं आकृतियाँ।

पत्र में मुख्य बात सामग्री की उत्कृष्टता नहीं अपितु उपयुक्त शीर्षक है। इसे रोचक और आकर्षक बनाने में तथा स्तम्भ के लेख को आकर्षक बनाने में संक्षिप्त परिचय या दो–तीन पंक्तियाँ देने में सम्पादक को बहुत परिश्रम करना पड़ता है। यह सब सम्पादक की सूझबूझ पर आधारित है। इसमें सफलता के लिए कुछ छोटी–सी बातें भी बहुत उपयोगी होंगी। जैसे–शीर्षक, नवीन, उत्सुकतावर्द्धक, विरोधाभाषी और ऐसा कि विचित्र एवं आकर्षक लगे। शीर्षक उपयुक्त और पूर्ण हो तथा बहुत लम्बा न हो। शीर्षक में एकरूपता व साम्य हो। उसके शब्द स्पष्ट प्रभावकारी हो। कुछ उपशीर्षक भी हों जो लम्बे और उपकथाओं के रूप में हो। यदि संवाद दूसरे पृष्ठ में भी हो एवं अग्रलेखादि दूसरे पृष्ठ पर भी हो तो दूसरे पृष्ठ में भी एक संयोजक शीर्षक रहे। यदि उसमें उद्धरण है तो उसका चयन भी मुख्य रोचक बिन्दुओं संबंधी वाक्य ही रहे और उनके साथ लेखक या वक्ता का नाम भी दिया जाए।

अध्यापक, मार्गदर्शक, सम्पादक, सह–सम्पादक, छात्र लेखक, वक्ता, चिंतक, कलाकार आदि तो चाहिए ही, विविध विषयों के लिए भी पृथक्–पृथक् सम्पादक, उप–सम्पादक, स्तम्भ लेखक चाहिए, जिसमें से सभी क्रियाओं के लिए, उत्सव, आयोजनों के लिए, पाठ्य विषयों के लिए पुस्तक समीक्षा के लिए तो हो ही साथ ही फोटोग्राफर, चित्रकार, संवाददातागण जो अध्यापक या छात्र होंगे, टंकणकार और प्रुफ रीडर आदि के साथ ही अन्य कार्यों के लिए भी कार्यकर्ता अत्यावश्यक होंगे। ये सब छात्र होंगे जो अध्यापक या अध्यापकों के मार्गदर्शन में कार्य करेंगे।

प्रश्न 12. लेख और आलेख में क्या अंतर है ?

उत्तर–लेख साहित्य की एक मूलभूत विधा है। जिसमें हम किसी भी विषय को विस्तार से लिखते हैं। इसका आदि, अंत और मध्य होता है। अनेक अनुच्छेदों में विषय को विभाजित किया जाता है। और विषय से सम्बन्धित जानकारी को रोचक तरीके से समझाने का प्रयत्न किया जाता है। लेख केवल रचनात्मक साहित्य भी हो सकता है और सूचनात्मक साहित्य भी हो सकता है। सूचनात्मक साहित्य में विषयों से सम्बन्धित जानकारी होती है। रचनात्मक साहित्य के अंतर्गत अनेक प्रकार के निबंध आते हैं जिसमें मौलिकता, रोचकता, जानकारी और रचनात्मक सौष्ठव का मिलाजुला प्रभाव होता है और आलेख एक गद्य लेखन विधा है जिसे वैचारिक गद्य रचना भी कह सकते हैं। वैचारिक जहाँ हमारे विचारों की प्रधानता है, लेखक के निजी विचारों की प्रधानता है, आलेख ज्वलंत विषय, समस्याओं, अवसरों तथा चरित्र पर लिखे जाते हैं। किसी एक विषय पर प्रधान छोटी–सी संयुक्त रचना को आलेख कहते हैं। जिसमें तथ्यात्मक, विश्लेषणात्मक तथा विचारात्मक संपूर्ण जानकारी होती है। आलेख गद्य लेखन की वह विधा है जिसमें लेखक अपनी बातों को स्वतन्त्रतापूर्वक दुनिया के सामने बयाँ कर सकता है।

प्रश्न 13. विद्यालय पत्रिका पर लेख लिखिए। **(जबलपुर 2019, 22)**

***अथवा*, विद्यालय पत्रिका में सम्पादिका का महत्व समझाइए।** **(छतरपुर 2021)**

उत्तर–विद्यालय पत्रिका–किसी भी विद्यालय की पत्रिका उस विद्यालय का दर्पण होती है। इसी से विद्यालय की सांस्कृतिक और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ साहित्यिक रुचि का भी पता चलता है। विद्यालय की पत्रिका अभिव्यक्ति इस बात का प्रमाण है कि यहाँ विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय प्रबंध परिवार प्रतिबद्ध है। संकलित साहित्य सामग्री का दूसरा प्रचलित रूप विद्यालय पत्रिका है। इसमें विद्यालय के अध्यापकों तथा छात्रों द्वारा लिखित विभिन्न विषयक लेख, गद्य रचनाएँ, कविताएँ, संकलन, संग्रह, कलात्मक चित्र, व्यंग्य चित्र आदि के साथ सम्पादक के द्वारा सम्पादकीय एवं अन्य रूपों में मुख्य शैक्षिक व प्रशासनिक व विद्यालय प्रशासन व व्यवस्था सम्बन्धी बातों को भी इसी में दिया जाता है। किंतु ऐसे पत्र दुर्लभ हैं जिनमें विद्यालय के सम्पूर्ण सत्र में छात्र संसद सहित समस्त प्रचलित कार्यों अथवा जो उत्सव आयोजन, वाद–विवाद, भाषण, प्रवचन, कविता, पाठ, सृजनात्मक रचनाएँ, प्रतियोगिताएँ, विशेषताएँ आदि में जो कुछ कार्य हुआ है, परिचायक है जिसका विवरण हो। यह एक अत्यावश्यक प्रकाशन है, जो विद्यालय की वार्षिकी बनकर एक उपयोगी साहित्य अभिलेख ग्रंथ हो जाता है, जिसके अनेक लाभ हैं।

विद्यालय वार्षिकी में जहाँ हमारा अभिप्राय विद्यालय में हुए समस्त कार्यों और प्रवृत्तियों का सम्यक् सम्पूर्ण विवरण तथ्यों, रचनाओं आदि के संकलन रूप में संग्रहित कर प्रस्तुत करती है, वहाँ मुख पत्र में हम अपने उद्देश्य लक्ष्यानुसार श्रेष्ठ रचनाओं का चयन सम्पादन कर प्रस्तुत करते हैं।

वार्षिकी भी दो प्रकार की होती है। एक तो विद्यालय में साहित्यिक क्षेत्र में जो कार्य हुआ है उसका संग्रह मात्र और दूसरा उस विद्यालय के रूप में कब किस क्षेत्र में किसने क्या–क्या काम किया, विद्यालय ने क्या किया, वहाँ कब क्या घटनाएँ हुईं और उनका क्या प्रभाव व महत्व है।

इस प्रकार वार्षिकी के दो रूप हैं–

(1) साहित्यिक संग्रह एवं (2) अभिलेखात्मक इतिहास।

(1) साहित्यिक संग्रह–विद्यालय में वर्ष पर्यन्त साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में जो कुछ हुआ है अर्थात् विद्यालय में छात्र–छात्राओं को केवल मौलिक रचनाएँ जैसे– निबंध, कथा, कहानी, वृतांत, शब्द चित्र, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, भ्रमण, गद्यगीत, कविता, नाटक, संवाद, भाषण, प्रवचन, वाद–विवाद, आलोचना, समीक्षा आदि का सम्यक् संग्रह संकलन, सुसम्पादन करके एक ग्रंथ रूप में सुरक्षित रख लेना और उसे प्रकाशित करना साहित्यिक संग्रह के अंतर्गत आते हैं।

(2) अभिलेखात्मक इतिहास–यह वार्षिकी का दूसरा रूप है। इसमें विद्यालय में वर्ष पर्यन्त प्रत्येक क्षेत्र में जो कुछ कार्य हुआ है, विविध कार्यों, प्रयोगों, गतिविधियों, उद्योग, व्यवसायों, प्रशिक्षणों आदि का सम्यक् क्रमबद्ध विवरण, इनका आवश्यक साहित्य, चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, सर्वेक्षण, अंकेक्षण, प्रयोग परीक्षण इनके साथ ही कलाकृतियाँ, चित्र, व्यंग्य चित्र, अनुकृतियाँ, छवि का आदि आते हैं।

वार्षिकी का स्वरूप–यद्यपि वस्तुतः यह कृति स्वयं ही एक विशिष्ट रूप ले लेती है फिर भी यह विद्यालय के समस्त अंगों के कार्य का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत करेगी। वार्षिकी की मुख्य विशेषता तो उसके प्रस्तुतीकरण की मौलिकता एवं रोचकता है, जो उसके सम्पादन में परिलक्षित होती है। वार्षिकी किसी भी विद्यालय का सर्वश्रेष्ठ और उपयोगी प्रकाशन होता है।

वार्षिकी की रूपरेखा–ये निम्न हैं–

(1) कलात्मक संपादन और प्रस्तुतीकरण जो रोचक हो।

(2) मुखपृष्ठ, आवरण, समर्पण एवं विषय–सूची।

(3) अध्यापक, कार्यकर्ता, कार्यक्रम, भवन विशेष, कार्य विशेष और अन्य उल्लेखनीय बातें इसमें आती हैं।

(4) विद्यालय की उपलब्धियाँ व सफलताएँ, इनमें आयी हुई बाधाएँ, उत्पन्न समस्याएँ उनके परिणाम आदि आते हैं।

प्रश्न 14. रिपोर्ट लेखन से आप क्या समझते हैं ? रिपोर्ट लेखन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– रिपोर्ट लेखन–'रिपोर्ट' शब्द का हिन्दी पर्याय 'प्रतिवेदन' है। समाचार संकलित करके उसे लिखकर प्रेस में भेजना रिपोर्टिंग कहलाता है। ज्यादातर यह कार्य फील्ड में जाकर किया जाता है। एक संवाददाता सेमीनार रैली अथवा संवाददाता सम्मेलन से विविध प्रकार की खबरें एकत्रित करके उन्हें अपने कार्यालय में प्रेषित कर देता है। वास्तव में रिपोर्ट एक प्रकार की लिखित विवेचना होती है। जिसमें किसी संस्था, सभा, दल, विभाग अथवा विशेष आयोजन की तथ्यों सहित जानकारी दी जाती है। रिपोर्टिंग का उद्देश्य संबंधित व्यक्ति, संस्था, परिणाम, जाँच अथवा प्रगति की सही एवं पूर्ण जानकारी देना है।

रिपोर्ट लेखन की विशेषताएँ–

(1) कार्य योजना–रिपोर्टर को पहले पूरी योजना बनानी चाहिए। विषय का अध्ययन करके उसके उद्देश्य को समझना चाहिए। इसकी प्रारंभिक रूपरेखा बनाने से रिपोर्ट लिखने में सहायता मिलती है।

(2) तथ्यात्मकता—रिपोर्ट तथ्यों का संकलन होता है। इसलिए सबसे पहले विषय से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी लेनी पड़ती है। इसके लिए पुरानी रिपोर्ट, फाइलों, नियम पुस्तकों, प्रपत्रों के द्वारा आवश्यक सूचनाएँ इकट्ठी की जाती हैं।

(3) प्रामाणिकता—तथ्यों का प्रामाणिक होना अत्यंत आवश्यक है। किसी विषय, घटना अथवा शिकायत आदि के बारे में जो तथ्य जुटाए जाएँ उनकी प्रामाणिकता से रिपोर्ट की सार्थकता बढ़ जाती है।

(4) निष्पक्षता—रिपोर्ट एक प्रकार से वैधानिक अथवा कानूनी दस्तावेज बन जाती है। इसलिए रिपोर्टर का निर्गम विवेकपूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक है। रिपोर्ट लिखते समय या प्रस्तुत करते समय रिपोर्टर प्रत्येक तथ्य, वस्तुस्थिति, पक्ष–विपक्ष, मन–विमन का निष्पक्ष भाव से अध्ययन करे और फिर उसके निष्कर्ष निकाले।

(5) विषयनिष्ठता—रिपोर्ट का संबंधित प्रकरण पर ही केन्द्रित होना अपेक्षित है। यदि किसी विषय–विशेष पर रिपोर्ट लिखा जाता है, तो उसे संबंधित तथ्यों, कारणों और सामग्री आदि तक ही सीमित रखना चाहिए।

(6) निर्णयात्मकता—रिपोर्ट मात्र विवरण नहीं होती। इसलिए रिपोर्टर को संबंधित विषय की विशेष जानकारी होना आवश्यक है।

(7) संक्षिप्तता और स्पष्टता—रिपोर्ट लिखते समय यह ध्यान रखा जाए कि उसमें अनावश्यक विस्तार न हो। प्रत्येक तथ्य या साक्ष्य का संक्षिप्त और सुस्पष्ट विवरण दिया जाए जिससे प्राप्त तथ्यों और सुझावों पर ध्यान तुरंत आकृष्ट हो सके।

प्रश्न 15. संपादकीय लेखन के अर्थ एवं विशेषताओं को समझाइए।

(छतरपुर 2019; ग्वालियर 18)

उत्तर—संपादकीय लेखन का अर्थ—संपादकीय लेखन का शाब्दिक अर्थ समाचार पत्र के संपादक के अपने विचार से हैं। प्रत्येक समाचार पत्र में संपादक प्रतिदिन ज्वलंत विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। संपादक प्रतिदिन किसी ज्वलंत समस्या या प्रमुख सामयिक घटनाक्रम पर संपादकीय लेखन करता है। अर्थात् संपादकीय लेख वह लेख है, जिसमें समाचार पत्र के संपादक का अपना नजरिया दिखता है। संपादकीय लेख वास्तव में अखबार के संपादक द्वारा लिखा जाता है।

संपादकीय लेखन की विशेषताएँ—ये निम्न हैं—

(1) एक आदर्श संपादकीय लेख 800 से 1000 शब्दों के बीच में होता है।

(2) लेख का विषय प्रायः ज्वलंत समस्या या तात्कालिक घटनाक्रम से लिया जाता है।

(3) विशिष्ट समाचार या समसामयिक घटना को भी संपादकीय लेख का आधार बनाया जा सकता है।

(4) विश्वसनीयता, आत्मीयता, रोचकता जैसे गुण सम्पादकीय लेख में होनी चाहिए।

(5) प्रत्येक संपादक की अपनी शैली होती है तथा अपनी शैली में संपादक लेख लिखता है।

(6) संपादकीय लेखन निर्वैयक्तिक होकर लिखे जाने चाहिए, जो व्यक्तिगत आपेक्ष से मुक्त हो तथा निश्चित विचार एवं दृष्टिकोण का प्रतिपादन करें।

(7) संपादक को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर अपनी लेखन तटस्थता व निरपेक्षता से करनी चाहिए।

(8) संपादक द्वारा लिखा गया लेख न अधिक बड़ा और न अधिक छोटा होता है।

(9) एक उत्तम संपादकीय लेख पाठकों के विचारों में उत्तेजना उत्पन्न करता है उन्हें विषय पर सोचने एवं अपनी विचार व्यक्त करने में सहायता करता है।

प्रश्न 16. लेखकला के विभिन्न सोपानों का वर्णन कीजिए। **(छतरपुर 2017)**

***अथवा*, आलेख लेखन का अर्थ स्पष्ट कीजिये। आलेख लेखन के प्रमुख सोपानों का वर्णन कीजिए।** **(उज्जैन 2021)**

उत्तर—आलेख लेखन का अर्थ—ल.उ. प्रश्न क्रमांक 4 का उत्तर देखिए।

लेखकला लेखन के प्रमुख सोपान–

(1) प्रारंभिक अवस्था में लेखों को उचित प्रकार से पढ़ना–प्रारम्भिक अवस्था में लेखों को अच्छी प्रकार से कई बार पढ़ना अत्यन्त आवश्यक होता है। इस कार्य के लिए छात्रों को व्यक्तिगत रूप से भी निर्देश दिये जा सकते हैं। किसी लेख को कई बार पढ़ने से उसका प्रकरण, विषय–वस्तु, पहचान, विचार, उदाहरण आदि की जानकारी हो जाती है। लेखों में सारगर्भिता अधिक पायी जाती है और शब्दों का बहुत संतुलित तथा उपयुक्त प्रयोग किया जाता है। कुछ शब्द अत्यन्त क्लिष्ट भी होते हैं। ऐसे शब्दों को पहचानना भी आवश्यक होता है। अत: प्रारम्भिक अवस्था में लेखों को कई बार उचित प्रकार से पढ़ना आवश्यक होता है।

(2) लेख की संरचना का विश्लेषण करना–इसके अंतर्गत यह देखा जाता है कि लेख का प्रस्तुतीकरण कैसा है। यह किन विचारों को पोंषित कर रहा है, इसका आकार कितना बड़ा है तथा किस बात पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है ? यह सामाजिक विचारों पर आधारित है या राजनीतिक विचारों पर अथवा सामाजिक कुरीतियों पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास कर रहा है या नवीन प्रौद्योगिकी की ओर अथवा देश की आर्थिक विकास की ओर या हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं की ओर। लेख का आकार क्या है, इसमें कितने प्रश्न हैं जिनका समाधान ढूँढना है, किन–किन विचारों पर अधिक जोर दिया जा रहा है और इनमें मुख्य थीम क्या हैं ? इन सभी बातों का विश्लेषण करके ही लेख की संरचना को ज्ञात किया जा सकता है।

(3) उपशीर्षक को पहचानना–लेख की संरचना के पश्चात् अब उपशीर्षक को पहचानने की बारी आती है। इस समय तक लेख को कई बार पढ़ा जा चुका होता है। लेख मुख्य रूप से किन विचारों पर आधारित है और इसके उपशीर्षक क्या–क्या हो सकते हैं। इस बात की जानकारी छात्र की हो चुकी होती हैं। लेख में कई विचार होते हैं, उनसे ही उपशीर्षक निकाले जाते हैं। लेख का विस्तार करने की दृष्टि से यह उपशीर्षक दोनों को ज्ञात करना आवश्यक हो जाता है। लेख को जितनी बार हम पढ़ते जाते हैं कुछ नवीन बिन्दु हमारे समक्ष स्पष्ट होते जाते हैं। इन्हीं नवीन बिन्दुओं में आगामी प्रश्नों के हल छिपे होते हैं।

(4) कुंजी शब्द–कुंजी शब्द एक प्रकार के संकेत शब्द होते हैं जिनमें प्रश्नों के समाधान के विषय में कुछ संकेत प्राप्त हो जाते हैं। अधिकांश लेखों में संकेत शब्दों के माध्यम से प्रश्नों के समाधान के विषय में कुछ संकेत प्राप्त हो जाते हैं। कई बार ये शब्द अर्थ से सुमेलित होते हैं और कई बार तथ्यात्मक होते हैं। लेख को पढ़ने से कुंजी शब्दों की पहचान हो जाती है और इन शब्दों के आधार पर अर्थ को सरलता से निकाला जा सकता है। कुँजी शब्दों की पहचान के लिए छात्रों को लेख कई बार पढ़ने के लिए देना चाहिए। धीरे–धीरे छात्र इन सांकेतिक कुंजी शब्दों को पहचानने लगते हैं। अभ्यास की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका होती है। लेखों को लिखते समय तथा पढ़ते समय अभ्यास के द्वारा इन शब्दों की निरंतर छात्रों द्वारा पहचान की जा सकती है।

(5) विचारों की क्रमबद्धता–लेख में विचारों की क्रमबद्धता का विशेष महत्व होता है। विचार बिखरे हुए हो सकते हैं। लेख लिखते समय उन अव्यवस्थित विचारों को क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित करना पड़ता है। प्रकरण चाहे कोई भी हो लेख विचारों को नियोजित किए बिना नहीं लिखा जा सकता है। विचारों को नियोजित करने के लिए सभी विचारों को प्रश्नों के अनुसार क्रमबद्ध किया जाता है। और इस क्रमबद्धता में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि कहीं ऐसा प्रतीत न हो कि विचार अधूरा है अर्थात् सभी महत्वपूर्ण बात कम शब्दों में प्रयोग में लाना आवश्यक है।

(6) मूर्त विस्तार का उपयोग–लेख लिखने का अभ्यास करते समय इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है कि लेख तभी सारगर्भित होते हैं जब वे तथ्यात्मक होते हैं। अत: उनको लिखते समय ठोस तथ्यों से पूर्ण विस्तृत सामग्री का उपयोग करना चाहिए, जिससे लेख ज्ञान प्रदान करने के साथ–साथ चिंतन और मनन करने के लिए भी बाध्य करे। लेख जानकारी प्रदान करने के स्त्रोत होने चाहिए। तथ्य के आधार पर दी गई जानकारी छात्रों के ज्ञान में भी वृद्धि करती है और लेखन को भी उच्च स्तरीय बना देती है तथा लेख वास्तविक और भरोसेमंद साधनों से एकत्रित होने चाहिए।

(7) लेख का समापन—लेख लिखते समय जिस तरह हमने शुरुआती पृष्ठभूमि को शानदार तरीके से प्रस्तुत किया होता है उसी रोचक तरीके से हमे अपने आलेख का समापन भी करना चाहिए। समापन करते समय हमें प्रमुख बिंदुओं और तथ्यों को लिखना चाहिए।

प्रश्न 17. एक अच्छे सम्पादक में कौन–कौन से गुण होने चाहिए ? **(उज्जैन 2022)**

***अथवा*, एक सम्पादक होने के नाते आपमें किन–किन गुणों का होना आवश्यक है? स्पष्ट कीजिए।** **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर—किसी समाचार पत्र या पत्रिका के प्रकाशन में संपादक की सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अच्छे संपादक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

(1) निष्पक्ष दृष्टिकोण—संपादक का दृष्टिकोण निष्पक्ष होना चाहिए। संपादक यदि किसी विचारधारा का पक्षधर होता है तो वह अपनी विचारधारा से विभिन्न विषयों के साथ न्याय नहीं कर सकेगा। वह समाचार पत्र के स्वामियों और अन्य लोगों के विचारों में सामंजस्य तभी स्थापित कर सकेगा जब वह तटस्थ भाव से वस्तुओं को देखेगा।

(2) विशद ज्ञान—संपादक को विभिन्न विषयों का विशद ज्ञान होना चाहिए। तभी वह विभिन्न विषयों पर टिप्पणी कर सकेगा। इसके साथ–साथ संपादक को तकनीकी का भी ज्ञान होना चाहिए।

(3) नेतृत्व क्षमता—संपादक अपने समाचार पत्र का मुखिया होता है। उसके साथ उप–संपादक, सह–संपादक, संवाददाता, टेक्नीशियन, समाचार पत्र के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारी काम करते हैं। उन सबको साथ लेकर चलना और उनसे अच्छा काम करवाना संपादक का कार्य है। सभी कर्मचारियों से सफलतापूर्वक काम करवाने के लिए नेतृत्व क्षमता का होना अनिवार्य है।

(4) भाषा–ज्ञान—संपादक को उस भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए जिस भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित होता है। उस भाषा के व्याकरण व शब्दकोश की व्यापक जानकारी होने पर ही संपादक एक आकर्षक और प्रभावी संपादकीय लिख सकेगा।

(5) मधुरता व विनोदप्रियता—संपादक की वाणी में मधुरता और स्वभाव में विनोदप्रियता होनी चाहिए ताकि संपादन जैसे गंभीर कार्य को वह सरल बना सके और कार्यालय के कर्मचारियों के साथ उसके अच्छे संबंध स्थापित हो सके।

(6) कुशल प्रबंधक—संपादक का कार्य केवल संपादकीय लिखना और दूसरे लेखकों द्वारा लिखे गए लेखों की जाँच करना ही नहीं है बल्कि समाचार पत्र के प्रकाशन से जुड़े हुए प्रत्येक कार्य का प्रबंधन करना भी है। अतः संपादक के लिए एक अच्छा प्रबंधक होना अति आवश्यक है।

(7) धैर्यवान—समाचार पत्र के प्रकाशन का कार्य एक जटिल कार्य है। अतः संपादक का धैर्यवान होना आवश्यक है। समाचार पत्र समाज को प्रभावित करते हैं। इसलिए उसमें छपने वाली प्रत्येक सामग्री पर गहनता से विचार करना आवश्यक है।

प्रश्न 18. समाचार लेखन एक कला है। समाचार पत्र को अत्यधिक प्रभावी एवं रुचिकर बनाने के लिए किन–किन तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए। **(ग्वालियर 2019)**

उत्तर—समाचार पत्र को अत्यधिक प्रभावी एवं रुचिकर बनाने के लिए निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) लेखन में रोचकता—रोचकता समाचार लेखन का दूसरा गुण है। संवाददाता को ऐसा तरीका ढूँढना चाहिये कि उसके पाठक को उसके समाचार में दिलचस्पी लें।

(2) आकर्षक शैली का प्रयोग—समाचारों की शैली आकर्षक होनी चाहिए। वे छोटे और स्पष्ट वाक्यों में लिखे जाने चाहिए। समाचार लिखते समय संवाददाता को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि समाचार पाठकों को पसंद आये। समाचार आकर्षक होने चाहिए।

(3) सत्यता का मिश्रण—समाचार में कोई असत्य या गलत बात नहीं लिखी जानी चाहिए। सत्य, सम्पूर्ण सत्य और मात्र सत्य ही संवाददाता का ध्येय होना चाहिए। सत्य चाहे जितना भी कठोर हो, संवाददाता को उसे ऐसे ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए कि वह अप्रिय न लगे।

(4) वस्तुनिष्ठता—विभिन्न घटनाओं के समाचारों में संवाददाता की अपनी पसंद या नापसंद का पुट आ ही जाता है। उसे यथासम्भव व्यक्तिगत पूर्व–धारणाओं और भावावेगों से दूर रहना चाहिए।

(5) भाषा सरल एवं आसान—संवाददाता का भाषा पर अधिकार होना चाहिये। उसे आडम्बरपूर्ण शैली से बचना चाहिए। क्योंकि उससे पाठक खीझ उठते हैं। संवाददाता को सदैव इस बात का स्मरण होना चाहिये कि समाचार पत्र विद्वानों द्वारा ही नहीं पढ़ा जाता है बल्कि आम लोगों द्वारा भी पढ़ा जाता है।

(6) अन्वेषणात्मकता—अन्वेषणात्मक संवाद लेखन वह होता है जिसमें घटनाओं की गहराई में पैठना होता है और पता लगाना होता है कि घटना किन कारणों से हुई। सामान्य संवाददाता आवश्यक ब्यौरे इकट्ठा करता है और अन्वेषक संवाददाता कारणों को ज्ञात करता है, प्रवृत्तियों का पता लगाता है और तथ्यों की व्याख्या करता है। कभी–कभी अन्वेषणात्मक संवाद लेखन के समाचारों की समाज की किसी प्रथा के विरुद्ध किसी समाचार–पत्र द्वारा चलाये जा रहे किसी आंदोलन में उपयोग में लाया जाता है।

(7) अच्छा सूत्रपात—अनुभवी पत्रकारों का कथन है कि सूत्रपात में ही समाचार का सार–सर्वस्व होना चाहिये जिससे कि यदि शेष समाचार को काट भी दिया जाये तो भी समाचार अविकल बना रहे। समाचार के प्रत्येक दूसरे वाक्य से अतिरिक्त जानकारी मिलनी चाहिए। आज की प्रवृत्ति छोटे सूत्रपातों की है। औसत सूत्रपात तीन शब्दों से अधिक का नहीं होता। सामान्यतः इस सीमा के अन्दर समाचार प्रभावोत्पादक ढंग से कहा जा सकता है। एक सम्पादक इस प्रकार कहता है कि औसत मनुष्य सूत्रपात का सारांश बीस शब्दों में बता देता हैं और मुख्य पंक्ति का लेखक उसे उस शब्दों में या उससे भी कम शब्दों में रखता है। संवाददाता को सदैव विशेषतः समाचार का सूत्रपात करते समय घुमावदार उप–वाक्यों से बचना चाहिए।

प्रश्न 19. चिंतन की क्षमता से आप क्या समझते हैं ? इसका विकास किस प्रकार किया जा सकता है ? **(जबलपुर 2022)**

उत्तर—गंभीर सोच–विचारों के बीच तार्किक संबंध को स्पष्ट रूप से समझने और तर्कसंगत रूप से सोचने की क्षमता ही चिंतन की क्षमता या विचार कौशल कहलाता है। यह सोचने का ऐसा एक तरीका है, जिसमें आप सभी तर्कों और निष्कर्षों को स्वीकार नहीं करते हैं बल्कि इनके तर्कों और निष्कर्षों पर सवाल उठाते हुए रवैया अपनाते हैं।

विद्यार्थियों में चिंतन की क्षमता एवं विकास हम निम्नलिखित तरीकों से कर सकते हैं–

(1) प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करें—छात्रों में चिंतन की क्षमता को विकसित करने के लिए छात्रों में परियोजना आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। वास्तविक दुनिया की समस्याओं का पता लगाने और उन्हें हल करने से बच्चे कक्षा से बाहर और वास्तविक दुनिया में आ जाते हैं। चिंतन की क्षमता एक ऐसा कौशल है जो स्कूल से परे जीवन में सफलता के लिए प्रमुख है। प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा नये ज्ञान, अवधारणाओं और विचारों को पेश करने का एक शानदार तरीका है जो छात्रों को सीखने और छात्रों में महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित करती है।

(2) सीखने की स्वतंत्रता—यह छात्रों में महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करने के प्रभावी तरीकों में से एक है। नई अवधारणाओं और सामग्री को पेश करने के बाद, शिक्षकों को अपने छात्रों को यह सीखने की स्वतंत्रता देनी चाहिए कि वे क्या सीखना चाहते हैं ? इस तरह निश्चित रूप से छात्रों को महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करने में मदद मिलती हैं। जब छात्र अपनी पसंद की चीजें सीखते हैं, तो वे प्रभावी ढंग से सीखेंगे। जो भी सीखने के तरीके, छात्र चाहते हैं या सीखते हैं या वह सीखने में सहज है, उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(3) कहानियों को संबंधित अवधारणाओं से जोड़ता है—कहानियों को संबंधित अवधारणाओं से जोड़ना भी महत्वपूर्ण सोच विकसित करने का एक आवश्यक तरीका है। जब छात्र कहानी के

मूलभूत अर्थ को समझ जाते हैं, तो उन्हें समान अवधारणा वाली कहानियों का विश्लेषण करने के लिए उनसे कहानी के बाहर संबंध बनाने के लिए कहें।

(4) विचारों का विश्लेषण और आकलन करना शुरू करें—तथ्यों और विचारों की प्रभावशीलता का विश्लेषण और मूल्यांकन महत्वपूर्ण सोच का एक मुख्य प्राथमिक तत्व है। यदि छात्र सक्रिय रूप से इस सामग्री के साथ संबंध बनाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के साथ लगे हुए है। प्राथमिक विचारों को विनियमित करते हैं और मूल्यांकन करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को हाथ में लिए गए पाठ के बारे में गम्भीर रूप से सोचने के लिए प्रेरित करना है।

(5) सक्रिय शिक्षण को अपनाएँ—छात्रों को सक्रिय शिक्षार्थियों में बदलना महत्वपूर्ण सोच सिखाने का प्राथमिक लक्ष्य है। छात्र अक्सर सामग्री के साथ शांति से जुड़ते हैं या वे इसके बारे में, वास्तव में सोचे बिना इसे सीखते हैं और इसे जो पहले से जानते हैं उससे जोड़ते हैं। गंभीर रूप से सोचना सीखने से छात्रों को जानकारी का विश्लेषण करने में मदद मिलेगी।

छात्रों में महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करना आवश्यक है क्योंकि यह आपको कठिन निर्णय लेने में मदद करता हैं। छात्रों को वास्तविक जीवन की स्थितियों से संबंध बनाने और पैटर्न को वर्गीकृत करने के लिए प्रेरित करना उनके महत्वपूर्ण सोच कौशल का अभ्यास करने का एक शानदार तरीका है।

प्रश्न 20. अनुच्छेद लेखन से आप क्या समझते हैं ? अनुच्छेद लेखन की विशेषताएँ एवं अनुच्छेद लिखते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ? **(छतरपुर 2021, 22)**

उत्तर—किसी एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए लिखे गए सम्बद्ध और लघु वाक्य समूह को अनुच्छेद लेखन कहते हैं। दूसरे शब्दों में, किसी घटना, दृश्य अथवा विषय को संक्षिप्त किंतु सारगर्भित ढंग से जिस लेखन शैली में प्रस्तुत किया जाता है, उसे अनुच्छेद लेखन कहते हैं। किसी भी विषय को संक्षिप्त एवं प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने की कला को अनुच्छेद लेखन कहा जाता है।

अनुच्छेद शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Paragraph' शब्द का हिन्दी पर्याय है। अनुच्छेद निबंध का संक्षिप्त रूप होता है। इसमें किसी विषय के किसी एक पक्ष पर 80 से 100 शब्दों में अपने विचार व्यक्त किये जाते हैं। अनुच्छेद में हर वाक्य मूल विषय से जुड़ा रहता है। अनावश्यक विस्तार के लिए उसमें कोई स्थान नहीं होता। अनुच्छेद में घटना अथवा विषय से सम्बद्ध वर्णन संतुलित तथा अपने आप में पूर्ण होना चाहिए। इसका मुख्य कार्य किसी एक विचार को इस तरह लिखना होता है, जिसके सभी वाक्य एक–दूसरे से बंधे होते हैं। एक भी वाक्य अनावश्यक और बेकार नहीं होना चाहिए। अनुच्छेद लेखन को लघु निबंध भी कहा जा सकता है। इसमें सीमित, सुगठित एवं समग्र दृष्टिकोण से किया जाता है। शब्द संख्या सीमित होने के कारण लिखते समय थोड़ी सावधानी बरतनी चाहिए।

सावधानियाँ—अनुच्छेद लिखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(1) अनुच्छेद लिखने से पहले रूपरेखा, संकेत–बिंदु आदि बनानी चाहिए।
(2) अनुच्छेद में विषय के किसी एक ही पक्ष का वर्णन करें।
(3) भाषा सरल, स्पष्ट और प्रभावशाली होनी चाहिए।
(4) एक ही बात को बार–बार न दोहराएँ।
(5) अनावश्यक विस्तार से बचें, लेकिन विषय से न हटें।
(6) शब्द–सीमा को ध्यान में रखकर ही अनुच्छेद लिखें।
(7) पूरे अनुच्छेद में एकरूपता होनी चाहिए।
(8) विषय से संबंधित सूक्ति अथवा कविता की पंक्तियों का प्रयोग भी कर सकते हैं।

अनुच्छेद की प्रमुख विशेषताएँ—(1) अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते।

(2) अनुच्छेद के वाक्य–समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।

(3) अनुच्छेद के सभी वाक्य एक–दूसरे से गठित और सम्बद्ध होते हैं।

(4) अनुच्छेद एक स्वतंत्र और पूर्ण रचना है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता।

(5) उच्च कोटि के अनुच्छेद–लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरंभ, मध्य और अंत आसानी से व्यक्त हो जाये।

(6) अनुच्छेद सामान्यत: छोटा होता है, किंतु इसकी लघुता या विस्तार विषय–वस्तु पर निर्भर रहता है।

(7) अनुच्छेद की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

(8) अनुच्छेद की शैली का चयन विषय के अनुकूल करना चाहिए।

(9) अनुच्छेद का प्रथम और अंतिम वाक्य अत्यंत सशक्त एवं प्रभावशाली होनी चाहिए।

(10) लंबे अवतरण के अनुच्छेद को खंडों में विभाजित करके लिखना चाहिए।

प्रश्न 21. आमुख किसे कहते हैं ? आमुख के प्रकारों को समझाइए। (छतरपुर 2022)

उत्तर–समाचार लेखन का पहला चरण है लीड या इंट्रो या आमुख। यह अंग्रेजी शब्द 'Introduction' का लघु रूप है। ब्रिटिश पत्रकारिता में इसे इंट्रो और अमेरिका में इसे लीड कहा जाता है। हिन्दी में आमुख बोलते हैं। समाचार लिखने का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण है। यह समाचार का पहला पैरा होता है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या सूचनाओं का समावेश किया जाता है। इंट्रो को समाचार का प्राण भी कहा जाता है। **एडविन एल. शूमैन** ने सबसे पहले इस ओर ध्यान दिया। उन्होंने प्रत्येक समाचार के इंट्रो में क्या, कहाँ, कब, किसने, क्यों और कैसे–कैसे प्रश्नों के उत्तरों को ध्यान देने का सुझाव दिया। बाद में इसे सभी पत्रकारों ने स्वीकार कर लिया। इंट्रो समाचार की आत्मा के दर्शन का माध्यम है। इंट्रो पढ़ने के बाद ही पाठक समाचार के बारे में अपनी राय बताता है।

दूसरे शब्दों में, आमुख को समाचार की भूमिका और आत्मा भी कहा जाता है। यह समाचार का प्राण अथवा अंतिम निष्कर्ष का प्रकाश भी है। उर्दू में आमुख को 'मुखड़ा' भी कहा जाता है। समाचार के तीन पक्षों शीर्षक, आमुख और शेष भाग में आमुख का विशिष्ट महत्व है।

आमुख के प्रकार–

(1) भावनात्मक आमुख–भावनात्मक आमुख में पाठक की संवेदनाओं को स्पर्श किया जाता हैं। इसमें घटना चक्र और विचार प्रधान समाचारों का दोहन कर निष्कर्ष निकालने अथवा उसके लिए प्रेरणा देने की चेष्टा की जाती है।

(2) तथ्यात्मक आमुख–इसमें तथ्यों को प्रमुखता दी जाती है। इसमें घटना का यथातथ्य विवरण दिया जाता है।

(3) संक्षिप्त आमुख–इस प्रकार के आमुख में समाचार का संक्षिप्त रूप, कम–से–कम शब्दों में एक–दो वाक्यों में प्रस्तुत किया जाता है।

(4) विस्तृत आमुख–इस प्रकार के आमुख में किसी घटना से संबंधित सभी प्रमुख तथ्यों को शामिल किया जाता है और उसका विस्तृत विवरण दिया जाता है।

(5) सूक्ति आमुख–इस प्रकार के आमुख में सार्वभौम सत्य की प्रस्तुति की जाती है।

(6) पंच आमुख–इसमें रिपोर्ट को क्रमवत प्रस्तुत किया जाता है।

(7) आश्चर्यजनक आमुख–इसमें आश्चर्यजनक तथ्यों को विस्मयादिबोधक चिन्हों का प्रयोग कर प्रस्तुत किया जाता है।

(8) दुर्घटना आमुख–इस प्रकार के आमुख में विवरण दिया जाता है और प्रभावित व्यक्तियों का नामोल्लेख होता है।

(9) कारतूस आमुख–यह अत्यंत छोटा वाक्य होता है और समाचार को सरलता से सीधे व्यक्त कर देता है। यह आमुख अपने आप में समाचार को स्पष्ट अभिव्यक्त कर देता है।

(10) उद्धरण आमुख–गर्मियों के भाषण, साक्षात्कार आदि में व्यक्त विचारों के समाचारों में इस प्रकार के आमुख बनाए जाते हैं।

(11) प्रश्न आमुख—इस प्रकार आमुख में कोई प्रश्न उठाकर उसका उत्तर दिया जाता है। जिससे समाचार रुचिकर और कौतूहलवर्धक बन जाता है।

प्रश्न 22. अशुद्ध उच्चारण के कारणों को बताइए।

उत्तर—अशुद्ध उच्चारण के कारण—

(1) शारीरिक दोष—कभी—कभी शारीरिक विकार जैसे—जिह्वा, ओष्ठ, तालु, दंत आदि के दोष के कारण भी उच्चारण संबंधी शेष आ जाते हैं। हकलाने व तुतलाने का कारण अंग दोष ही है। उच्चारण अंगों के विकार के कारण वे सम्बद्ध ध्वनियों का सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

(2) भिन्न—भिन्न भाषा—भाषियों का प्रभाव—भिन्न—भिन्न भाषा—भाषियों के कारण भी उच्चारण में अनेक दोष आ जाते हैं। पंजाब में रहने वाले क, ख, ग, घ को का, खा, गा, घा पश्चिमी उत्तरप्रदेश वाले कै, खै, गै, घै बंगाली लोग को, खो, गो बोलते हैं। बंगाली में "व" न होने के कारण हर स्थान पर 'ब' का प्रयोग किया जाता है।

(3) शिक्षक का अशुद्ध उच्चारण—शिक्षक का अशुद्ध उच्चारण बालकों को अशुद्ध उच्चारण सिखाता है। बालक तो अनुकरण द्वारा सीखते हैं। यदि शिक्षक "शहर को सहर", "भाषा को भासा", "शायद को सायद" बोलेंगे तो बालक भी अशुद्ध बोलेंगे।

(4) उच्चारण शिक्षण का अभाव—शिक्षक कक्षा में उच्चारण शिक्षण में रुचि नहीं लेते हैं। यदि बालक कक्षा में अशुद्ध बोलता है तो उसका उच्चारण कक्षा में ही शुद्ध कराना चाहिए।

(5) अज्ञान—अज्ञानता के कारण उच्चारण लेखन शब्द—रचना तथा रूप रचना की भूल होती है। जैसे—"औरत को ओरत", "जबरदस्त को जबरजस्त", "कवयित्री को कवित्री" आदि कहना उच्चारण की अशुद्धियाँ है।

(6) असावधानी—बहुत—सी उच्चारण की अशुद्धियाँ असावधानी के कारण हो जाती है। जैसे— "आवश्यकता को अवश्यकता", "प्रकट को प्रगट", "कविता को कव्ता", "ज्योत्सना को ज्योस्ना" आदि असावधानी के कारण ही बोले जाते हैं।

(7) आदत का प्रभाव—कभी—कभी बन कर बोलने अथवा दूरभ्यास के कारण उच्चारण में अशुद्धि हो जाती हैं। जैसे—"खाना को खाना", "फल को फल" कहना।

(8) अक्षरों व मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान—बालकों को जब अक्षरों (स्वर तथा व्यंजन) के स्पष्ट उच्चारण का ज्ञान नहीं होता तो वे बोलने तथा पढ़ने में भी अशुद्धियाँ करते हैं। मात्राओं का अस्पष्ट ज्ञान होने से उच्चारण की अशुद्धियाँ होती है।

(9) मनोवैज्ञानिक कारण—कभी—कभी अत्यधिक प्रसन्नता, भय, शंका तथा झिझक के कारण शुद्ध उच्चारण नहीं हो पाता है। कभी—कभी अति शीघ्रता से बोलने के कारण भी उच्चारण में अशुद्धि हो जाती है।

(10) सामाजिक प्रभाव—भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। यदि घर या समाज में अशुद्ध उच्चारण किया जाता है तो बालक उन शब्दों का अशुद्ध उच्चारण ज्यों का त्यों अनुकरण कर लेता है। जैसे—स्टेशन को सटेशन कहना, डिब्बा को डब्बा, तश्तरी को तस्तरी आदि।

(11) क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव—भाषा के उच्चारण पर क्षेत्रीय बोलियों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। बालक खड़ी बोली के प्रभाव के कारण "क" का उच्चारण "के" करने लगते हैं। इन बोलियों के प्रभाव से हिन्दी भाषा के उच्चारण में दोष आ ही जाता है। भारत में तो हर पग पर बोली बदल जाती है, भाषा बदल जाती है तथा वेश बदल जाता है।

(12) भौगोलिक कारण—उच्चारण पर भौगोलिक प्रभाव भी पड़ता है। भिन्न—भिन्न भौगोलिक परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्तियों के स्वर तंतु भिन्न—भिन्न होते हैं।

प्रश्न 23. अपनी रुचि के अनुसार किसी समकालीन विषय पर लेख लिखिए।

(भोपाल 2022)

उत्तर—ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग—ऑनलाइन शिक्षा जो आज के

बदले हुए समय की माँग हैं, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और डिजीटल मीडिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण की जाती है। इंटरनेट, ऑडियो, वीडियो की जानकारी माँग होने से भी छात्र ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आज की इन विषम परिस्थितियों में छात्र ऑनलाइन शिक्षकों के निर्देशानुसार ही शिक्षा प्राप्ति में जुटे हैं। अब तो U.G.C. ने भी यह सुझाव दे दिया है कि भविष्य में जब भी शैक्षिक कार्यक्रम हो तब दो दिन ऑनलाइन शिक्षण गुगलमीट, वेबेक्स, जूम इत्यादि तकनीकी के द्वारा अगले दो दिन विद्यार्थी स्कूल या कॉलेज में प्रत्यक्ष शिक्षा ग्रहण करे और एक दिन का प्रोजेक्ट वर्क। तात्पर्य यह है कि ऑनलाइन शिक्षा आज के समय के अनुसार विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने भी कहा है–"जीवन में आए अवसरों को शक्ति, साहस एवं ज्ञान की कमी के कारण समझ नहीं पाता।" ऐसी स्थिति में हमें साहस एवं ज्ञान दोनों का परिचय देना होगा और ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहन देना होगा।

इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थी तरह–तरह से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। समय का बंधन नहीं है। विभिन्न पाठ्यक्रम सीखकर सर्टिफिकेट आदि भी प्राप्त कर सकता है। अपने ज्ञान का विस्तार कर सकता है। विशाल पठन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ऑनलाइन शिक्षण देश और समाज के लिए हितकारी है। समय की माँग एवं विद्यार्थियों के उपयुक्त भविष्य से जुड़ी यह ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को रुचिकर एवं आकर्षक तरीके से शिक्षा प्राप्ति के अवसर भी प्रदान करती है। यही कारण है कि आप भी इन परिस्थितियों में यह ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग बन चुकी हैं, इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है।

प्रश्न 24. कॉमिक स्ट्रिप क्या होती है ? **(छतरपुर 2021)**

उत्तर–कॉमिक एक दृश्य कहानी है जिसे छवियों के माध्यम से बताया जाता है। यह चित्रों का एक क्रम है, जिसे आमतौर पर क्षैतिज रूप से व्यवस्थित किया जाता है, जिसे कहानी या घटनाओं के कालानुक्रमिक अनुक्रम के रूप में पढ़ने के लिए डिजाइन किया गया है। कॉमिक्स अक्सर हास्यप्रद होते हैं और आमतौर पर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में पाए जाते हैं। कॉमिक का उद्देश्य पाठकों को खुश करना होता है।

दूसरे शब्दों में, कॉमिक स्ट्रिप एक अखबार, पत्रिका आदि में चित्रों का एक अनुक्रम है, जो एक विनोदी कहानी या एक रोमांच से संबंधित होता है। परम्परागत रूप से 20 वीं और 21 वीं सदी में कॉमिक को समाचार पत्रों में सबसे पहले प्रकाशित किया गया। दैनिक समाचार पत्रों में काले और सफेद रंगों में मुद्रित क्षैतिज के साथ जबकि रविवार के समाचार पत्रों में विशेष रंग कॉमिक्स खंडों में अधिक अनुक्रमों की पेशकश की। स्ट्रिप्स की एक कॉमिक्स कलाकार या कार्टूनिस्ट द्वारा लिखित और खींचा जाता है। 1920 के दशक के उतरार्द्ध में, कॉमिक स्ट्रिप्स अपने आनंदमय मूल से विस्तारित होकर साहसिक कहानियों को प्रस्तुत करने लगी जैसे–पोपेय, कैप्टन इजी बक रोजर्स, टार्जन और हैरी एंड द पाइरेट्स आदि। 1940 के दशक में सोप–ओपेरा ने लोकप्रियता हासिल की। वर्तमान में भी लोग कॉमिक स्ट्रिप को पढ़ना पसंद करते हैं, अब उसका दिन–प्रतिदिन एक नया रूप देखने को मिल रहा है।

प्रश्न 25. किसी भी पढ़ी हुई कहानी की समीक्षा लिखिए। **(भोपाल 2022)**

उत्तर–उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी'–उषा प्रियवंदा की कहानी 'वापसी' एक चरित्र प्रधान कहानी है। कहानी के निम्नलिखित तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा इस प्रकार हैं–

कहानी के तत्व–कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, संवाद, देशकाल तथा वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य तथा शीर्षक।

कथावस्तु–वापसी कहानी के मुख्य पात्र बाबू रेलवे में पैंतीस साल तक नौकरी करने के उपरांत सेवानिवृत्त होते हैं। अपने बच्चों की उचित शिक्षा–दीक्षा को ध्यान में रखकर उन्होंने शहर में एक मकान बनवाया और वहीं अपनी पत्नी और बच्चों को रहने दिया। वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक दिनों में वे पत्नी और बच्चों के साथ रेलवे क्वार्टर में रहते थे। पर बाद में लंबे अरसे तक क्वार्टर में

अकेले रहकर नौकरी करते रहे। इस समय वे परिवार से दूर निःसंग जीने का कष्ट इस आशा से सह गए कि सेवानिवृत्त हो जाने के बाद वे पुनः परिवार के साथ रहकर सुख–शांति से शेष जीवन बिता देंगे। वे घर पर पहुँचते हैं तो अनुभव करते हैं कि उनके आगमन से कोई सुखी नहीं है। सबके स्वच्छंद आचरण पर जैसे अघोषित नियंत्रण लागू हो जाता है। जब गजाधर बाबू को लगता है कि उनके घर में रहने से सब परेशान है, उनकी पत्नी भी काम की व्यस्तता से समय नहीं दे पाती है, तो पुनः वो नौकरी की जगह पर वापस चले जाते हैं।

चरित्र–चित्रण—वापसी कहानी का मुख्य पात्र गजाधर बाबू है। गजाधर बाबू की पत्नी दोनों बेटे अमर और नरेन्द्र बेटी बसंती और बहू गौण पात्र है। कहानी के मुख्य पात्र बाबू एक मध्यमवर्गीय परिवार के मुखिया हैं। वे रेलवे में पैंतीस साल तक नौकरी करते हैं। पहले क्वार्टर में पत्नी और बच्चों के साथ रहते थे। वे सभी के साथ मनोविनोद करने व पत्नी उनका पूरा ख्याल रखती थी। बाद में उन्होंने शहर में एक मकान बनवाया, उन्होंने पत्नी और बच्चों को वहीं रहने दिया और खुद सेवानिवृत्त होने तक एकाकी जीवन बिताया। दूसरा पात्र गजाधर बाबू की पत्नी है वह धार्मिक महिला है, इसलिए पूजा–पाठ के बाद चौके में घुसती है। वह सारा काम करती है। बहू–बेटी उसकी सहायता नहीं करती। गजाधर बाबू के एक बेटा और बेटी भी हैं।

अगला पात्र गजाधर बाबू का बेटा अमर है, अमर पिताजी की अनुपस्थिति में परिवार में सर्वमयकर्ता था। पिताजी के आगमन से उसका अधिकार दायरा संकुचित होने से वह पिताजी पर क्षुब्ध हो जाता है। पिताजी से किसी काम में दखल न देने को कहता है। परिवार से अलग रहने की धमकी भी देता है। उसे पिताजी का टोकना बुरा लगता है।

अगला पात्र अमर की पत्नी है—अमर की पत्नी परिवार का कोई दायित्व नहीं संभालती। सारा काम सास करती है, ससुर खाना पकाने का दायित्व देते हैं तो वह जान–बूझकर काम बिगाड़ती है। वह सास की डाँट की परवाह नहीं करती है। ससुर दुःखी होकर घर छोड़ देते हैं तो वह खुश होकर सिनेमा देखने चली जाती है।

अगला पात्र बेटी बसंती है—बेटी बसंती भी उदण्ड, उच्छृंलन, अशिष्ट और लापरवाह है। वह पड़ोस में बड़े–बड़े लड़के होने पर भी वहाँ आती–जाती रहती है। पढ़ाई का बहाना बनाकर घर के काम–काज में हाथ नहीं बँटाती है। उसके पिताजी उसके आने–जाने पर रोक लगाते हैं तो वह धृष्टतापूर्वक उनसे बोलना बंद कर देती है।

संवाद—कहानी में संवाद का स्थान महत्वपूर्ण है। इससे मूल कथा को गति मिलती है। पात्रों के संवादों से चरित्रों के मनोभाव और चारित्रिक विश्लेषण हो जाता है।

इस कहानी में संवाद पात्रानुकूल हुए है। गजाधर बाबू की पत्नी जब कहती है—"सारे घर में जूठे बर्तन पड़े है। इस घर में धरम–करम कुछ नहीं। पूजा करके सीधे चौकें में घुसो।" इससे उसकी धर्मपरायणता, गृहस्थी की जिम्मेदारी, कर्म कुशलता आदि गुणों का परिचय मिलता है तो दूसरे सदस्यों की लापरवाही, पूजा के प्रति अनास्था, अनुशासनहीनता आदि अवगुण ध्वनित होते हैं।

गजाधर बाबू की पत्नी कहती है—"यही जोड़–गाँठ करते–करते बूढ़ी हो गई, न मन का पहना न ओढ़ा।" इससे ध्वनित होता है कि उसे हमेशा अपनी सीमित आय से किसी भी तरह गृहस्थी चलानी पड़ी। कभी भी संपन्नता की स्थिति नहीं आई और इस वजह से उसमें न मनपसंद पहनावे मिले, न गहने।

गजाधर बाबू गनेशी से कहते हैं—"कभी कुछ जरूरत हो तो लिखना गनेशी। इस अगहन तक बिटिया की शादी कर दो।" गनेशी अंगोछे के छोर से आँखें पोछता हुआ कहता है—"अब आप लोग सहारा न देंगे तो कौन देगा ? आप यहाँ रहते तो शादी में कुछ हौसला रहता।" इस संवाद से गजाधर बाबू की अधीनस्थ कर्मचारियों के प्रति स्नेह सहृदयता और सहानुभूति का भाव व्यंजित होता है।

गजाधर बाबू चीनी मिल में नौकरी करने जाते समय पत्नी से पूछते हैं—"तुम भी चलोगी? ठीक है तुम यहीं रहो, मैंने तो ऐसे ही कहा था।" इससे उनको अकेलेपन की छटपटाहट–निराशा,

पलायनवादिता और अस्तित्वहीनता का भाव झलकता है। गजाधर बाबू की पत्नी जब कहती है—"अरे नरेन्द्र! बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे। उसमें चलने तक की जगह नहीं हैं।" यहाँ चारपाई अपरिचय, अस्तित्वहीनता और अनात्मीयता की प्रतीक है। वहाँ ध्वनित है कि गजाधर बाबू जिन्दगी से ठगे हुए हैं। वे एक पराजित पलायनवादी इंसान बन गए हैं।

देशकाल तथा वातावरण—वातावरण कहानी के प्राण है। इसका सुचारु निर्वाह होने से कहानी जीवंत और यथार्थ लगती है। वातावरण की पृष्ठभूमि पर कहानी का विकास होता है। पात्रों से संबंधित स्थानों, समय, प्रवृत्ति और परिवेश के समयानुकूल चित्रण से वातावरण मनोनुकूल लगता है।

गजाधर बाबू सेवानिवृत्त होकर जब रेलवे क्वार्टर छोड़ते हैं तो उनके मन में विछोह का दुःख है। यह दुःख भी क्वार्टर के वातावरण में झलकता है—रेलवे क्वार्टर का यह कमरा, जिसमें उन्होंने कितने वर्ष बिताए थे, उनका सामान हट जाने से कुरूप और नग्न लग रहा था। आँगन में रोपे पौधे भी जान-पहचान के लोग ले गए थे और जगह-जगह मिट्टी बिखरी हुई थी।

गजाधर बाबू के अनिश्चित भविष्य और अनिश्चित उपस्थिति को संकेत करने वाला वाक्य यह है— "जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली-सी चारपाई डाल दी गई थी।" गजाधर बाबू की मानसिक खलबली को अभिव्यक्त करने वाला मानसिक परिवेश का वर्णन इस प्रकार हुआ— "यह थी क्या उनकी पत्नी, जिसके हाथों के कोमल स्पर्श जिसकी मुस्कान की याद में उन्होंने संपूर्ण जीवन काट दिया था। उन्हें लगा कि वह लावण्यमयी युवती जीवन की राह में कहीं खो गई और उसकी जगह आज जो स्त्री है वह उनके मन और प्राणों के लिए नितांत अपरिचित है।" आधुनिक युग की नई पीढ़ी की मानसिकता इसमें दिखाई पड़ती है।

भाषा-शैली—वापसी कहानी में प्रायः अन्य पुरुष में अधिक वर्णन किया गया है। भाषा पात्रानुकूल और परिस्थिति के अनुकूल है। गजाधर बाबू जब कहते हैं—"बिट्टी, चाय तो फीकी है। तब इसमें वात्सल्य प्रेम झलकता है, पर जब बसंती से कहते हैं—बसंती! आज से शाम का खाना बनाने की जिम्मेदारी तुम पर है। तब इसमें आदेश और पिता का अधिकार स्पष्ट हो जाता है। गजाधर बाबू पत्नी से कहते हैं—ठीक है। तुम यही रहो। मैंने तो ऐसे ही कहा था। इसमें निराशा परिलक्षित होती है। गजाधर बाबू की पत्नी की भाषा—"यही जोड़-गाँठ करते-करते बूढ़ी हो गई। न मन का पहना, न ओढ़ा।" में उसके असंतोष और परिवार प्रबंधन कुशलता का परिचय मिलता है। इस वाक्य में माँ का वात्सल्य प्रतीत होता है। क्या कह दिया बसंती से शाम को मुँह लपेटे पड़ी है। खाना भी नहीं खाया। अमर ने कहा—'बूढ़े आदमी है।' चुपचाप पड़े रहे। हर चीज में दखल क्यों देते हैं उसकी कुण्ठता प्रमाणित होती है।

मुहावरों से भाषा में प्रवाह आता है। भाषा में शक्ति आ जाती है। इस कहानी में प्रयुक्त मुहावरे हैं—फास-सी करके उठना, पेट काटना, हाड़ तोड़ना, ताना देना आदि। आलंकारिक प्रयोग भी भाषा में माधुर्य उत्पन्न करता है। ऐसा प्रयोग है, पत्नी और बाल-बच्चों के साथ रहने की कल्पना में वह बिछोह एक दुर्बल लहर की तरह उठकर विलीन हो गया। चारपाई के बिम्ब के द्वारा गजाधर बाबू की यातना, एकाकीपन, निराशा, असहायता, अस्तित्वहीनता को अभिव्यक्ति मिल जाती है। वह है—यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई की जगह नहीं है तो यही पड़े रहेंगे अगर कहीं और डाल दी गई तो वहाँ चले जाएँगे।

उद्देश्य—इस कहानी में भोगे हुए जीवन का यथार्थ जीवन चित्रित हुआ है। बुजुर्गों की समस्याओं, उनकी विषादिन् मनःस्थिति आकांक्षाओं को पाठक के सामने प्रस्तुत करके लेखिका सामाजिक सजगता उत्पन्न करना चाहती है। परिवार का मुखिया कड़ी मेहनत करके जीवनभर धन उपार्जन में इस आशा से लगा रहता है कि बुढ़ापे में उसे परिवार संरक्षण, सहायता, सहानुभूति, आत्मीयता और सुख-शांति मिलेगी पर आधुनिक पीढ़ी की संतानें उनकी कमाई पर गुलछर्रे उड़ाने को अपना अधिकार समझती है। पिताजी को धन-अर्जन का यंत्र समझते हैं। परिवार का कोई भी

उत्तरदायित्व अपने कंधे पर लेना नहीं चाहती। झूठी ठाट–बाट से ऐश की जिंदगी बिताना चाहते हैं। इस पर लेखिका ने करारा व्यंग्य किया है। लेखिका ने आधुनिक पीढ़ी को श्रम–कातरता, स्वार्थपरत। दिशाहीन, लक्ष्यहीनता और पुरानी पीढ़ी की मूल्य–व्यवस्था में आय को उजागर करके दोनों पीढ़ियों की वैचारिक भिन्नता को सारी समस्याओं की जड़ मानी है।

लेखिका कहानी के माध्यम से यह दिखाना चाहती है कि प्रदर्शन प्रियता के मोह में मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। आर्थिक विपन्नता से सारी समस्याएँ उभरती है। आजकल स्वार्थांधता के कारण संयुक्त परिवार का बंधन ढीला पड़ जाता है। सब अलग होकर रहना पसंद करते हैं। पिता–पुत्र संबंध शिथिल हो जाता है। लेखिका ने समाज में घटने वाले और एक कटु–सत्य को उजागर कर दिया है, कि परिवार से दूर रहकर उपार्जित करने वाले व्यक्ति के आदर्श की कोई छाप बच्चों पर नहीं पड़ती। पास न रहने से ममता का बंधन ढीला पड़ जाता है। वहीं आदमी जब घर पहुँचता है, तब उसका स्वागत नहीं हो पाता। वह परिवार में अपना अस्तित्व और परिचय जमा नहीं पाता। लेखिका ने गजाधर बाबू की इस दयनीयता परिणाम के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करके उन्हें सोचने को मजबूर कर दिया है। इस कहानी में 'चारपाई' गजाधर बाबू का प्रतिनिधित्व करती है।

शीर्षक–शीर्षक किसी भी कहानी में एक प्रतीक का काम करता है। वह कहानी की आत्मा को प्रकट करता है। इस कहानी का शीर्षक 'वापसी' एक कार्य व्यापार की सूचना देता है। वह शीर्षक संक्षिप्त, सार्थक, सांकेतिक और संवेदना उद्दीपन है।

गजाधर बाबू अपने परिवार में वापसी चाहते थे पर परिस्थिति वश उसकी वापसी अपनों को छोड़कर बाहर की ओर हो जाती है। वे अपने लोगों में अस्तित्व पाने में निराश होकर पराए लोगों में उसे तलाशने के लिए पलायन करते हैं। यह 'वापसी' उनकी त्रासदी है। अतः कहानी का शीर्षक यथार्थ लगता है।

प्रश्न 26. विद्यालयीन वार्षिक पत्रिका के महत्व को प्रतिपादित कीजिए। (उज्जैन 2021)

उत्तर–विद्यालयीन वार्षिक पत्रिका के महत्व–इस पत्रिका के अनेक लाभ एवं महत्व हैं–

एक तो इससे विद्यार्थियों को लेखन की प्रेरणा मिलती है। इससे लिखने की कला सीख सकते हैं। स्थूल मैगजीन विद्यार्थियों को अधिक लगन के साथ पढ़ने को प्रेरित करती है। स्कूल मैगजीन में अपना नाम और फोटो देखने के लिए वे बड़े उत्साह से खेलकूदों में भी भाग लेते हैं। प्रत्येक स्कूल मैगजीन में विद्यार्थियों की प्रगति का विवरण होता है। इसमें उनके द्वारा जीते गये पुरस्कारों और तमगों का वर्णन होता है इसलिए वे विद्यार्थी अपनी पढ़ाई और खेलकूद में कठिन परिश्रम करते हैं, जो अपना नाम विद्यालयीन वार्षिक पत्रिका में देखना चाहते हैं। तीसरे स्कूल मैगजीन विद्यार्थियों को एक–दूसरे के नजदीक लाने में सहायता करती है। मैगजीन में लेख देने वाले विद्यार्थियों को अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए अन्य बहुत–सी पुस्तकें पढ़नी पड़ती है। इसके अलावा वे स्वयं विचार करना सीख लेते हैं। सोच–विचार से उनकी तर्क बुद्धि प्रखर होती है। मैगजीन के लिए नियमित रूप से लिखते रहने से उनकी लेखन कला विकसित होती है। इससे उनकी भाषा भी सुधर जाती है और धीरे–धीरे भाषा पर अधिकार हो जाता है। विद्यालयीन वार्षिक पत्रिका स्कूल की गतिविधियों की खिड़की है। शिक्षकों द्वारा उचित पहल छात्रों के विचारों और अभिव्यक्तियों को सुधारने में मदद करती है। विद्यालय पत्रिका विद्यालय के विकास का ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह छात्रों की भावी पीढ़ी को उनके स्कूल की निर्मित परंपराओं के बारे में सूचित करता है। यह मूल्यवान प्रकाशन छात्रों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करता है। यह पत्रिका उनके भाषायी कौशल को सुधारने में मदद करती है। यह उनके रचनात्मक और काल्पनिक लेखन को बेहतर बनाने के संभावित अवसर प्रदान करने में उनकी मदद करता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से छात्रों को अपने विचारों को विभिन्न भाषाओं में लिखने और व्यक्त करने का अवसर मिलता है। यह उनके पढ़ने और लिखने

के कौशल को काफी हद तक सुधारने में मदद करता है। यह उनके रचनात्मक और काल्पनिक लेखन को बेहतर बनाने के संभावित अवसर प्रदान करने में भी उनकी मदद करता है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से छात्रों को अपने विचारों की विभिन्न भाषाओं में लिखने और व्यक्त करने का अवसर मिलता है। युवा प्रतिभाशाली लेखकों को अपना पहला प्रदर्शन इसी विशिष्ट माध्यम से ही मिलता है। पत्रिकाएँ आमतौर पर सलाना प्रकाशित होती है। इन पत्रिकाओं का बड़ा शिक्षाप्रद महत्व है। ये छात्रों को सोचने और लिखने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद करते हैं और इस प्रकार उनके लेखन कौशल और प्रतिभा को विकसित करने में मदद करते हैं। पत्रिकाएँ उनकी सोचने की शक्ति को विकसित करने में भी मदद करती है और उनकी कल्पना को भी मजबूत करती है। यह छात्रों के सामान्य ज्ञान में सुधार करने में भी मदद करती है और इससे उन्हें पढ़ने और लिखने की आदत डालने में भी मदद मिलती है। पत्रिकाएँ छात्रों की सहयोग का मूल्य सिखाने में भी मदद करती है और छात्रों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करती है। वास्तव में ये छात्रों के लिए अन्य सहायता और आत्मविश्वास का स्रोत है। पत्रिका लेंखन बच्चों में सामाजिक मूल्यों को विकसित करने में मदद करता है।

प्रश्न 27. पाठ का सार क्या है ? इसका उपयोग शिक्षण में कैसे किया जाता है ?

(भोपाल 2022)

उत्तर–किसी विस्तृत लेख को पढ़ समझकर कम शब्दों में उसी बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की कला को **सारांश** या **पाठ का सार** कहते हैं। सारांश में केवल उस मूल तथ्य को प्रस्तुत किया जाता है। जिसके इर्द–गिर्द मूल अवतरण का विकास और विस्तार होता है।

किसी काम के सार की व्याख्या करना मुख्य विचार की एक विचार तक कम करना है। इसका उपयोग हम शिक्षण में बार–बार करते हैं, क्योंकि कई बार जब हम पढ़ा रहे होते हैं तो पूरा पाठ पढ़ाने के लिए समय नहीं होता है। तब शिक्षक सारी विषय–वस्तु को न समझाकर जो पाठ का जिस्ट होता है, वह उसे समझाता है, इससे शिक्षक का समय भी बचता है और शिक्षक समय पर सिलेबस भी पूरा कर पाते हैं। पूरी विषय–वस्तु को समझाने के लिए ही शिक्षक जो पाठ में मूलभूत तथ्य होते हैं या पाठ का जो सारांश होता है उसे समझा देता है। इसे ही पाठ का सार कहते हैं। पाठ के सार के बिना शिक्षण पूरा नहीं होता है। हमेशा शिक्षक को इसका उपयोग करना पड़ता है।

प्रश्न 28. किसी एक प्रकार के पत्र का उदाहरण दीजिए। **(जबलपुर 2021)**

उत्तर–पत्र दो प्रकार के होते हैं–(1) औपचारिक एवं (2) अनौपचारिक।

(1). औपचारिक पत्र–सरकारी या कार्यालयी स्तर पर लिखे वे सरकारी/गैर–सरकारी पत्र जिसमें लिखने वाले व्यक्ति को अनेक प्रकार की औपचारिकताओं का निर्वाह करना पड़ता है। औपचारिक पत्रों के अंतर्गत आवेदन पत्र, निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र, संवेदना पत्र, अर्द्ध सरकारी पत्र, व्यावसायिक पत्र आदि आते हैं।

(2) अनौपचारिक पत्र–अनौपचारिक पत्रों के अंतर्गत पारिवारिक या निजी पत्र नहीं आते हैं। इसमें आत्मीयता, वैयक्तिकता, विश्वसनीयता एवं निकटता का भाव आता है, इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र भी कहा जाता है।

आवदेन पत्र का एक नमूना इस प्रकार है–

बीमार होने पर स्कूल से छुट्टी के लिए आवेदन पत्र

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य,
सरस्वती विद्या मंदिर,
देवरिया (यू.पी.)

विषय–बीमार होने पर स्कूल से छुट्टी के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मेरा नाम अनिकेत कुमार है। मैं कक्षा 12 वीं का छात्र हूँ। मैं 2 दिन से लगातार बीमार हूँ। डॉक्टर ने मुझे 2 दिन आराम करने के लिए कहा है।

अतः आपसे निवेदन है कि मुझे 2 दिन का अवकाश प्रदान करने की कृपा करें। मैं आपका आभारी रहूँगा।

दिनांक

.....

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र

नाम–अनिकेत कुमार

कक्षा–12 वीं

प्रश्न 29. समाचार लेखन के मुख्य आयाम कौन–कौन से हैं ? किन्हीं चार पर प्रकाश डालिए।
(छतरपुर 2021, 22)

उत्तर–समाचार लेखन इस समय बहुत सारे आयामों से होकर गुजर रही हैं। जब भी पाठक समाचार पढ़ता हैं तो पाठक हर समाचार से एक ही तरह की जानकारी की अपेक्षा नहीं रखता। कुछ घटनाओं के मामले में वह उसका विवरण विस्तार से पढ़ना चाहता हैं, तो कुछ अन्य के संदर्भ में उसकी इच्छा यह जानने की होती है कि घटना के पीछे क्या है ? उसकी पृष्ठभूमि क्या है ? उस घटना का उसके भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा और इससे उसका जीवन तथा समाज किस तरह प्रभावित होगा ? समय, विषय और घटना के अनुसार पत्रकारिता में लेखन के तरीके बदल जाते हैं। यह बदलाव पत्रकारिता में कई नए आयाम जोड़ता है। समाचार लेखन के मुख्य आयामों में संपादन के सिद्धांत, विचार, समाचार के तत्व, टिप्पणी, संपादकीय, फोटो, कार्टून, संपादकीय पत्रकारिता आदि आते हैं। समाचार के अलावा इन आयामों का पत्रकारिता में अहम् स्थान होता है। समाचार पत्र में इनका विशेष स्थान और महत्व हैं। इसके बिना कोई समाचार पत्र स्वयं को संपूर्ण नहीं कह सकता है।

समाचार लेखन के चार आयाम इस प्रकार हैं–

(1) संपादकीय, (2) फोटो पत्रकारिता, (3) कार्टून कोना व (4) रेखांकन और कार्टोग्राफ।

(1) संपादकीय–संपादकीय पृष्ठ को समाचार का सबसे महत्वपूर्ण पृष्ठ माना जाता है। इस पृष्ठ पर अखबार विभिन्न घटनाओं और समाचारों पर अपनी राय रखता है। इसे संपादकीय कहा जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार लेख के रूप में प्रस्तुत करते हैं। आमतौर पर संपादक के नाम पत्र भी इसी पृष्ठ पर प्रकाशित किए जाते हैं। यह घटनाओं पर आम लोगों की टिप्पणी होती है। समाचार पत्र इसे महत्वपूर्ण मानते हैं।

(2) फोटो पत्रकारिता–फोटो पत्रकारिता ने छपाई की टेक्नोलॉजी विकसित होने के साथ ही समाचार पत्रों में अहम् स्थान बना लिया है। कहा जाता है कि जो बात हजार शब्दों में लिखकर नहीं कही जा सकती, वह एक तस्वीरे कह देती है। फोटो टिप्पणियों का असर व्यापक और सीधा होता है। टेलीविजन की बढ़ती लोकप्रियता के बाद समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में तस्वीरों के प्रकाशन पर जोर बढ़ा है।

(3) कार्टून कोना–लगभग हर समाचार पत्र में कार्टून कोना होता है और उनके माध्यम से की गई सटीक टिप्पणियाँ पाठक को छूती है। एक तरह से कार्टून पहले पन्ने पर प्रकाशित होने वाले हस्ताक्षरित संपादकीय हैं। इनकी चुटीली टिप्पणियाँ कई बार संपादकीय से भी अधिक प्रभावी होती है।

(4) रेखांकन और कार्टोग्राफ–ये समाचारों को न केवल रोचक बनाते हैं, बल्कि उन पर टिप्पणी भी करते हैं। क्रिकेट के स्कोर से लेकर सेंसेक्स के आँकड़ों तक ग्राफ से पूरी बात एक नजर में सामने आ जाती हैं। कार्टोग्राफी का उपयोग समाचार पत्रों के अलावा टेलीविजन में भी होता है।

प्रश्न 30. एक शिक्षक के गुण, उनकी कठिनाइयाँ एवं उन्हें दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए। (ग्वालियर 2021)

उत्तर–शिक्षकों में शिक्षकों के अपेक्षित सभी सामान्य और विशिष्ट गुण होना चाहिए। शिक्षकों के सामान्य और विशिष्ट गुणों में उसका आकर्षक व्यक्तित्व, शिक्षकों के उचित वेशभूषा, उत्तम स्वास्थ्य, मधुर वाणी, कुशाग्र बुद्धि, संवेगात्मक संतुलन, सामाजिक व्यवहार, कुशलता, उच्च चरित्र एवं दृढ़ संकल्प, नेतृत्व की क्षमता, हँसमुख, मित्रता एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार आदि गुण होना चाहिए।

शिक्षक के गुण–

(1) शुद्धोच्चारण–एक शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ गुण उसका शुद्धोच्चारण होता है। यदि उसका उच्चारण शुद्ध होगा, तभी उसके सम्पर्क में आने वाले छात्र का उच्चारण भी शुद्ध होगा।

(2) कुशल व्यक्तित्व–शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिए। एक कुशल शिक्षक का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए, जिनके जीवन मूल्यों, आदर्शों, व्यवहारों व चरित्र को विद्यार्थी अपने जीवन में उतार सके।

(3) विषय–वस्तु पर पूर्ण अधिकार–शिक्षक ऐसा होना चाहिए जिसे अपनी विषय–वस्तु पर पूरा अधिकार हो। उसे अपने विषय का ज्ञाता होना चाहिए। वह जिस विषय को पढ़ाता है, उससे संबंधित सभी नवीन जानकारियाँ एवं तथ्य पता होना चाहिए। शिक्षक को अपने विषय से संबंधित सभी सूचनाएँ पता होना चाहिए।

(4) नवीन शिक्षण की विधियों का ज्ञान–शिक्षक को प्राचीन एवं नवीन दोनों ही शिक्षण विधियों का ज्ञान होना चाहिए। साथ ही साथ समय–समय पर पाठ्यचर्या कार्यक्रमों में भाग लेते रहना चाहिए, जिससे उसे नवीन प्रयोगों की जानकारी हो सके। शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण के लिए यथोचित विधियों की जानकारी उसे प्राप्त करनी चाहिए तथा इस जानकारी को व्यवहार में लाते हुए शिक्षण विधियों में नवाचार हेतु प्रयत्नशील रहना चाहिए।

(5) मूल्यांकन विधियों का ज्ञान–शिक्षक को अपने विषय की मूल्यांकन विधियों का ज्ञान होना चाहिए। पारम्परिक तथा नवीन दोनों प्रकार की मूल्यांकन विधियों की जानकारी उसे भली प्रकार से होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थियों का मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर भली प्रकार से किया जा सके।

(6) सृजनात्मक कौशल–शिक्षक के लिए कहा जाता है कि वह विद्यार्थियों का सृजन करता है, चाणक्य ने भी इस बात को कहा है, कि "शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।" शिक्षक को हमेंशा सृजनशील होना चाहिए। शिक्षक ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थियों में सृजनात्मक कौशल का विकास कर सके। साथ ही शिक्षकों की साहित्य सृजन के जितने भी आयाम होते हैं, उन सबसे उसको परिचित होना चाहिए। उसे किसी–न–किसी रूप में अपनी भूमिका उसें निभानी चाहिए।

(7) भाषा पर पूर्ण अधिकार–शिक्षक को अपनी भाषा पर पूरा अधिकार होना चाहिए। उसे हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा की भी जानकारी होनी चाहिए, क्योंकि विद्यालय में अलग–अलग जाति, धर्म, प्रांत, क्षेत्र विशेष के लोग आते हैं। शिक्षक को सभी लोगों को पढ़ाना होता है, इसलिए शिक्षकों को अधिक–से–अधिक भाषा का ज्ञान होना चाहिए।

(8) वैज्ञानिक दृष्टिकोण–शिक्षकों का दृष्टिकोण पूर्णतः वैज्ञानिक होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण होने से वह हर काम को व्यवस्थित और क्रमबद्ध रूप से करेंगे। नई–नई खोज, अनुसंधान, नए–नए तरीकों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा देंगे, जिससे विद्यार्थी भी आगे चलकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपना सकेंगे।

शिक्षकों की कठिनाइयाँ–शिक्षकों को शिक्षण के दौरान निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है–

(1) शिक्षण के माध्यम की समस्या–शिक्षक के समक्ष सबसे बड़ी परेशानी द्वि–माध्यम की आती है। एक ही कक्षा में जब विद्यार्थी हिन्दी व अंग्रेजी दोनों ही माध्यम के होते हैं, तो शिक्षक को इस

समस्या का सामना करना पड़ता है, उसे एक बार हिन्दी में और एक बार अंग्रेजी में पढ़ाना पड़ता है, इससे शिक्षकों पर कार्यभार बहुत बढ़ जाता है।

(2) कक्षा–कक्ष में अनुशासन की–कक्षा को अनुशासित रखने का काम भी शिक्षक का होता है, विद्यार्थियों को पढ़ाने के साथ–साथ उनके व्यवहारों और उन्हें अनुशासनहीनता न करें इसके लिए भी शिक्षक को बहुत परेशान होना पड़ता है, क्योंकि कुछ विद्यार्थी कक्षा में पढ़ने नहीं मस्ती करने के भाव से ही आते हैं।

(3) सह–शिक्षा की समस्या – सह–शिक्षा (Co-education) एक बहुत बड़ी समस्या है। क्योंकि कभी–कभी कुछ विषय–वस्तु ऐसी होती हैं, जिसे छात्र और छात्राओं को साथ में पढ़ाना संभव नहीं होता है, ऐसे समय में शिक्षक उसको कैसे पढ़ाए, यह एक बहुत बड़ी समस्या बन जाती है।

(4) वैयक्तिक भिन्नता की–विद्यालय में अलग–अलग वैयक्तिक भिन्नता वाले विद्यार्थी आते हैं। सब विद्यार्थी एक–दूसरे से अलग होते हैं, ऐसे समय शिक्षक किस तरह से विषय–वस्तु को समझाएँ, कैसे उदाहरण दे जिससे हर विद्यार्थी को समझ आ सके, ये भी एक बहुत बड़ी समस्या होती है।

(5) छात्र–छात्राओं को भिन्न–भिन्न रुचियों की–एक ही कक्षा में अलग–अलग रुचियों के विद्यार्थी पाए जाते हैं। उनकी रुचि के हिसाब से शिक्षा देना शिक्षकों के लिए एक बहुत बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

(6) छात्र एवं अध्यापक के बीच सह–संबंध की समस्या–विद्यार्थी और शिक्षक के बीच सह–संबंध की समस्या भी एक बहुत बड़ी कठिनाई होती हैं। कई बार विद्यार्थी शिक्षक के साथ और शिक्षक विद्यार्थी के साथ समायोजन नहीं कर पाते हैं, जिससे शिक्षकों को प्रयास करना पड़ता हैं कि विद्यार्थी उनके शिक्षण कार्य में रुचि ले और उन्हें सहयोग करे।

(7) नवीन शिक्षण विधियों की समस्या–शिक्षण के समय कई बार नवीन शिक्षण विधियों का प्रयोग कैसे करे, ये भी एक समस्या शिक्षक के सामने होती हैं, क्योंकि समय बदलने के साथ–साथ शिक्षा में नवीन तकनीकी, नवीन पद्धतियों का प्रयोग किया जाने लगता है, ऐसे में हर समय शिक्षक को अपने आप को अपडेटेट (नवीनीकरण) रखना पड़ता है। नए–नए तरीकों को अपनाना पड़ता हैं और इसे अपनाने में शिक्षकों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

(8) नवीन उपकरणों का ज्ञान एवं इनके उपयोग की समस्या–हम देख रहे हैं कि वर्तमान समय में नए–नए शैक्षिक उपकरण आ गए है। हर विषय को पढ़ाने के नए–नए उपकरण एवं उपागम बन रहे हैं। इन नए उपकरणों का ज्ञान एवं उनका उपयोग कैसे करे। ये भी शिक्षकों के समक्ष बहुत बड़ी परेशानियाँ होती है, क्योंकि शिक्षकों को इससे संबंधित ज्ञान खुद ही प्राप्त करना होता हैं, वे किससे इन उपकरणों की जानकारी ले और कैसे प्रयोग में लाए यह एक बहुत बड़ी समस्या होती है।

(9) छात्रों के मूल्यांकन की समस्या–विषय–वस्तु बदलने के साथ–साथ शिक्षा के तौर–तरीके, शिक्षा में मूल्यांकन के तरीकों में भी बदलाव आता है। हम देखते हैं कि इस समय मूल्यांकन के नवीन तरीके आ गए है, परम्परागत पद्धति से मूल्यांकन कार्य कम हो गया है, इन नवीन तरीकों से मूल्यांकन भी शिक्षक के लिए बहुत बड़ी कठिनाई है।

(10) कक्षा में उपद्रवी छात्रों की समस्या–हर विद्यालय व हर कक्षा में कुछ उपद्रवी विद्यार्थी होते हैं। जो कक्षा के माहौल को शांत रहने ही नहीं देते हैं। कक्षा में कुछ–न–कुछ ऐसी गतिविधियाँ करते रहते हैं, जिससे कक्षा का माहौल बिगड़े। ऐसे विद्यार्थियों को किस तरह से अनुशासन में रखें जिससे कक्षा का माहौल खराब न हो, यह भी एक बहुत बड़ी समस्या शिक्षकों के सामने बनी रहती है।

(11) विद्यार्थियों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर में भिन्नता की समस्या–प्रत्येक विद्यार्थी का मानसिक एवं बौद्धिक स्तर एक–दूसरे से भिन्न होता है। शिक्षक के समक्ष ये सबसे बड़ी समस्या होती है, कि वह विद्यार्थी को इस तरह से पढ़ाएँ कि हर बुद्धि–लब्धि वाले विद्यार्थी विषय–वस्तु को समझ

सके व उसके लिए शिक्षकों को बहुत प्रयास करना पड़ता हैं कि उनका पढ़ाया हर विद्यार्थी अच्छे तरीके से समझ सके।

(12) समाजीकरण की समस्या—जब से टेक्नोलॉजी आई है, हर किसी का स्थान इस नवीन व्यवस्था ने ले लिया हैं। विद्यार्थी एक–दूसरे से बातचीत नहीं करते हैं। एक–दूसरे का सहयोग नहीं करते हैं, सामाजिक क्रियाकलापों और सामाजिक गतिविधियों से नहीं जुड़ते हैं। विद्यार्थियों में समाजीकरण कैसे किया जाए, उन्हें समाजीकरण की क्रिया से कैसे जोड़े यह एक बहुत बड़ी भौगोलिक समस्या है, इस समस्या का सामना हर शिक्षक को करना पड़ता है।

शिक्षकों की कठिनाइयों को दूर करने के उपाय—हम देख रहे हैं कि वर्तमान समय में शिक्षकों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इन्हें दूर करने के लिए सरकार को बहुत सारी प्रयास करने की जरूरत है, जैसे— यदि शिक्षा में कोई नवीन परिवर्तन होने वाला है, तो शिक्षकों को पहले से सूचित किया जाए, उनके लिए विभिन्न सेमिनार, कार्यशाला, पुनश्चर्या, पाठ्यक्रम, सेवाकालीन प्रशिक्षण आदि का आयोजन किया जाए, उनकों नवीन साधनों का प्रयोग कैसे करना है ? इसके बारे में बताया जाए। अलग–अलग शिक्षण माध्यम के विद्यार्थियों को अलग–अलग कक्षा लगवाई जाए। उपद्रवी विद्यार्थियों के लिए सजा के कुछ बारिक नियम बनाए जाए, शिक्षकों को शिक्षक संघ बनाने की अनुमति दी जाए, जिससे हर शिक्षक उस संघ से जुड़ें अपनी समस्या बता सके। विद्यार्थियों के साथ–साथ शिक्षकों के लिए भी समाजीकरण की प्रक्रिया करायी जानी चाहिए। शिक्षकों को नवीन मूल्यांकन पद्धतियों के साथ–साथ नए–नए शैक्षिक अनुसंधानात्मक गतिविधियों से जोड़ने के लिए सरकार को नए–नए प्रोजेक्ट शिक्षकों को देना चाहिए, जिससे शिक्षक अधिक–से–अधिक अपना सहयोग दे। सरकार के साथ–साथ शिक्षकों को भी अपने उत्तरदायित्व के प्रति ईमानदार होकर काम करने की वर्तमान समय में बहुत आवश्यकता है, तभी शिक्षा जगत में आने वाली समस्याओं को दूर किया जा सकेगा।

प्रश्न 31. पत्रकारिता लेखन के उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व को विस्तार से वर्णन कीजिए।
(जबलपुर 2021, 22)

उत्तर—पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के 'जर्नलिज्म' का हिन्दी अनुवाद है। जर्नलिज्म लैटिन भाषा के जनेल से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' होता है। इसे एक प्रकार से एक डायरी माना जाता है। पत्रकारिता में सूचनाओं और जानकारियों को प्रसारित या प्रकाशित किया जाता है, जो बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करते हैं।

पत्रकारिता लेखन के उद्देश्य—(1) जनमत व्यक्त करना। (2) स्वास्थ्य व मनोरंजन प्रदान करना। (3) सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार। (4) कृषि, व्यापार, उद्योग, शिक्षा, फिल्म, राजनीति और अन्य विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी देना। (5) जन–जागृति फैलाना। (6) उत्साहवर्द्धन करना। (7) शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून और अन्य सभी क्षेत्रों के लिए परामर्श या सलाह देना। (8) प्रेरणा देना। (9) अनुचित बातें, स्थितियों, कार्यों, व्यक्तियों और आचरण का अनुरोध करना। (10) सूचना देना। (11) लोगों को जागरूक करना। (12) लोगों को न्याय दिलाना। (13) घटना के पीछे छिपे कारणों की तलाश कर घटना तक पहुँचना। (14) सरकार की नवीन नीतियों के बारे में अवगत कराना। (15) आदर्श मानदण्ड स्थापित करना।

पत्रकारिता की आवश्यकता—पत्रकारिता 'आवाज हीनों' की आवाज के रूप में कार्य करती हैं। यह प्रशासन और जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। हम देखते हैं आज के क्षेत्र में जहाँ मोबाइल, प्रौद्योगिकी विकसित हो चुकी हैं, वहीं कई आंतरिक स्थानों में टावर भी नहीं हैं, ऐसे में सूचना प्राप्त करने के लिए पत्रकारों को उन स्थानों पर जाना पड़ता हैं, जिससे वह सूचनाएँ ला सके और उनकी समस्याओं को प्रशासन के समक्ष रख सके। हर व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक तो पहुँच नहीं सकता है, ऐसे में उसे पत्रकारिता की जरूरत होगी, जिसके माध्यम से वह अपनी बातों को, समस्याओं को प्रशासन के समक्ष रखने के लिए पत्रकारिता और पत्रकारों की मदद ले सके।

दुनिया में होने वाली घटनाओं को जानने के लिए हमें पत्रकारिता की आवश्यकता होती है। पत्रकारिता के माध्यम से हमें हर क्षेत्र की जानकारी प्राप्त होती रहती हैं। हर व्यक्ति के पास इतना समय नहीं हैं कि वह न्यूज चैनल देख सके, ऐसे में अखबार, पत्रकारिता उसके लिए बहुत जरूरी हैं। आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हैं, जो समाचार न पढ़े। कुछ घटनाएँ व कुछ जानकारियाँ केवल अखबार में ही आती हैं, उसके लिए पत्रकारिता या समाचार पत्र की ही जरूरत हमें पड़ती है। समाचार के माध्यम से हमें देश, विदेश, समाज, राजनीति, धर्म व नौकरी से संबंधित विभिन्न जानकारियाँ मिलती रहती है। जनता की आवाज को सुनने वाला और जनता की आवाज को प्रशासन तक पहुँचाने वाला माध्यम समाचार ही हैं इसलिए पत्रकारिता को लोकतंत्र का अविभाज्य अंग माना जाता है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि मनुष्य की जिज्ञासा या कौतूहल को शांत करने के लिए पत्रकारिता की आवश्यकता है। नित्य नवीन होने वाली घटनाओं से काफी जिज्ञासा उत्पन्न होती है। इस जिज्ञासा की पूर्ति पत्रकारिता ही करती है। पत्रकारिता हर क्षेत्र के लोगों की जिज्ञासा की पूर्ति करती हैं। मनुष्य को जाग्रत करने व विभिन्न सूचना देने के प्रयोजन को पत्रकारिता ही पूरा करती हैं। किसी पौधे को जीवन देने के लिए जैसे पानी, खाद और वायु की आवश्यकता होती है उसी प्रकार समाचार–पत्र आज के मनुष्यों को यह खुराक देते हैं। मनुष्य, समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास हेतु पत्रकारिता की आवश्यकता पहले भी थी और आज भी है और हमेशा बनी रहेगी।

पत्रकारिता का महत्व–आधुनिक युग में समाचार पत्रों का विशिष्ट महत्व है। पत्रकारिता समाज की ऊष्मा या तापमान मापने का थर्मामीटर है। यह अतीत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी प्रदान करती है। समाचार पत्र समाज के दिशा–निर्देशक की भूमिका निभाते हैं, जनमत बनाने की चेष्टा करते हैं। समाज की विभिन्न समस्याओं का विश्लेषण और निराकरण करते हैं, देश–विदेश की खबरों से परिचित कराते हैं। अविकसित समाजों के उत्थान में समाचार पत्रों की अहम् भूमिका रही है। सत्ताधिकारियों के क्रूर एवं अमानवीय अत्याचारों का वृतांत समाचार पत्रों ने समूचे विश्व में प्रसारित किया है। इस प्रकार विश्व समाज की संवेदना, सहानुभूति बढ़ाकर उत्कृष्ट समस्याओं को नष्ट करने के प्रयास फलीभूत हैं। समाचार पत्रों ने समाज में व्याप्त विसंगतियों को चित्रित कर उनका निराकरण भी किया है। समाचार–पत्रों के माध्यम से ही आर्थिक उतार–चढ़ाव, यथा–मुद्रास्फीति, रुपये का अवमूल्यन आदि विषयों की जानकारी मिलती है। यदि प्रातःकाल समाचार पत्र न मिले तो पूरे दिन कुछ अधूरापन–सा लगता है। यही बात इसके महत्व को व्यक्त करती है कि यह लोगों के जीवन का कितना अभिन्न अंग है। पत्रकारिता सामाजिक जीवन के प्राणवायु के सदृश है।

पत्रकारिता के महत्व के कारण ही इसे लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है। इसके महत्व को प्रतिपादित करते हुए–**जैफर्सन** ने कहा है कि "यदि उनकी एक समाचार विहिन शासन–व्यवस्था तथा शासन विहीन समाचार–पत्र वाले समाज में से चुनने को कहा जाये तो वह निःसंदेह समाचार–पत्र वाली व्यवस्था को अंगीकार करेगा।"

पत्रकारिता के महत्व को हम निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं–

(1) सामाजिक दृष्टि से पत्रकारिता का महत्व–समाज के विकास में पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रकारिता के माध्यम से ही हम समाज की बाधाओं रूढ़ियों और उनकी समस्याओं को जान सकते हैं। पत्रकारिता इन समस्याओं और रुढ़ियों पर प्रकाश डालकर इनको दूर करने में सहयोग करती है।

(2) शिक्षा में पत्रकारिता का महत्व–मानव के लिए शिक्षा सबसे जरूरी है, क्योंकि शिक्षा से ही हम आधुनिक युग को अच्छे से समझ सकते हैं। समाचार–पत्र और पत्रिकाएँ एक प्रकार से लोगों को शिक्षित करने का ही कार्य करती है। पत्रकारिता से हमें आधुनिक शिक्षा नीतियों का पता चलता है। शिक्षा में होने वाले बदलाव की जानकारी मिलती है।

(3) राजनीति में पत्रकारिता का महत्व– आज राजनीति हमारे जीवन के साथ–साथ अखबारों का भी एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। इसका सबसे बड़ा कारण है कि आज समाज के हर एक घर में राजनीति का प्रवेश हो चुका है। इसलिए समाचार–पत्रों में राजनीति को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। पत्रकार राजनीतिक समस्याओं को केवल प्रस्तुत ही नहीं करते हैं अगर राजनीतिक व्यवस्था खराब हो तो उन पर भी करारा व्यंग्य भी करते हैं।

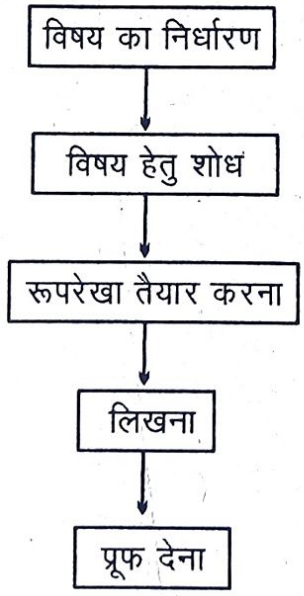
(4) राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का महत्व–राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का विशेष महत्व हैं, क्योंकि आज पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है।

(5) अंतर्राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का महत्व–पत्रकारिता ने आज के समय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी भूमिका को बखूबी निभाया है। हम देखते हैं कि विभिन्न देशों में होने वाले सरकारी समझौतों की जानकारी, विभिन्न देशों की मुद्रा भाव, अलग–अलग देशों का बाजार–भाव आदि के समाचार हम पत्रकारिता के माध्यम से घर बैठकर अपने समाचार पत्रों में ही पढ़ सकते हैं। पत्रकारिता के कारण हमें अलग–अलग देशों के विचारों का पता चलता है। इससे विभिन्न देशों के विचार एक–दूसरे तक पहुँचते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता का महत्व अलग ही है।

(6) खेलों में पत्रकारिता का महत्व–खेलों में पत्रकारिता सबसे उपयोगी है, क्योंकि आगे आने वाले तथा वर्तमान में चल रहे खेल के बारे में हमें पत्रकारिता से ही पता चलता है। खेलों के लिए तो समाचार पत्रों में एक अलग से ही पृष्ठ है तथा अलग–अलग पत्रिकाएँ भी निकाली जाती हैं।

प्रश्न 32. सम्पादकीय की सम्पूर्ण रचना प्रक्रिया को समझाइए। **(छतरपुर 2022)**

उत्तर–सम्पादकीय लेखन की शुरुआत करते समय कुछ आधारभूत तथ्यों को समावेश करना आवश्यक होता है। एक सफल सम्पादन हेतु एक मजबूत नींव बनाने के लिए निम्न चरणों को शामिल किया जाता है–



(1) किसी विषय का निर्धारण–चूँकि सम्पादकीय किसी भी लेखक अथवा सम्पादक के दृष्टिकोण पर आधारित होता है। सम्पादकीय लेखक का विषय तर्कसंगत होने चाहिए। सम्पादकीय लेख, व्यक्तिगत विचार तथा लेख द्वारा प्रतिनिधित्व समूहों के विचार को प्रतिबिम्बित करेगा। अतः इस प्रक्रिया में कुछ बातों पर, कुछ पाठकों की असहमति हेतु एक विवादित विषय का चयन कर उसके समाधान आदि का विवरण दिया जा सकता है। सम्पादकीय लेख अत्यंत प्रभावशाली होना चाहिए जो कि पाठकों को संबंधित विषय पर सोचने हेतु विवश कर दे।

(2) निर्धारित विषय हेतु शोध–यद्यपि एक सम्पादकीय लेखन सम्पादक के विचार पर आधारित होता है फिर भी यह अत्यंत आवश्यक है कि सम्पादक द्वारा अपने लेखन को पूर्णतया शोधित तथा

तथ्य-परक, प्रमाणित विषय-वस्तु प्रदत्त करना चाहि। शोध करने से सम्पादक को यह निश्चय करने में मदद मिलेगी कि कौन-सा लेख लिखें जिससे बातचीत में नवीन विचारों का समावेश हो सके।

(3) रूपरेखा तैयार करना—किसी लेख हेतु विषय का चयन तथा शोध के पश्चात् एक रूपरेखा तैयार किया जाता है जिसके अंतर्गत सम्पादक या लेखक अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से रखें तथा सम्पादकीय के मुख्य बिंदु एक धारा में प्रवाहित होकर चले।

(4) लिखना—रूपरेखा तैयार करने के पश्चात् सम्पादक या लेखक उस रूपरेखा के अंतर्गत उससे जुड़ी सम्पूर्ण सूचनाओं को जोड़ता है। मुख्यतः लेखक प्रस्तावना से प्रारंभ करते हैं, वह अपने स्वयं के विचार लिखते हैं। लेख की शुरुआत करना कई लेखकों हेतु प्रक्रिया का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा होता है परंतु यदि लिखने में समस्या आए तो प्रेरणा के लिए शोध देखा जाता है।

(5) प्रूफ रीडिंग—प्रूफ रीडिंग के अंतर्गत लेखक विषय के स्वर तथा प्रवाह की जाँच की जाती है। लेखक अपने लेख की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से अपने लेखन की गुणवत्ता तथा वर्तनी या व्याकरण संबंधी त्रुटियों को सुधार कर सम्पादन योग्य बनाता है।

प्रश्न 33. बच्चों की शिक्षा पर एक सम्पादकीय लिखिए। **(ग्वालियर 2022)**

उत्तर—एक बच्चे के जीवन में शिक्षा इतनी महत्वपूर्ण है कि यह बाद में जीवन में उसकी सफलता की नींव रखती है और यह तय करती है कि क्या वह एक खुश और संतुष्ट वयस्क बनेगा या भावनात्मक रूप से टूटा हुआ और उदास व्यक्ति बनेगा।

हम एक दिन अपने राष्ट्र का नियंत्रण अपने बच्चों को सौंप देंगे और यदि उन्हें जिम्मेदारी उठाने के लिए अच्छी तरह से शिक्षित नहीं किया गया, तो हमने विकास के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किए हैं वे अधूरे रह जाएँगे। एक ऐसा राष्ट्र जो बच्चों की शिक्षा पर अधिक खर्च नहीं करता, हमेशा के लिए, गरीबी और दुःख की चपेट में रहता है और न केवल आज पीड़ित होता है बल्कि अपने कल को भी नष्ट कर देता है। एक बच्चा किसी राष्ट्र की सफलता की कुंजी है। जब कोई बच्चा शिक्षित होगा तभी राष्ट्र सफल होगा।

एक बच्चे के जीवन में शिक्षा के कई उद्देश्य हो सकते हैं– कौशल सीखना, जिज्ञासा और रचनात्मकता विकसित करना, अनुशासन पैदा करना, शक्ति और सहनशक्ति विकसित करना, संचार करना, आत्मविश्वास बनाना, आकांक्षा, अवलोकन, प्रतिस्पर्धा और व्यक्तित्व विकास। अगर हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा का अवसर दें, हम उन्हें उनकी सफलता के साथ-साथ देश की सफलता की कुंजी भी सौंप रहे हैं।

दुनिया भर में लगभग 70 मिलियन बच्चों को स्कूल जाने का अवसर नहीं मिला, जिनमें से 32 मिलियन अकेले अफ्रीकी देशों में रहते हैं। सबसे बुरी तरह प्रभावित कुछ अफ्रीकी देश है जैसे– चाड, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, नाइजर, गिनी, माली, सूडान और लाइबेरिया। बच्चों की शिक्षा के मामले में दक्षिण मध्य एशियाई देश अफगानिस्तान भी सबसे खराब शीर्ष दस में शुमार हो गया है।

इन देशों ने पिछले दशकों में बाल शिक्षा की स्थिति में सुधार के लिए बहुत कम या अपर्याप्त प्रयास किए हैं, यही कारण है कि वे अभी भी गरीबी, अधिक जनसंख्या और क्षतिग्रस्त अर्थव्यवस्था का सामना कर रहे हैं और मानव विकास सूचकांक में सबसे निचले स्थान पर है। इसके अलावा अविकसित या विकासशील देश में लड़के की तुलना में लड़की के स्कूल जाने की संभावना कम होती है।

प्रभावी बुनियादी ढाँचे द्वारा समर्थित बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा को अनिवार्य करने वाले कानूनों वाले देश लंबे समय से गरीबी की जंजीरों से उबर चुके हैं और लगातार विकास कर रहे हैं या वैश्विक मानकों के अनुसार पहले ही विकास के स्तर पर पहुँच चुके हैं। स्विट्जरलैंड, नीदरलैंड, फिनलैंड, ऑस्ट्रेलिया बाल शिक्षा के क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर है।

स्विट्जरलैंड में अपने सभी निवासियों और विदेशियों के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा अनिवार्य करने वाला कानून है। भारत ने शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के माध्यम से 6–14

वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार बना दिया है और आज यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।

यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों की शिक्षा किसी राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य है और दोनों सीधे अनुपात में संबंधित है, अर्थात् बाल शिक्षा की खराब स्थिति एक क्षतिग्रस्त अर्थव्यवस्था और अविकसित राष्ट्र को दर्शाती है जबकि बाल शिक्षा की अच्छी स्थिति एक प्रगतिशील और विकासशील राष्ट्र को दर्शाती है।

प्रश्न 34. स्थानीय समाचार पत्र में अपनी रुचि के विकास पर एक लेख लिखिए।

(छिन्दवाड़ा 2022)

उत्तर–''बदलते क्लाइमेट से दुनिया में पनप रही है कई बीमारियाँ'' विषय पर लेख–

साल की शुरुआत में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी थी कि डेंगू दुनिया की सबसे तेजी से फैल रही उष्णकटिबंधीय देशों की बीमारी बन गई है और 'महामारी के खतरे' के रूप में उभर रही है। जुलाई के तीसरे हफ्ते में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने फिर से दोहराया कि 2023 में डेंगू बीमारी के अब तक के सबसे ज्यादा मामले सामने आ सकते हैं। दरअसल इसका मुख्य कारण सारी दुनिया में चरम जलवायु परिस्थितियों यानि अत्यधिक गर्मी या बारिश या सूखे की स्थिति को माना जा रहा है। दक्षिण अमेरिकी देशों में डेंगू तेजी से फैल रहा है। ऐसा माना जाता है कि गर्म जलवायु मच्छरों को तेजी से बढ़ने में मदद करती है और वायरस को उनके शरीर के भीतर बढ़ने में सक्षम बनाती है। वृद्धि के पीछे अन्य कारकों में वस्तुओं और लोगों की बढ़ती आवाजाही और शहरीकरण तथा स्वच्छता से जुड़ी समस्याएँ शामिल हैं। यूरोप के कई देशों में भीषण गर्मी है। ऐसे में डेंगू और अन्य मच्छरों से फैलने वाली बीमारियों जैसे–मलेरिया और चिकनगुनिया का खतरा बढ़ जाता है।

वैसे भी पिछले दो दशकों में डेंगू के दर्ज मामलों में करीब आठ गुना वृद्धि देखी गई है। अधिकारिक रूप से रिपोर्ट किए गए मामलों को माने तो वर्ष 2000 में सलाना 5 लाख से बढ़कर 2022 में सालाना 42 लाख डेंगू के मामले आए। वास्तविक संख्या इससे कई गुना अधिक होती है। दुनिया भर में डेंगू के अनुमानित सालाना मामले 10 करोड़ से 40 करोड़ है। यह बीमारी वैश्विक स्तर पर लगभग 129 देशों में हैं।

भारत में पिछले दो दशकों में डेंगू तेजी से फैला है। साल 2001 में, डेंगू केवल आठ राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में था, लेकिन 2022 के अंत तक भारत के हर राज्य और केंद्रशासित प्रदेश में डेंगू के मामले सामने आ चुके हैं। इस साल भारत के कई हिस्सों में अत्यधिक बारिश और बाढ़ से डेंगू का प्रकोप फैलने का खतरा बढ़ गया है। यह इसको रोकने के लिए तैयार रहने का समय है। जैसे कि अन्य वायरल बीमारियों के साथ होता है, डेंगू का कोई प्रभावी इलाज नहीं है, यह स्व–सीमित बीमारी है। एक अच्छी बात यह है कि डेंगू से संक्रमित लोगों को बहुत कम अनुपात में गंभीर बीमारी होती है। लेकिन चुनौतियाँ बढ़ती नजर आ रही है।

भारत के कई शहरों में शुरुआती संकेत मिले हैं कि अगर सरकार द्वारा प्रभावी निवारक उपाय नहीं किए गए तो डेंगू का गंभीर प्रकोप हो सकता है। जरूरी है कि लोग और सरकारें दोनों अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। हर राज्य और नगर निगम मिलकर काम करें। मच्छरों के पनपने पर रोक लगाएँ। डेंगू की पहचान और रिपोर्टिंग में सुधार के लिए बेहतर निगरानी की आवश्यकता है, ताकि शीघ्र कार्रवाई की जा सके। फीवर क्लिनिक बनाएँ जाएँ, जिससे लोगों को जल्द स्वास्थ्य सेवाएँ मिलें। साथ ही याद रखें कि डेंगू के मौसम में एस्पिरिन या इबुप्रोफेन दवाएँ बिना डॉक्टर के सलाह के नहीं लेनी चाहिए।

●●

नवबोध

प्रकाशन की अन्य उत्कृष्ट पुस्तकें...

बी. एड. सरल अध्ययन

प्रथम सेमेस्टर

- पाठ्यक्रम विकास एवं विद्यालय
- बाल्यावस्था एवं विकास
- भारत में शिक्षा–स्थिति, समस्या एवं मुद्दे
- पाठ्यक्रम में भाषा (भाग-1)

द्वितीय सेमेस्टर

- पाठ्यक्रम में भाषा (भाग-2)
- अधिगम एवं शिक्षण
- सामाजिक विज्ञान शिक्षण
- गणित शिक्षण
- जीव विज्ञान शिक्षण
- रसायन शिक्षण
- वाणिज्य शिक्षण
- अर्थशास्त्र शिक्षण
- भौतिक विज्ञान
- Pedagogy of English Language
- हिन्दी शिक्षण
- इतिहास शिक्षण
- नागरिक शास्त्र शिक्षण
- भूगोल शिक्षण

तृतीय सेमेस्टर

- विद्यालय विषयों का शिक्षणशास्त्र, भाग-2

चतुर्थ सेमेस्टर

- शैक्षिक तकनीकी तथा सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी
- लिंग, विद्यालय और समाज
- पर्यावरण शिक्षण
- समावेशी विद्यालय का सृजन
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा
- विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श
- क्रियात्मक अनुसंधान
- मूल्य शिक्षण
- स्वयं को समझना
- ICT को समझना
- भविष्यात्मक शिक्षण

Navbodh

नवबोध प्रकाशन

7, समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)
फोन : 0771-2533603, 4200905
ई-मेल : prakashan@navbodh.com

Customer Helpline : 7471145005 | fb.com/navbodh | www.navbodhprakashan.com